हिन्दी कथा साहित्य

Institute of Open and Distance Education

Faculty of Arts

हिन्दी कथा साहित्य

2BA3

Dr. C.V. Raman University
Kargi Road, Kota, BILASPUR, (C. G.),
Ph. : +07753-253801, +07753-253872
E-mail : info@cvru.ac.in | Website : www.cvru.ac.in

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Chhattisgarh, Bilaspur
A STATUTORY UNIVERSITY UNDER SECTION 2(F) OF THE UGC ACT

2BA3

हिन्दी कथा साहित्य

2BA3
हिन्दी कथा साहित्य

Credit- 4

Subject Expert Team

Dr Kajal Moitra, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Mahesh Shukla, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Reena Tiwari, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Ram Ratan sahu, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr Anju Tiwari, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh
Dr. Sandhya Jaiswal , Dr. C. V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh

Course Editor:

Dr Ramsiya Charmkar, Assistant Professor Department of Political Science Humanities and liberal arts, Rabindranath Tagore University, Bhopal, M.P.

Unit Written By:

1. Dr. Snehlata Nirmalar

(Associate Professor, Dr. C. V. Raman University)

2. Dr. Rekha Dubey

(Associate Professor, Dr. C. V. Raman University)

3. Dr. Shahid Husain

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

Warning: All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Published by: Dr. C.V. Raman University Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.), Ph. +07753-253801,07753-253872 E-mail: info@cvru.ac.in, Website: www.cvru.ac.in

इकाई इकाई का नाम पृष्ट संख्या

अनुक्रमणिका

ब्लॉक -I

इकाई 1 हिन्दी कथा साहित्य का विकास 1

इकाई 2 हिन्दी कहानी उद्भव और विकास 23

इकाई 3 प्रेमचंद - गबन 40

ब्लॉक -II

इकाई 4 वृंदावनलाल वर्मा- झांसी की रानी 74

इकाई 5 जयशंकर प्रसाद - आकाशदीप 107

इकाई 6 प्रेमचन्द- ठाकुर का कुआं 126

इकाई 7 कमलेश्वर का व्यंग्य - "जार्ज पंचम की नाक" 139

ब्लॉक -III

इकाई 8 निर्मल वर्मा - परिन्दे 154

इकाई 9 भीष्म साहनी-चीफ की दावत 175

इकाई 10 मोहन राकेश-परमात्मा का कुत्ता 193

ब्लॉक -IV

इकाई 11 अमरकान्त-जिन्दगी और जोंक 210

इकाई 12 उषा प्रियंवदा-वापसी 222

इकाई 13 चंद्रधर शर्मा गुलेरी . उसने कहा था 236

ब्लॉक - I

इकाई 1

हिन्दी कथा साहित्य का विकास

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 हिंदी उपन्यास: उद्भव और विकास
1.4 प्रारंभिक हिंदी उपन्यास
1.5 प्रेमचंदपूर्व हिंदी उपन्यास
1.6 प्रेमचंदयुगीन हिंदी उपन्यास
1.7 प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास
1.8 समकालीन हिंदी उपन्यास
1.9 सार - संक्षेप
1.10 मुख्य शब्द
1.11 स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
1.12 संदर्भ ग्रंथ सूची
1.13 अभ्यास प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! गद्य साहित्य के इतिहास में उपन्यास विधा का महत्वपूर्ण स्थान है। गद्य की अन्य विधाओं की तरह उपन्यास भी भारतेंदु युग की ही देन है। भारतीय नवजागरण के दौर में उपन्यास का उदय हुआ। इस विधा का फलक व्यापक होता है। इसमें अनेक कथा-सूत्र एक-दूसरे से गुंथे हुए होते हैं। इस विधा के माध्यम से साहित्यकारों ने सामाजिक एवं वैयक्तिक पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है। इस इकाई में हिंदी उपन्यास के उद्भव और विकास यात्रा पर प्रकाश डाला जाएगा।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. हिंदी कथा साहित्य के ऐतिहासिक विकास को समझ सकें।
2. कथा साहित्य के विभिन्न रूपों (उपन्यास, कहानी आदि) का अध्ययन कर उनकी विशेषताओं का मूल्यांकन कर सकें।
3. सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तनों का साहित्य पर प्रभाव समझ सकें।
4. कथा साहित्य के विभिन्न रचनाकारों और उनकी कृतियों का गहन अध्ययन कर उनके योगदान का विश्लेषण कर सकें।

1.3 हिंदी उपन्यास उद्‌भव और विकास

छात्रो! आधुनिक काल का आरंभ उन्नीसवीं सदी के मध्य से माना जाता है। यह वह समय था जब संपूर्ण भारत में नवजागरण की लहर दौड़ रही थी। भारत को कंपनी के शासन से मुक्त कराने के लिए पहला स्वाधीनता संग्राम भी लड़ा गया। भारत की तत्कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव साहित्यकारों पर भी पड़ा।

भारतेंदु के आगमन से पहले तक हिंदी साहित्य के क्षेत्र में पद्‌म का प्रमुख स्थान था। पद्‌य के माध्यम से जीवन के विविध आयामों को प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। यह भी कहा जा सकता है कि काव्य अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक उदात्त है। कविता का जन्म आदर्शवादिता को लेकर हुआ था, तो उपन्यास का जन्म पूँजीवादी सभ्यता का देन है। "पूँजीवादी सभ्यता के विविध जीवन-सत्यों को कथा के माध्यम से व्यक्त करने के लिए ही इसकी उत्पत्ति हुई है। यह मात्र कहानी नहीं है। कहानी यानी कथा तो इसका माध्यम है, मूल वस्तु है वर्तमान जीवन की जटिल यथार्थवादिता। जीवन-मूल्यों का संक्रमण, समाज के नए संबंधों की निर्मिति, उसके बीच उठते हुए अनेक प्रश्नों को भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने की आकुलता, नवीन भौतिक सत्यों के बीच बनती हुई मानव-चरित की नई दिशाएँ, ये सारी बातें मानो उपन्यास नामक विधा के माध्यम से फूट पड़ने के लिए आकुल थीं।"

उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य कहा जाता है क्योंकि महाकाव्य में जीवन जगत की विराटता अपने समस्त वैविध्य, गहरे भाव, विशिष्ट दर्शन, मानव मूल्य आदि जिस प्रकार अंकित होते हैं उपन्यास में भी ये सब अंकित होते हैं।
हिंदी उपन्यास साहित्य के अध्ययन में प्रेमचंद को कसौटी के रूप में माना जाता है क्योंकि प्रेमचंद के आगमन से उपन्यास साहित्य का सुनिश्चित विकास हुआ। अध्ययन की सुविधा हेतु हिंदी उपन्यास के उद्‌भव और विकास को प्रारंभिक हिंदी उपन्यास, प्रेमचंदपूर्व, प्रेमचंदयुगीन, प्रेमचंदोत्तर और समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

1.4 प्रारंभिक हिंदी उपन्यास

छात्रो! भारतेंदु युग में लेखकों एक नई विधा "आवश्यकता महसूस होनी लगी। क्योंकि पद्‌म में पूरी बात खुलकर कहना संभव नहीं। ऐसे में भारतेंदु हरिश्चंद्र का ध्यान उपन्यास विधा की ओर गया। वे बांग्ला उपन्यासों से परिचित थे। उस समय बांग्ला उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद हुआ और कुछ उपन्यास हिंदी में भी लिखे गए। भले ही उपन्यास लेखन की नींव भारतेंदु युग में रखी गई थी, पर प्रेमचंद युग में ही उसे व्यापकता मिली।
हिंदी के प्रारंभिक उपन्यासों को अध्ययन की सुविधा के लिए भारतेंदु पूर्व और भारतेंदु युगीन उपन्यासों के रूप में विभाजित किया जा सकता है।

1.4.4 भारतेंदु पूर्व हिंदी उपन्यास साहित्य (1801-1869):-

छात्रो! ध्यान देने की बात है कि 1800 ई. में पादरी विलियम कैरे ने श्रीरामपुर में प्रेस की स्थापना की और हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में बाइबिल के अनुवाद प्रकाशित किए। 1802 में बैताल पच्चीसी छपी। 1803 ई. में गिलक्राइस्ट का हिंदुस्तानी प्रेस भी स्थापित हो चुका था। इसी प्रेस में लल्लू लाल कृत 'प्रेमसागर' छापा था और 1805 ई. में 'माधोनल' और 'सिंहासन बत्तीसी' तथा 1809 ई. में 'राजनीति' का मुद्रण हुआ था। गद्‌य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज की महत्वपूर्ण भूमिका है। फोर्ट विलियम कॉलेज से नागरी मुद्रण को बहुत प्रोत्साहन मिला। इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1803) छप चुकी थी। 1850 के बाद नागरी मुद्रण को प्रोत्साहन मिलने लगा। इस समय तक हिंदी पाठक वर्ग के निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी थी। 'रानी केतकी की कहानी'

हिंदी की पहली मौलिक गद्य रचना है, पर उपन्यास नहीं। यह सूफी प्रेमाख्यानों की पद्धति पर रचित गद्य कथा है। यह भी ध्यान देने की बात है कि 1803 से लेकर 1869 तक हिंदी में कोई दूसरी मौलिक गद्य कथा नहीं लिखी गई थी। 1825 ई. से लेकर 1862 ई. के बीच शिक्षा संबंधी अनेक पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित हुई। 1854 के ऊड्स डिस्पैच के बाद शिक्षा की स्थिति में परिवर्तन आया। मिडिल और माध्यमिक स्कूलों में विषय के रूप में आधुनिक भारतीय भाषाओं की पढ़ाई नाममात्र के लिए होती थी। उर्दू की तुलना में हिंदी उपेक्षित थी। जब सरकार ने स्त्री-शिक्षा को प्रोत्साहन देने की नीति अपनाई तो 1871 ई. तक लड़कियों के लिए स्कूल खुले। इनमें पढ़ाने के लिए नए ढंग से पुस्तकें लिखी गईं। पं. गौरीदत्त रचित 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) एक ऐसी ही पुस्तक थी।

1.4.2 भारतेंदु युगीन हिंदी उपन्यास साहित्य (1870-1890):-

छात्रो ! हिंदी उपन्यास का और भारतीय नवजागरण का गहरा संबंध है। बंगाल और महाराष्ट्र की तुलना में हिंदी में क्षेत्र में नवजागरण की प्रक्रिया कुछ बाद में ही आरंभ हुई। इसीलिए हिंदी में उपन्यास का आरंभ भी बांग्ला और मराठी की अपेक्षा बाद में ही हुआ। लेकिन हिंदी क्षेत्र में तो राजनैतिक दृष्टि से पुनर्जागरण का आरंभ 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से माना जाता है। पर सामाजिक क्षेत्र में इसका आरंभ 1875 में आर्य समाज की स्थापना और उसके आंदोलन के साथ हुआ।

'रानी केतकी की कहानी' 1803 में आई और उसके बाद 1870 में 'देवरानी जेठानी की कहानी' प्रकाशित हुई। इसे लंबी अंतराल को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि हिंदी कथा- साहित्य की यात्रा क्रमिक विकास के रूप में नहीं हुई, बल्कि एक छलांग दिखाई पड़ती है। गोपाल राय का कहना है कि "देवरानी जेठानी की कहानी की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें पहली बार परंपरा से हटकर कथा कहने का प्रयास किया गया है। कथाकार ने पुराने आख्यान लेखकों की तरह किसी राजा, सेठ, सामंत या शूरवीर की कथा न कहकर साधारण मध्यवर्गीय वैश्य परिवार की देवरानी जेठानी की कहानी कही है। दोनों के शीर्षकों में 'कहानी' शब्द है, एक में रानी की कहानी है तो दूसरे में सामान्य परिवार की स्त्रियों की। 'देवरानी जेठानी की कहानी' भले ही स्त्री शिक्षा के उद्देश्य से लिखी गई हो, लेकिन लेखक अपनी कथा की नवीनता और परंपरा के प्रति सजग थे। यह सिर्फ

स्त्री-शिक्षा की कहानी नहीं है, बल्कि यह उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवर्गीय बनिया समाज के जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाली रचना है और निश्चय ही यह पुनर्जागरण की चेतना से जुड़ी हुई रचना थी।

ध्यान देने की बात है कि भारतेंदु ने 'हरिश्चंद्र मैगजिन' के प्रवेशांक (अक्टूबर, 1873) में नॉवेल शब्द का उल्लेख किया था। उन्होंने 'एक कहानी कुछ आपबीती कुछ जगवीती' नाम से एक उपन्यास लिखना आरंभ किया था। इसका केवल 'प्रथम खेल' प्रकाशित हुआ था। भारतेंदु के बाद 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग राधाकृष्ण दास ने किया था। 1879 में 'हिंदी प्रदीप' में उन्होंने अपने 'रहस्य कथा' उपन्यास का प्रकाशन धारावाहिक के रूप में शुरू किया और उपन्यास लेखन की परंपरा को आगे बढ़ाया। हिंदी उपन्यास में विवाहपूर्व प्रेम का अंकन 'रहस्य कथा' से ही आरंभ होता है। 'बिहार बंधु' (सं. केशवराम भट्ट) में 'सुंदर (लेखक अज्ञात) नाम का उपन्यास 1880 में अर्थात लगभग 'रहस्य कथा' के साथ ही धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा था। 'हिंदी उपन्यास के इतिहास' से यह पता चलता है कि तत्कालीन दरभंगा नरेश लक्ष्मीश्वर नारायण सिंह ने उपन्यास लिखने के लिए एक सौ पचास रुपए पारितोषक की घोषणा की थी। 'हिंदी प्रदीप' के 1881 के अंक में प्रकाशित कृतज्ञता ज्ञापन से यह स्पष्ट होता है कि यह पुरस्कार प्रयाग के देवकीनंदन त्रिपाठी के 'अमृत चरित्र' को मिला था। ठाकुर जगमोहन सिंह ने 1885 में 'श्यामा स्वप्न' नामक उपन्यास की रचना की। लेखक ने स्वयं इसे 'गद्य प्रधान चार खंडों में एक कल्पना' की संज्ञा दी। भारतेंदु मंडल के बाहर के लेखकों ने उपन्यास शब्द को स्वीकार नहीं किया था। किशोरीलाल गोस्वामी ने तीन मौलिक उपन्यास लिखे 'प्रणयिनी परिणय', 'त्रिवेणी' और 'सौभाग्य श्रेणी'। प्रथम दो उनके प्रारंभिक लघु-उपन्यास हैं। 1887 में देवकीनंदन खत्री ने प्रयोग के तौर पर 'चंद्रकांता' का पहला हिस्सा लिखा था जिसकी कथा तिलिस्म और ऐयारी पर आधारित है।

1.4.3 हिंदी का पहला उपन्यास:-

हिंदी में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग 1875 में हुआ था। इसका प्रयोग सबसे पहले 1862 में बांग्ला के भूदेव मुखोपाद्याय ने किया था। इसे बंकिमचंद्र चटर्जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। 'रानी केतकी की कहानी' लिखे

जाने के लगभग सत्तर वर्ष के बाद दूसरी मौलिक गद्य कथा 'देवरानी जेठानी की कहानी' प्रकाशित हुई।

इसके बाद ही मौलिक गद्य कृतीयों का लेखन और प्रकाशन शुरू हुआ। 'वामा शिक्षक' (1872 - ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय), निस्सहाय हिंदू (1881, प्रकाशन 1890, राधाकृष्ण दास), परीक्षा गुरु (1882 लाला श्रीनिवास दास), 'भाग्यवती' (1877, प्रकाशन - 1887, श्रद्धाराम फिल्लौरी) आदि कुछ उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। हिंदी का पहला उपन्यास किसे माना जाए, इसके संबंध में मतभेद है। गोपाल राय 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) को हिंदी का पहला उपन्यास का दर्जा देते हैं तो कुछ विद्वान 'वामा शिक्षक', 'निस्सहाय हिंदू' को मानते हैं तो कुछ 'भाग्यवती' को हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। लेकिन रामचंद्र शुक्ल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में यह लिखा है कि "अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले पहल हिंदी में लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' ही निकला था।" उल्लेखनीय है कि गोपाल राय ने 1966 में 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) का संपादन-प्रकाशन करते हुए पर्याप्त ठोस तर्क देकर इसे हिंदी का पहला उपन्यास सिद्ध किया है। उनके अनुसार “विषय, शिल्प और भाषा चाहे जिस दृष्टि से देखा जाए .... 'देवरानी जेठानी की कहानी' विशिष्ट है। अतः हिंदी उपन्यास का आरंभ यदि किसी पुस्तक से माना जा सकता है तो इसी से।" (हिंदी कथा साहित्य और उनके विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव, । 1886 में बालकृष्ण भट्ट के 'नूतन ब्रह्मचारी' का प्रकाशन हुआ था। इसे प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास होने का श्रेय प्राप्त है तथा बालकृष्ण भट्ट को प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार।

1.4.4 हिंदी उपन्यास साहित्य (1870-1890):-

छात्रो! हिंदी उपन्यास का और भारतीय नवजागरण का गहरा संबंध है। बंगाल और महाराष्ट्र की तुलना में हिंदी में क्षेत्र में नवजागरण की प्रक्रिया कुछ बाद में ही आरंभ हुई। इसीलिए हिंदी में उपन्यास का आरंभ भी बांग्ला औ और मराठी की अपेक्षा बाद में ही हुआ। लेकिन हिंदी क्षेत्र में तो राजनैतिक दृष्टि से पुनर्जागरण का आरंभ 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से माना जाता है। पर सामाजिक क्षेत्र में इसका आरंभ 1875 में आर्य समाज की स्थापना और उसके आंदोलन के साथ हुआ।

'रानी केतकी की कहानी' 1803 में आई और उसके बाद 1870 में 'देवरानी जेठानी की कहानी' प्रकाशित हुई। इसे लंबी अंतराल को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि हिंदी कथा- साहित्य की यात्रा क्रमिक विकास के रूप में नहीं हुई, बल्कि एक छलांग दिखाई पड़ती है। गोपाल राय का कहना है कि "देवरानी जेठानी की कहानी की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें पहली बार परंपरा से हटकर कथा कहने का प्रयास किया गया है। कथाकार ने पुराने आख्यान लेखकों की तरह किसी राजा, सेठ, सामंत या शूरवीर की कथा न कहकर साधारण मध्यवर्गीय वैश्य परिवार की देवरानी जेठानी की कहानी कही है।" (हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृ.24)। दोनों के शीर्षकों में 'कहानी' शब्द है, एक में रानी की कहानी है तो दूसरे में सामान्य परिवार की स्त्रियों की। 'देवरानी जेठानी की कहानी' भले ही स्त्री शिक्षा के उद्देश्य से लिखी गई हो, लेकिन लेखक अपनी कथा की नवीनता और परंपरा के प्रति सजग थे। यह सिर्फ स्त्री-शिक्षा की कहानी नहीं है, बल्कि यह उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवर्गीय बनिया समाज के जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाली रचना है और निश्चय ही यह पुनर्जागरण की चेतना से जुड़ी हुई रचना थी।

1.4.5 हिंदी का पहला उपन्यास

हिंदी में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग 1875 में हुआ था। इसका प्रयोग सबसे पहले 1862 में बांग्ला के भूदेव मुखोपाद्याय ने किया था। इसे बंकिमचंद्र चटर्जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। 'रानी केतकी की कहानी' लिखे जाने के लगभग सत्तर वर्ष के बाद दूसरी मौलिक गद्य कथा 'देवरानी जेठानी की कहानी' प्रकाशित हुई।

इसके बाद ही मौलिक गद्य कृतीयों का लेखन और प्रकाशन शुरू हुआ। 'वामा शिक्षक' (1872 - ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय), निस्सहाय हिंदू (1881, प्रकाशन 1890, राधाकृष्ण दास), परीक्षा गुरु (1882 - लाला श्रीनिवास दास), 'भाग्यवती' (1877, प्रकाशन - 1887, श्रद्धाराम फिल्लौरी) आदि कुछ उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

हिंदी का पहला उपन्यास किसे माना जाए, इसके संबंध में मतभेद है। गोपाल राय 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) को हिंदी का पहला उपन्यास का दर्जा देते हैं तो कुछ विद्वान 'वामा शिक्षक', 'निस्सहाय हिंदू' को मानते हैं तो कुछ 'भाग्यवती' को हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। लेकिन रामचंद्र शुक्ल ने अपनी प्रसिद्ध

पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में यह लिखा है कि "अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले पहल हिंदी में लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' ही निकला था।" (पृ. 310)। उल्लेखनीय है कि गोपाल राय ने 1966 में 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) का संपादन-प्रकाशन करते हुए पर्याप्त ठोस तर्क देकर इसे हिंदी का पहला उपन्यास सिद्ध किया है। उनके अनुसार "विषय, शिल्प और भाषा चाहे जिस दृष्टि से देखा जाए 'देवरानी जेठानी की कहानी' विशिष्ट है। अतः हिंदी उपन्यास का आरंभ यदि किसी पुस्तक से माना जा सकता है तो इसी से।" (हिंदी कथा साहित्य और उनके विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव, 1965, पृ. 218)। 1886 में बालकृष्ण भट्ट के 'नूतन ब्रह्मचारी' का प्रकाशन हुआ था। इसे प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास होने का श्रेय प्राप्त है तथा बालकृष्ण भट्ट को प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार ।

1.5 प्रेमचंदपूर्व हिंदी उपन्यास

छात्रो! अब तक आपने हिंदी के प्रारंभिक उपन्यास साहित्य की यात्रा की जानकारी प्राप्त कर चुके है। यह भी स्पष्ट हो ही चुका है कि भारतेंदु युग से ही उपन्यास साहित्य का प्रारंभ हुआ। यह युग एक तरह से हिंदी उपन्यास साहित्य का उद्भव काल है। इस युग के अधिकांश लेखकों पर अंग्रेजी और बांग्ला का प्रभाव था। इस युग के उपन्यासों ने मनोरंजन के साथ-साथ समाज सुधार की भावना को देखा जा सकता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी यह माना है कि उपन्यास लेखन भारतेंदु युग से ही आरंभ हो गया था। 'पूर्णप्रकाश और चंद्रप्रभा' भारतेंदु के सर्वप्रथम सामाजिक उपन्यास हैं। इस उपन्यास का प्रधान उद्देश्य है वृद्ध-विवाह का खंडन और स्त्री शिक्षा का समर्थन। भारतेंदु युग के बाद द्विवेदी युग में इसका उत्तरोत्तर विकास हुआ।

छात्रो! अब तक आप 1801 से लेकर 1890 तक की उपन्यास यात्रा को देख चुके हैं और समझ भी चुके हैं। अब हम थोड़ी सी चर्चा 1891 से लेकर 1900 तक की उपन्यास यात्रा की करेंगे। कहा जाता है कि देवकीनंदन खत्री ठेकेदारी के सिलसिले में चुनार, विजयगढ़ और नौगढ़ जाते थे और वहाँ के पुराने किलों, कन्दराओं और जनता में प्रचलित किंवदंतियों को सुनकर उनके भीतर के सृजनशील कथाकार अवसर पाकर जाग उठे और 'चंद्रकांता' उपन्यास का आरंभ किया था। 1891 में

इसका दूसरा भाग आया। और बाद में तीसरे और चौथे भाग भी निकले। 1894 में 'चंद्रकांता संतति' का पहला भाग प्रकाशित और इसका चौबीसवाँ तथा अंतिम भाग 1905 में हुआ। 1907 में उन्होंने 'भूतनाथ' (चंद्रकांता संतति का विस्तार) की रचना आरंभ की।

उन्होंने 'कटोरा भर खून' (1895), 'नौलखा हार' (1899), 'काजर की कोठरी' (1902) आदि अपराध प्रधान रचनाएँ लिखी। 'गुप्त गोदना' (1913) उनका अपूर्ण ऐतिहासिक उपन्यास है।

किशोरीला गोस्वामी का उपन्यास 'स्वर्गीय कुसुम' का रचना काल है 1889। इसका प्रथम प्रकाशन 1901 में हुआ। इसका मुख्य कथ्य देवदासी प्रथा की आलोचना और वेश्या जीवन का चित्रण। दक्षिण भारत में देवदासी प्रथा धार्मिक प्रथा के रूप में प्रचलित थी। अंधविश्वास के रूप में प्रचलित इस प्रथा के आड़ में वेश्या वृत्ति को प्रोत्साहन मिलता था। 'सवर्गीय कुसुम' वेश्या वृत्ति पर आधारित हिंदी का पहला उपन्यास है।

कुँवर हनुमंत सिंह रघुवंशी ने सर्वप्रथ 'चंद्रकला' (1893) में बाल विवाह के कुपरिणामों का चित्रण किया। 'अद्‌भुत लाश' (1896) और 'गुप्तचर' (1899) में प्रकाशित गोपालराम गहमरी के उपन्यास जासूसी उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं। महता लज्जाराम शर्मा की उपन्यासों 'धूर्त रसिकला' (1899) और 'स्वतंत्र रमा और परंतंत्र लक्ष्मी' (1899) में मनोरंजन, शिक्षा, प्रजा के सच्चे चरित्र को देखा जा सकता. है। हरिऔध ने 'ठेठ हिंदी की ठाठ' (1899) में ब्राह्मण समाज की वैवाहिक प्रथाओं के दोषों का चित्रण किया है।

'अद्‌भुत प्रायश्चित' (1901, ब्रजनंदन सहाय) में शराबबंदी आंदोलन का चित्रण है। 'सौंदर्योपासक' (1911, ब्रजनंदन सहाय) में तिलक-दहेज, वृद्‌ध विवाह आदि का विरोध है। है। गया प्रसाद मिश्र के 'संसार की कुछ बातें' (1903), गिरिजानंदन तिवारी के 'विद्‌याधरी' (1904), 'सुलोचना' (1906), गोपाललाल खत्री के 'अलबेला रागिया' (1906), रामप्रसाद सतीलाल के 'किरण शशी' (1909), जयरामप्रसाद गुप्त के 'जहर का प्याला' (1909) में वेश्याओं के कुकृत्यों का चित्रण है।

विधवा विवाह का समर्थन पहली बार श्रद्‌धाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' (1877) में किया था, पर शिक्षा विभाग के आदेश से उस अंश को मुद्रित संस्करण (1887) से निकाल दिया गया था। उसके बाद प्रेमचंद ने उर्दू में लिखित और हिंदी में

रूपांतरित 'प्रेमा' (1907) में का चित्रण और समर्थन किया। ईश्वरी प्रसाद शर्मा के उपन्यास का नाम है 'जैसी करनी वैसी भरनी' (1910) ।

यथार्थ चित्रण की दृष्टि से इस काल के उपन्यासों में मन्नन द्विवेदी कृत 'रामलाल' (1914) उल्लेखनीय है। गोपाल राय इसे ग्रामीण जीवन के चित्रण की दृष्टि से प्रेमचंदपूर्व युग के उपन्यासों में अद्वितीय मानते हैं। बालकृष्ण भट्ट के उपन्यासों में अवध के गाँवों की पृष्ठभूमि को देखा जा सकता है। 'बलवंत भूमिहार' में भुवनेश्वर मिश्र ने जमींदारी जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है।

गोपाल राय ने 'हिंदी उपन्यास का इतिहास' में यह लिखा है कि "हिंदी की पहली मौलिक उपन्यास लेखिका कोई 'साध्वी सती प्राण अबला' थीं जिन्होंने अपना वास्तविक नाम गुप्त रखकर 1890 में 'सुहासिनी' नामक उपन्यास लिखा और प्रकाशित कराया था। यदि ये 'अबला' ब्रजरत्न दास के अनुसार मल्लिका देवी (बंग महिला) ही हैं, तो उन्हीं को हिंदी की पहली मौलिक उपन्यास लेखिका भी मानना होगा।" (हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृ. 163)। 1893 में श्रीमती हरदेवी के 'हुकूम देवी' नामक उपन्यास आया। प्रेमचंद युग के पूर्व की अन्य महिला उपन्यासकारों में प्रियंवदा देवी (लक्ष्मी, 1908), कुंती देवी (पार्वती, 1909), यशोदा देवी (सच्चा पतिप्रेम, 1911), हेमंत कुमारी चौधरी (आदर्श माता, 1912), ब्रह्मयकुमारी भगवान देवी दूबे (सौंदर्य कुमारी, 1914) और श्रीमती कुमुदबाला देवी (सदाचारिणी, 1917) उल्लेखनीय हैं।

1.6 प्रेमचंदयुगीन हिंदी उपन्यास

अब तक आप प्रेमचंदपूर्व हिंदी उपन्यासों का अध्ययन कर चुके हैं। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के आगमन के साथ धीरे-धीरे राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार की भावना प्रबल होती गई। उपन्यास विधा का उत्तरोत्तर विकास हुआ। 1918-1936 की समय सीमा को प्रेमचंद युग माना जाता है। प्रेमचंद इस काल के ही नहीं बल्कि हिंदी उपन्यास के भी शिखर लेखक हैं। उन्होंने वस्तु, शिल्प और भाषा सभी दृष्टियों से उपन्यास विधा को शिखर पर पहुंचाया। हिंदी उपन्यास विधा को प्रौढ़ बना दिया। क्योंकि उपन्यास विधा ऐयारी-तिलिस्म, जासूसी दुनिया से मुक्त हुआ।

हिंदी में प्रेमचंद का आगमन 'सेवासदन' (1918) के साथ हुआ। उर्दू में 'बाजारे हुल' शीर्षक से पहले ही लिखा गया था। इसी के आधार इसे उनका पहला 'हिंदी' उपन्यास माना जाता है। इसमें वेश्या जीवन से संबद्ध समस्याओं का चित्रण है। 'प्रेमाश्रम' (1922), 'रंगभूमि' (1925) भी उर्दू में पहले लिखे गए थे। प्रेमचंद का हिंदी में मूल रूप से लिखा गया उपन्यास है 'कायाकल्प' (1926) । इसके बाद 'निर्मला' (1927), 'गवन' (1931), 'कर्मभूमि' (1932) और 'गोदान' (1936) उनके उल्लेखनीय उपन्यास हैं। 'मंगलसूत्र' उनका अधूरा उपन्यास है।

ध्यान देने की बात है कि प्रेमचंद देश की पराधीनता की यथार्थ स्थिति को उपन्यासों में चित्रित करते हैं। देश की आजादी को प्रेमचंद आर्थिक शोषण और दमन से जोड़कर देखते थे। उनके उपन्यासों में स्वाधीनता संग्राम का सीधा चित्रण नहीं मिलता लेकिन उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि जनता को तभी स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा जा सकता है जब वे सामाजिक बुराइयों से दूर रहेंगे और आर्थिक रूप से भी संपन्न रहेंगे। 'प्रेमाश्रम', 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि', 'रंगभूमि' और 'गोदान' में किसानों एवं मजदूरों के शोषण तथा सरकारी दमन नीति का अत्यंत जीवंत और मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किया है। प्रेमचंद्र ने 'सेवासदन' के कृष्णचंद्र तथा पद्मसिंह शर्मा, 'रंगभूमि' के ताहिर अली, निर्मला के मुंशी टोतारां और उदयभानु लाल, गबन के मुंशी दयानाथ आदि के माध्यम से मध्यवर्गीय अंतर्विरोधों को बखूबी दिखाया है। उन्होंने स्त्री समस्याओं को भी रेखांकित किया है। 'निर्मला' में उन्होंने यह दर्शाया है कि निर्धनता के करण जब लड़की का विवाह बूढ़े से किया जाता है तो उसकी जिंदगी नरक बन जाती है। 'गबन' में विधवा की असहाय स्थिति का अंकन है। 'रंगभूमि' की इंदु के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्री चाहे संपन्न वर्ग की ही क्यों न हो दासता की जंजीरों में जकड़ना उसकी नियती है। सोफिया (रंगभूमि), जालपा (गबन), सुखदा (कर्मभूमि) और मालती (गोदान) जैसी विद्रोहिणी स्त्रियाँ भी परंपरागत आदर्शों की शिकार हो जाती हैं।

प्रेमचंद युगीन अन्य उपन्यासकारों में विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक (भिखारिणी), चतुरसेन शास्त्री (आत्मदाह), प्रतापनारायण श्रीवास्तव (विदा), शिवपूजन सहाय (देहाती दुनिया), बेचन शर्मा 'उग्र' (बुधुआ की बेटी), ऋषभचरण जैन (दिल्ली का व्यभिचार), जयशंकर प्रसाद (तितली), भगवती चरण वर्मा (चित्रलेखा), राधिकारमण प्रसाद (राम-रहीम), भगवतीप्रसाद वाजपेयी (प्रेमपथ), वृंदावन लाल वर्मा (संगम),

राहुल सांकृत्यायन (शैतान की आँख), सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (अप्सरा), जैनेंद्र (सुनीता) आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचंद युग में रुक्मिणी देवी (मेम और साहेब), कुंती (सुंदरी), विमला देवी चौधरानी (कामिनी), रवा देवी शर्मा (सुमति), शैलकुमारी देवी (उमा सुंदरी), गिरिजा देवी (कमला कुसुम), कुमारी तेजराज दीक्षित (हृदय का काँटा), उपया देवी मित्रा (वचन का मोल) आदि ने महती भूमिका निभाई।

छात्रो! ध्यान देने की बात है कि सहयोगी लेखन के रूप में लिखने की परंपरा की शुरुआत भी इसी काल में हुई। 1927 में 'त्रिमूर्ति' के नाम से 'मीठी चुटकी' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ था। इसके लेखक भगवती प्रसाद वाजपेयी, वर्मा और शंभू दयाला सक्सेना थे। दूसरी उपन्यास जैनेंद्र और ऋषभचरण जैन द्वारा संयुक्त रूप से लिखित 'तपोभूमि' है। इसका केंद्रीय विषय है प्रेम। 'ग्यारह सपनों का देश', 'एक इंच मुस्कान' और 'बारह खंभा' इसी परंपरा के उपन्यास हैं।

1.7 प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास

प्रिय छात्रो! प्रेमचंद के समय जिन औपन्यासिक प्रवृत्तियों की नींव पड़ी, उनका विकास प्रेमचंद के बाद हुआ। इन प्रवृत्तियों में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, आंचलिक आदि प्रमुख हैं। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, देवराज उल्लेखनीय हैं।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

जैनेंद्र ने 'सुनीता' उपन्यास के साथ हिंदी उपन्यास क्षेत्र में एक नए मोड का निर्माण किया। 1937 में 'त्यागपत्र' और 1939 में 'कल्याणी' का प्रकाशन हुआ। 'त्यागपत्र' की मृणाल परंपरागत स्त्री-संहिता का उल्लंघन करती है। "मृणाल अपने स्वभाव और संवेदना में सामान्य स्त्री से भिन्न है। यह भिन्नता ही पक्की नींव वाली व्यवस्था से उसके संघर्ष और उसकी त्रासदी का करण बनता है।" (गोपाल राय, हिंदी उपन्यास का इतिहास, पृ.171)। रामदरश मिश्र कहते हैं कि "करुणा के लिए देह को समर्पित करते चलना, यह शायद जैनेंद्र जी के पात्रों को ही संभव हो पाता है।" (हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा, पृ.95)।

'निर्वासित' (1946, इलाचंद्र जोशी) में मध्यवर्गीय व्यक्ति की कुंठा को देखा जा सकता है। यौन कुंठा के कारण के रूप में लेखक ने प्रमुख रूप से आदर्शवादिता

और भावुकता को माना है। महीप प्रेम में हारा हुआ पात्र है। वह क्रांति की योजना बनाता है। यह वस्तुतः दमित प्रेम का दूसरा रूप है। लेकिन वहाँ भी टिक नहीं पाता, गांधीवादी बन जाता है। क्रांतिकारियों के हाथ घायल हो जाता है और जेल में दम तोड़ता है। मध्यवर्गीय व्यक्ति की कुंठा के बहाने सामाजिक समस्याओं का ही चित्रण है।

हिंदी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों को प्रौढ़ स्तर पर पहुँचाने के काम अज्ञेय ने किया। शेखर : एक जीवनी (दो भाग), 'नदी के द्वीप', 'अपने-अपने अजनबी' आदि उनके प्रमुख उपन्यास हैं। शेखर : एक जीवनीजीवत्ती के रूप में लिखा गया एक उपन्यास है। मनोविज्ञान के कारण ही जीवनी-प्रधान उपन्यास सामने आए। शेखर एक सामान्य मनुष्य है। रामदरश मिश्र उसे एक ऐसा मनुष्य मानते हैं जो महान भी है और दिन भी। महान इसलिए कि उसकी जिज्ञासा में लगन और निष्ठा है तथा दीन इसलिए कि तीव्रता के करण ही वह केवल हेतुवादी रह जाता है। शेखर को अज्ञेय ने एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है जो अपनी अनुभूतियों के प्रति बेहद ईमानदार है। उसके मन में जिज्ञासाएँ पैदा होती हैं। वह अपने अनुभव सी सीखता है। अज्ञेय की मान्यता है कि वेदना में एक शक्ति है जो दृष्टि देती है। दुख सबको मॉजता है और सिखा देता है। शेखर के माध्यम से लेखक ने देश प्रेम, मानव-प्रेम, अस्पृश्यता, जातिभेद, शिक्षा-दीक्षा आदि

अनेक प्रश्नों को उठाया है। 'नदी के द्वीप' के माध्यम से अजेय ने यह निरूपित किया है कि मनुष्य नदी का वह द्वीप है नदी की धारा से घिरा हुआ होते हुए भी अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। 'अपने-अपने अजनबी' में उन्होंने मनोविज्ञान और अस्तित्वबाद का सुंदर समन्वय किया है। 'अजय की डायरी' (1960, देवराज) डायरी के रूप लिखा गया उपन्यास है। अजय एक मध्यवर्गीय युवक है जो नास्तिक और स्वकेंद्रित है। उसमें लेखक ने मध्यवर्गीय कायरता को दिखाया है। वह परिस्थितियों से पलायन करता है।

सामाजिक उपन्यास

प्रेमचंद के बाद सामाजिक जीवन को चित्रित करने वाले उपन्यासकारों की लंबी परंपरा है-

निराला का बिल्लेसुर बकरिहा' (1945) यह संस्मरणात्मक उपन्यास। प्रगतिशील साहित्य का नमूना है। बिल्लेसुर अपने जीवन के अनुभव और संघर्ष से यह सीखता है कि जाति- पाँति महज एक ढकोसला है।

यशपाल ने 'दादा कॉमरेड' (1941) में प्रमुख रूप से दो प्रश्न उठाए गए हैं- एक यह कि क्रांति समाजवाद से होगी या आतंकवाद से? और दूसरा यह कि क्या स्थापित आचरण वास्तव में मूल्यवान है इसे बदलना है? 1958 में रचित 'झूठा सच' के माध्यम से यशपाल ने देश के बटवारे के समय तथा उसके पूर्व और बाद की सांप्रदायिक विभीषिका का चित्रण किया है। 'बड़ी-बड़ी आँखें' (1955) उपन्यास में उपेन्द्रनाथ अश्क ने आधुनिक आश्रमों अथवा सर्वोदयी संस्थाओं की विसंगतियों को उजागर किया है। अमृतलाल नागर के 'बूँद और समुद्र' (1956) में व्यक्ति और समाज के संबंधों को देखा जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जीवन की विसंगतियों को देखा सकता है। 'उसका बचपन' (1956) में प्रकाशित कृष्ण बलदेव वैद का यह उपन्यास कूटे बच्चे बीरू के मनोभावों का चित्रण है।
भगवती चरण वर्मा ने 'भूले बिसरे चित्र' (1959) में चार पीढ़ियों के माध्यम से परिवार, वर्ग और राष्ट्र की पचास वर्षों की गतिशील चेतना, उभरते मूल्य, द्वंद्व आदि को दिखाया है।

'सूरज का सातवाँ पोड़ा (धर्मवीर भारती, 1952) में मध्यवर्गीय परिवार के टूटे हुए विशृंखलित जीवन का चित्र है। भैरव प्रसाद गुप्त ने 'गंगा मैया' (1953) में किसान परिवार का यथार्थ, जमींदार के अत्याचारों और घातक रीति-रिवाजों का चित्रण किया है और 'सती मैया का चौरा' (1959) में हिंदू-मुस्लिम की मैत्री के माध्यम से समाज में अमानवीय विसंगतियों पर से पर्दा हटाया है।

मोहन राकेश ने 'अँधेरे बंद कमरे' (1961) नई दिल्ली के अभिजात जीवन को प्रस्तुत किया है। लक्ष्मीनारायण लाल ने 1961 में प्रकाशित 'बड़ी चम्पा, छोटी चम्पा' में वेश्या जीवन की समस्या का चित्रण किया है। नरेश मेहता का 'यह पथ बंधु था' (1962) मध्यवर्गीय व्यक्ति की यातना है, उसकी मानसिक उद्वेलन है। इस उपन्यास में 'पथ' अनुभव का है, इसलिए वहीं 'बंधु' है। "अनुभव ही बंधु हो सकता है सुख का, दुख का।" (रामदरश मिश्र, हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, पृ. 161)। 'उखड़े हुए लोग' (1964, राजेंद्र यादव) () के केंद्र में देशबंधु जैसे पूँजीवादी नेता है। वह बाहरी शालीनता से भीतरी कुरूपता को ढक देता है। इस यथार्थ को

लेखक ने बखूबी चित्रित किया है। शानी का काला जल' (1965) मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की समस्त विसंगतियों को उजागर करने में सफल है। उपन्यास के अनत में लेखक ने सामाजिक एवं राजनैतिक विसंगतियों की ओर संकेत किया है।

निर्मल वर्मा के 'वे दिन' (1966) की कथाभूमि चेकोस्लोवाकिया है। "यह उपन्यास द्वितीय समरोत्तर यूरोप के जीवन में उत्पन्न होने वाले अकेलेपन, निरर्थकता और विसंगति की पहचान कराता है। इसके लिए लेखक रायना जैसी पति-परित्यक्ता नारी को केंद्र में रखा है।" (रामदरश मिश्र, हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, पृ. 166)। गिरिराज किशोर के उपन्यास 'लोग' का शीर्षक पढ़कर यह समझना स्वाभाविक है कि यह जनसामान्य की कथा है, लेकिन 1966 में प्रकाशित इस उपन्यास के केंद्र में कुछ विशिष्ट लोग हैं जो भारतीय स्वाधीनता-प्राप्ति की संभावना के समय असुरक्षा अनुभव करते हुए अपने छूटते हुए वर्तमान और अदृश्य भविष्य के बीच लटक रहे थे।

1973 में प्रकाशित भीष्म साहनी कृत 'तमस' भारत विभाजन से संबंधित कटु यथार्थ का चित्रण है। इसमें भारत विभाजन के कारणों को दर्शाया गया है। अंग्रेजी सत्ता की षड्यंत्रकारी नीति पर से पर्दा हटाया गया है। सत्ता नहीं चाहती कि हिंदू और मुसलमान के बीच सद्भावनापूर्ण वातावरण हो। अपने स्वार्थ वृत्ति को तृप्त करने के लिए शासकों द्वारा फेंकी गई चिंगारी को राजनेता धधका रहे थे।

1970 में प्रकाशित गिरिराज आस्थाना कृत 'धूप छाहीं रंग' उपन्यास दो भागों में प्रकाशित महाकाय उपन्यास है। पहले खंड में युद्ध की विभीषिका है तथा दूसरे में शांत सुविधापूर्ण जीवन। जगदंबा प्रसाद दीक्षित का 'मुर्दाघर' (1974) बंबई हिंदी का एक उत्तम उदाहरण है। इसमें उन्होंने बंबई की झोंपड़ी में रहने वाली अनेक स्त्रियों की यातनामय कथा है। इसी प्रकार 'यह भी नहीं' (1976, महीप सिंह) बंबई के मध्यवर्गीय जीवन से संबंधित है।

राही मासूम रज़ा कृत 'कटरा बी आर्ज़ू' (1979) में आपातकाल की घटनाओं और प्रभावों का चित्रण है। विष्णु प्रभाकर ने 'कोई तो' (1980) में मध्यवर्ग की यौन नैतिकता का प्रश्न उठाया है। इनके अतिरिक्त 'धुआँ' (1976, अमृतराय), 'मृगान्तक' (गंगा प्रसाद विमल), 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' (कमलेश्वर), 'कुरु

कुरु स्वाहा' (मनोहर श्याम जोशी), 'लाल-पीली जमीन' (गोविंद मिश्र) आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास

साहित्यकार इतिहासकार की भाँति सभी चीजों को स्थूल रूप से अंकित करता, बल्कि वह ऐतिहासिक परिवेश को प्रस्तुत करता है। साथ ही कल्पना का समावेश भी करता है। वृंदावन लाल वर्मा के 'कचनार', 'विराट की पद्मिनी', 'झांसी की रानी', 'मृगनयनी' इसी श्रेणी के उपन्यास हैं। भगवती चरण वर्मा के उपन्यास 'चित्रलेखा' में पाप-पुण्य की परिभाषा को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर उकेरा गया है। राहुल सांकृत्यायन के ऐतिहासिक उपन्यास 'सिंह सेनापति' (1947) का कथानक बौद्ध काल का है। चतुरसेन शास्त्री के 'वैशाली की नगरवधू' (बुद्धकालीन गणतंत्र की व्यवस्था), 'वयं रक्षामः' और 'सोमनाथ' (मोहम्मद गज़नवी के आक्रमण की घटना) तीन ऐतिहासिक उपन्यास हैं। यशपाल कृत 'दिव्या' (1945) एक ऐतिहासिक कल्पना मात्र है। इस उपन्यास में उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि "मनुष्य ही श्रेष्ठ है और वह भोक्ता नहीं, कर्ता है।" हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत 'वाणभट्ट की आत्मकथा' (1946) आत्मकथात्मक पद्धति पर लिखा गया उपन्यास है। इसके कुछ ही पत्र ऐतिहासिक हैं जैसे बाण, हर्षवर्धन, कृष्णवर्द्धन, शीलभद्र, राज्यश्री और जयंत भट्ट। घटनाएँ काल्पनिक होती हुई भी उस युग और समाज के अनुरूप हैं। इनके अतिरिक्त 'चारुचंद्र लेख' (1963), 'पुनर्नवा' (1972) भी द्विवेदी के ऐतिहासिक उपन्यास हैं। 'मुरदों का टीला' (1948, रांगेय राघव) में मोहनजोदाडो की संस्कृति और सभ्यता को आधार बनाया गया है। 'मानस का हँस' (अमृतलाल नागर) में तुलसी के जीवन पर आधारित उपन्यास।

आंचलिक उपन्यास

आंचलिक उपन्यास में अंचल ही नायक होता है। अपने जनपद की विशेषताओं और वहाँ के जीवन से संबंधित घटनाओं को आंचलिक उपन्यासकार अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करता है। रामदरश मिश्र कहते हैं कि "आंचलिक उपन्यास का एक विशिष्ट अर्थ है और वह एक प्रकार की अनिवार्यता की उपज है। आंचलिक उपन्यास तो अंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है।" (हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, पृ. 225)। नागार्जुन के उपत्यासों की कया-भूमि मिथिला है।

रामदरश मिश्र नागार्जुन के सारे उपन्यासों को आंचलिक कहते हैं। नागार्जुन का पहला उपन्यास 'रतिनाथ की चाची (1948) है। गौरी की यातना, ग्रामीण जीवन की सामाजिक विषमता, संकीर्ण मानसिकता आदि को बखूबी दिखाया है। 'बलचनमाँ' (1952) इनका बहुचर्चित उपन्यास है। इसमें निम्न्नवर्गीय किसान पुत्र की यातनामय जीवनगाथा है। 'नयी पौध' (1954) में यह दिखाया गया है कि सौरठ मेले में बहुत से वर एकत्र होते हैं और लोग वहाँ जाकर अपनी लड़कियों के लिए वर खोजते हैं। पितृहीन बिसेसरी का नामा उसके लिए एक साठ सालू के बूढे को वर के रूप में चुनता है। लेकिन गाँव की नयी पौध के लोग इसका विरोध करते हैं। वाचस्पति नामक एक सोशलिस्ट युवक उससे विवाह कर्ता है। 'बाबा बटेसरनाथ' (1954) में एक बूढ़ा बरगद जैकिसुन से गाँव की कई पीढ़ियों की कहानी सुनाता है। 'दुखनोचन' (1957) में मध्यवर्गीय समस्याओं का चित्रण है। 'वरुण के बेटे' (1957) में मछुआरों की जीवन कथा है।

'मैला आँचल' (1954, फणीरनाथ रेणु) में व्यंग्य शैली में अंचल विशेष की कथा का सजीव चित्रण किया गया है। जनता का भय, गाँव के नेताओं के चरित्र, उनका पारस्परिक विरोध, लोगों के बदलते भाव, अवसरवादिता, मूल्य परिवर्तन, राजनैतिक मूल्यों में बिखराव, भूमिहीन संथालों का संघर्ष, अराजकता आदि अनेक घटनाओं का चित्रण है।

आंचलिक उपन्यासों की परंपरा में 'सागर, लहरें और मनुष्य' (1955, उदयशंकर भट्ट), 'कब तक पुकारूँ' (1957, रांगेय राघव), 'ब्रह्मपुत्र' (1956, देवेंद्र सत्यार्थी), 'हौलदार' (1960, शैलेश मटियानी), 'जंगल के फूल' (1960, राजेंद्र अवस्थी) आदि उल्लेखनीय हैं।

स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्न

1 समकालीन हिंदी उपन्यास को लिखिये ।

---

2 हिंदी के प्रथम उपन्यास को लिखिये

1.8 समकालीन हिंदी उपन्यास

1960 के बाद भाषा-शैली और कथ्य की दृष्टि से हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास होने लगा। 1961 में रामदरश मिश्र का 'पानी का प्राचीर' प्रकाशित हुआ। इसमें स्वाधीनता प्राप्ति तक की कहानी है। 1968 में प्रकाशित 'आधा गाँव' (राही मासूम रज़ा) में स्वाधीनता के समय होने वाले बटवारे और पाकिस्तान की निर्मिती के परिप्रेक्ष्य में मुसलमानों की मानसिकता का चित्रण है। रामदरश मित्र यह कहते हैं कि यदि गंगौली गाँव को यदि भारत का प्रतीक माना जाए तो यह कहा जा सकता है कि लोग भारतीय होने के स्थान पर हिंद या मुसलमान या बन्य संप्रदाय के बनते जा रहे हैं। यह रिपोर्ताज शैली में लिखा गया उपन्यास है।

श्रीलाल शुक्ल कृत 'राग दरबारी' (1968) में यह देखा जा सकता है कि राजनीति ने भारतीय गाँव की जिंदगी को तोड़ दिया है। इसमें चित्रित दरवार वैद्य जी का है। सारी घटनाओं के केंद्र में वैद्य जी ही है। शिवप्रसाद सिंह के सामने भी यही गाँव था। 'अलग-अलग वैतरणी' का गाँव अधपका है क्योंकि उसमें जड़-चेतन, होने-न होने, विवेक-अविवेक का द्वंद्व शेष है। 'जल टूटता हुवा' (1969, रामदरश मित्र) में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद का गाँव है। 'पानी के प्राचीर' में, स्वाधीनता पूर्व का गाँव है। तो 'जल टूटता हुबा' में उसके बाद का।

बालशौरि रेड्डी कृत 'जिंदगी की राह (1962), 'मग्र सीमाएँ' (1965), 'प्रकाश और परछाई' (1968), 'प्रोफेसर (1971) और 'दावानल' (1979) में दक्षिण भारत के ऐतिहासिक और समकालीन जीवन को देखा जा सकता है। उनका पहला उपन्यास 'शवरी' 1959 में प्रकाशित हुआ। मोहन राकेश (अँधेरे बंद कमरे), मधुरेश (कस्तूरी), उषा प्रियंवदा (पचपन खंभे लाल दीवारें), चंद्रकिरण सोनरेक्सा (चंदन चाँदनी), मन्नू भण्डारी (आपका बंटी), हजारी प्रसाद द्विवेदी (अनामदास का पोथा), महरुन्निसा परवेज (अकेला पलाश), विवेकी राय (समर शेष है), मृदुला गर्ग (कठमुलाव), प्रभा खेतान (कलि-कथा वाया बाइपास), गिरिराज किशोर (पहला गिरमिटिया), कृष्णा सोबती (समय सरगम), चित्रा मुद्दल (आवों, पोस्ट बॉक्स नं.

203 नाला मोपारा), भगवानदास मोरवाल (बावल तेरा देश में), मैत्रेय पुष्पा (कही ईसुरी फाग), विद्यावती दुबे (शेफाली के फूल), अनामिका (दस द्वारे का पिंजरा), रणेन्द्र (ग्लोबल गाँव का देवता), महुआ माजी (मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ), मोहनदास नैमिशराय (मुक्ति पर्व), जगदीश चंद्र (नरक कुंड में बास), नासिरा शर्मा (ठीकरे की मंगनी), बदिउज्जमों (छाको की वापसी), अब्दल बिस्मिल्लाह (मखडा क्या देखें), असगर वजाहत (सात आममान) निर्मला भराडिया (गुलाम मंडी), नीरजा माधव (यमदीप), गीतांजली श्री (रेत समाधि) आदि उपन्यासकारों ने पर्यावरण, स्त्री, दलित, वृद्ध, अल्पसंख्यक, आदिवासी, किन्नर आदि से संबंधित पहलुओं को उपन्यास के माध्यम से उजागर किया है।

'कठगुलाब', 'अर्धनारीश्वर', 'बाबल तेरा देश में', 'कही ईसुरी फाग', 'शेफाली के फूल', 'ठीकरे की मंगनी', 'तिनका तिनके पास', 'बात एक औरत की', 'मिलजुल मन' आदि उपन्यास स्त्री विमर्श की दृष्टि से महत्वपूर्ण है तो 'समय सरगम', 'गिलीगडु' वृद्धावस्था दृष्टि से। 'नरक कुंड में बास', 'मुक्ति पर्व', 'छप्पर' आदि दलित विमर्श की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं तो 'रेत समाधि' समाज की स्त्री से उम्मदें, उसका तय रास्ते से भटकने पर उपजने वाला टकराव, पितृसत्ता, मस्कुलिनिटी, स्त्री विमर्श, राजनीति, पर्यावरण, सांप्रदायिकता, ट्रांस्जेंडर ईशूज़, ब्रेन ड्रेन, विभाजन, भारत-पाकिस्तान राजनीति आदि कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

1.9 सार- संक्षेप

छात्रो ! अब तक आपने हिंदी उपन्यास के उद्भव और विकास-यात्रा का अध्ययन कर चुके हैं। इस अध्ययन के आधार यह कहा जा सकता है कि हिंदी उपन्यास साहित्य आधुनिक युग का देन है। प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास साहित्य को प्रौढ़ावस्था में पहुँचा दिया। शिल्प और शैली की दृष्टि से उपन्यासकार हमेशा ही नए-नए प्रयोग करते रहे हैं। और आज भी यह क्रम जारी है।

1.10 मुख्य शब्द

1. अभिजात = कुलीन, उच्च
2. आयाम = विविध पहलू

3. कसौटी = जाँचने-परखने का मानदंड
4. नवजागरण = किसी युग में विचार अथवा व्यवहार के स्तर पर होने वाली चेतना
5. नास्तिक = वह व्यक्ति जिसकी ईश्वर आस्था न हो
6. मनोविज्ञान = वह शास्त्र जिसमें मानव मन की अवस्थाओं का अध्ययन होता है
7. समन्वय = सम्मिलित होने की क्रिया
8. हेतुवादी = हर बात में तर्क करने वाला

1.7 स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1 समकालीन हिंदी उपन्यास:- 1960 के बाद भाषा-शैली और कथ्य की दृष्टि से हिंदी उपन्यास साहित्य का विकास होने लगा। 1961 में रामदरश मिश्र का 'पानी का प्राचीर' प्रकाशित हुआ। इसमें स्वाधीनता प्राप्ति तक की कहानी है। 1968 में प्रकाशित 'आधा गाँव' (राही मासूम रज़ा) में स्वाधीनता के समय होने वाले बटवारे और पाकिस्तान की निर्मिती के परिप्रेक्ष्य में मुसलमानों की मानसिकता का चित्रण है। रामदरश मित्र यह कहते हैं कि यदि गंगौली गाँव को यदि भारत का प्रतीक माना जाए तो यह कहा जा सकता है कि लोग भारतीय होने के स्थान पर हिंद या मुसलमान या बन्य संप्रदाय के बनते जा रहे हैं। यह रिपोर्ताज शैली में लिखा गया उपन्यास है।

2 हिंदी के प्रथम उपन्यास :- हिंदी में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग 1875 में हुआ था। इसका प्रयोग सबसे पहले 1862 में बांग्ला के भूदेव मुखोपाद्याय ने किया था। इसे बंकिमचंद्र चटर्जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। 'रानी केतकी की कहानी' लिखे जाने के लगभग सत्तर वर्ष के बाद दूसरी मौलिक गद्य कथा 'देवरानी जेठानी की कहानी' प्रकाशित हुई।

इसके बाद ही मौलिक गद्य कृतीयों का लेखन और प्रकाशन शुरू हुआ। 'वामा शिक्षक' (1872 - ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय), निस्सहाय हिंदू (1881, प्रकाशन 1890, राधाकृष्ण दास), परीक्षा गुरु (1882 लाला श्रीनिवास दास), 'भाग्यवती' (1877, प्रकाशन - 1887, श्रद्धाराम फिल्लौरी) आदि कुछ उल्लेखनीय

रचनाएँ हैं। हिंदी का पहला उपन्यास किसे माना जाए, इसके संबंध में मतभेद है। गोपाल राय 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) को हिंदी का पहला उपन्यास का दर्जा देते हैं तो कुछ विद्वान 'वामा शिक्षक', 'निस्सहाय हिंदू' को मानते हैं तो कुछ 'भाग्यवती' को हिंदी का प्रथम उपन्यास मानते हैं। लेकिन रामचंद्र शुक्ल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में यह लिखा है कि "अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले पहल हिंदी में लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' ही निकला था।" उल्लेखनीय है कि गोपाल राय ने 1966 में 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) का संपादन-प्रकाशन करते हुए पर्याप्त ठोस तर्क देकर इसे हिंदी का पहला उपन्यास सिद्ध किया है। उनके अनुसार “विषय, शिल्प और भाषा चाहे जिस दृष्टि से देखा जाए .... 'देवरानी जेठानी की कहानी' विशिष्ट है। अतः हिंदी उपन्यास का आरंभ यदि किसी पुस्तक से माना जा सकता है तो इसी से।" (हिंदी कथा साहित्य और उनके विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव, । 1886 में बालकृष्ण भट्ट के 'नूतन ब्रह्मचारी' का प्रकाशन हुआ था। इसे प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास होने का श्रेय प्राप्त है तथा बालकृष्ण भट्ट को प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार।

1.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

- प्रेमचंद, म. (2017). *गोदान.* नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन।
- खत्री, द. (2018). *चंद्रकांता.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
- सिंह, आर. (2020). हिंदी कथा साहित्य: एक ऐतिहासिक विश्लेषण। पटना: साहित्य प्रकाशन।
- शुक्ल, ह. (2022). *आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास.* लखनऊ: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- तिवारी, एन. (2024). हिंदी कथा साहित्य की विशेषताएँ। बनारस: भारतीय साहित्य संघ।

1.13 अभ्यास प्रश्न

1. हिंदी कथा साहित्य के विकास में मुंशी प्रेमचंद का योगदान विस्तार से समझाइए।

2. चंद्रकांता उपन्यास हिंदी साहित्य के विकास में किस प्रकार सहायक रहा?
3. भारतेन्दु युग और प्रेमचंद युग के कथा साहित्य की विशेषताओं की तुलना कीजिए।
4. आधुनिक हिंदी कहानी के प्रमुख रचनाकारों और उनकी रचनाओं का विवरण प्रस्तुत कीजिए।
5. हिंदी कथा साहित्य में यथार्थवाद के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

इकाई 2

हिन्दी कहानी उद्‌भव और विकास

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्‌देश्य
2.3 मूल पाठ: हिंदी कहानी: उद्‌भव और विकास
2.4 प्रेमचंदपूर्व हिंदी कहानी
2.5 प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी
2.6 प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी
2.7 विभिन्न कहानी आंदोलन
2.8 वर्तमान परिदृश्य
2.9 सार - संक्षेप
2.10 मुख्य शब्द
2.11 स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
2.12 संदर्भ ग्रंथ सूची
2.13 अभ्यास प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

छात्रो! हम सब दादा-दादी, नाना-नानी आदि से कहानी सुनकर ही बड़े हुए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। कहानी सुनना और गढ़ना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। उसमें कल्पना तत्व का समावेश होता ही है। बचपन में हम सब परियों और जादूगरों की कहानियाँ सुनकर बहुत खुश होते थे। कहानी कहने का ढंग भी अलग था। एक जमाने की बात है, एक देश में एक राजा रहता था, उसके पास आसमान में उड़ने वाला सफेद घोड़ा था, आदि आदि आदि। लेकिन धीरे-धीरे समय के साथ-साथ कहानी कहने की शैली बदलने लगी। कल्पना के स्थान पर यथार्थ का समावेश होने लगा। आप इस अध्याय में हिंदी कहानी के उद्‌भव और विकास यात्रा का अध्ययन करेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र निम्नलिखित कार्यों में सक्षम हो सकेंगे:

1. हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास के बारे में समझ पाएंगे।
2. कहानी की विकास यात्रा और इसके प्रमुख परिवर्तनों को पहचान सकेंगे।
3. हिन्दी कहानी के विभिन्न युगों और उनके प्रभावों का विश्लेषण कर सकेंगे।
4. कहानीकारों के योगदान और उनके विचारों को समझ सकेंगे।
5. हिन्दी साहित्य में कहानी के स्थान और उसकी सामाजिक भूमिका को जान सकेंगे।

2.3 मूल पाठ: हिंदी कहानी: उद्भव और विकास

छात्रो! हिंदी कहानी के उद्भव और विकास में प्राचीन पुराकथाओं और अनेक लोक कथाओं का योगदान उल्लेखनीय है। भारतीय समाज में कहानी का अस्तित्व काफी पुराना है। हिंदी साहित्य के इतिहास को ध्यान से देखेंगे तो हम यह पाएँगे कि आधुनिक काल में गद्य के विकास के साथ ही कहानी का विकास भी होने लगा। इस दृष्टि से भारतेंदु युग को आरंभिक बिंदु कहा जा सकता है। आइए, हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि हिंदी कहानी एक स्वतंत्र विधा के रूप में कैसे विकसित हुई।

हिंदी कहानी के उद्भव और विकास यात्रा को जानने और समझने के लिए प्रेमचंद को कसौटी के रूप में अपनाया जाता है क्योंकि प्रेमचंद की कहानियों में आधुनिक हिंदी कहानी के तमाम तत्व विद्यमान हैं। अतः इस अध्ययन को प्रेमचंदपूर्व हिंदी कहानी, प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी और प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी के रूप में विभाजित करके हम अध्ययन करेंगे। साथ ही समकालीन परिदृश्य में विभिन्न कहानी आंदोलनों के बारे में चर्चा भी करेंगे।

2.4 प्रेमचंदपूर्व हिंदी कहानी

हिंदी कहानी को बीसवीं सदी का देन कहा जाता है। लेकिन उससे पहले अर्थात उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भी अनेक ऐसी रचनाएँ लिखी गईं जिनमें कहानी

के तत्व मिलते हैं। लेकिन इस युग में कलात्मक कहानी का आरंभ नहीं हुआ। छात्रो ! आधुनिक हिंदी खड़ीबोली गद्य के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज (1800) की भूमिका को नहीं भुलाया जा सकता है। जॉन गिल क्राइस्ट के निर्देशन में उर्दू और हिंदी गद्य पुस्तकें लिखने की व्यवस्था की गई। उससे भी पहले कुछ पुस्तकें लिखी जा चुकी थीं। इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' (1803) लिखी जा चुकी थी। इतना ही नहीं, कहानी के नाम पर कुछ प्रकाशित संग्रह अवश्य प्राप्त हुए जो इस प्रकार हैं - मुंशी नवल किशोर द्वारा संपादित 'मनोहर कहानी' (1880) में संकलित एक सौ कहानियाँ, राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद कृत 'राजा भोज का सपना' (1886) और चंडीप्रसाद सिंह कृत 'हास्य रत्न' (1886), अंबिकादत्त व्यास कृत 'कथा-कुसुम-कालिका' (1888) आदि लोक प्रचलित, शिक्षा, नीति या हास्य प्रधान कथाएँ हैं। गीपाल राय ने अपनी पुस्तक 'हिंदी कहानी का इतिहास' में इस तथ्य को उजागर किया है कि "1871 में रेवरेंड जे. न्युटन रचित लगभग 2400 शब्दों की कथा 'जमींदार का दृष्टांत' प्रकाशित हुई थी। राजेंद्र गढ़वालिया ने इसे हिंदी की प्रथम कहानी मानने की सिफारिश की है, जिसे वेदप्रकाश अमिताभ का भी समर्थन प्राप्त है।"

कहानी के नाम पर जिन स्वप्न-कथाओं का उल्लेख किया गया है, वे वस्तुतः कथात्मक निबंध हैं। इनका आरंभ भले ही कथात्मक पद्धति में हुआ हो लेकिन आगे चलकर इनमें तत्कालीन सामाजिक विकृतीयों का वर्णन पाया जाता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र और बालकृष्ण भट्ट की स्वप्न कथाएँ कहानी और निबंध के बीच की रचनाएँ हैं। कहानियों के अभाव में पाठक लल्लू लाल के 'बैताल पच्चीसी', 'सिंहासन बत्तीसी' की कहानियों, लोककथाओं आदि से अपनी मानसिक तुष्टि कर लेता था। इस संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन उल्लेखनीय है "अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाओं में जैसी छोटी-छोटी आख्यायिकाएँ या कहानियाँ निकला करती हैं, वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' के नाम से बंगभाषा में चल पड़ी थीं। ये कहानियाँ जीवन के बड़े मार्मिक और भावव्यंजक खंडचित्रों के रूप में होती थीं। द्वितीय उत्थान की सारी प्रवृत्तियों का आभास लेकर प्रकट होने वाली 'सरस्वती' पत्रिका में इस प्रकार की छोटी कहानियों के दर्शन होने लगे।" (हिंदी साहित्य का इतिहास)। इससे यह स्पष्ट होता है कि 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के पूर्व कलात्मक कहानियाँ अस्तित्व में नहीं थीं।

'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन 1900 में प्रारंभ हुआ। इसके साथ ही हिंदी कहानी का जन्म माना जाता है। वस्तुतः आरंभ में लिखी गई कहानियों पर शेक्सपियर के नाटकों, लोककथाओं, बांग्ला कहानियों, संस्कृत नाटकों आदि का प्रभाव दिखाई देता है। आरंभिक कथा लेखकों में किशोरीलाल गोस्वामी, माधवप्रसाद मिश्र, बंगमहिला, रामचंद्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, वृंदावनलाल वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं। किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी 'इंदुमती' (1900) सरस्वती में प्रकाशित हुई। यह कहानी शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' नाटक के आधार लिखी गई थी। इसी वर्ष माधवप्रसाद मिश्र की कहानी 'मन की चंचलता' सुदर्शन में प्रकाशित हुई। माधवराव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' (1901) 'छत्तीसगढ़ मित्र' में प्रकाशित हुई। भगवानदास की कहानी 'प्लेग की चुड़ैल' (1902) सरस्वती में प्रकाशित हुई। यह वास्तविक चित्र को प्रस्तुत करने वाली कहानी थी। बाद में रामचंद्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय (1903) और बंगमहिला की 'दुलाईवाली' (1907), वृंदावनलाल वर्मा की 'राखीबंध भाई'

(1909) प्रकाशित हुईं। हिंदी की प्रथम कहानी के संदर्भ में विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वान इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' को हिंदी की पहली कहानी माना तो कुछ लोगों ने राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद कत 'राजा भोज का सपना' को माना। कव्य अन्य विद्वानों ने किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती', माधवराव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी', बंगमहिला की 'दुलाईवाली' तथा रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' को हिंदी की पहली कहानी माना। वस्तुतः माधवराव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिंदी की पहली कहानी होने का गौरव प्राप्त है।

भाषा की दृष्टि से प्रेमचंदपूर्व हिंदी कहानियों में वैसी प्रौढ़ता नजर नहीं आती जैसी प्रेमचंद युग की कहानियों में आती है। यदि कहें कि हिंदी कहानी का वास्तविक आरंभ प्रेमचंद की कहानियों के द्वारा ही हुआ है तो गलत नहीं होगा। छात्रो! आगे हम प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी की जानकारी प्राप्त करेंगे।

स्व प्रगति परीक्षण प्रश्नों

1 मनोवैज्ञानिक कहानी को लिखिए ।

---

2 प्रगतिवादी कहानी को लिखिए ।

2.5 प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी

वस्तुतः 1915 से प्रेमचंद युग का आरंभ माना जाता है। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी साहित्य को तिलिस्म और जादू की दुनिया से मुक्त किया था। उन्हें युग-निर्माता के रूप में जाना जाता है। 1904 से 1916 तक प्रेमचंद धनपत राय के नाम से उर्दू में लिखते थे। बंग-भंग के साथ भारत में राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ। इसके परिणाम स्वरूप स्वाधीनता की भावना प्रबल हुई। मोटे तौर पर इस युग की कहानियों को दो स्कूलों में बाँट कर देखा जाता है प्रेमचंद स्कूल और प्रसाद स्कूल। ग्राम्य समाज, सामंती शोषण, अन्याय, सामाजिक असमानता, रूढ़िवादिता और अंधविश्वास आदि प्रेमचंद स्कूल की कहानियों की मुख्य चिंता के केंद्र में थे। गौरवशाली अतीत, द्वन्द्वात्मकता आदि प्रसाद स्कूल कहानियों में दिखाई देते हैं। प्रसाद स्कूल की कहानियों की प्रकृती जहाँ मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद है, वहीं प्रेमचंद स्कूल कहानियों की प्रकृती सामाजिक यथार्थवाद है।

स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेमचंद का योगदान अप्रतिम है। उनकी अधिकांश कहानियों में राजनीतिक आंदोलनों की छाया देखी जा सकती है। अस्पृश्यता का खंडन, बाल विवाह और दहेज प्रथा का विरोध, विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा का समर्थन, शराब बंदी आदि को प्रेमचंद की कहानियों में प्रमुख रूप से देखा जा सकता है। उन्हें यह पता था कि जब तक देश में व्याप्त कुरीतियों तथा विसंगतियों का निर्मूलन नहीं होगा तब तक देशवासियों को स्वाधीनता संग्राम के लिए एकत्रित करना असाध्य है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से लोगों में चेतना जगाई। प्रेमचंद की 'सोजेवतन' में संकलित पाँच कहानियों में 'दुनिया का सबसे अनमोल

रत्न', 'शेख मखमूर', 'यही मेरा वतन है', 'सांसारिक प्रेम और देश प्रेम' राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित कहानियाँ हैं। 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' शीर्षक कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने यह संदेश दिया कि "खून का वह आखिरी क़तरा जो वतन की हिफाजत में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज है।' वस्तुतः प्रेमचंद मनुष्यता को कायम करने की चेष्टा की। मधुरेश की मान्यता है कि "प्रेमचंद की शुरू की कहानियाँ चरित्र पर जोर देते हुए भी मूल रूप से घटना-बहुल कहानियाँ हैं जिनमें कभी-कभी तो एक साथ इतनी घटनाओं का ढेर लगा दिया जाता है जो आज ही नहीं, उस समय भी एक अच्छे-खासे उपन्यास के लिए भी कुछ ज्यादा ही मानी जानी चाहिए। इन कहानियों में संयोग और असाधारण रूप से सरलीकृत ढंग से हृदय परिवर्तन को लेकर भी उनका आग्रह आसानी से देखा जा सकता है।" (मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, पृ.23)। प्रेमचंद ने ऐसे पात्र या घटना को चुना जो हृदय परिवर्तन करके आदर्श स्थापित करने में सक्षम हो। इतना ही नहीं उन्होंने पशुबल पर आत्मबल की विजय दर्शाई है। 'मैकू' जैसी कहानियों में उन्होंने महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों को दिखाया है। बिना शोर के प्रेमचंद मूल्यों को स्थापित करते हैं।

प्रेमचंद हिंदू समाज और मुस्लिम समाज को अलग-अलग नहीं मानते थे। अलगाव को दूर करके शोषण मुक्त समाज निर्मित करना उनका लक्ष्य है। रामविलास शर्मा के अनुसार प्रेमचंद जनता को मशाल दिखाने वाले साहित्यकार थे। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद अपने समय के सामाजिक जीवन को एक नई गति और एक नई दिशा प्रदान करने वाले साहित्यकार हैं। वे न ही सामाजिक जड़ता को मानते थे और न ही अतीत की ओर लौटना चाहते थे। वे आदर्श के साथ यथार्थ की स्थितियों पर बल देने वाले साहित्यकार थे। उन्होंने पूस की रात, बड़े घर की बेटी, मंदिर और मस्जिद, पंच परमेश्वर, नरक का मार्ग, स्त्री और पुरुष, नैराश्य लीला, बाँका जमींदार, स्वर्ग की देवी, ईदगाह, कफन, नमक का दारोगा, घासवाली, पत्नी से पति, ठाकुर का कुआँ आदि अनेक कहानियों के माध्यम से पाठकों के समक्ष यथार्थ को प्रस्तुत किया। "उनकी कहानियों का रचना संसार अधिकांश रूप में छल-छद्म से मुक्त भोले, निश्चल और आस्थावान लोगों का संसार है।" (मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, पृ. 26)। यदि प्रेमचंद के कुछ पात्र बहक भी जाते हैं तो तुरंत ही अपनी गलती स्वीकार करके पश्चाताप करते हैं।

उनकी कहानियों में राष्ट्रीय भावना, देश प्रेम, सामाजिक सोद्देश्य, सांप्रदायिक सद्भाव आदि गुणों को रेखांकित किया जा सकता है।

प्रेमचंद युगीन कहानिकारों में चंद्रधर शर्मा गुलेरी, जयशंकर प्रसाद, उपेंद्रनाथ अश्क, सुदर्शन, चतुरसेन शास्त्री, वृंदावनलाल वर्मा, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, गोपालराम गहमरी, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि उल्लेखनीय हैं। नल उर्दू पनि

आधुनिक हिंदी कहानी की दृष्टि से देखा जाए तो गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' (1915) उल्लेखनीय है। इस कहानी में एक ओर यथार्थ की सघनता है तो दूसरी प्रेम तथा आदर्श। इसमें कहानीकार ने आदर्श प्रेम को दर्शाया है। कहीं भी उच्छृंखलता नहीं है। प्रेम और कर्तव्य दोनों का सम्मिश्रण देखा जा सकता है। लहनासिंह और सूबेदारनी के माध्यम से उन्होंने उदात्त प्रेम और कर्तव्य बोध को दर्शाया है। गुलेरी ने अपने जीवन काल में सिर्फ तीन ही कहानियाँ लिखी थीं- 'सुखमय जीवन', 'बुद्ध का काँटा' और 'उसने कहा था', लेकिन 'उसने कहा था' के कारण वे विख्यात हुए।

जयशंकर प्रसाद की कहानियों में वस्तु और शिल्प के स्तर पर छायावादी प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है। पुरस्कार, आकाशदीप, ममता, आंधी आदि में गीति-संवेदना है तो निर्वेद, आत्मकरुणा आदि में दार्शनिक धरातल है। उनकी कहानियों में एक ओर द्वंद्व और संघर्ष को देखा जा सकता है तो दूसरी ओर राष्ट्रीय भावना और सांस्कृतिक जागरण को।

उपेंद्रनाथ अश्क ने निम्नमध्य वर्ग के जीवन को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। चारा काटने का मशीन, पहेली, जुदाई की शाम के गीत, पिंजरा आदि इनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। इनकी कहानियाँ मुख्य रूप से चरित्र प्रधान और यथार्थवादी हैं। इनकी कहानियों में सामाजिक तथा वैयक्तिक जीवन की समस्याओं को देखा जा सकता है। सुदर्शन की दृष्टि सुधारवादी है। ये भी प्रेमचंद और अश्क की तरह हिंदी और उर्दू में लिखते थे। ये आदर्शोन्मुख यथार्थवादी साहित्यकार थे। इनकी कहानियों में संन्यासी, बात अठन्नी की, अँधेरी दुनिया आदि उल्लेखनीय हैं।

चतुरसेन शास्त्री का अधिकांश लेखन ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित है। अक्षत, रजकण, वीर बालक, मेघनाद, सीताराम, सिंहगढ़ विजय, वीरगाथा, लम्बग्रीव,

दुखवा मैं कासों कहूं सजनी, कैदी, आदर्श बालक, सोया हुआ शहर, कहानी खत्म हो गई, धरती और आसमान आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं।

वृंदावनलाल वर्मा ऐतिहासिक कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके कथा का मुख्य आधार बुन्देलखंड का मध्यकालीन इतिहास है। दबे पाँव, मेढ़क का ब्याह, अम्बपुर के अमर वीर, अँगूठी का दान, शरणागत, कलाकार का दंड, तोषी आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं।

विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक का दृष्टिकोण आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है। उनकी अधिकांश कहानियों में पारिवारिक जीवन की समस्याओं एवं उनके समाधान को देखा जा सकता है। रक्षाबंधन, कल्प मंदिर, चित्रशाला, प्रेम प्रतिज्ञा, मणि माला, कल्लोल आदि उल्लेखनीय हैं।

गोपालराम गहमरी को जासूसी लेखक के रूप में जाना जाता है। हम हवालात में, जासूस से मुलाकात, जासूस को धोखा, आँखों देखी घटना आदि कुछ प्रमुख कहानियाँ हैं। इन्होंने काशन भी किया लेकिन आर्थिक संकट के कारण यह बंद हो गया।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी को हिंदी साहित्य जगत में मास्टर जी के नाम से जाना जाता है। मूलतः निबंधकार के रूप में इन्होंने ख्याति अर्जित की। लेकिन कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, समालोचना, आत्मकथा आदि विधाओं में रचनाएँ की। अंजलि, झलमला, कमलावती आदि इनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

2.6 प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी

1936 के बाद के युग को प्रेमचंदोत्तर युग कहा जाता है। कहानी का विकास बहुत तेजी से होने लगा। एक ओर प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा का विकास हो रहा था तो दूसरी ओर प्रसाद की भाववादी मनोवैज्ञानिक परंपरा। ये कहानियाँ आगे चलकर प्रगतिवादी और मनोवैज्ञानिक कहानियों के रूप में जाने जाने लगे। इस युग में कहानी साहित्य अनेक धाराओं में विभाजित हुआ।

प्रगतिवादी कहानियाँ

इन कहानियों में यथार्थ की स्थितियों को देखा जा सकता है। इन कहानियों में विशेष रूप से समाज की विसंगतियों और विद्रूपताओं को कहानीकारों ने अपने

अनुभव के आधार पर अंकित किया है। वस्तुतः 1930 के आस-पास अर्थात छायावाद बाद एक नवीन सामाजिक चेतना से युक्त साहित्य का जन्म हुआ। यही धारा 1936 में प्रगतिशील अथवा प्रगतिवाद के नाम से अभिहित होने लगा। अंग्रेजी साहित्य में इसे प्रोग्रेसिव लिटरेचर कहा जाता है। पश्चिमी देशों में इसका प्रसार 1935 के आस-पास होने लगा जब ई. एम. फार्स्टर की अध्यक्षता में पेरिस में प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन नामक अंतरराष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन हुआ। भारत में इस संस्था का प्रवर्तन मुल्कराज आनंद सज्जाद जहीर ने किया था। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना लखनऊ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुई। तभी से प्रगतिशील साहित्य का प्रचार होने लगा। कालक्रम से यही प्रगतिवाद हो गया। यद्यपि 1936 में प्रगतिशील संघ की स्थापना हुई, लेकिन 1917 में रूस में साम्यवादी प्रशासन की स्थापना हुई। इसने देश चिंतकों, नेताओं और साहित्यकारों ओ आकर्षित किया। गणपतिचंद्र गुप्त के अनुसार "भारत में साम्यवादी दल की स्थापना सन 1918 में हो चुकी थी। सन 1924 में एस. ए. डांगे के संपादन में बंबई से साम्यवादी विचारों की पत्रिका 'सोशलिस्ट' का भी प्रकाशन होने लग गया था।" इस प्रकार में प्रातिशील लेखक संघ की स्थापना से पहले से ही साम्यवादी विचारों के प्रचार-प्रसार को देखा जा सकता है।

1930 तक आते-आते अनेक छायावादी कवि भी इन विचारों से प्रभावित होने लगे। प्रगतिशील साहित्य की रचना और प्रचार में प्रेमचंद द्वारा संपादित 'हंस' की भूमिका निर्विवाद है। प्रगतिवादी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं रूढ़ि विरोध, मानवतावाद का स्वर, क्रांति का स्वर, शोषितों के प्रति सहानुभूति, पूँजीपतियों का विरोध। इस प्रगतिशील आंदोलन के कारण किसान, मजदूर और मध्यवर्ग से पढ़े-लिखे युवा साहित्यकार सामने आए। ऐसे लेखकों में नागार्जुन, राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, उपेंद्रनाथ अश्क, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह सुमन, रामविलास शर्मा, रांगेय राघव, अमृतराय, भीष्म साहनी, मार्कंडेय आदि उल्लेखनीय हैं। इन लेखकों में यशपाल का स्थान प्रमुख है।

यशपाल राजनीति के क्षेत्र मार्क्सवाद के समर्थक थे तथा साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद के। वे साधारण जनता को पीड़ित और शोषित समझते थे। वे इस अन्याय से मुक्ति के उपाय के रूप में साम्यवाद की द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को मानते थे। 1939 में उनकी कहानियों का संकलन 'पिंजरे की उड़ान' नाम से

प्रकाशित हुआ। 'परलोक' शीर्षक कहानी भारतवासियों के अंधविश्वासों पर व्यंग्य करती है। 'शंबूक', 'नारद परशुराम संवाद', 'फूलो का कुर्ता', 'खच्चर और आदमी', 'उत्तराधिकारी', 'उत्तमी की माँ', 'महाराज का इलाज', 'परदा', 'काला आदमी' आदि कुछ प्रमुख कहानियाँ हैं जिनके माध्यम से उन्होंने सामाजिक कुरूपताओं को उजागर करके जनता को जागरूक करने का प्रयास किया।

मनोवैज्ञानिक कहानियाँ

प्रेमचंद युग के बाद कुछ साहित्यकार सामने ये जिन्होंने व्यक्ति मन को कहानी के केंद्र में रखा। इन कहानीकारों की रुचि सामाजिक समस्याओं पर न होकर व्यक्ति की मानसिक पीड़ा, उसका अंतद्वंद्व आदि में थी। मनुष्य की अवचेतन क्रियाओं और उसके कारण उत्पन्न मानसिक ग्रंथियों को लेकर कहानियों का सृजन किया गया। मनोवैज्ञानिक कहानियों में वातावरण का चित्रण प्रधान होता है। साथ ही स्वायत्त प्रेम, काम और कर्तव्य का संघर्ष आदि कुछ तत्वों को इन कहानियों में देख सकते हैं। मनोविश्लेषण ने एक दृष्टि के रूप में साहित्यकारों को आकर्षित किया। जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी और अज्ञेय की कहानियों को इस कोटि में रखा जा सकता है। जैनेंद्र की कहानियों में दार्शनिकता का प्रभाव भी दिखाई देता है। उनकी आरंभिक कहानियों का संग्रह है 'फाँसी'। 'पाजेब', 'एक रात' (गद्दर के बाद', 'जयसंधि'; 'रानी महामाया', 'नीलमदेश की राजकन्या', 'मास्टर जी' आदि उनकी प्रमुख कहानियों हैं। अज्ञेय की कहानियों में 'गैंगरीन', 'जिजीविषा', 'चिड़ियाघर', 'पहाड़ी जीवन', 'अलिखित कहानी', 'खितीन बाबू', 'रोज' आदि अज्ञेय की प्रमुख कहानियाँ हैं। प्रेमचंद ने जैनेंद्र को भारत का गोर्की कहा था।

2.7 विभिन्न कहानी आंदोलन

छात्रो! स्वतंत्रता के बाद कहानी साहित्य में अनेक बदलाव आए। हिंदी कहानी साहित्य के इतिहास में विभिन्न आंदोलनों का सूत्रपात हुआ। कुछ प्रमुख हिंदी कहानी आंदोलन इस प्रकार हैं - नई कहानी आंदोलन, साठोत्तरी अथवा अ-कहानी आंदोलन और अन्य आंदोलन। आइए! इन आंदोलन के बारे में चर्चा करेंगे।

नई कहानी आंदोलन

1950 के बाद कहानियों में नई प्रवृत्तियाँ उभरने लगीं। परिणाम स्वरूप 'नई कहानी' आंदोलन का उदय हुआ। यह भारतीय जनता की आकांक्षाओं और सपनों के साथ आगे बढ़ता गया। इसने नई अभिव्यक्तियों को स्थान दिया। यदि कहें कि नई कहानी प्रेमचंद की 'पूस की रात' और 'कफन' से सूत्र ग्रहण करके आगे बढ़ी तो गलत नहीं होगा। नई कहानी में प्रतीकात्मकता और बिंबात्मकता का महत्व बढ़ने लगा। कहानीकार यथार्थ को नए ढंग से चित्रित करने लगे। यह वस्तुतः समकालीन व्यवस्था के प्रति विद्रोह है। 'नई कहानी' संज्ञा का प्रयोग दुष्यंत कुमार ने अपने लेख 'नई कहानी परंपरा और प्रयोग' में पहली बार किया था। यह कल्पना पत्रिका में 1955 (जनवरी) में प्रकाशित हुआ था।

आजादी के साथ-साथ देश विभाजन की त्रासदी ने लोगों को झकझोर दिया। जहाँ देखें वहाँ लाशों का ढेर। भ्रष्टाचार चारों ओर पनपने लगा। नया औद्योगिक समाज पनपने लगा। उसने लोगों के सपनों को कुचल दिया। स्वार्थ सर्वोपरि हो गया। इन सब परिस्थितियों से संवेदनशील रचनाकार आहत हए। उन्हें यह महसूस होने लगा कि हर सिद्धांत झूठ है। कहानीकार ने इन परिस्थितियों में अनुभव को अभिव्यक्त करने लगा। यह उसकी स्वानुभूति थी। वह आपबीती को ही अभिव्यक्त करने लगा। उसका सुख-दुख कहानी का सुख-दुख बन गया। इसीलिए इस दौर की कहानी को 'नई' कहा गया है। 'जिंदगी और जॉक' (अमरकांत), 'गुलकी बन्नो' (धर्मवीर भारती), 'तीसरी कसम' (फनीश्वरनाथ रेणु), 'नन्हो' (शिवप्रसाद सिंह), 'बदबू' (शेखर जोशी), 'प्रेत-मुक्ति' (शैलेश मटियानी), 'भोलाराम का जीव' (हरिशंकर परसाई), "मच्छलियाँ' (उषा प्रियंवदा), 'खोई हुई दिशाएँ' (कमलेश्वर), 'मेरा दुश्मन' (कृष्ण बलदेव वैद), 'चीफ की दावत' (भीष्म साहनी), 'दूध और दवा' (मार्कंडेय) आदि इस दृष्टि से प्रमुख कहानियाँ हैं। इन कहानियों को पढ़ते समय हम इन पात्रों से घुलमिल जाते हैं। साधारणीकरण हो जाता है। इस दौर में मूल्य ह्रास, पारिवारिक विघटन, संबंध विच्छेद, पीढ़ी अंतराल, शहरों की ओर पलायन, माता-पिता की नोस्टालजिया, नई पीढ़ी की संवेदनहीनता आदि इस दौर की कहानियों में विषय वस्तु के स्तर पर सामने आए। नई कहानी ने अनेक नए सवाल उठाए।

साठोत्तरी अथवा अ-कहानी आंदोलन

1965 में नई कहानी की महिमा मंडन के उद्देश्य से कोलकाता में एक गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस आयोजन में नई कहानी के विरुद्ध असंतोष के स्वर

उभरने लगे। कुछ ही दिन बाद आरा (बिहार) में एक कथा गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें साठ के बाद उभरने वाली कथाकार पीढ़ी सम्मिलित थी। इसमें कमलेश्वर, काशीनाथ सिंह, रवींद्र कालीय, दूधनाथ सिंह, गंगाप्रसाद विमल, मधुकर सिंह आदि कहानीकारों ने हिस्सा लिया। इस गोष्ठी में साठोत्तरी दौर की कहानी को साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी, आज की कहानी और अ-कहानी आदि नामों से अभिहित किया गया। गंगाप्रसाद विमल ने 'अ-कहानी' नाम प्रस्तावित किया था। इस दौर की कहानी में अनुभव की प्रामाणिकता पर बाल दिया गया। इन कहानीकारों का कहना था कि 1860 से 1960 तक लिखी गई कहानियों में अनुभव की प्रामाणिकता का अभाव है। वस्तुतः इस दौर की कहानियों में 'बोल्डनेस' बढ़ी। महानगरीय जीवन की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को खुलकर चित्रित किया जाने लगा। 'खुलापन' इस दौर की कहानियों की प्रमुख विशेषता है। इसकी शुरूआत 'नई कहानी' में हो चुकी थी लेकिन इस दौर की कहानियों में भारतीय समाज के मानदंड के अनुसार 'अश्लीलता' के हद में प्रवेश कर गई। ममता कालिया, राजकमल चौधरी, महेंद्र भल्ला जैसे कहानीकारों ने स्त्री-पुरुष संबंधों को नई दृष्टि से देखा और अंतरंग विषयों को भी कहानियों में स्थान दिया। 'एक पति का नोट्स' (महेंद्र भल्ला), 'ट्यूमर' (श्रीकांत वर्मा), 'रीछ' (दूधनाथ सिंह), 'मछली जाल' (राजकमल चौधरी) आदि कुछ उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। इस दौर में कहानी कहने का ढंग भी बदल गया। कहानियों में प्रतीकों और बिंबों का खूब प्रयोग होने लगा। 'मैं' शैली का प्रयोग बढ़ा। कहानियों में संस्मरणात्मकता बढ़ी। कहानी अमूर्तता की ओर बढ़ने लगी। परिस्थितियाँ प्रमुख होने लगीं। इन कहानियों में घुटन, संत्रास, अकेलापन, अजनबीपन, अवसाद, भटकाव, कुंठा आदि पनपने लगे।

अन्य आंदोलन

अन्य कहानी आंदोलनों में सचेत कहानी आंदोलन, सहज कहानी आंदोलन, समांतर कहानी आंदोलन, सक्रिय कहानी आंदोलन और जनवादी कहानी आंदोलन प्रमुख हैं। सचेतन कंहानी की शुरूआत नवंबर 1964 में प्रकाशित 'सचेतन कहानी विशेषांक' से हुई। इसका संपादन महीप सिंह ने किया था। इस आंदोलन का नेतृत्व महीप सिंह (बलॉटिंग पेपर) ने किया था। उनके अनुसार "सचेतन कहानी एक दृष्टि है। वह दृष्टि जिसमें जीवन जिया जाता है और जाना भी जाता है।" सचेतन कहानीकार मनुष्य जीवन को सर्वांगीण रूप से देखना चाहते थे। मनहर चौहान

(बीस सुबहों के बाद), धर्मेंद्र गुप्त (मोड से पहले), योगेश गुप्त (एन्कलोजर) आदि इस आंदोलन से जुड़े हुए थे। सहज कहानी आंदोलन की वकालत अमृतराय ने की थी। उन्होंने कहानी में कथा-रस को अनिवार्य बताया। यह आंदोलन व्यापक नहीं बन पाया। इसके बाद कमलेश्वर के नेतृत्व में समांतर कहानी आंदोलन सामने आया। उन्होंने 'सारिका' पत्रिका के संपादन के दौरान इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। इस कहानी में सामान्य जनता का पक्ष लेते हुए डॉ. विनय ने कहा कि "समांतर कहानी का नायक 'सामान्य जन' लोक जीवन में विविध स्थितियों में ग्रस्त और त्रस्त हैं।" आर्थिक रूप से वह चारों ओर से टूटा हुआ व्यक्ति है। यह आंदोलन आम आदमी को अपनी तरह से परिभाषित करता है। इस आंदोलन की चर्चित कहानियों में 'शहादतनामा' (जितेंद्र भाटिया), 'हरिजन सेवक' (मधुकर सिंह), 'अँधेरे का मैलाब' (से. रा. यात्री), 'तलाश के बाद', 'आतंक के बीज' (निरुपमा सेवती) आदि उल्लेखनीय हैं।

राकेश वत्स ने 'मंच-79' के विशेषांक में सक्रिय कहानी आंदोलन की अवधारणा प्रस्तुत की। उन्होंने लिखा कि "सक्रिय कहानी का अर्थ है आदमी की चेतनात्मक ऊर्जा और जीवतता की कहानी। उस समझ, एहसास और बोध की कहानी जो आम आदमी की बेबसी, वैचारिक निहत्थेपन, और नपुंसकता से निजात दिलाकर पहले स्वयं अपने अंदर की कमजोरियों के खिलाफ खड़ा होने के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी अपने सिर लेती है।" इस आंदोलन में चित्रा मुद्द्ल, रमेश बतरा, स्वदेश दीपक आदि कहानीकारों ने अपना योगदान दिया। यह आंदोलन ही अल्पकाल में ही समाप्त हो गया क्योंकि इसमें वैचारिकता का दंभ अधिक था। दिल्ली में 1982 में जनवादी लेखक संघ की स्थापना हुई। उसकी राष्ट्रीय अधिवेशन के साथ ही हिंदी में जनवादी लेखन तेजी से आगे बढ़ने लगा। 'कलम' (कोलकाता), 'कथन' (दिल्ली), 'उत्तरगाथा' (दिल्ली), 'उत्तरार्ध' (मथुरा) आदि पत्रिकाओं में जनवादी आंदोलन पर चर्चाएँ शुरू हुईं। यह वस्तुतः सामान्य जन के संघर्ष की पक्षधर है। इसका वैचारिक आधार मार्क्सवाद है। सर्वहारा एवं मध्यवर्ग द्वारा शोषण के विरुद्ध उठने वाली आवाज पर जनवादी कहानी का सर्वाधिक बल देती है। वस्तुतः यह संघर्ष बहुआयामी है।

2.8 वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान परिदृश्य में कहानी साहित्य का उत्तरोत्तर विकास हुआ। आज कहानी कहने की शैली बदल गई। उसकी वस्तु में भी बदलाव है। कभी-कभी तो ऐसा भी लगता है कि यह कहानी या डायरी, संस्मरण या रिपोर्ताज है। कहानीपन लुप्त होता जा रहा है। स्थापित रचनाकारों के अतिरिक्त अनेक नए नए कहानीकार सामने आने लगे। पंकज सुभीर, अजय नावरिया, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अल्पना मिश्र, नीलाक्षी सिंह, चंदन पांडेय, कुमार अंबुज, संजय कुंदन, गीत चतुर्वेदी, योगेंद्र आहुजा, पंखुरी सिन्हा जैसे अनेक साहित्यकार सामने आए।- 90 के दशक में आज के समय में अनेक आयाम सामने आए। आज तक जो हाशिये पर थे वे केंद्र में आ रहे हैं। सीमाएँ टूट रही हैं। अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई शुरू हो चुकी है। अस्तित्वमूलक विमर्श सामने आए। इन में स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक प्रमुख हैं। आज वृद्ध, पर्यावरण, किन्नर, किसान, प्रवासी साहित्य भी सामने आ रहा है। परिणामस्वरूप अनामिका, प्रभा खेतान, सिम्मी हर्षिता, गीतांजली श्री, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, उषा प्रियंवदा, चित्र मुद्गल, सूर्यबाला, सुधा अरोड़ा, उर्मिला शिरीष, चंद्रकांता, नमिता सिंह, अलका सरावगी, मधु कांकरिया, रजनी गुप्त, कमल कुमार, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, राजी सेठ, शरद सिंह आदि स्त्री रचनाकारों ने स्त्री संघर्ष, स्त्री अस्मिता, स्त्री मुक्ति की दृष्टि से कहानियों का सृजन किया तो ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूराजपाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय, रूपनारायण सोनकर, रत्र कुमार सांभरिया, दयानंद बटोही, सुशीला टाकभौरे, विपिन बिहारी, कुसुम वियोगी आदि कहानीकारों ने दजित होने की यातना और संघर्ष को अभिव्यक्त किया। वहीं हरीराम मीणा रणेद्र, राकेश कुमार सिंह, केदार प्रसाद मीणा, रांडायाल मुंडा, जोराम यालाम नाबाम आदि ने आदिवासियों के शोषण की गाथा को कलमबद्ध किया है। वैसे तो हिंदी कहानी साहित्य में वृद्ध अवश्य रहते हैं, लेकिन धीरे-धीरे इनका अस्तित्व लुप्त होने लगा। इक्कीसवीं सदी में कहानीकारों ने इन वृद्धों के प्रति विशेष ध्यान दिया। 'वापसी' (उषा प्रियंवदा), 'आँखमिचौनी' (अमृतराय), 'बूढ़ा ज्वालामुखी' (गिरिराज शरण अग्रवाल), 'शटल' (नरेंद्र कोहली), बूढ़ी हड्डियाँ (शिवकुमार राजौरिया) आदि कहानियाँ वृद्धावस्था विमर्श की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

असागर वजाहत, राही मासूम रज़ा, बदिउज्जमाँ, अब्दुल बिस्मिल्लाह, मेहरुन्निसा परवेज, नासिरा शर्मा, मंजूर एहतेशाम, अनवर सुहैल आदि की कहानियाँ अल्पसंख्यक विमर्श की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।

2.9 सार-संक्षेप

प्रिय छात्रो! इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप समझ ही चुके होंगे कि हिंदी कहानी साहित्य ने विकास के अनेक सोपान पार किए हैं। समय के साथ-साथ कहानी कहने की शैली में बदलाव आने लगा। वह जनता की समस्याओं से जुड़ गई। प्रेमचंद को हिंदी साहित्य में कथा सम्राट कहा जाता है क्योंकि उन्होंने ही कहानी साहित्य को तिलिस्म और जासूसी के लोक से बाहर निकाला तथा उसे वास्तविक दुनिया से जोड़ा। उनके समय से कहानी प्रौढ़ होती गई। कहानी साहित्य अनेक कहानी आंदोलनों से गुजरते हुए आज नई मंजिलें पार कर रही है। निस्संदेह कहा जा सकता है कि हिंदी कहानी साहित्य आगे भी अनेक सोपान पार करेगी।

2.10 मुख्य शब्द

1. **उद्भव**: किसी वस्तु या विचार का प्रारंभ होना।
2. **विकास**: समय के साथ किसी विचार, विधा या वस्तु का परिवर्तन और प्रगति।
3. **कहानी**: घटनाओं का एक संक्षिप्त और रोचक रूप जिसमें पात्र, संवाद, और वातावरण होते हैं।
4. **युग**: किसी विशेष समय का निर्धारण, जैसे कि पुराना युग, मध्यकालीन युग, आधुनिक युग।
5. **सामाजिक भूमिका**: समाज में किसी वस्तु या विचार का महत्व और उसका प्रभाव।

2.11 स्व प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर

1 प्रगतिवादी कहानियाँ:- इन कहानियों में यथार्थ की स्थितियों को देखा जा सकता है। इन कहानियों में विशेष रूप से समाज की विसंगतियों और विद्रूपताओं को कहानीकारों ने अपने अनुभव के आधार पर अंकित किया है। वस्तुतः 1930 के आस-पास अर्थात छायावाद बाद एक नवीन सामाजिक चेतना से युक्त साहित्य का जन्म हुआ। यही धारा 1936 में प्रगतिशील अथवा प्रगतिवाद के नाम से अभिहित होने लगा। अंग्रेजी साहित्य में इसे प्रोग्रेसिव लिटरेचर कहा जाता है। पश्चिमी देशों में इसका प्रसार 1935 के आस-पास होने लगा जब ई. एम. फार्स्टर की अध्यक्षता में पेरिस में प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन नामक अंतरराष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन हुआ। भारत में इस संस्था का प्रवर्तन मुल्कराज आनंद सज्जाद जहीर ने किया था। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना लखनऊ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में हुई। तभी से प्रगतिशील साहित्य का प्रचार होने लगा। कालक्रम से यही प्रगतिवाद हो गया। यद्यपि 1936 में प्रगतिशील संघ की स्थापना हुई, लेकिन 1917 में रूस में साम्यवादी प्रशासन की स्थापना हुई। इसने देश चिंतकों, नेताओं और साहित्यकारों ओ आकर्षित किया। गणपतिचंद्र गुप्त के अनुसार "भारत में साम्यवादी दल की स्थापना सन 1918 में हो चुकी थी। सन 1924 में एस. ए. डांगे के संपादन में बंबई से साम्यवादी विचारों की पत्रिका 'सोशलिस्ट' का भी प्रकाशन होने लग गया था।" इस प्रकार में प्रातिशील लेखक संघ की स्थापना से पहले से ही साम्यवादी विचारों के प्रचार-प्रसार को देखा जा सकता है।

2 मनोवैज्ञानिक कहानियाँ:-प्रेमचंद युग के बाद कुछ साहित्यकार सामने ये जिन्होंने व्यक्ति मन को कहानी के केंद्र में रखा। इन कहानीकारों की रुचि सामाजिक समस्याओं पर न होकर व्यक्ति की मानसिक पीड़ा, उसका अंतद्वंद्व आदि में थी। मनुष्य की अवचेतन क्रियाओं और उसके कारण उत्पन्न मानसिक ग्रंथियों को लेकर कहानियों का सूजन किया गया। मनोवैज्ञानिक कहानियों में वातावरण का चित्रण प्रधान होता है। साथ ही स्वायत्त प्रेम, काम और कर्तव्य का संघर्ष आदि कुछ तत्वों को इन कहानियों में देख सकते हैं। मनोविश्लेषण ने एक दृष्टि के रूप में साहित्यकारों को आकर्षित किया। जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी और अज्ञेय की कहानियों को इस कोटि में रखा जा सकता है। जैनेंद्र की कहानियों में दार्शनिकता का प्रभाव भी दिखाई देता है। उनकी आरंभिक कहानियों का संग्रह है 'फाँसी'। 'पाजेब', 'एक

रात' (गद्दर के बाद', 'जयसंधि'; 'रानी महामाया', 'नीलमदेश की राजकन्या', 'मास्टर जी' आदि उनकी प्रमुख कहानियों हैं। अज्ञेय की कहानियों में 'गैंगरीन', 'जिजीविषा', 'चिड़ियाघर', 'पहाड़ी जीवन', 'अलिखित कहानी', 'खितीन बाबू', 'रोज' आदि अज्ञेय की प्रमुख कहानियाँ हैं। प्रेमचंद ने जैनेंद्र को भारत का गोर्की कहा था।

2.12 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, S. (2020). *हिन्दी कहानी: उद्भव और विकास*. दिल्ली: साहित्य प्रकाशन.
2. सिंह, R. (2018). *हिन्दी साहित्य का इतिहास*. जयपुर: साहित्य पुस्तक माला.
3. जोशी, M. (2022). *हिन्दी कहानी की सामाजिक भूमिका*. लखनऊ: साहित्य प्रकाशन.
4. शर्मा, P. (2023). *आधुनिक हिन्दी कहानी के विचारधारात्मक पहलु*. मुंबई: रचनात्मक प्रकाशन.

2.13 अभ्यास प्रश्न

1. प्रेमचंदपूर्व हिंदी कहानी की विकास यात्रा का उद्देश्य दीजिए।
2. प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी साहित्य पर प्रकाश डालिए।
3. प्रेमचंदोत्तर हिंदी कहानी साहित्य का विवेचन कीजिए।
4. विभिन्न हिंदी कहानी आंदोलनों का संक्षिप्त उद्देश्य दीजिए
5. वर्तमान कहानी साहित्य के परिदृश्य को समझाइए।

इकाई- 3

प्रेमचंद - गबन

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 गबन उपन्यास का मुल पाठ विवेचन
3.4 लेखक का सक्षिप्त परिचय
3.5 गबन उपन्यास के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
3.6 गबन उपन्यास की समीक्षा
3.7 सार- संक्षेप
3.8 मुख्य शब्द
3.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
3.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
3.11 अभ्यास प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

गबन प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास है। 'निर्मला' के बाद 'गबन' प्रेमचंद का दूसरा यथार्थवादी उपन्यास है। कहना चाहिए कि यह उसके विकास की अगली कड़ी है। गबन का मूल विषय है - 'महिलाओं का पति के जीवन पर प्रभाव'। गबन प्रेमचन्द के एक विशेष चिन्ताकुल विषय से सम्बन्धित उपन्यास है। यह विषय है, गहनों के प्रति पत्नी के लगाव का पति के जीवन पर प्रभाव। गबन में टूटते मूल्यों के अंधेरे में भटकते मध्यवर्ग का वास्तविक चित्रण किया गया। इन्होंने समझौतापरस्त और महत्वाकांक्षा से पूर्ण मनोवृत्ति तथा पुलिस के चरित्र को बेबाकी से प्रस्तुत करते हुए कहानी को जीवंत बना दिया गया है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने पहली नारी समस्या को व्यापक भारतीय परिप्रेक्ष्य में रखकर देखा है और उसे तत्कालीन भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जोड़कर देखा है। सामाजिक जीवन और कथा-साहित्य के लिए यह एक नई दिशा की ओर संकेत करता है। यह उपन्यास जीवन

की असलियत की छानबीन अधिक गहराई से करता है, भ्रम को तोड़ता है। नए रास्ते तलाशने के लिए पाठक को नई प्रेरणा देता है।

3.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र निम्नलिखित कार्यों में सक्षम हो सकेंगे:

1. इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र प्रेमचंद के साहित्यिक दृष्टिकोण को समझ सकेंगे।
2. गबन उपन्यास के मुख्य पात्रों और उनके संघर्षों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
3. गबन में समाज के आर्थिक और मानसिक हालात को पहचानने में छात्र सक्षम होंगे।
4. प्रेमचंद के लेखन की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव को समझेंगे।
5. गबन के माध्यम से मानवीय त्रासदी और अपराध के कारणों का विश्लेषण कर पाएंगे।

3.3 गबन उपन्यास का मुल पाठ विवेचन

(1) "उसे जान पड़ा। आसमान फट गया है, मानों कोई भयंकर जंतु उसे निगलने के लिए बढ़ा चला जाता है। वह घड़घड़ करता हुआ ऊपर से उतरा और घर के बाहर निकल गया। कहाँ अपना मुंह छिपाले, कहाँ कहाँ छिप जाये कि कोई उसे देख न सके? उसकी दशा वही थी जो किसी नंगे आदमी की होती है। आह! सारा पर्दा खुल गया।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'गवन' से अवतरित हैं। इस अंश में उस समय का उल्लेख किया गया जब रमानाथ चुंगी के रुपये जमा करने में असमर्थ हो गया तब उसने जालपा को इस विषय में पत्र लिखा। लेकिन संकोच के फलस्वरूप वह तो उसे न दे सका लेकिन वह जालपा के उसकी जेब से कुछ रुपये निकालते समय निकल आया। उस समय रमानाथ की कैसी मनोदशा हो गई थी, उसका उल्लेख करते हुए उपन्यासकार का यह कथन है कि -

व्याख्या- जालपा ने जब उसकी जेब से कुछ रुपये के साथ वह पत्र निकाल लिया तब रमानाथ बहुत ही झेंप गया। उसे ऐसा लगा मानो उसके सिर पर पूरा आसमान ही फटकर गिर पड़ा है। उसे ऐसी दहशत होने लगी थी मानो उसे खा जाने के लिए कोई प्राणहारी और विकट जन्तु उसकी ओर बढ़कर आ गया है। इस प्रकार से रमानाथ को सिर से पैर तक भय ही भय समा गया था जिसके परिणाम स्वरूप उसे बचने का अब और कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था। वह क्या करे और क्या न करे। उसे उस समय जालपा के सामने भय मिश्रित लज्जा ने घेर लिया था। रमानाथ ने एक झटके में ही निर्णय ले लिया। वह धड़ाधड़ कमरे से नीचे उतर आया और घर को छोड़कर चला गया। उसके लिए कहीं और किसी के सामने मुंह दिखाना अत्यधिक लज्जास्पद लग रहा था। वह एक नंगे व्यक्ति के समान कहीं एकांत में छिप जाना चाहता था। ऐसा इसलिए कि यदि वह किसी के सामने रहेगा तो जो उसकी कलई खुल गयी है उससे वह कैसे बच सकता है। उस पर वह कैसे परदा डाल सकता है। उसको बार-बार यही चिन्ता सता रही थी कि कितना उसका दुर्भाग्य है कि वह जालपा के प्रति अपने कपट व्यवहार को नहीं छिपा सका।

(2) जब तक गले में जुआ नहीं पड़ा है, तभी तक यह कुलेलें हैं। निकम्मों को राह पर लाने का इससे बढ़कर और कोई उपाय ही नहीं।" सन्दर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'गबन' से अवतरित है। यहाँ जागेश्वरी का कथन अपने पति दयानाथ के प्रति है। दयानाथ रमानाथ के आवारा घूमने के कारण वे उसका विवाह नहीं करना चाहते। जागेश्वरी विवाह का औचित्य सिद्ध करती हुई कहती है कि इससे वह सुधर जाएगा ।

व्याख्या - यह ठीक है कि अभी रमानाथ अपना सारा समय शतरंज तथा सैर-सपाटे में व्यर्थ करता है, लेकिन विवाह कर देने से वह उत्तरदायित्व का भार पड़ते ही सुधर जाएगा। आप भी विवाह से पहले गुलछरें उड़ाते थे, लेकिन विवाह होते ही आपको चार पैसे कमाने की चिन्ता हो गयी। बहू के घर आते ही रमानाथ की आँखें खुल जायेंगी तथा उसको कमाने की चिन्ता रहेगी । उत्तरदायित्व का भार मनुष्य को सपथ पर ले जाता है। जब तक उसके कंधों पर उत्तरदायित्व का बोझ नहीं पड़ता, तभी तक वह सैर सपाटे में लगा हुआ कुलेले करता रहता है। लेकिन जब गृहस्थी को जिम्मेदारी का जुआ उसके गले में पड़ जाता है, तब सैर-सपाटे

करने का उसका साग नशा को हो जाता है एवं वह परिश्रम से काम में जुट पड़ता है। उसे चार पैसे कमाने मात्र ही की चिन्नार है। अतः निकम्मों को मार्ग पर लाने का एकमात्र यही उपाय है कि उनका विवाह कर दिया जाय।

(3) "लज्जा ने सदैव वीरों को परास्त किया है। जो काल से नहीं डरते, वे भी लज्जा के सामने खड़े होने की हिम्मत नहीं करते। आग में कूद जाना, तलवार के सामने खड़ा हो जाना, उसकी अपेक्षा कहीं सहज है। लाज की रक्षा ही के लिये बड़े-बड़े राज्य मिट गये हैं, रक्त की नदियाँ बह गई हैं, प्राणों की होली खेल डाली गई है।"

सन्दर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'गवन' से अवतरित है। रमानाथ जज साहब को कोठी पर जाकर पुलिस का सारा भण्डाफोड़ कहने का निश्चय करता है कि उसने झूठी गवाही दी है। वह जज साहब की कोठी के बाहर तक पहुँच जाता है, लेकिन अपने कर्मों की लज्जा उसे घेर लेती है, जिससे वह भीतर जाने का साहस नहीं करपाता। उपन्यासकर ने इसी संदर्भ में लज्जा के प्रभाव का वर्णन किया है -

व्याख्या - रमानाथ पुलिस का भंडा फोड़ने हेतु जज साहब की कोठी के बाहर पहुँच जाता है, लेकिन उसने झूठी गवाही दी है, अपने स्वार्थ हेतु उसने कई आदमियों को झूठा फैसाया, आदि बातों को सोचकर वह लज्जित हो गया। उसे इस भाव ने भी घेर लिया कि झूठी गवाही के आरोप से वह भी न बच सकेगा। इस तरह लज्जा से घिरकर वह लौट पड़ा। लज्जा हमेशा से वीरों को पराजित करती आई है। जो लोग करालकाल से भी भयभीत नहीं होते, वे लज्जा के सामने खडे होने की हिम्मत तक नहीं कर पाते। लज्ज्य की बजाय तो आग में कूद पड़ना, तलवार के सामने खड़े हो जाना सरल है। इतिहास इस बात की साक्षी है कि लाज की रक्षा के लिये बड़े-बड़े राज्य मिट गये। लाज की रक्षा हेतु ही रक्त की नदियाँ प्रवाहित हुई तथा प्राणों की होली खेली गई। इसी लज्जा ने रमानाथ को जज साहब के सामने नहीं जाने दिया। वह लज्जा से जितना भयभीत था, उतना जेल से नहीं।

(4) 'यह लीजिये कि जिस देश में स्त्रियों को जितनी अधिक स्वाधीनता है, वह देश उतना ही सभ्य है। स्त्रियों को कैद में, परदे में या पुरुषों से कोसों दूर रखने का तात्पर्य यही निकलता है कि आपके यहां जनता इतनी आचार-भ्रष्ट है कि

स्त्रियों का अपमान करने में जरा भी संकोच नहीं करती। युवकों के लिये राजनीति, धर्म, ललितकला, साहित्य, दर्शन, इतिहास, विज्ञान और हजारों ऐसे ही विषय हैं जिनके आधार पर वे युवतियों से गहरी दोस्ती पैदा कर सकते हैं। कामलिप्सा उन देशों के लिए आकर्षण का प्रधान विषय है, जहां लोगों की मनोवृत्तियां संकुचित रहती हैं।'

संदर्भ एवं प्रसंग- प्रस्तुत गद्य मुंशी प्रेमचन्द के 'गवन' शीर्षक से लिया गया है। इन्दुभूषणजी स्त्री-शिक्षा तथा उसकी स्वाधीनता का समर्थन करते हैं। प्रेमचंद स्त्री तथा पुरुष को स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर यहां प्रगतिशील विचारधारा का प्रस्तुतिकरण करते हैं। रमानाथ द्वारा दफ्तर से लाये पैसे जब जालपा रतन को देती है तो रमानाथ के पैरों के नीचे को जमीन का आधार ही खत्म हो जाता है। वह उन पैसों को लेने के लिये रतन के घर पहुंचता है पर इन्दुभूषण रमानाथ को उलझा लेते हैं व स्त्री-शिक्षा पर व्याख्यान शुरू कर देते हैं।

व्याख्या - स्त्री-स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए वे कहते हैं कि जिस देश में स्त्री को जितनी ज्यादा स्वाधीनता होती है वह देश उतना ही ज्यादा प्रगतिशील तथा सभ्य माना जाता है। उनको मान्यता है कि जहां स्त्रियों को परदे में बन्द रखा जाता है, पुरुषों से कोसों दूर रखा जाता है, इसका अर्थ ही यह है कि वहां की जनता आचार-भष्ट है तथा वह स्त्री का अपमान करने में अपना गौरव समझती है। स्वी तथा पुरुष के मध्य बौद्धिक सम्बन्ध स्थापित करने के कई विषय हैं- साहित्य, संगीत, कला और राजनीति से स्त्री और पुरुष पास आ सकते हैं। पर जिस देश के निवासियों की मनोवृत्ति संकुचित होती है वे ही काम-लिप्सा के पीछे भागते हैं।

(5) 'रूदन में कितना उल्लास, कितनी शांदि, कितना बल है। जो कभी एकांत में बैठकर किसी की स्मृति, किसी के वियोग में सिसक-सिसककर और बिलख-बिलखकर नहीं रोया, वह जीवन के ऐसे सुख से वंचित है जिस पर सैकड़ों हँसियां न्यौछावर हैं। हँसी के बाद मन खिन्न हो जाता है, आत्मा क्षुब्ध हो जाती है। रुदन के पश्चात् एक नवीन स्फूर्ति, एक नवीन जीवन, एक नवीन उत्साह का अनुभव होता है।"

संदर्भ एवं प्रसंग- प्रस्तुत अवतरण उपन्यास सम्राट उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद जी द्वारा विरचित "गबन" नामक उपन्यास से अवतरित किया गया है। प्रेमचंद जी मनुष्य के जीवन में रुदन का महत्व प्रतिपादित करते कहते हैं जालपा कहती है कि रुदन में कितनी ताकत है।

व्याख्या- रूदन में उल्लास, शांति तथा अत्यधिक शक्ति होती है। प्रायः देखने में आता है कि मनुष्य मात्र के दैनिक जीवन में रुदन का संबंध दुःख तथा हास का संबंध सुख से होता है। परंतु कई ऐसे अवसर भी आते हैं, जब व्यक्ति को रोने में एक तरह का असीम उल्लास मिलता है। वह रोकर शांति लाभ करता है तथा उसमें नई स्फूर्ति और शक्ति आ जाती है। किसी परिचित का स्मरण कर रोने से जो आनंद प्राप्त होता है, इसका अनुभव वही कर सकता है जो किसी के वियोग में एकांत में बैठकर रोया हो। हमें यह न भूलना चाहिए कि उस समय मनुष्य का मन भी चाहता है कि वह रोता ही रहे। किसी के वियोग में सिसक-सिसक तथा विलख-विलख कर रोने में जो सुख प्राप्त होता है, उस सुख के ऊपर सैकड़ों सुख तथा हंसियां न्यौछावर हैं। रुदन में जो मीठी वेदना का आनंद प्राप्त होता है, उसका अनुभव वही कर सकते हैं, जिनको कि किसी के वियोग में रोने का अवसर प्राप्त हुआ हो। हंसी हमारे मन में खिन्नता ला देती है। ऐसा जान पड़ता है कि हम थक गए हैं, हमारा जीवन पूर्ण रूप से पराभूत हो गया है। रुदन के आंसू हृदय के दुःखजनित भार को बाहर निकाल देते हैं, उससे मन हल्का हो जाता है तथा शांति व नई स्फूर्ति का अनुभव करता है। अतः जीवन में हंसी की बजाय रुदन की ज्यादा महत्ता है।

(6) "यह विशुद्ध उल्लास न था, इसमें एक शंका का समावेश था। यह उस बालक का आनन्द न था, जिसने माता से पैसे माँगकर मिठाई ली हो बल्कि उस बालक का जिसने पैसे चुराकर ली हो। उसे मिठाईयाँ तो मिलती हैं परंतु दिल कांपता रहता है कि कहीं घर चलने पर मार न पड़ने लगे।"

सन्दर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत अवतरण "गबन" नामक उपन्यास से अवतरित हुआ है। रमानाथ गंगू सर्राफ से हार तथा शीशफूल नामक दो आभूषण ले आता है। यह दोनों साढ़े छः सौ रुपये के कर्ज पर लाया है। इन आभूषणों को देखकर पत्नी को खुशी होगी, वह भावविभोर हो उठेगी, यह सोचकर रमा प्रसन्न है पर हो सकता है उसे पसन्द न आये और उसे यह भी चिन्ता है कि यदि कर्ज न उतार

सका तो क्या होगा ? अतः उसके मनोल्लास पर शंका तथा भय का काला आवरण छाया हुआ है। रमा की इसी दोलायमान मनः स्थिति का चित्रण करते हुए प्रेमचन्दजी कहते हैं कि -

व्याख्या - रमा के मन का यह उल्लास विशुद्ध न था, इस उल्लास में भय की छाया भी मौजूद थी। वह उस बालक का आनन्द न था, जिसने माता से पैसे मांगकर मिठाई खाई हो। दूसरी तरफ यह उल्लास उस बालक के जैसा था जिसने पैसे चुराकर मिठाई का आनन्द लिया हो। पैसे चुराकर मिठाई खाने वाले बालक को हालांकि मिठाई मीठी लगती है पर उसके हृदय में यह डन भी बना रहता है कि चोरी पकड़ी जाने पर पिटाई भी होगी। इस तरह जालपा की नापसन्दगी तथा कर्ज के न चुकने का भय, इन दोनों के कारण रमा के हृदय का उल्लास न विशुद्ध था तथा सात्विक ही।

(7) विधाता को संसार दयालु, कृपालु, दीनबन्धु और जाने कौन-कौन सी उपाधियां देता है। मैं कहती हूं उससे निर्दयी, निर्मम, निष्ठुर कोई शत्रु भी नहीं हो सकता। पूर्व जन्य का संस्कार केवल मन को समझाने की चीज है। जिस दण्ड का हेतु ही हमें न मालूम हो, के लिए उस दण्ड का मूल्य ही क्या? वह तो जबरदस्त की लाठी है, जो आघात करने के कोई कारण गढ़ लेती है। इस अंधेरे निर्जन कोरों से भरे हुए जीवन-मार्ग में मुझे केवल एक टिमटिमाता हुआ दीपक मिला था। मैं उसे अंचल में छिपाए निधि को धन्यवाद देती हुई गाती चली जाती थी, पर वह दीपक भी मुझसे छीना जा रहा है।

संदर्भ एवं प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियां मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'गबन' से अवतरित हैं। इस अंश में उपन्यासकार ने उस समय का उल्लेख किया है जब वकील इन्द्रभूषण मृत्यु के सन्निकट पहुँच जाते हैं। उनकी इस दिशा को देखकर रतन व्याकुल मन से जालपा को पत्र में लिख रही है कि -

व्याख्या - यों तो संसार ईश्वर को अनेक प्रकार से महान् गुणों से सम्पन्न कहता है। इसी क्रम में वह ईश्वर को दयावान, कृपा-सागर, दीनों के नाथ सहित अनेक प्रकार के कल्याण प्रद और जीवन-प्रद विशेषताओं से सम्बोधित किया करता है। लेकिन आज मेरी समझ में यह सब कुछ उल्टा और अनुचित ही लगता है। मुझे आज ईश्वर के प्रति अत्यन्त कटु अनुभव हो रहा है। आज वह मुझे अत्यन्त निर्दयी, कठोर, निर्मम और दयाहीन ऐसा लग रहा है कि एक महाविकट और

भयंकर शत्रु भी ऐसा नहीं हो सकता। जिस दण्ड का हमें कोई कारण न मालूम हो, उसके मूल्य या महत्व से हमें क्या लेना-देना ।

जालपा ने पत्र में आगे लिखा था कि ईश्वर की दण्ड शक्ति तो एक ऐसी मजबूत लाठी के समान है जो चोट करने के लिए कोई न कोई एक बहाना अवश्य निकाल लेती है। अधिक क्या लिखूँ। मेरा जीवन तो बिल्कुल अंधे जंगल के समान था। इस अंधकारमय जीवन-मार्ग में मुझे यही एक टिमटिमाते दीपक के समान सहारे के रूप में मिले थे। इन्हें मैं अपने संपूर्ण प्रयास रूपी आँचल में छिपाकर एक अमूल्य के समान जुगाती हुई ईश्वर के प्रति कृतज्ञ होती जा रही थी। इन्हें एक गीत रूप में समझकर गुनगुनाती हुई जीवन-मार्ग पर बढ़ती जा रही थी। पर अब सोचना पड़ रहा है कि ईश्वर कितना कठोर है कि इन्हें मुझसे एकदम छीनता जा रहा है।

(8) "वह लालसा जो आज सात वर्ष हुए उसके हृदय में अंकुरित हुई थी, जो इस समय पुष्प और पल्लव से लदी खड़ी थी, उस पर वज्रपात हो गया। आज ही के दिन पर तो उसकी समस्त आशाएं अवलंबित थीं, दुर्दैव ने आज वह अवलंब भी छीन लिया।"

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण प्रेमचंद द्वारा रचित 'गबन' उपन्यास से लिया गया है।

व्याख्या- जालपा के हृदय में सात वर्ष पहले चंद्रहार पहनने की जो अभिलाषा पैदा हुई थी, वह धीरे-धीरे विकसित होकर पुष्पित तथा पल्लवित हो गयी। विवाह में ससुराल से चंद्रहार आने की उसे बहुत बड़ी आशा थी। ससुराल से चंद्रहार नहीं आता। उसके हृदय पर वज्रपात-सा होता है। उसकी दशा हरे-भरे लहलहाते हुए उस पौधे के समान हो जाती है, जिसकी अब राख ही शेष रह गयी हो। जालपा चंद्रहार की जो आशा संजोए हुए थी, वह नष्ट हो जाती है। निराशाजनित दुःख के आवेश में जालपा मुंह नोचने लगती है। अगर उसका वश चलता तो वह चढ़ावे में आये आभूषणों को फेंक देती। परंतु वह अपने पर नियंत्रण रखती है। जालपा का क्रोध शांत नहीं होता । वह कमरे में रखी हुई शिव की प्रतिमा को उठाकर पटक देती है। उसकी आशाओं की तरह वह मूर्ति भी चूर-चूर हो जाती है। वह कोई भी आभूषण न पहनने का निश्चय करती है। वह सोचती है। जो सुंदर न हो, वह गहने पड़ने। वह तो इतनी सुंदर है कि उसे आभूषणों की जरूरत नहीं

(9) "उसके हृदय की सारी ममता, ममता का सारा अनुराग, अनुराग की सारी अधीरता, उत्कंठा और चेष्टा उसी हार पर केन्द्रित हो रही थी, मानो उसके प्राण उसी हार के दानों में जा छिपे थे।"

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण प्रेमचंद द्वारा रचित 'गबन' उपन्यास से लिया गया है। यहां उपन्यासकार ने स्त्रियों का आभूषणों के प्रति तीव्र मोह व्यक्त किया है। रतन हार लेने हेतु ललचा रही थी। उसकी इस स्थिति का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण करता हुआ लेखक कहता है कि-

व्याख्या- रतन की कोठी पर सर्राफ उसे एक सुंदर हार दिखा रहा था। वह उसकी कीमत बारह सौ रुपये मांग रहा था तथा एक भी पैसा कम करने को तैयार नहीं था। रतन के पास इस समय इतने रुपये नहीं थे। दाम कम करने की बात पर जौहरी बार-बार हार को संदूकची में रखने लगता था। इधर रतन के हृदय की सारी ममता, ममता का सारा प्रेम तथा अनुराग की सारी अधीरता, उत्कंठा एवं चेष्टा उसी हार के दानों में जाकर समा गयी थी। उसकी जन्म-जन्मांतरों की अभिलाषा उस हार पर मंडरा रही थी। ऐसा लगता, मानो रतन के प्राण उसी हार में बस गये हों। जौहरी को संदूक बंद करते देखकर वह इस तरह तड़पती है मानो जल से पृथक होकर मछली तड़प रही हो।

(10) "उनके पास उसे प्रसन्न करने के लिए धन के सिवा और चीज ही क्या थी? उन्हें अपने जीवन में एक आधार की जरूरत थी-सदेह आधार की, जिसके सहारे वह जीर्ण दशा में भी जीवन-संग्राम में खड़े हो सकें। जैसे किसी उपासक को प्रतिमा की जरूरत होती है।"

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण प्रेमचंद द्वारा रचित 'गबन' उपन्यास से लिया गया है। वकील इंदुभूषण की पहली पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। रतन उनकी दूसरी पत्नी है। जिस तरह साधक को एक प्रतिमा की जरूरत होती है, उसी तरह जीवन-संग्राम में वकील साहब को एक संदेह आधार की जरूरत थी तथा रतन उनके लिए इसी रूप में थी।

व्याख्या- वकील साहब की समस्त श्रद्धा, भक्ति तथा स्नेह का आधार रतन थी। उनके पास रतन को प्रसन्न करने के लिए धन के अलावा और कुछ नहीं था। वे आते ही जौहरी को बारह सौ रुपये का चैक देकर हार ले लेते हैं। रोग ने उनके शरीर को जर्जर बना दिया था। उनको अपने जीवन के लिए आधार की जरूरत

थी। उनको ऐसा संदेह आधार चाहिए था, जिसके सहारे वे जीवन-संग्राम में खड़े हो सकें। जिस तरह एक उपासक को एक प्रतिमा की जरूरत होती है, जिसके माध्यम से वह अपने इष्टदेव पर पुष्प चढ़ा सकें, गंगा जल से स्नान करा सके और स्वादिष्ट चीजों का भोग लगा सकें। वकील साहब हेतु उनकी पत्नी रतन भी इसी तरह का संदेह आधार थी जिससे उनकी आत्मिक पिपासा शांत होती थी। उनके जीवन में रतन के बिना कोई सार नहीं था। अगर रतन न होती, तो उनका जीवन उसी प्रकार निस्सार हो जाता, जिस प्रकार बिना आंखों के मुख निस्सार हो जाता है।

विशेष- यहां शैली अलंकृत है। अलंकार भावाभिव्यक्ति में सहायक हैं।

(11) "रिश्वत बुद्धि से, कौशल से, पुरुषार्थ से मिलती है। दान पौरुषहीन, कर्महीन या पाखंडियों का आधार होता है।"

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण प्रेमचंद द्वारा रचित 'गबन' उपन्यास से लिया गया है। रमानाथ सेठ के यहां से कंबल दान लेकर आया है। वह रोटी खाने के बाद कंबल ओढ़कर सो गया, लेकिन यह दान लेकर उसका हृदय आत्म-ग्लानि से भर गया था। वह लेटा हुआ आत्म-विश्लेषण करता है-

व्याख्या- चुंगी की नौकरी में उसने हजारों रुपये रिश्वत के लिए थे, लेकिन एक क्षण के लिए भी ग्लानि उसके मन में न आयी थी, लेकिन आज कंबल का दान लेकर वह ग्लानि से गला जा रहा है। वह सोचता है कि रिश्वत बुद्धि-कौशल तथा पुरुषार्थ से मिलती है। रिश्वत लेने वाला कम पुरुषार्थी नहीं होता। वह अपने बुद्धि-कौशल से रिश्वत लेता है, इसलिए रिश्वत लेने में उसको ग्लानि नहीं होती, लेकिन दान वे ही लोग लेते हैं, जो पौरुषहीन होते हैं, जिनमें कर्म करने की शक्ति नहीं होती या जो पाखंडी होते हैं। रमानाथ को यह ग्लानि हो रही है कि वह अब इतना दीन हो गया है कि उसे भोजन और वस्त्र के लिए दान लेना पड़ रहा है।

(12) "यहां आकर उसे अनुभव होता था कि मैं भी संसार में हूं, उस संसार में जहां जीवन है लालसा है प्रेम है, विनोद है। उसका अपना जीवन तो व्रत की वेदी पर अर्पित हो गया था। वह तन-मन से उस व्रत का पालन करती थी, पर शिवलिंग के ऊपर रखे हुए घट में क्या वह प्रवाह है, तरंग है, नाद है, जो सरिता में है?"

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण प्रेमचंद द्वारा रचित 'गबन' उपन्यास से लिया गया है। यहां उपन्यासकार ने रतन की दयनीय दशा का चित्रण किया है। वृद्ध पति से

विवाह होने के कारण रतन के जीवन में कोई उल्लास नहीं रहा था। वह जालपा के पास आकर सुख-शांति प्राप्त करती थी। लेकिन रमानाथ के चले जाने से जालपा के घर में भी उदासीनता की घनघोर घटा छा गयी थी-

व्याख्या- रतन अपने घर की मनहूसियत से ऊबकर जालपा के यहां चली जाती थी। वहां घड़ी भर हंस लेने से उसका मन हलका हो जाया करता था। लेकिन जालपा के घर में रमानाथ के चले जाने से उदासीनता छा गयी थी। जालपा के यहां आकर रतन यह अनुभव करती थी कि वह उस संसार में आ गयी है, जहां जीवन, लालसा, प्रेम, विनोद आदि सभी कुछ है। रतन ने अपना जीवन कर्तव्य को अर्पित कर दिया था। वह तन, मन से अपने पति इंदुभूषण की सेवा करती हुई अपने कर्तव्य और व्रत का पालन करती है। लेकिन रतन की यह स्थिति शिवलिंग के शीष पर रखे हुए घट के समान हो रही थी। वह शिव के मस्तक को अवश्य शीतल करती है, लेकिन उसके हृदय की सरिता में उत्साह की कोई तरंग, प्रवाह तथा नाद नहीं है।

(13) "भादों का महीना था, गंगा गांवों और कस्बो को निगल रही थी। गांव के गांव बहते चले जाते थे। जोहरा नदी के तट पर बाढ़ का तमाशा देखने लगी। यह कृशांगी गंगा इतनी विशाल हो सकती है, इसका वह अनुमान भी न कर सकती थी। लहरें उन्मत्त होकर गरजती, मुंह से फेन निकालती, हाथों उछल रही थीं। चतुर फिकैतों की तरह पैंतरे बदल रही थीं।"

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण प्रेमचंद द्वारा रचित 'गबन' उपन्यास से लिया गया है। यहां उपन्यासकार ने भादों की वर्षा की प्रकृति तथा भीषण बाढ़ का आंखों देखा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। वर्षा तथा बाढ़ ने युद्ध का प्रचंड रूप उपस्थित कर दिया है-

व्याख्या- भादों का महीना था। भीषण वर्षा में ऐसा लगता था मानो पृथ्वी पर वर्षा में युद्ध छिड़ गया हो। ऐसा लगता था मानो जल की सेनाएं वायुयान पर चढ़कर आकाश से जलशरों की वर्षा कर रही हो। पृथ्वी के ऊपर भी जल की सेनाएं उतर कर आ गई हों तथा वे उत्पात मचा रही हों। गंगा गांव तथा कस्बों को निगलती हुई उफन रही थी। जोहरा गंगा के तट पर खड़ी हुई बाढ़ का तमाशा देख रही है। वह सोचती है कि जो गंगा इतनी क्षीण थी, वह इतनी विस्तृत कैसे हो गयी है? गंगा की लहरें उन्मत्त होकर आगे बढ़ रही थीं। उनके मुख से फेन

निकल रहा था और वे हाथों उछल रही थी। ऐसा लगता था, मानो उनके रूप में चतुर फिकैत पैंतरा बदल रहा हो। गंगा की लहरें कभी एक कदम आगे बढ़ जाती थीं तथा फिर पीछे की ओर लौट पड़ती थी और फिर चक्कर खाकर लपकती हुई आगे की ओर बढ़ती थीं।

गंगा की धारा में डगमगाता हुआ बहता जा रहा झोंपड़ा ऐसा लगता था मानो कोई शराबी डगमगाता हुआ दौड़ा जा रहा हो। कहीं कोई डालों तथा पत्तों सहित डूबता हुआ वृक्ष पाषाण युग के जंतु की तरह तैरता हुआ लगता था। गायें, भैंसें, खाट, तख्ते आदि धारा में बहते हुए जादू के चित्र के समान लगते थे।

अलंकार- सांगरूपक ।

(14) "हम क्षणिक मोह और संकोच में पड़कर अपने जीवन के सुख और शान्ति कैसे होम देते हैं। अगर जालपा मोह के इस झोंके में अपने को स्थिर रख सकती, अगर रमा संकोच के आगे सिर झुका न देता, दोनों के हृदय में प्रेम का सच्चा प्रकाश होता तो वे पथ-भ्रष्ट होकर सर्वनाश की ओर न आते ।"

संदर्भ- उपन्यासकार ने प्रारम्भ में सिद्धान्त-वाक्य के रूप में इस कथन को रखा है कि-

व्याख्या- हम मोह एवं संकोच में पड़कर अपने जीवन के सुख और शान्ति को किस प्रकार नष्ट कर देते हैं। यह सिद्धान्त-वाक्य जालपा तथा उसके पति रमानाथ पर पूर्ण रूप से घटित होता है। जालपा आभूषणों के झोंके में अपने को सम्हाल नहीं पाई। रमानाथ ने भी संकोच के आगे सिर झुका दिया। आभूषण खरीदने की उसमें सामर्थ्य नहीं थी, पर वह उनको जालपा से लेकर लौटाने में संकोच करता था। यथार्थ स्थिति यह थी कि जालपा एवं रमानाथ दोनों के हृदय में प्रेम का सच्चा प्रकाश नहीं था। अगर प्रेम का सच्चा प्रकाश होता तो इस तरह मोह एवं संकोच दोनों को पथ-भ्रष्ट करके सर्वनाश की ओर न ले जाता ।

विशेष- "हम क्षणिक मोह देते हैं" सिद्धान्त-वाक्य में सामान्य सत्य का कथन हुआ है।

(15) "बहुधा हमारे जीवन पर उन्हीं के हाथों कठोरतम आघात होता है, जो हमारे सच्चे हितैषी होते हैं।"

सन्दर्भ- इस सूक्ति-वाक्य में उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि-

व्याख्या- मनुष्य के ऊपर अपनों के ही द्वारा भीषण आघात होता है। रमानाथ दफ्तर से सरकारी रकम की आठ सौ रुपये की थैली इस उद्देश्य से लाया था कि वह रतन को दिखाकर उसे शान्त कर देगा। वह समझती है कि रतन को रुपयों की गड़बड़ी का सन्देह हो गया है। तभी, वह बारम्बार तकादे को आती है। वह थैली को जालपा के पास यह कहकर रख देता है कि इसमें रतन के कंगनों वाले रुपये हैं, जिनको वह सर्राफ से लौटाकर लाया है। वह घूमने चला जाता है। इसी समय रतन आती है तथा रुपयों का तकादा करती है। जालपा से रमानाथ कह चुका था कि ये रुपये रतन के हैं। अतः वह पूरी थैली उठाकर रतन को दे देती है। इस तरह जिस उद्देश्य से रमानाथ सरकारी धन को लाया था, वह नष्ट हो जाता है। अगर रमानाथ धन पर होता, तो रतन सन्तुष्ट हो जाती एवं शायद रुपये नहीं ले जाती। इस तरह रमानाथ के ऊपर जालपा के द्वारा ही अनजान दशा में कठोरतम आघात होता है।

3.4 लेखक का सक्षिप्त परिचय

मुंशी प्रेमचंद का जन्म सन् 1880 में वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था। उनका बचपन का नाम धनपत राय था, किन्तु वे अपनी कहानियाँ उर्दू में नवाबराय के नाम से लिखते थे और हिन्दी में मुंशी प्रेमचंद के नाम से। उनके दादाजी गुर सहाय राय पटवारी थे और पिता अजायब राय डाक विभाग में पोस्ट मास्टर थे। बचपन से ही उनका जीवन बहुत ही, संघर्षो से गुजरा था। गरीब परिवार में जन्म लेने तथा 7 बर्ष की अल्पायु में ही मुंशी प्रेमचंद की माता आनंदी देवी की मृत्यु एवं 9 वर्ष की उम्र में सन् 1897 में उनके पिताजी का निधन हो जाने के कारण, उनका बचपन अत्यधिक कष्टमय रहा। किन्तु जिस साहस और परिश्रम से उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा, वह साधनहीन एवं कुशाग्रबुद्धि और परिश्रमी छात्रों के लिए प्रेरणाप्रद है।

प्रेमचंद का पहला विवाह पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में उनके पिताजी ने करा दिया। उस समय मुंशी प्रेमचंद कक्षा 9 के छात्र थे। पहली पत्नी को छोड़ने के बाद उन्होंने दूसरा विवाह 1906 में शिवारानी देवी से किया जो एक महान साहित्यकार थीं। प्रेमचंद की मृत्यु के बाद उन्होंने "प्रेमचंद घर में" नाम से एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी।

प्रेमचंद की प्रारम्भिक शिक्षा सात तुर्ष की उम्र में एक स्थानीय मदरसे से शुरू हुई। जहां उन्होंने हिन्दी के साथ उर्दू और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त किया। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, प्रारम्भ में वे कुछ वर्षों तक स्कूल में अध्यापक रहे। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। 1910 में अंग्रेज़ी, दर्शन, फ़ारसी और इतिहास लेकर इण्टर किया और 1919 में अंग्रेजी, फ़ारसी और इतिहास लेकर बी. ए. किया। बी.ए पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के सब-डिप्टी इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए।

1921 में असहयोग आन्दोलन से सहानुभूति रखने के कारण मुंशी प्रेमचंद ने सरकारी नौकरी छोड़ दी और आजीवन साहित्य-सेवा करते रहे। उन्होंने कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इसके बाद उन्होंने अपना प्रेस खोला तथा हंस नामक पत्रिका निकाली। लम्बी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 में उनका देहावसान हो गया।

साहित्यिक परिचय- मुंशी प्रेमचंद जी ने लगभग एक दर्जन उपन्यासों एवं तीन सौ कहानियों की रचना की उन्होंने माधुरी' एवं 'मर्यादा नामक पत्रिकाओं का सम्पादन किया तथा 'हंस' एवं 'जागरण' नामक पत्र भी निकाले। मुंशी प्रेमचंद उर्दू रचनाओं में नवाब राय' के नाम से लिखते थे। उनकी रचनाएँ आदर्शोन्मुख यथार्थवादी हैं, जिनमें सामान्य जीवन की वास्तविकताओं का सम्यक् चित्रण किया गया है। समाज-सुधार एवं राष्ट्रीयता उनकी रचनाओं के प्रमुख विषय रहे हैं।

प्रेमचंद जी ने हिन्दी कथा-साहित्य में युगान्तर उपस्थित किया। उनका साहित्य समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है। वह अपने समय की सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का पूरा प्रतिनिधित्व करता है। उसमें किसानों की दशा, सामाजिक बन्धनों में तड़पती नारियों की वेदना और वर्णव्यवस्था की कठोरता के भीतर संत्रस्त हरिजनों की पीडा का मार्मिक चित्रण मिलता है।

प्रेमचंद की सहानुभूति भारत की दलित जनता, शोषित किसानों, मजदूरों और उपेक्षिता नारियों के प्रति रही है। सामयिकता के साथ ही उनके साहित्य में ऐसे तत्त्व भी विद्यमान हैं, जो उसे शाश्वत और स्थायी बनाते हैं। मुंशी प्रेमचंद जी अपने युग के उन सिद्ध कलाकारों में थे, जिन्होंने हिन्दी को नवीन युग की आशा-आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का सफल माध्यम बनाया।

प्रेमचंद की रचनाएँ- मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं में प्रसिद्ध उपन्यास 18 से अधिक हैं, जिनमें 'सेवासदन, निर्मला', 'रंगभूमि, कर्मभूमि, 'गबन', 'गोदान' आदि प्रमुख हैं। उनकी कहानियों का विशाल संग्रह आठ भागों में मानसरोवर' नाम से प्रकाशित है, जिसमें लगभग तीन सौ कहानियाँ संकलित हैं। कर्बला, संग्राम और प्रेम की वेदी उनके नाटक हैं। साहित्यिक निबंध कुछ विचार' नाम से प्रकाशित हैं। उनकी कहानियों का अनुवाद संसार की अनेक भाषाओं में हुआ है। गोदान हिन्दी का एक श्रेष्ठ उपन्यास है।

भाषा- मुंशी प्रेमचंद जी उर्दू से हिन्दी में आए थे, अतः उनकी भाषा में उर्दू की चुस्त लोकोक्तियों तथा मुहावरों के प्रयोग की प्रचुरता मिलती है। प्रेमचंद जी की भाषा सहज, सरल, व्यावहारिक, प्रवाहपूर्ण, मुहावरेदार एवं प्रभावशाली है तथा उसमें अद्भुत व्यंजना- शक्ति भी विद्यमान है। मुंशी प्रेमचंद जी की भाषा पात्रों के अनुसार परिवर्तित हो जाती है।

प्रेमचंद की भाषा में सादगी एवं आलंकारिकता का समन्वय विद्यमान है। बड़े भाई साहब, नमक का दारोगा, पूस की रातः आदि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

शैली- मुंशी प्रेमचंद जी की शैली आकर्षक है। इसमें मार्मिकता है। उनकी रचनाओं में चार प्रकार की शैलियाँ उपलब्ध होती है। वे इस प्रकार हैं- वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, भावात्मक तथा विवेचनात्मक। चित्रात्मकता मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं की विशेषता है।

'मन्त्र' मुंशी प्रेमचंद की एक मर्मस्पर्शी कहानी है। इसमें विरोधी घटनाओं, परिस्थितियों और भावनाको का चित्रण करके मुंशी प्रेमचंद जी ने कर्तव्य-बोध का अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न किया है। पाठक मंत्र-मुग्ध होकर पूरी कहानी को पढ़ जाता है। भगत की अन्तर्द्वन्द्वपूर्ण मनोदशा, वेदना एवं कर्तव्यनिष्ठा पाठकों के मर्म को लेती है।

प्रेमचंद के उपन्यास

मुंशी प्रेमचंद के 18 उपन्यासः गोदान, सेवा सदन, प्रेमाश्रय, निर्मला, रंगभूमि, कर्मभूमि, कालाकल्प, गबन, प्रेमा, रूठी रानी (प्रेमचंद का एक मात्र ऐतिहासिक उपन्यास), प्रतिज्ञा (अपने उर्दू उपन्यास 'हमखुशी एक हमसुबाब' के हिन्दी रूपान्तर प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह' को परिष्कृत तथा नये रूप में प्रकाशित कराया),

वरदान (अपने उर्दू उपन्यास 'जलवए ईसार' का हिन्दी रूपान्तर), मंगल सूत्र (प्रेमचंद का अंतिम और अपूर्ण उपन्यास)।

प्रेमचंद की कहानी संग्रह- इनकी पहली कहानी 'ममता' है। 'प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी बड़े घर की बेटी ज़माना पत्रिका के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई। मुंशी प्रेमचंद ने 300 से अधिक कहानियाँ मानसरोवर नामक पुस्तक द्वारा आठ भागों में प्रकाशित हुई हैं जिनमें नवविधि, प्रेम पूर्णिमा, लाल फीता, नमक का दारोगा, प्रेम पचीसी, प्रेम प्रसून, प्रेम द्वाद्वशी, प्रेम तीर्थ, प्रेम प्रतिज्ञा, सप्त सुमन, प्रेम पंचगी, प्रेरणा, समरयात्रा, पंच प्रसून, नव जीवन, बड़े घर की बेटी, सप्त सरोज आदि प्रमुख हैं।

प्रतिनिधि कहानियां- प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियों में- पंच परमेश्वर, सज्जनता का दंड, ईश्वरी न्याय, दुर्गा का मंदिर, आत्माराम, बूढ़ी काकी, सवा सेर गेहूं, शतरंज के खिलाड़ी, माता का हृदय, सुजान भगत, इस्तीफा, अलग्योझा, पूस की रात, बड़े भाई साहब, होली का उपहार, ठाकुर का कुआं, बेटों वाली विधवा, ईदगाह, प्रेम प्रमोद, नशा, दफन आदि प्रमुख है।

कहानियों की सूचीः मुंशी प्रेमचंद की मानसरोवर के आठ भागों में प्रकाशित होने वाली 300 से अधिक कहानियों में से 118 के नाम निम्न हैं-

1. अनाथ लड़की
2. अन्धेर
3. अपनी करनी
4. अमृत
5. अलग्योझा
6. आखिरी तोहफ़ा
7. आखिरी मंजिल
8. आत्म-संगीत
9. आत्माराम
10. आल्हा
11. इज्जत का खून
12. इस्तीफा
13. ईदगाह
14. ईश्वरीय न्याय
15. उद्धार
16. एक आँच की कसर
17. एक्ट्रेस
18. कप्तान साहब
19. कफ़न
20. कर्मों का फल
21. कवच
22. कातिल
23. कोई दुख न हो तो बकरी खरीद ला
24. कौशल
25. क्रिकेट मैच
26. खुदी
27. गुल्ली डण्डा
28. गृह-दाह
29. गैरत की कटार
30. घमण्ड का पुतला
31. जुलूस
32. जेल
33. ज्योति
34. झाँकी
35. ठाकुर का कुआँ
36. तांगेवाले की बड़
37. तिरसूल

38. तेंतर
39. त्रिया-चरित्र
40. दण्ड
41 दिल की रानी
42. दुर्गा का मन्दिर
43. दूध का दाम
44. दूसरी शादी
45 देवी
46.देवी -एक और कहानी
47. दो बैलों की कथा
48. दो सखियाँ
49. धिक्कार
50. धिक्कार - एक और कहानी
51. नबी का नीति-निर्वाह
52. नमक का दरोगा
53. नरक का मार्ग
54. नशा
55. नसीहतों का दफ्तर
56. नाग-पूजा
57. नादान दोस्त
58. निर्वासन
59. नेउर
60. नेकी
61. नैराश्य
62. नैराश्य लीला
63. पंच परमेश्वर
64. पत्नी से पति
65. परीक्षा
66. पर्वत-यात्रा
67. पुत्र-प्रेम
68. पूस की रात
69. पैपुजी
70. प्रतिशोध
71. प्रायश्चित
72. प्रेम-सूत्र
73. बड़े घर की बेटी
74. बड़े बाबू
75. बड़े भाई साहब
76. बन्द दरवाजा
77. बाँका जमींदार
78. बेटोंवाली विधवा
79. बैंक का दिवाला
80. बोहनी
81. मनावन
82. मन्त्र
83. मन्दिर और मस्जिद
84. ममता
85. माँ
86. माता का हृदय
87. मिलाप
88. मुक्तिधन
89. मुबारक बीमारी
90. मैकू
91. मोटेराम जी शास्त्री
92. राजहठ
93. राष्ट्र का सेवक
94. स्वंग की देवी
95. लैला
96. वफ़ा का खजर
97. वासना की कड़ियां
98. विजय
99. विश्वास
100. शंखनाद
101. शराब की दुकान
102. शादी की वजह
103. शान्ति
104. शान्ति
105. शूद्र
106. सभ्यता का रहस्य
107. समर यात्रा
108. समस्या
109. सवा सेर गेहूँ नमक का दरोगा
110. सिर्फ एक आवाज
111. सैलानी बन्दर
112. सोहाग का शव
113. सौत
114. स्त्री और पुरूष
115. स्वर्ग की देवी

116. स्वांग 117. स्वामिनी 118. होली की छुट्टी

निबंध संग्रह- मुंशी प्रेमचंद के निबंधः पुराना जमाना नया जमाना, स्वराज के फायदे, कहानी कला (तीन भागों में), कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार, हिन्दी-उर्दू की एकता, महाजनी सभ्यता, उपन्यास, जीवन में साहित्य का स्थान आदि प्रमुख हैं।

प्रेमचंद के अनुवाद- मुंशी प्रेमचंद ने 'टॉलस्टॉय की कहानियाँ (1923), गाल्सवर्दी के तीन नाटकों का हड़ताल (1930), चाँदी की डिबिया (1931) और न्याय (1931) नाम से अनुवाद किया। उनका रतननाथ सरशार के उर्दू उपन्यास फसान-ए-आजाद का हिन्दी अनुवाद आजाद कथा बहुत मशहूर हुआ।

प्रेमचंद के नाटक

मुंशी प्रेमचंद ने तीन नाटकों की रचना की: संग्राम (1923) कर्बला (1924) और प्रेम की वेदी (1933)। इन रचनाओं के अतिरिक्त प्रेमचंद ने बाल साहित्य और अपने कुछ विचार भी रचनाओं के के माध्यम से व्यक्त किये है:

• बाल साहित्य के अंतर्गत रामकथा, कुत्ते की कहानी, दुर्गादास;

• कुछ विचार में- प्रेमचंद विविध प्रसंग, प्रेमचंद के विचार (तीन भागों में) आते हैं।

संपादन- मुंशी प्रेमचन्द ने 'माधुरी' एवं 'मर्यादा' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन किया। तथा अपना प्रेस खोलकर 'जागरण' नामक समाचार पत्र तथा 'हंस' नामक मासिक साहित्यिक पत्रिका भी निकाली। उनके प्रेस का नाम 'सरस्वती' था। वे उर्दू की पत्रिका 'जमाना' में नवाब राय के नाम से लिखते थे।

विचारधारा- अपनी विचारधारा को प्रेमचंद ने आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहा है। प्रेमबंद साहित्य की वैचारिक यात्रा आदर्श से यथार्थ की ओर उन्मुख है। सेवासदन के दौर में वे यथार्थवादी समस्याओं को चित्रित तो कर रहे थे लेकिन उसका एक आदर्श समाधान भी निकाल रहे थे। 1936 तक आते-आते महाजनी सभ्यता, गोदान और कफ़न जैसी रचनाएँ अधिक यथार्थपरक हो गईं, किंतु उसमें समाधान नहीं सुझाया गया। प्रेमचंद स्वाधीनता संग्राम के सबसे बड़े कथाकार हैं। इस अर्थ में उन्हें राष्ट्रवादी भी कहा जा सकता है। प्रेमचंद मानवतावादी भी थे और

मार्क्सवादी भी। प्रगतिवादी विचारधारा उन्हें प्रेमाश्रम के दौर से ही आकर्षित कर रही थी।

1936 में मुंशी प्रेमचन्द ने प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन को सभापति के रूप में संबोधन किया था। उनका यही भाषण प्रगतिशील आंदोलन के घोषणा पत्र का आधार बना। इस अर्थ में प्रेमचंद निश्चित रूप से हिंदी के पहले प्रगतिशील लेखक कहे जा सकते हैं।

विरासत- प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाने में कई रचनाकारों ने भूमिका अदा की है। उनके नामों का उल्लेख करते हुए रामविलास शर्मा 'प्रेमचंद और उनका युग' में लिखते हैं कि- प्रेमचंद की परंपरा को 'अलका', 'कुल्ली भाट, 'बिल्लेसुर बकरिहा' के निराला ने अपनाया। उसे 'चकल्लस' और 'क्या-से-क्या' आदि कहानियों के लेखक पढ़ीस ने अपनाया। उस परंपरा की झलक नरेंद्र शर्मा, अमृतलाल नागर आदि की कहानियों और रेखाचित्रों में मिलती है।

स्मृतियाँ- प्रेमचंद की स्मृति में उनके गाँव लमही में उनके एक प्रतिमा भी स्थापित की गई है। भारतीय डाक विभाग ने 30 जुलाई 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया। गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहाँ प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। प्रेमचंद की 125वीं सालगिरह पर सरकार की ओर से घोषणा की गई है कि वाराणसी से लगी इस गांव में प्रेमचंद के नाम पर एक स्मारक तथा शोध एवं अध्ययन संस्थान बनाया जाएगा।

3.5 गबन उपन्यास के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

जालपा का चरित्र चित्रण:-

जालपा उपन्यास की नायिका है। उपन्यास के अन्य पात्रों की तुलना में वह उपन्यास में प्रमुख स्थान रखती है। वह उपन्यास का केन्द्र-बिंदु है और घटनाओं का विकास उसी के चरित्र के कारण होता है। जालपा का बचपन तथा प्रयाग का गृहस्थ-जीवन दुर्बलताओं से भरा पड़ा है। वह नारी की अनेक दुर्बलताओं से युक्त है, लेकिन रमानाथ के प्रयाग से जाने के बाद उसमें प्रेम, त्याग, सहिष्णुता, साहस, बुद्धि, कौशल आदि अनेक गुणों का श्रीगणेश होता है। जालपा के प्रारंभिक चरित्र को देखकर कोई यह अनुमान भी नहीं लगा सकता कि यह नारी इतनी कुशल,

साहसी एवं क्षमता से युक्त हो जायेगी। वस्तुतः उसका चरित्र दुर्गुणों एवं दुर्बलताओं से गुणों एवं सफलता की ओर उन्मुख होता है। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार है।

(1) आभूषण-प्रियता- जालपा के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उसकी आभूषण-प्रियता है। माता-पिता की इकलौती संतान होने के कारण वह बचपन से ही आभूषणों में पलती है। उसके पिता दीनदयाल जब कभी प्रयाग जाते तो जालपा के लिए कोई-न-कोई आभूषण अवश्य लाते। उनकी व्यावहारिक बुद्धि में यह विचार ही न आता था कि जालपा किसी और चीज से भी अधिक प्रसन्न हो सकती है। गुड़िया और खिलौने को वह व्यर्थ समझते थे। जालपा अपनी माँ का चन्द्रहार देखकर हट करने लगती है। उसकी माँ उसे समझाती है कि उसके ससुराल से चन्द्रहार आयेगा। परन्तु सात साल बाद जब उसका विवाह होता है तो उसकी ससुराल से चन्द्रहार नहीं आता। वह इस बात से अत्यंत दुखी हो जाती है। उसे ऐसा लगता है कि उसकी देह में एक बूँद रक्त नहीं है। चन्द्रहार न मिलने पर वह दुखी होकर बाकी के गहने भी नहीं पहनती है। गहनों के चोरी हो जाने पर वह पूरी तरहा से टूट जाती है और सबसे हँसना-बोलना, खाना-पिना सब छोड़ देती है। रमानाथ उसके दुख को देखकर उधार के गहने बनवा देने की बात करती है। जालपा अपने झूठ-मूठ के संयम को बनाए रखती है लेकिन अवसर मिलने पर तानों द्वारा गहने न होने का दुख प्रकट करती है। जालपा के आभूषण प्रियता के कारण ही रमानाथ कर्ज में डूब जाता है और दफ्तर के पैसों से ही कर्ज उतारने की बेवकूफी करने की सोचता है। बाद में यही कारण बनता है उसके प्रयाग से भाग जाने का। जालपा रमानाथ के प्रयाग छोड़कर अचानक चले जाने पर बदल सी जाती है। उसे अपनी भूल का एहसास होता है। वह अपनी सहेली रतन के पास अपना जड़ाउ कंगन बेचकर रमानाथ के ऊपर लगे गबन के इलजाम को मिटा देती है।

(2) स्वाभिमान की भावना- जालपा के चरित्र में स्वाभिमान की भावना देखी जा सकती है। जब जालपा के सारे गहने चोरी हो जाते है और उसके माता-पिता को पता चलता है कि जालपा चन्द्रहार न मिलने पर दुखी है और सबसे दूर-दूर रहती है तो उसकी माँ अपना चन्द्रहार पार्सल करके भेज देती है। लेकिन जालपा यह हार स्वीकार नहीं करती, क्योंकि वह किसी का एहसान नहीं लेना चाहती थी। वह

अपनी माँ को दिखा देना चाहती थी कि वह गहनों की भूखी नहीं है। दूसरी बार उसका स्वाभिमान तब जागता है जब वह रमानाथ को लेने कलकत्ता पहुँचती है और उसे पता चलता है कि रमानाथ ने अपने स्वार्थ-सिद्ध के लिए कई सारे निर्दोष लोगों के खिलाफ अदालत में गवाही दी है। उसे यह बिलकुल स्वीकार नहीं था कि रमानाथ किसी निर्दोष को सजा दिलवाकर धन और वैभव हासिल करे और जालपा को गहने बनवा कर दे। वह रमानाथ को बहुत समझाने का प्रयास करती है और उसकी कायरता पर उसे फटकारती भी है।

(3) बुद्धि-संपन्न और प्रभावशाली व्यक्तित्व- जालपा अपने समाज तथा काल के मुकाबले बहुत बुद्धिशाली तथा प्रभावशाली थी। जहाँ अन्य स्त्रियाँ घर की चार दिवारी के अंदर सीमित थी वही जालपा रमानाथ के नौकरी लगते ही अपने आस-पास की स्त्रियों में अपना प्रभाव जमा लेती है। सिर्फ इतना ही नहीं जब रमानाथ प्रयाग छोड़कर चला जाता है तो उसे ढूँढने का अनोखा तरीका निकाल लेती है। वह शतरंज की पहेली अखबार में प्रकाशित कराकर पति को खोज निकालने की योजना बना लेती है। वह इसमें सफल भी होती है। अपनी चतुराई से रमानाथ पर लगे गबन के इलजाम को भी मिटा देती है।

(4) सद् गुणों की मूर्ति- जालपा में कुछ अच्छे गुण कूट-कूट भरे है। जब वह कलकत्ता पहुँचती है तो वह रमानाथ के झूट तथा कायरता के लिए उसे खूब फटकारती है। वह अपने-आप को खतरें में डालकर भी रमानाथ को इस गलत काम को करने से रोकने की कोशिश करती है। वह उस सभी तथा कथित डाकूओं की खोज-खबर निकाल लेती है जिनको रमानाथ की झूटी गवाही द्वारा फाँसी की सजा तथा जेल हो जाती है। वह दिनेश नामक स्कूल-मास्टर की सेवा करने लग जाती है। जालपा को यह बिलकुल स्वीकार नहीं था कि किसी के खून से अपने आराम का महल तैयार हो। वह अंत तक अपने सद्-व्यवहार से सबका मन मोह लेती है। रतन के पति का जब देहांत हो जाता है और उसका भतिजा मणिभूषण उसकी सारी जायदाद छल से अपने नाम कर लेता है तब जालपा ही रतन का साथ देती है। जालपा के सद् गुण देख कर जोहरा बाई भी अपने-आप को बदल लेती है जो कि एक वेश्या थी और केवल भोग-विलास का ही जीवन उसे पसन्द था।

इस प्रकार हम देख सकते है कि जालपा का चरित्र उपन्यास के सभी पात्रों से श्रेष्ठ। वह एक देशभक्त नारी है। देश के खिलाफ जाने वालों से वह घृणा करती है। आभूषण-प्रियता उसके चरित्र में पायी जाती है लेकिन जब परिस्थितियाँ बदल जाती है तो वह भी अपनी कमजोरियों को दूर करने की कोशिश करती है। वस्तुतः जालपा का स्वाभाविक श्रृंगार-प्रेम, परंपरागत रीति -रीवाजों को तोड़कर स्वतंत्र चिंतन की क्षमता, विशाल हृदयता, देशभक्ति व मानव-प्रेम की भावना, त्याग करने की अपार शक्ति उसे भारतीय नारी के नए रूप का प्रतीक बना देते हैं।

रमानाथ का चरित्र चित्रण:-

प्रेमचन्द एक सच्चे कलाकार थे। उनका जीवन संघर्षमय परिस्थितियों में व्यतीत हुआ था। वह जन-जीवन के निकट संपर्क में रहे थे। इसी कारण उनके पात्रों में भी सजीवता है। अपने उपन्यासों के विविध पात्रों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों को दूर करना उनका उद्वेश्य था। 'गबन' का कथानक एक निम्नमध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। यह वह वर्ग है, अपनी शिक्षा के कारण समाज में ऊपर तो उठ गया है, किंतु धन की कमी के कारण सही विकास नहीं कर पाया। इसी कारण झूठी आत्मप्रशंसा, देश-प्रेम का अभाव, धन के पीछे सब कुछ भूल जाना आदि कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो सामान्यतः इस वर्ग के अधिकांश व्यक्तियों में पायी जाती है। इस वर्ण की इसी प्रवृति को व्यक्त करने के लिए 'गबन' में रमानाथ को प्रस्तुत किया गया है।

रमानाथ उपन्यास का नायक है। उपन्यास के पुरूष-पात्रों में उसका प्रमुख स्थान है। उपन्यास की सभी घटनाओं का वह केंद्र बिन्दु है। उसके चरित्र के कारण उपन्यास का कथानक विकसित होता चलता है। उसके चरित्र को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-प्रयाग का गृहस्थ जीवन तथा कलकता का प्रवास काल। रमानाथ का चरित्र प्रांरभ से अंत तक एक ही धारा में प्रवाहित होता चलता है, लेकिन प्रयाग और कलकत्ता की परिस्थितियों में अंतर होने के कारण उसके चरित्र की भिन्न-भिन्न विशेषताएँ सामने आती है। प्रयाग से गबन के भय से भागने की घटना भी उसके चरित्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता को संमुख लाती है। लेखक ने उसके चरित्र को प्रारम्भ में जैसा चित्रित किया है। वह अंत तक उसी रूप में दिखायी देता है। उसके चरित्र में अपनी दुर्बलताओं को जानकर भी उनसे मुक्त होने की सामर्थ्य नहीं है। वह जानता है कि वह बुरा काम कर रहा

है, फिर भी वह उसे करता है। उपन्यास के प्रारंभ से अंत तक अनेक बार ऐसे अवसर आते हैं, जब उसकी आत्मा यह कहती है कि वह अनुचित कार्य कर रहा है, लेकिन उस कार्य को करने से वह अपने को रोक नहीं पाता। उसके चरित्र की यह सबसे बड़ी दुर्बलता है। इसके कारण ही उपन्यास में विभिन्न घटनाओं एवं परिस्थितियों का जन्म होता है।

रमानाथ दयानाथ का पुत्र है। दयानाथ पचास रूपये मासिक पर कचहरी में नौकर थे। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण रमानाथ को पढ़ाई छोड़नी पड़ी। पिता ने उससे साफ कह दिया कि मैं तुम्हारी डिग्री के लिए सबको भूखा और नंगा नहीं रख सकता, पढ़ना चाहते हो तो अपने पुरूषार्थ से पढ़ो। किंतु रमानाथ में इतनी प्रेरणा एवं लगन नहीं थी। वह सारा दिन शतंरज खेलता, सैर-सपाटे करता और माँ और छोटे भाईयों पर रोब जमाता। दोस्तों की बदौलत उसका शौक पुरा हो जाया करता- किसी का चेस्टर माँग लिया, किसी का जूता माँग कर पहन लिया और किसी की घड़ी कलाई पर बाँध ली, कभी बनारसी फैशन में निकले, कभी लखनबी फैशन में। रमानाथ के इस व्यवहार के कारण ही उसका पिता दयानाथ उसका विवाह कर देना अधर्म समझता है। लेकिन अपनी पत्नी जागेश्वरी के दबाव के कारण दयानाथ को जालपा वाला रिश्ता मान लेना पड़ा। रमानाथ में से ही दिखावा की प्रवृति रही है। वह चाहता था कि बारात ऐसी धूम-धाम से निकले कि गाँव भर में शोर मच जाए। पहले दुल्हे के लिए पालकी का विचार था, लेकिन रमानाथ ने मोटर पर जोर दिया। उसे ठाट-बाठ, से रहने का शौक था और विवाह के बाद वह टेनिस शर्ट, पतलून तथा कैनवस पहनकर निकलता है। उसकी इसी मनोवृति के कारण विवाह पर अत्यधिक खर्च किया गया और लोगों का रूपया उधार हो गया। रमानाथ की इसी मनोवृति ने उसे क्रमशः पतन की ओर अग्रसर कर दिया।

उसके प्रमुख चरित्र चित्रण इस प्रकार हैः-

(1) कायर एवं मिथ्याभिमानीः- मिथ्याभिमान रमानाथ के चरित्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसी कारण उसके विवाह में शान-शौकत के लिए अंधाधुंध खर्च किया जाता है, जिससे सर्राफ के रूपये चुकाए न जा सके। रमानाथ ने आर्थिक स्थिति का सच्चा रूप अपनी पत्नी को भी नहीं बतलाया। वह जालपा से अपनी स्थिति

की खूब बढ़-बढ़कर बातें करता हैः ‘‘जमींदारी है, उससे कई हजार का नफा है। बैंक में रूपये है, उनका सूद आता है। (गबन, पृष्ठ-16)

(2) नैतिक बंधनों की शिथिलताः- रमानाथ के चरित्र की दूसरी विशेषता उसके नैतिक बंधनों की शिथिलता है। वह प्रत्येक अवसर पर झूठी बात कहकर काम चलाने का अभ्यस्त हो गया है। वह अपने माता-पिता से तो झूठ बोलता है, रतन को भी धोखे में रखता है। उसके रूपयों को अपने उधार रूपये चुकाने के काम में लाता है और असत्य स्थिति बताकर टालता रहता है। वह अपनी पत्नी जालपा से भी झूठ बोलता है और सत्य स्थिति को छिपाता रहता है। म्युनिसिपैलिटी में नौकरी मिलने पर वह जालपा से कहता है कि उसे चालीस रूपये मिलते है और माता-पिता को केवल बीस रूपये ही बताता है। उसके पिता दयानाथ को जब यह ज्ञात होता है कि वह रिश्वत लेता है तो वह उसे ईमानदारी का पाठ पढ़ाते है, लेकिन वह उनकी एक नहीं सुनता। वह कह देता हैः-‘‘ दस्तुरी रिश्वत नहीं है, सभी लेते हैं और खुल्लम-खुल्ला लेते हैं। लोग बिना माँगे आप ही आप देते है, मैं किसी से माँगने नहीं जाता।’ रमानाथ के चरित्र में नैतिक बंधनों की शिथिलता सर्वत्र देखी जा सकती है। सारे उपन्यास में केवल जोहरा ही एक ऐसा पात्र है जिसके साथ वह झूठ, कपट तथा दगाबाजी का व्यवहार करता है। रतन, वकील साहब, देवीदीन, जग्गो आदि निश्छल पात्रों के साथ भी वह कपट एवं छल का व्यवहार करता है। प्रयाग में वह पत्नी-भक्त दिखाई देता हैं, लेकिन कलकत्ता आने पर वह भ्रष्ट एवं पतित हो जाता है और पुलिस के झूठे प्रलोचनों में फंसकर वेश्या के साथ मनोविनोद एवं आनंद करता है। वह अपने स्वार्थ के लिए बेगुनाहों के विरूद्ध झूठी गवाही देने को तैयार हो जाता है। अपने को पुलिस के चंगुल से बचाने के लिए वह निरपराधियों को फाँसी दिलवाने में नहीं हिचकता। जालपा उसे इस पाप से जालपा चाहती है। वह यह नहीं चाहती कि उसके पति के कारण अनेक व्यक्तियों का खून हो और उसे अपयश मिले। लेकिन उसकी प्रेरणाएँ निष्फल होती है। रमानाथ का दुर्बल चरित्र पुलिस के सामने घुटने टेक देता है।‘‘मुझमें अब ठोकरें खाने की शक्ति नहीं है। न मैं पुलिस से रार ले सकता हूँ । दुनिया में सभी थोडे ही आदर्श पर चलते है। मुझे क्यों उस ऊँचाई पर चढ़ाना चाहती हो, जहाँ पहुँचने की शक्ति मुझ में नहीं है।’’ (गबन, पृष्ठ255) उसके चरित्र में यह अशक्तता उसमें नैतिक बंधनों की शिथिलता के कारण ही उत्पन्न

होती है। उसके दुर्गुणों ने उसे इतना दुर्बल बना दिया है कि परिस्थितियों के अनुकूल होने पर भी वह नैतिक पक्ष पर दृढ़ता से टिक नहीं पाता और तनिक-सा भय एवं लालच उसे पतन की ओर खींच ले जाता है।

(3) हृदय की सरलता एवं उदारताः- रमानाथ के चरित्र में थोड़ा-बहुत उज्ज्वल अंश भी विद्यमान है। वह पत्नीव्रत का पालन करता है। अनेक बुराइयों से युक्त रमानाथ के बारे में लेखक ने लिखा हैः- पति की दृष्टि से वह आदर्श है और जालपा अगर माँगती तो प्राण तक उसके चरणों पर रख देता है, रूपये की हकीकत ही क्या।" जालपा भी रमानाथ जैसे रसिक, सहृदय एवं निःस्वार्थी पति को पाकर अपने भाग्यशाली समझती है। वकीलों की बहस ने रमानाथ के चरित्र को निखार दिया है। उसकी सरलता एवं सहृदयता ने एक वेश्या तक को मुग्ध कर लिया और वह उसे बहकाने तथा बहलाने के स्थान पर उसके मार्ग का दीपक बन गई। उसके हृदय में मातृभक्ति भी विद्यमान है। आदर्श पुत्र की तरह वह अपने सिर पर भारी बोझ उठाकर भी माँ को कंगन भंेट कर अपना कर्त्तव्य निभाना चाहता है। यही नहीं, देवीदीन की पत्नी जग्गो को भी उसने माता के सदृश मान लिया और पुलिस द्वारा प्राप्त कंगन उसे देने आता है। रमानाथ उन सभी दुर्बल मनुष्यों की भाँति एक साधारण मनुष्य है जिनके जीवन में सात्यिक जीवन कभी आदर्श नही हो सकता। ऐसे व्यक्तियांे को अपना कोई आदर्श नहीं होता न कोई ध्येय होता है। ऐसे व्यक्तियों को परिस्थितियाँ जिधर ले जाती है, उधर ही वह बढ़ते रहते है। परिस्थितियों का सामना करके अपने चरित्र को बलवान बनाने की सामर्थ्य ऐसे चरित्रों में नहीं होता। रमानाथ जैसे पतित व्यक्ति का अंत में सुधार होता देखकर पाठक को आश्चर्य होता है। परंतु यह तो प्रेमचंद जी की उस आर्दशवादिता का परिणाम है, जिसकी झलक हम उनके सभी उपन्यासों में पाते है। प्रेमचंद की आदर्शवादिता रमानाथ को ठीक मार्ग पर लाकर खड़ा कर देती है और वह गाँव में आकर निश्छल जीवन व्यतीत करने लगता है। इस प्रकार, आदर्शवाद के कारण रमानाथ के चरित्र-चित्रण में अंत में कुछ अतिरंजना अवश्य आ गई है, किंतु यथार्थता का आधार कहीं भी कम नहीं होने पाया है। वास्तव में रमानाथ के रूप में उपन्यासकार ने मध्यवर्ग के एक ऐसे नवयुवक का यथार्थ अंकन किया है जो जीवन का कोई लक्ष्य नहीं समझता। एक साधारण विद्यार्थी से जालपा के पति होने म्युनिसिपैलिटी में नौकरी करने तथा पुलिस के चंगुल में फँसने तक वह

शक्तिहीन तथा लक्ष्यहीन चरित्र का व्यक्ति रहा है। अपनी दुर्बलताओं के कारण ही वह अपनी पत्नी के गहनों की चोरी करता है, उधार गहने खरीदने के पक्ष में न होते हुए भी दुकानदारों की दृष्टि में अमीर बाबू बनने के लिए गहने खरीद लेता है, रतन के रूपयों के सबंध में असत्य बातें बनाता रहता है, अपनी पत्नी से भी रूपये और आभूषण माँगने में शर्माता है, कायस्थ होने पर भी सरल-हृदय वाले देवीदीन के संमुख अपना परिचय देते समय स्वयं को ब्राहम्ण बताता है, पुलिस के चंगुल मे फँसकर झूठी गवाही देने के लिए मुखबिर बन जाता है, प्रलोभनों एवं भय के सामने देवीदीन तथा जालपा को दिए गए वचनों को भूल करने वाला रमानाथ मध्यवर्गीय दुर्बलता का ऐसा शिकार हुआ कि न तो वह अपना अमीरी की ही रक्षा कर सका और न जालपा को सुखी रख सका। वस्तुतः उपन्यासकार ने उसके चरित्र के माध्यम से मध्यवर्गीय व्यक्ति की अर्थाभाव से उत्पन्न परिस्थिति एवं प्रदर्शन की भावना को चित्रित किया है। इस दृष्टि से रमानाथ का चरित्राकंन सफल रहा है।

3.6 गबन उपन्यास की समीक्षा

प्रेमचंद ने अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों में चरित्र-चित्रण तथा पात्रों की स्वाभाविकता पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। 'सेवासदन' में द्वंद्वशील पात्रों की जो स्थिति सामने आती है, वह आगे के उपन्यासों में विकसित होती चली गयी तथा 'गबन' में आकर पात्रों के शील औचित्य में भली तरह प्रस्फुटित हुई। 'गबन' में पात्रों के चरित्र का विकास विभिन्न परिस्थितियों में होकर हुआ है। उसकी मुख्य विशेषताएं निम्न तरह है-

अंतवृत्तियों का निरूपण :- 'गबन' में प्रेमचंदजी का ध्यान रेखाचित्र पेश करने के स्थान पर पात्रों की अंतवृत्तियों के निरुपण की तरफ ही ज्यादा रहा है। इससे चरित्र-चित्रण में सजीवता आ गई है। निम्न उदाहरण में जालपा के हृदय में आभूषणों की लालसा का कितना सजीव चित्र अंकित हुआ है-

"वह लालसा जो सात वर्ष हुए उसके हृदय में अंकुरित हुई थी, जो इस समय पुष्प और पल्लव से लदी खड़ी थी, उस पर वज्रपात हो गया। वह हरा-भरा लहलहाता हुआ पौधा जल गया, केवल उसकी राख रह गयी। आज ही के दिन पर तो उसकी समस्त अभिलाषाएं अवलंबित थी। दुर्दैव ने आज यह अवलंब भी छीन लिया। उस

निराशा के आवेश में उसका ऐसा जी चाहने लगा कि अपना मुंह नोंच डाले। उसका वश चलता तो वह चढ़ावे को उठाकर आग में फेंक देती। कमरे में एक आले पर शिव की मूर्ति रखी हुई थी। उसने उठाकर ऐसा पटका कि उसकी आशाओं की भांति वह चूर-चूर हो गयी। उसने निश्चित किया कि मैं कोई आभूषण न पहनूंगी, आभूषण पहनने से होता ही क्या है? जो रूप-विहीन हों, वे अपने को गहनों से सजाएं, मुझे तो ईश्वर ने यों ही सुंदरी बनाया है। मैं गहने न पहनकर बुरी न लगूंगी। सस्ती चीजें उठा लाए, जिसमें रुपये खर्च होते थे, उसका नाम न लिया। अगर गिनती ही गिनानी थी, तो इतने ही दामों में इनसे दूने गहने आ जाते ।"

वैयक्तिकता तथा वर्ग-प्रतिनिधित्व - 'गबन' के पात्र जहां अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है, वहां वे अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं भी लेकर आते हैं। रमानाथ में एक तरफ तो कायरता है तथा मनोबल का अभाव है तथा दूसरी तरफ उसमें बाह्याडंबर तथा रिश्वतखोरी की वर्गगत विशेषताएं भी मौजूद हैं। देवीदीन जहां व्यक्तिगत सीमा में नशेबाज है, वहां उसमें परोपकारिता तथा देशभक्ति भी है। वह निर्द्वन्द्व प्रवृत्ति का है।

पारस्परिक विरोधी गुण- 'गबन' में विरोधी गुणों के पात्रों की भी अवतारणा है। दयानाथ जहां घूस से कोसों दूर भागते हैं, वहां उनका पुत्र रमानाथ म्युनिसिपैलिटी में घूस लेता है। एक तरफ रमानाथ अपने स्वार्थ हेतु निदर्दोषों को फांसी तथा सजा दिलवाता है, दूसरी तरफ देवीदीन रमानाथ को आश्रय देता है। वह स्वतंत्रता संग्राम में अपने युवा बेटों का बलिदान कर चुका है। धनी इंदुभूषण की पत्नी के आभूषण-प्रेम का औचित्य है, लेकिन चुंगी में नौकरी करने वाले अल्प-वेतनभोगी रमानाथ की पत्नी जालपा का आभूषण-प्रेम शोभा नहीं देता। इस तरह प्रेमचंद ने परस्पर चरित्रों के पात्रों को देखकर चरित्र-चित्रण को स्वाभाविकता प्रदान की है।

मध्यमवर्गीय पात्र -'गबन' के प्रायः सभी पात्र मध्यम वर्ग के है। रमानाथ, जालपा, रतन, दयानाथ आदि मध्यम वर्ग के पात्र हैं। देवीदीन तथा जग्गो भी आर्थिक दृष्टि से मध्यम वर्ग के होहैं। 'गबन' में प्रेमचंदजी का उद्देश्य मध्यमवर्गीय बाबू श्रेणी के पात्रों की दशा का यथार्थ चित्रण करना रहा है। वकील इंदुभूषण तथा रतन को उच्च वर्ग के अंतर्गत रखा जा सकता है।

विस्तृत पात्र-योजना- 'गवन' में पात्रों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। मुख्तार क्लर्क, वकील, सर्राफ, दलाल, फल बेचने वाला, क्रांतिकारी युवक, वेश्या, पुलिस अधिकारी, न्यायाधीश आदि सभी वर्ग के पात्रों का 'गवन' में स्थान मिला है।

स्वाभाविक तथा यथार्थता- 'गबन' की पात्र-योजना बड़ी ही स्वाभाविक है। प्रायः सभी पात्र हमारे बीच के हैं। वे सच्चे अर्थों में यथार्थ मानव है। इनके दैनिक व्यवहार तथा आचार-विचार हमारे लिए सर्वथा परिचित हैं। 'गबन' के पात्रों में समस्त मानवीय दुर्बलताएं मिलती हैं। दुर्बलताओं को पार कर वे अंत में आदर्श पर पहुंच जाते हैं।

अंतर्द्वन्द्ध तथा मनोविश्लेषण- 'गवन' में पात्रों का चरित्र-चित्रण मनोविश्लेषणात्मक पृष्ठभूमि में हुआ है। कई स्थलों पर पात्रों के अंतद्वंद्व का सुंदर चित्रण हुआ है। घर में पलायन करते समय रमानाथ के हृदय में अंतद्वंद्व की भीषण आंधी उठती है-

"वह धड़-धड़ करता हुआ ऊपर से उतरा और घर से बाहर निकल गया। कहां अपना मुंह छिपा ले ? कहां छिप जाय कि उसे कोई देख न सके ? उसकी दशा वही थी, जो किसी नंगे आदमी की होती है। वह सिर से पांव तक कपड़े पहने हुए भी नंगा था। आह ! सारा पर्दा खुल गया। उसकी सारी कपट-लीला खुल गयी। जिस बात को छिपाने की उसने इतने दिनों चेष्टा की, जिसको गुप्त रखने के लिए उसने कौन-कौन सी कठिनाइयां नहीं झेली, उन सबों ने आज मानो उनके मुंह पर कालिख पोत दी।"

कलात्मकता- 'गबन' की पात्र योजना तथा चरित्र-चित्रण में कलात्मकता है। प्रायः सभी चरित्र यथार्थवादी है। वातावरण तथा परिस्थितियां उनको प्रभावित करती हैं। परिस्थितियों का शिकार होकर ही रमानाथ पतन के गर्त में गिरता है। अतः पाठक उससे घृणा नहीं कर पाता तथा वह पात्रों की संवेदना प्राप्त कर लेता है। जालपा के चरित्र में परिवर्तन सर्वथा नाटकीय है। जोहरा के चरित्र में परिवर्तन करने वाली परिस्थितियां ही विद्यमान हैं।

निष्कर्ष- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पात्र-योजना तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'गबन' उपन्यास बहुत ही सफल है। चरित्र-चित्रण में स्वाभाविकता, सार्थकता, यथार्थता, मनोवैज्ञानिकता और नाटकीयता है। सभी पात्र यथार्थ जगत के सजीव प्राणी हैं।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 जालपा के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

---

2 रमानाथ का चरित्र कैसा है?

3.7 सार- संक्षेप:-

गबन हिंदी साहित्य का एक प्रसिद्ध उपन्यास है, जो समाज में नैतिक पतन, लालच, और पारिवारिक संबंधों के जटिल पहलुओं को दर्शाता है। यह उपन्यास प्रेमचंद की लेखन कला और उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। गबन की कहानी भारतीय समाज के उस समय की है, जब मध्यम वर्ग में दिखावे और झूठी प्रतिष्ठा की महत्वाकांक्षा बढ़ रही थी। यह उपन्यास समाज में नैतिकता के क्षरण और भ्रष्टाचार के बढ़ते प्रभाव को उजागर करता है।

मुख्य पात्र

रामनाथ: एक मध्यम वर्गीय युवक, जो अपनी पत्नी की इच्छाओं और सामाजिक दबावों के चलते गबन (चोरी) की ओर बढ़ता है।

जालपा: रामनाथ की पत्नी, जो आभूषणों की शौकीन है और पारिवारिक कठिनाइयों के बावजूद अपने पति से प्रेम करती है।

रतन: रामनाथ का मित्र, जो कहानी में सहायक भूमिका निभाता है।

पन्ना: जालपा की सहेली, जो कहानी के नैतिक पक्ष को दर्शाती है।

कहानी की शुरुआत रामनाथ और जालपा के विवाह से होती है। जालपा आभूषणों की बेहद शौकीन है और अपनी मां के नकली गहनों के कारण उपेक्षित महसूस करती थी। रामनाथ अपनी पत्नी को खुश रखने के लिए संघर्ष करता है। जालपा को खुश करने और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के दबाव में रामनाथ कर्ज लेता है। कर्ज चुकाने में असमर्थ होने के कारण वह अपने दफ्तर से पैसे गबन

कर लेता है। रामनाथ अपने गबन के कारण पुलिस से बचने के लिए घर छोड़कर भाग जाता है। जालपा को जब यह सच पता चलता है, तो वह गहनों की अपनी लालसा को लेकर अपराधबोध महसूस करती है। जालपा को यह समझ आता है कि उसकी इच्छाओं ने रामनाथ को गलत रास्ते पर धकेल दिया। वह अपने गहनों को बेचकर रामनाथ की मदद करने का प्रयास करती है। रामनाथ को अपने कृत्य पर गहरा पछतावा होता है। अंत में, जालपा के साथ मिलकर वह अपने अपराध की सजा भुगतने और एक नया जीवन शुरू करने का निश्चय करता है। गबन यह संदेश देता है कि दिखावे और झूठी प्रतिष्ठा के पीछे भागने से परिवार और जीवन में विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं। पारस्परिक समझ, सादगी, और नैतिक मूल्यों के महत्व को यह उपन्यास गहराई से रेखांकित करता है। गबन उपन्यास प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि और उनकी सामाजिक चिंताओं का प्रतिबिंब है। यह पाठकों को समाज में नैतिकता, पारिवारिक जीवन, और सच्चाई के महत्व को समझने की प्रेरणा देता है। इसकी कहानी सरल, लेकिन प्रभावशाली है, जो हर व्यक्ति को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करती है।

3.8 मुख्य शब्द

1. समर्पण - जालपा का अपने गहनों का त्याग, जो पारिवारिक प्रेम और सुधार का प्रतीक है।
2. सामाजिक प्रतिष्ठा - समाज में सम्मान बनाए रखने का दबाव, जो रामनाथ के कृत्यों का कारण बनता है।
3. नैतिकता - उपन्यास का केंद्रीय विषय, जो रामनाथ और जालपा के जीवन को प्रभावित करता है।
3.आर्थिक संघर्ष - मध्यम वर्गीय परिवार की समस्याओं को दर्शाने वाला विषय।
4 यथार्थवाद - प्रेमचंद की लेखनी का मुख्य गुण, जो कहानी को प्रामाणिक बनाता है।

3.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

1 जालपा उपन्यास की नायिका है-घटनाओं का विकास भी उसी के चरित्र के माध्यम सेहोता है। उसका बचपन और प्रयाग का जीवन कमजोरियों से भरा हुआ है, लेकिन उपन्यास के उत्तरार्द्ध में उसमें प्रेम, त्याग, साहस, बुद्धि और कौशल आदि गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता है। उसका जीवन दुर्गुणों से सद्गुणों की ओर अग्रसर होता है। जालपा के चरित्र में निम्न विशेषतायें देखी जा सकती है-

1. अद्वितीय सुन्दरी- जालपा अपने रूप-माधुरी, शील, विनय और मधुर कण्ठ के कारण मोहल्ले की नेत्री बनती है। उसमें कुलीन स्वियों का रूप है। उसका रूप स्वाभाविक था।

2. विलासप्रिय- जालपा एक रिश्वतखोर बाप की बेटी है। उसने अपने जीवन में कोई कार्य नहीं सीखा। वह अपने पिता के सुख-समृद्धिमय परिवार से विलासिता विरासत में लेकर आई है। वह ग्रामीण युवती शहर की चकाचौंध से अभिभूत न होकर उसके रंग में रंग जाती है। अपने पति पर जादू करके विलास की अधिकतर वस्तुएँ मंगाती है।

3. आभूषणप्रिय - जालपा आभूषणों से अत्यधिक प्रेम करती थी। इसका एक मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि आरम्भ से ही वह जिस वातावरण में पली उसमें गहनों की इतनी अधिक चर्चा हुआ करती थी कि वह गहनों के विषय में बहुत अधिक सोचने लगती है। यद्यपि गहनों से अधिक प्रेम होना बुरा है फिर भी इसका अच्छा परिणाम यह हुआ कि जालपा की इस दशा को देखकर रमानाथ नौकरी करने का निश्चय करता है।

4. गरीबों से सहानुभूति -जब रमानाथ ऊपर की आमदनी की बात करता है, जालपा उसे केवल यही कहती है 'गरीबों का काम यों ही कर देना।' इससे प्रकट होता है कि उसके मन में गरीबों के लिये दया का भाव है।

5. स्वाभिमान की भावना- जालपा के चरित्र में स्वाभिमान का गुण भी विद्यमान है। स्वाभिमान यहाँ तक है कि वह अपनी उपेक्षा सहन नहीं कर सकती। विवाह में चन्द्रहार न मिलने पर वह निश्चय करती है कि अब कोई आभूषण स्वीकार न करेगी ।

6. दृढ़ निश्वयी और निर्भीक- रमानाथ जितना दब्बू एवं संकल्पहीन विचार का व्यक्ति है उसकी पत्नी इतनी ही निर्भीक एवं दृढ़ निश्चय की स्त्री है। वह सास के मना करने पर आभूषण उत्तार देती है तथा रतन के मना करने पर भी अपना

पूरा प्रसाधन का सामान गंगा में डाल देती है। उसके दृढ़ निश्चय ने ही क्रान्तिकारियों की पुलिस के चंगुल की रक्षा की।

7. विवेकशील- जालपा विवेकशील स्त्री है। जब उसे ज्ञात होता है कि गबन के पैसे से उसके पति की दुर्दशा हो सकती है तो वह अपने प्राणों से भी प्यारा चन्द्रहार बेचकर चुकाती है और बाद में शतरंज के नवशे से अपने पति का पता लगाती है।

8. पति के प्रति अटूट प्रेम - जालपा के मन में अपने पति के लिये अटूट प्रेम है। वह स्वप्न में भी वही पति चाहती है। उसे दुःखी देख उसके दुःख को बांटने का प्रयास करती है। वह दुःख और सुख में अपने पति का साथ देती है, पर उसका पति उससे हर बात छिपाता है। वह अपने पति के चरित्र पर कभी भी शक नहीं करती।

2 रमानाथ 'गबन' उपन्यास के प्रमुख पात्र में से एक है:- वह इस उपन्यास का नायक है। उपन्यास के आरंभ से ही हम इस पात्र को दुर्बल व्यक्तित्व, आडम्बर प्रदर्शन, झूठ, भावुकता फैशनपरस्ती, अशिष्टता और अहं से युक्त पाते हैं। रमानाथ मुन्शी दयानाथ के तीन पुत्रों में से सबसे बड़ा पुत्र है। प्रकृति ने उसे बड़ा आकर्षक व्यक्तित्व दिया था। उसकी पत्नी उसके रूप पर मुग्ध थी। दफ्तर में उसकी स्थिति तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के मध्यवर्ती दफ्तरी की थी किन्तु उसके ठाट-बाट से सभी लोग उसे सलाम करते थे। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएं ये हैं-

1. अकर्मण्य और आवारा युवक- कथानक के प्रारम्भ में रमानाथ एक अकर्मण्य और आवारा युवक के रूप में सामने आता है। वह पैसे के अभाव में अपने प्रदर्शन की अभिलाषा मिल के वस्त्र और वस्तुएं प्रयोग में लाकर पूरी करता है। उसकी पुरुषार्थ-हीनता और साथ ही विलास के उपकरणों को एकत्र करने की महत्वकांक्षा उसे कष्टों और विपत्तियों के महासागर में ढकेल देती है।

2. निर्बल चरित्र का व्यक्ति -रमानाथ प्रारम्भ से ही हमारे समक्ष निर्बल चरित्र के व्यक्ति के रूप में सामने आता है। दयानाथ इसीलिए उसका विवाह करना नहीं चाहते थे। उनका कथन दृष्टव्य है - "जो आदमी अपने पेट की फिक्र नहीं कर सकता, उसका विवाह करना मुझे तो अधर्म-सा मालूम होता है।"

3. संकोचशील प्रकृति- रमानाथ संकोचशील प्रकृति के कारण ही अनेक संकटों में पड़ता है। जालपा उसे धैर्य देती है कि वह जज के सामने पुलिस की चालों का

भण्डाफोड़ करे अपनी झूठी गवाही की बात स्वीकारे लेकिन अपनी संकोची प्रकृति के कारण वह चाहते हुए भी ऐसा नहीं कर पाता। उसके चरित्र की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि वह अपने निकटतम व्यक्ति को भी अपने मन की बात नहीं बताता। इस संकोची स्वभाव के कारण वह अनेक कठिनाइयों को अंगीकार कर लेता है।

4. कायरता का भाव - रमानाथ हर परिस्थिति में उसका सामना न कर उसके सामने घुटने टेक देता है। वह स्वावलम्बन से आगे बढ़ने का प्रयास नहीं करता। पुलिस के चुंगल में उसे उसकी कायरता ने फंसाया तथा फंसा ही रहा।

5. विलासीन्मुख- रमानाथ पहले से ही खेल-कूद और सैर सपाटे में रहने वाला युवक था। उसके जीवन की यही प्रवृत्ति उसकी बरबादी का कारण बनी। प्रयाग में जिस प्रवृत्ति के कारण वह भागा था, कलकत्ते में चाय की दुकान के चलते ही वह फिर उसी लाइन का राही बन गया। उसे जब भी अवसर मिलता वह इस विलास में आकंठ निमग्न हो जाता है।

6. अनन्य प्रेमी रमानाथ दाम्पत्य-प्रेम के क्षेत्र में अनन्य भावना को लेकर सामने आता है। जालपा की अतुल छवि ने उनके हृदय पर मोहनी डाल रखी है, वह जालपा की प्रत्येक इच्छा को पूरा करने के लिए उत्कंठित रहता है, वह उससे सच्चा प्रेम करता है। यही कारण है कि किसी बात में उसका जी दुखाना नहीं चाहता ।

इस प्रकार 'गबन' में रमानाथ मध्यम वर्गीय समाज के युवकों का यथार्थ रूप में प्रतिनिधित्व करता है। जिस प्रकार उसके चरित्र का पतन होता है, उतनी ही गहनता से अन्त में उसका उद्धार भी होता है।

3.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मौर्य, के. (2018). *प्रेमचंद का साहित्य: समाज और जीवन की झलक* (1st ed.). दिल्ली: हिंदी साहित्य प्रकाशन.
2. शर्मा, राजीव (2020). *गबन उपन्यास: प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि*. वाराणसी: साहित्य गौरव प्रकाशन.
3. सिंह, स. (2021). *प्रेमचंद और उनका साहित्यिक योगदान*. लखनऊ: ज्ञानवर्धन प्रकाशन.

4. यादव, श. (2022). *समाज और संघर्ष: प्रेमचंद की गबन में निहित संदेश.* जयपुर: साहित्य मंडल.

3.11 अभ्यास प्रश्न

1. 1. भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना के प्रमुख घटकों का विश्लेषण करें।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि और औद्योगिक विकास के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है?
3. संसाधन वितरण के प्रमुख सिद्धांतों पर चर्चा करें।
4. भारतीय सरकार द्वारा लागू की गई प्रमुख आर्थिक योजनाओं का अवलोकन करें।
5. भारतीय समाज में आर्थिक असमानताओं के कारणों की व्याख्या करें।
6. विकास और आर्थिक समृद्धि के लिए किस प्रकार की नीतियाँ आवश्यक हैं?
7. भारत में आयात-निर्यात नीति में हाल के बदलावों का विश्लेषण करें।
8. भारतीय अर्थव्यवस्था पर सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभावों को समझाएं।
9. सामाजिक सशक्तिकरण की भूमिका भारतीय अर्थव्यवस्था में क्या है?

ब्लॉक - II

इकाई - 4

वृंदावनलाल वर्मा- झांसी की रानी

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
4.4 झांसी की रानी कहानी का मुल पाठ विवेचन
4.5 झांसी की रानी कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
4.6 झांसी की रानी कहानी की समीक्षा
4.7 सार - संक्षेप
4.8 मुख्य शब्द
4.9 स्व-प्रगति परीक्षण प्रश्नों के उत्तर
4.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
4.11 अभ्यास प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

झांसी की रानी की मुख्य कथा बालिका मनु के बचपन की कुछ गौरवपूर्ण झांकियों से शुरू होती है। 'पूत के पांव पालने में' के अनुसार इस चपल, वीर एवं दक्ष बालिका का भविष्य बालपनकी क्रीडाओं से ही प्रकट होने लगता है। जीवन के पग-पग पर महापुरुषों का शौर्यपूर्ण जीवन उसका आदर्श है। वीरता के प्रति उसके हृदय में सहज अनुराग है, तभी तो वह कह उठती है-"मैं डरपोक नहीं हो सकती। आप कहा करते हैं-मनु तू ताराबाई बनना, जीजाबाई तथा सीता होना, यह सब भुलावा क्यों ? अथवा क्या वे सब डरपोक थी?" आत्म सम्मान भी उसमें कूट-कूट कर भरा हुआ है। नाना द्वारा 'छबीली' संबोधन करने पर वह रुखाई से कह उठती है-"मुझको इस नाम से घृणा है-आगे इस नाम से मेरा संबोधन कभी मत करना।"

बालिका मनु की बाल्यावस्था घुड़सवारी करने, बंदूक से निशानेबाजी करने, हथियार चलाने एवं धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में खत्म होती है। वह

किशोरावस्था के विशाल प्रांगण में प्रवेश करती है। इसके साथ ही मोरोपंत को उसके विवाह की चिंता होती है, सुंदर, कुशाग्र बुद्धि, होनहार वीर तथा स्वाभिमानी बालिका के लिए योग्य वर की खोज होती है। जन्मपत्री में राजग्रहों का योग रहता है तथा उसका विवाह झांसी के विधुर प्रौढ़ राजा गंगाधरराव से हो जाता है। मनु का ससुराल में नामकरण होता है, लक्ष्मीबाई इसी नाम से वह इतिहास में प्रसिद्धि प्राप्त करती है।

लक्ष्मीबाई का हृदय बाल्यावस्था से ही स्वदेश प्रेम तथा उच्च आदर्शवादी भावनाओं से ओत-प्रोत रहता है, गंगाधरराव का स्वभाव अति आलसी, कोप-पूर्ण, सहज विलासी तथा रसिक है। लक्ष्मीबाई की भावनाओं से यह स्वभाव मेल नहीं खाता है, देश तो पराधीनता के बंधनों में त्रस्त होता रहे, ऐसे समय नाच रंग के साज सजाना तथा ललित कलाओं की आड़ लेकर विलासिता में रत रहना कहां का न्याय है? मनुष्य को समयानुसार ही हर कार्य करना चाहिए। महलों के बंधनों एवं पर्दे में रहने पर भी वह नियमित रूप से घुड़सवारी एवं व्यायाम का अभ्यास करती है। अपनी दासियों के साथ उसका व्यवहार सहेली जैसा रहता है। वह अपनी सहेलियों को भी कुश्ती, मलखंभ घोड़े की सवारी, तलवार चलाना आदि वीरोचित कार्यों की शिक्षा प्रदान करती है। अपने पति को भी वह राज्य-प्रबंध के कार्य में समय-समय पर प्रत्यक्ष तथा परोक्ष मदद प्रदान करती है।

जब राजा कहते हैं कि नायिका भेद तथा नख-शिख पर कविता करने वाले कवि अपनी विद्वत्ता के कारण राजदरबारों की शोभा हैं, तब रानी तत्काल पूछ बैठती है-"भूषण को छत्रपति शिवाजी क्या इसी प्रकार की कविता के लिए बढ़ावा दिया करते थे ? भूषण तो दरबार की शोभा रहे न होंगे ? उसका हर शब्द उसकी गरिमा का परिचायक है। कठिनाइयां उसके मार्ग को कंटकित किये हैं, पर वह वीर नायिका उन कांटों के हार गूंधती है। वह कठिनाइयों से जूझ पड़ती है। 18 वर्ष की अवस्था में ही उसकी जीवन-वाटिका में वैधव्य का तुषारापात होता है, पर वह धैर्य एवं दृढ़ता का आश्रय ग्रहण करती है। अंग्रेजों द्वारा दत्तक पुत्र की अस्वीकृति पर वह तात्याटोपे, नाना साहब तथा अपनी वीर सखियों की सहायता से देश को स्वतंत्र कराने की योजना बनाती है। साथ ही जीवन-पर्यन्त इस योजना की सफलता हेतु अथक प्रयत्न करती है।"

सर्वप्रथम वह अपनी सेना को व्यवस्थित करती है तथा अपने सहयोगियों की मदद से जनता में अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह जागृत करती है। झांसी के गणमान्य जनों के अनुरोध पर झांसी का शासन-भार ग्रहण करती है। उसकी व्यवस्था अत्यंत सराहनीय है। अनेकानेक समस्याओं का वह दृढ़तापूर्वक सामना करती है तथा हल भी कर लेती है। अंग्रेजों का वह डटकर सामना करती है। उसकी सेना का वीरतापूर्वक कार्य-संपादन तथा रणनीति की दक्षता को देखकर अंग्रेजी शासन भी स्तब्ध रह जाता है। अंग्रेजी सेना के पैर उखड़ने लगते हैं, परंतु दुल्हाजू नामक एक तोपची एक नारी सेना की सदस्या सुंदर से प्रेम प्रकट करने के कारण रानी द्वारा अपमानित होकर अंग्रेजों से मिल जाता है। झांसी किले के औरछा फाटक पर वह अंग्रेजों को मार्ग दे देता है। परिणामस्वरूप अंग्रेज सेना किले में प्रवेश कर जाती है तथा रानी पराजित होती है। अपने ही देश के एकविश्वासघाती के कारण स्वराज के स्वप्न धुंधले पड़ने लगते हैं। रानी भी विवश होकर कालपी में तात्याटोपे एवं राव साहब की छावनी में शरण लेती है।

छावनी में रानी को भारी मानसिक क्लेश होता है। उसने वहां की सेना में घोर अव्यवस्था देखी। राव साहब विलासी प्रवृत्ति का योद्धा था। उसके पास पर्याप्त साधन थे। वह चाहता तो अंग्रेजों को आसानी से हरा सकता था, लेकिन अपनी अक्षमता के कारण उसे कालपी छोड़कर भागना पड़ा। रानी की योजना, उत्साह तथा सहायता के बल पर राव साहब ने ग्वालियर के किले पर विजय प्राप्त की। अब भी पुनः अवसर था अंग्रेजों के दांत खट्टे करने का, पर राव साहब की कुप्रवृत्तियों के कारण रानी को एक बार पुनः निराश होना पड़ा।

रानी का हृदय दुःख से भर उठा। उसे अत्यंत कष्ट हुआ। रानी मानसिक शांति हेतु घूमती हुई बाबा गंगादास की कुटिया पर पहुंची। बाबाजी ने कर्मयोग-संबंधी गीता का उपदेश देकर रानी को शांति प्रदान की। रानी ने अपने खोये हुए विश्वास को पुनः प्राप्त किया तथा जब अंग्रेजों की सेना ने ग्वालियर के किले पर आक्रमण किया तथा राव साहब की निकम्मी व्यवस्था के कारण ग्वालियर की सेना भी विमुख हो गयी। तब भी रानी अपने थोड़े से पराक्रमी शूरवीर सिपाहियों को साथ लिए हुए वीरता से लड़ी। जब उसने देखा कि पराजय निश्चित है, तो रानी को पुनः पलायन करना पड़ा। अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक वह वीरतापूर्वक लड़ती है। अंग्रेज निरंतर उसका पीछा करते हैं। वह मर्माहत होती है। किसी तरह बाबा

गंगादास की कुटी पर पहुंचकर अपनी जीवनलीला खत्म करती है। उसकी मृत्यु पर जब देखमुख बिलखकर कह उठता है-"झांसी का सूर्य अस्त हो गया।" तो गंगादास उसे सचेत करते हुए कहते हैं- "झांसी की रानी के सिधार जाने को अस्त होना कहते हो ! यह तुम्हारा मोह है। वह अस्त नहीं हुई। वह अमर हो गयी।" निःसंदेह वह अमर हो गयी। वह अपनी उपमान स्वयं आप ही थी, तभी तो जनरल रोज तक ने उसके संबंध में-'वह थी उनमें सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वोत्कृष्ट वीर'। कहकर उसकी प्रशंसा की।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. झांसी की रानी के जीवन और संघर्षों को समझ सकेंगे।
2. दावनलाल वर्मा द्वारा रानी की वीरता और नेतृत्व के पहलुओं को जान सकेंगे।
3. रानी लक्ष्मीबाई के ऐतिहासिक योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के बारे में विस्तार से समझ सकेंगे।
5. झांसी की रानी के अद्वितीय नेतृत्व कौशल को प्रेरणा के रूप में ले सकेंगे।

4.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय

ऐतिहासिक उपन्यासकारों में वृन्दावनलाल वर्मा का प्रमुख स्थान है। ऐतिहासिक उपन्यास-धारा में नवीन तथा प्रौढ़ युग को प्रारम्भ करने वाले बाबू वृन्दावनलाल वर्मा ही हैं। वर्मा जी के 'गढ़कुण्डार' से ऐतिहासिक उपन्यासों का नवीन युग प्रारम्भ होता है। हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने 'गढ़कुण्डार' का महत्त्व इसी अर्थ में आंका है कि यह पहला उच्च कोटि का साहित्यिक ऐतिहासिक उपन्यास है। वर्मा जी को ऐतिहासिक उपन्यास धारा का नवीन तथा प्रौढ़ युग प्रवर्तक कहा जा सकता है। इनके ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना एवं इतिहास का समुचित मिश्रण, प्रेम की सरसता तथा पात्रों का आदर्श तथा सजीव चरित्र-चित्रण होता है।

अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में वर्मा जी ने बुन्देलखण्ड के ग्वालियर, झाँसी आदि स्थानों के इतिहास एवं चिर-परिचित ऐतिहासिक पात्रों को लेकर अपने कथानक में इतिहास के सत्य को निकट से तथा साहित्यिक दृष्टि से परखा है।

जीवनवृत्त- वृन्दावनलाल वर्मा का जन्म झाँसी जिलान्तर्गत मऊरानीपुर नामक कस्बे में 9 जनवरी, 1889 ई. को हुआ था। आपके पिता का नाम अयोध्याप्रसाद तथा माता का नाम राजरानी था। पाँच वर्ष की अवस्था में वर्माजी ने अध्ययन शुरू किया। हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण के बाद वर्माजी मुहर्रिर की नौकरी करने लगे। बाद में वन विभाग में कार्य करने लगे। उसके बाद वर्माजी ने आगे अध्ययन करने का निश्चय किया। आगरा कॉलेज से उन्होंने वकालत पास की तथा वकालत का कार्य प्रारम्भ किया। 1917 ई. तक ये ख्याति प्राप्त वकील बन चुके थे। 1924 ई. में ये 'लिबरल पार्टी' के सदस्य हो गये, जिससे राजनीति की तरफ इनकी रुचि बढ़ती चली गई। 1924 ई. में वर्मा जी ने एक को-ऑपरेटिव बैंक की स्थापना की तथा 1930 ई में इनके पुत्र ने एक व्यवसाय शुरू किया था जिसमें लगातार घाटा ही आता चला गया। परिणामतः वर्मा जी का स्वास्थ्य गिर गया तथा काफी समय तक वे अस्वस्थ बने रहे। 1936 ई. से 1938 ई. तक वर्मा जी 'झाँसी जिला बोर्ड' के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। 1941 ई में टीकमगढ़-नरेश ने इन्हें गढ़कुण्डार के समीप भूमि प्रदान की। यहाँ इन्होंने एक सुन्दर ग्राम का निर्माण कर डाला। 1932 ई. में वकालत छोड़कर ये साहित्य साधना में जुट गए। 'मयूर प्रकाशन झाँसी' इनके द्वारा ही स्थापित की गई संस्था थी।

जीवन के अन्त तक सरस्वती की उपासना करते हुए, अपनी कृतियों का अक्षय भण्डार छोड़कर वर्माजी सदा के लिए 1969 ई. में विदा हो गए।

व्यक्तित्व- वृन्दावनलाल वर्मा स्वभाव से भावुक, सरल विनम्र तथा संयमी थे। इनकी अन्तर्दृष्टि सूक्ष्म एवं पैनी थी। इन्हें व्यक्ति और परिस्थिति की अच्छी पहचान थी। फक्कड़पन, अलमस्ती, खुला हृदय और उन्मुक्त जीवन वर्मा जी की प्रकृति थी। नारी शक्ति में इनकी अगाध आस्था तथा विश्वास था ।

वे प्रकृति के भी अन्यतम पुजारी थे। बुन्देलखण्ड के बीहड़ वन प्रान्त, नदी, नाले एवं निर्झर इनके हृदय को आलोड़ित करते रहते थे। इनमें रमना तथा घूमना इन्हें बेहद पसन्द था। लोक संस्कृति और सभ्यता के प्रति इनके हृदय में अतिशय सम्मान था।

उनकी जीवन दृष्टि समन्वयात्मक थी एवं अति तथा अनास्था से ये कोसों दूर माने जाते थे। व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करते हुए भी ये सामाजिकता के प्रबल समर्थक रहे। पूँजीवाद व सामन्तवाद की दुर्बलताओं और विशेषाधिकारों पर वर्मा जी प्रायः प्रहार किया करते थे।

उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे जनशक्ति के प्रति अतिशय सम्मान और आस्था की भावना रखते थे। अनपढ़-गँवार कहे जाने वाले कृषकों तथा श्रमिकों में इन्होंने मनुष्यता का चमर्मोत्कर्ष देखा ।

वे अध्ययनशील भी थे। महापुरुषों की जीवनियाँ, महान् साहित्यकारों की कृतियाँ, इतिहास तथा पुरातत्त्व के ग्रन्थ वे बड़े चाव से पढ़ते थे।

वर्मा जी की साहित्य साधना- वर्मा जी की परदादी ने कई ऐतिहासिक घटनाओं को सुनाकर वर्मा जी के मन को कथा संस्कारों से पुष्ट कर दिया था। अध्ययन तो उनका विशिष्ट था ही; गुरु विद्याधर दीक्षित की प्रेरणा से यह अध्ययन की रुचि और भी पुष्ट हो उठी तथा पाँचवीं कक्षा में ही वर्मा जी ने 'चन्द्रकान्ता सन्तति' उपन्यास पढ़ डाला। छठी कक्षा में 'गुलिवर्स ट्रेवल्स' और 'रॉबिन्सन कूसो' भी पढ़ डालीं। इसी समय इन्होंने 'श्रीरामचरितमानस' का सार लिखना प्रारम्भ किया ।

यूँ तो छिट-पुट लेखन प्रारम्भ हो चुका था, पर उनकी साहित्यिक रचनाएं 1927 ई. से ही

प्रकाश में आईं। प्रारम्भ में वे 'सरस्वती', 'स्वदेश-बान्धव', 'प्रभा', 'जयजिनयोति' आदि पत्रिकाओं में लिखते रहे। इनके कुछ नाटक और कहानियाँ विशेष सुन्दर बन पड़ी थीं।

1921 ई. में ही वर्मा जी ने 'स्वाधीन' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन कर दिया। 1927 ई. में शिकार की एक घटना से इन्हें उपन्यास लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई। 1942 ई. से 1955 ई. के मध्य वर्मा जी के कई उपन्यास और कहानी-संग्रह सामने आए। वर्माजी की लगभग 60 पुस्तकें हैं।

वर्माजी का प्रमुख कृतित्व निम्न तरह है-

(1) ऐतिहासिक उपन्यास- गढ़कुण्डार, विराटा की पद्मिनी, मुसाहिब जू, झाँसी की रानी, कचनार, टूटे काँटे, मृगनयनी, भुवन विक्रम, अहिल्याबाई, माधवजी सिन्धिया, रायगढ़ की रानी

(2) सामाजिक उपन्यास- कलाकार का दण्ड, तोषी, शरणागत, अंगूठी का दान, अमर वीर, ऐतिहासिक कहानियाँ, मेढकी का ब्याह, रश्मि समूह ।
(3) ऐतिहासिक नाटक झाँसी की रानी, हंस-मयूर, फूलों की बोली, पूर्व की ओर, जहाँदाराशाह, बीरबल, ललित विक्रम ।
(4) सामाजिक नाटक- धीरे-धीरे, राखी की लाज, बाँस की फाँस, पीले हाथ, शगुन, नीलकण्ठ, केवट, मंगलसूत्र, खिलौने की खोज, तिरस्कार, देखा-देखी, निस्तार ।
(5) एकांकी संग्रह- काश्मीर का कोटा, लो भाई पंचों लो, कनेर ।
(6) फुटकर रचनाएं- दबे पाँव, हृदय की हिलोर, बुन्देलखण्ड के लोकगीत ।

4.4 झांसी की रानी कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) मनु कहती गई, 'पुरुषों को पुरुषार्थ सिखाने के लिए स्त्रियों को मलखंब, कुश्ती इत्यादि सीखना ही चाहिए। खूब तेज दौड़ना भी। नाचने गाने से भी स्त्रियों का स्वास्थ्य सुधरता है, परंतु अपने को मोहक बना लेना ही स्त्री का समग्र कर्तव्य नहीं है।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास 'झांसी की रानी' से लिया गया है। वर्मा जी ऐतिहासिक उपन्यासकारों की श्रेणी में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में वर्मा जी ने रानी लक्ष्मीबाई के चरित्र को हर पक्ष से जीवित करने का प्रयत्न किया है जिसमें वे पूर्ण सफल भी हुए है। रानी लक्ष्मीबाई ससुराल में अपनी नई दासियों (सहेलियों) सुंदर, सुंदर तथा काशी एवं अन्य महिलाओं से बातचीत कर उनका परिचय ले रही है उसी समय का दृश्य चित्रण है।

व्याख्या- रानी लक्ष्मीबाई अपनी सखियों से पूछती है, कि क्या तुम्हें कुश्ती लड़ना, मलखंव, घुड़सवारी इत्यादि का शौक है उनकी यह बातें सुन महिलाएं आश्चर्यचकित हो उठती हैं। रानी लक्ष्मीबाई कहती है-कि पुरुषों को पुरुषार्थ सिखाने हेतु स्वियों को मलखंब, कुश्ती सीखना ही चाहिए अर्थात् यदि हमें यह सब करते हुए देखकर भी पुरुषों का पुरुषार्थ न जागे तो कम से कम हम तो देश के काम आ सकेंगे। वह कहती है कि स्त्रियों को खूब तेज दौड़ना भी आना चाहिए। नाचने-गाने से भी स्वियों के स्वास्थ्य में सुधार होता है, स्वियों को स्वयं को कुछ कठोर भी बनाना

चाहिए। सिर्फ खुद को सुंदर बना लेना जिससे पुरुष मोहित हो उठें स्वी के संपूर्ण जीवन का समग्र कर्तव्य नहीं है, मोहक बनना तो दूसरे स्थान पर आता है, प्रथम शारीरिक रूप से समर्थता एवं स्वास्थ्य जरूरी है। मन ने यहां व्यायाम का जीवन में महत्व स्पष्ट किया है।

(2) रानी उनमें सर्वश्रेष्ठ पुरुष है।

संदर्भ प्रस्तुत गद्य पंक्ति वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास 'झांसी की रानी' से अवतरित है। प्रस्तुत उपन्यास वर्मा जी की अमूल्य कृति एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास की निधि है। जनरल रोज ने ये शब्द गवर्नर लार्ड कैनिंग को पत्र में लिखे। रोज ने कालपी के युद्ध में अनेक भारतीय सेनानायकों का सामना किया। सभी सेनानायक थोड़े से संघर्ष के बाद परास्त हो गए। सिर्फ रानी के नेतृत्व वाली सेना ऐसी सशक्त थी जिसके सामने गोरी सेना को पीछे हटना पड़ा। रानी की इस प्रचंडता, युद्धवीरता, दृढ़ता को देखकर जनरल रोज ने ये शब्द लिखे-

व्याख्या- रानी सिर्फ कालपी के युद्ध में ही नहीं, वरन् जीवन-भर वीर पुरुषों जैसी दृढ़ता से जूझी। उसमें अपने अधिकारों के प्रति गहरी ललक थी, राजनीतिक संघर्ष का उत्साह था तथा शत्रुओं को खदेड़ने की अदम्य शक्ति थी। उसके अन्य पुरुष साथी समय-समय पर भोग-विलास में मस्त हो जाते थे अथवा समझौते की ढुलमुल नीति अपना लेते थे। लेकिन रानी सदा अपने इरादे पर दृढ़ रहती थी। अतः वह अंग्रेजों से निर्णायक युद्ध कर सकी। रानी के समस्त व्यवहार को देखते हुए रोज का यह वचन उचित प्रतीत होता है।

(3) दहति नेनं पावकः ।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्य पंक्ति वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास 'झांसी की रानी' से अवतरित है। प्रस्तुत उपन्यास वर्मा जी की अमूल्य कृति एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास की निधि है। रानी लक्ष्मीबाई जिस घोड़े पर सवार थी, वह नया तथा अड़ियल था। अतः सोनरेखा नाले को सामने पाकर वह अटक गया। उसने अपने दोनों पांव ऊपर उठा लिए तथा वहीं ठहर गया। इस कारण रानी नाले को पार न कर सकी।

व्याख्या- अंतिम समय रानी एक अंग्रेजी दस्ते से घिर गई। दस-पंद्रह गोरे सवार उसका पीछा कर रहे थे। लड़ते-लड़ते एक गोरे सैनिक की संगीन रानी के सीने को

बेध गई। उसके पेट से लहू बहने लगा। रानी ने एक गोरे को तलवार से काट दिया। शेष पांच गोरे सैनिक रह गए। गुलमुहम्मद उन सैनिकों की संख्या कम कर रहा था। रानी ने सोनरेखा नाला पार करना चाहा, पर उसका घोड़ा अटक गया। एक गोरे ने गोली चला कर रानी की बाई जांघ को जख्मी कर दिया। रानी ने बाएं हाथ से लगाम संभाली। तलवार के एक वार से एक गोरा सैनिक मार डाला। तभी एक गोरे सैनिक की तलवार रानी के सिर पर पड़ी। रानी के सिर का दायां भाग कट गया तथा आंख बाहर निकल आई। इस पर भी रानी ने उस सैनिक के कंधे पर वार किया। शेष दो गोरे बच रहे जो भाग गए। रानी लहूलुहान अवस्था में अंतिम यात्रा पर चल पड़ी। मरते समय उनके मुख से निकला "दहति नैनं पावकः"। इस तरह वीरांगना रानी का बलिदान हो गया।

(4) 'युद्ध वास्तव में है ही किस निमित्त?' रानी मुस्कराकर बोलीं, 'अपने जीवन और धर्म की रक्षा के लिए अपनी संस्कृति और कला को बचाने के लिए। नहीं तो युद्ध एक व्यर्थ का रक्तपात ही है। यह खेल जल्दी हो जाए और फिर उस खेल को ऐसा खेलो की अंग्रेजों के छक्के छूट जाएं और यह देश उनकी फांस से मुक्त हो जाए।'

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास 'झांसी की रानी' से अवतरित है। इस उपन्यास में रानी के चरित्र के हर पक्ष पर गंभीरता से प्रकाश डाला गया है। रानी लक्ष्मीबाई युद्ध की आवश्यकता का महत्व प्रकट करते हुए कहती हैं-

व्याख्या- रानी लक्ष्मीबाई अपनी सहेली काशीबाई को संबोधित करते हुए कहती है-युद्ध असल में है ही किस कारण से, युद्ध अपने जीवन की तथा अपने धर्म की रक्षा हेतु है। अपनी संस्कृति तथा कला को बचाये रखने हेतु है। अगर अपने जीवन, धर्म, कला, संस्कृति की रक्षा न करनी हो तो युद्ध एक बेकार का खून-खराबा ही है। अंग्रेजों से रक्तपात का यह खेल शीघ्र खेला जाए तथा यह खेल ऐसा हो कि अंग्रेजों के छक्के छूट जाएं तथा हमारा हिन्दुस्तान उनकी फांस से स्वतंत्र हो जाए ।

(5) इन दासियों के जीवन कितने कौतूहलों और कितने कोलाहलों से भरे रहते होंगे तथा इनके जीवन कितने दुखांत होते होंगे, उसकी कल्पना की जा सकती है। इनको जन्म देने वाले लगभग इसी प्रकार माता-पिता, केवल धनलोभ से इनको

महलों के सुपुर्द कर देते थे। फिर, या तो वे सौंदर्य के जमाने में राजा के विलास की सामग्री बनी रहती थीं या जीवन के स्वाभाविक मार्ग पर जाकर महल से अलग हो जाती थीं।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' से अवतरित है।

व्याख्या- दहेज में दासियों को देने की प्रथा का प्रवेश महाराष्ट्र में राजपूतों के कुछ रजवाड़ों से हुआ। इन दासियों का जीवन कोलाहल तथा कुतूहलों से भरा रहता था। कभी-कभी उनका जीवन इतना दुखांत हो जाता था कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। इनके माता-पिता धन के लोभ में इनको महलों को सौंप दिया करते थे। महलों में ये दासियां या तो राजा के विलास की सामग्री बनती थीं या विवाह करके जीवन का स्वाभाविक मार्ग ग्रहण करती थीं। विवाह कर लेने पर इनको महल में पृथक हो जाना पड़ता था।

(6) बसंत आ गया। प्रकृति ने पुष्पांजलियां चढ़ाईं। लोगों को अपनी श्वास तक मे परिमल का आभास हुआ। किले के महल में रानी ने चैत की नवरात्रि में गौरी की प्रतिम की स्थापना की।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'झांस की रानी लक्ष्मीबाई' से अवतरित है।

प्रसंग- प्रस्तुत प्रसंग में उपन्यासकार बसंत ऋतु के रमणीय वातावरण में नवरात्र में गौर प्रतिमा स्थापित कर "हरदी कूं-कूं" उत्सव मनाये जाने का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या- बसंत ऋतु अपना समस्त सौंदर्यमय वैभव समेट कर आ गई। चारों तरफ खिल गये। ऐसा लगता था, मानों प्रकृति पुष्पों की अंजलियां भर-भर कर चढ़ा रही हो। प्रकृति समस्त वातावरण सुगंधि से महक उठा। लोगों को अपनी निकलती हुई श्वांसों में से परिमल निकलती हुई प्रतीत होती थी। रानी ने किले के महल में चैत्र की नवरात्र में हरदी कूं-कूं का त्यौहार मनाने के लिए गौर की प्रतिमा स्थापित की तथा उसका आभूषणों और फूलों से श्रृंगार किया। सारे नगर की स्त्रियां उत्सव में व्यस्त हो गई।

(7) 'हाँ, जो साधन जहां मिले, उसका उपयोग करना चाहिए। जनता मुख्य साधन है। राजा और नवाब की पीढ़ी, दो पीढ़ी ही योग्य होती हैं, परंतु जनता की पीढ़ियों की योग्यता कभी नहीं छीजती।'

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' से अवतरित है।

प्रसंग- प्रस्तुत अवतरण में रानी तथा नाना भविष्य की योजना पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। रानी नाना से कहती हैं कि सफलता के लिए जनता का सहयोग जरूरी है।

व्याख्या- स्वराज्य की सफलता हेतु जहां जो साधन मिल जाए उसका उपयोग करना ही चाहिए, किन्तु जनता मुख्य साधन तथा शक्ति है। वह तो शक्ति का अनंत स्रोत और प्रवाह है। राजा और नवाब की तो एक-दो पीढ़ी ही योग्य हो सकती है, पर जनता की शक्ति एक पीढ़ी के पश्चात् दूसरी पीढ़ी में बढ़ती ही चली जाती है। उसकी शक्ति तथा योग्यता में कोई कमी नहीं आती।

(28) उस पार की पहाड़ियों का लहरियादार सिलसिला हरियाली से ढका हुआ था। बादल के सफेद-धूमरे टुकड़े पहाड़ियों की चोटी और हरियाली को चूमने के लिए नभ से उतर- उतरकर टकराते चले जा रहे थे। बेतवा का शोर आंधी का साथ पाकर तुमुल हो उठा।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' से अवतरित है।

प्रसंग- रानी डाकू सागर सिंह को पकड़ने के लिए अपने साथियों सहित जा रही है। बीच में बेतवा उमड़ रही है। रानी इस तट पर है। उपन्यासकार प्रकृति के बीच में उमड़ती हुई बेतवा का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या- ज्यादा वर्षा हो जाने से बेतवा इठलाकर बेतहाशा उमड़ रही थी। आंधी थपेड़े देकर चल रही थी। मल्लाहों हेतु नाव इस पार से उस पार ले जाना असंभव था। बेतवा की दूसरी ओर पहाड़ियों का लहाड़ियों का लहुरियादार सिलसिला था जो हरियाली से ढका हुआ था। आकाश में सफेद और घूमरें छपे हुए बादल नीचे उतर-उतर कर उन पहाड़ियों को चूमते हुए से लग रहे थे। बेतवा की गरजती हुई धारा का शोर आंधी के कारण ज्यादा तुमुल हो रहा था।

(9) नवरात्रि में वह पलाश लाल फूलों से गस गया। स्त्रियां फूलों की एक-एक माला उसकी भी डालों में पहना दे रही थीं, मानो सौंदर्य की सुगंधि प्रदान की गई हो। लाल फूलों पर बेला, चमेली, गेंदा और जूही की रंग-बिरंगी मालाएं ऐसी लगती थीं, जैसे प्रभात के समय उषा की किरणों ने गुला बिखरे दी हो।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' से अवतरित है।

प्रसंग- नवरात्र में फूले हुए पलाशों के वृक्ष के पास रानी अन्य स्त्रियों के साथ हरदी कूं-कूं का त्यौहार मना रही हैं। उपन्यासकार विभिन्न रंग के फूलों से सजे हुए पलाश के सौंदर्य का वर्णन कर रहा है-

व्याख्या- नवरात्र में पलाश का वृक्ष लाल पुष्पों से भर गया। स्त्रियां फूलों की एक-एक माला उसकी हर डाल में डाल देती है। पलाश के पुष्प सौदर्य साकार प्रतिमा होते हैं, पर उनमें सुगंधि नहीं होती। फूलों की मालाएं पड़ जाने से ऐसा लगता था मानो सौंदर्य को सुगंध प्रदान कर दी गई हो। पलाश के लाल पुष्पों पर बेला, चमेली, गेंदा तथा जूही की रंग-बिरंगी मालाएं, ऐसी लगती थी मानो प्रभात के समय उया की किरणों ने गुलाल बिखेर दिया हो।

(10) गड्ढे कैसे भरे जाते हैं। नींव कैसे पूरी की जाती है? एक पत्थर गिरता है, फिर दूसरा फिर तीसरा और चौथा, इसी प्रकार और तब उसके ऊपर भवन खड़ा होता है। नींव के पत्थर भवन को नहीं देख पाते। परंतु भवन खड़ा होता है उन्हीं के भरोसे, जो नींव में गड़े हुए हैं। वह गड्डा या नींव एक पत्थर से नहीं भरी जाती और, न एक दिन में। अनवरत प्रयत्न, निरंतर बलिदान आवश्यक है।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित "झांसी की रानी लक्ष्मीबाई" से अवतरित है।

प्रसंग- रानी बावा गंगादास से पूछती हैं कि "हम लोग कैसे स्वराज्य की स्थापना कर पायेंगे ?" बाबा गंगादास उनका समाधान करते हुए उत्तर देते हैं-

व्याख्या- स्वराज्य की स्थापना युग-युग की अखंड तपस्या तथा साधना से ही हो सकती है। थोड़ी-थोड़ी क्रमशः मिट्टी डालने पर ही गड्ढे भरते हैं। भवन की नींव भी एक साथ नहीं भर जाती, पहले एक पत्थर गिरता है, फिर दूसरा, फिर तीसरा तथा चौथा। इसी तरह और पत्थर पड़ने पर नींव पूर्ण होती है। तब उसके ऊपर भवन खड़ा होता है। नींव में पड़े हुए पत्थर भवन को देख नहीं पाते, लेकिन भवन

उन्हीं के सहारे खड़ा होता है। यह गड्ढा तथा नीव एक दिन में एक पत्थर से भरी नहीं जा सकती। इसके लिए अनवरत रूप से निरंतर बलिदान करना पड़ता है। इसी प्रकार से स्वराज्य की प्राप्ति एक बलिदान या एक ही दिन में नहीं हो सकती। इसकी प्राप्ति तो निरंतर तपस्या और बलिदान से ही हो सकती है। तुमने आरंभ किये कार्यों को आगे बढ़ा दिया है। अन्य लोग आगे आकर इसको आगे बढ़ाते जायेंगे ।

(11) केवल यह एक ऐसा अंग्रेजी संस्कार है, जिसके प्रति हिन्दुस्तानियों की आत्मगत भावनाओं में श्रद्धा होनी चाहिए थी, परंतु जिस प्रेरणा और जिस वातावरण में होकर और जिन उपकरणों के साथ न्याय का यह साधन आया था, वे सब हिन्दुस्तानियों को कतई अच्छे नहीं लगे, और इसलिए भी कानून अखरा। परोपकार की वृत्ति से प्रेरित होकर अंग्रेजों ने कानून की प्राण-प्रतिष्ठा हिन्दुस्तान के न्याय-मंदिर में की हो, सो बात नहीं थी।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' से अवतरित है।

प्रसंग- बंदोबस्त में जागीरदारी खत्म करके जमींदारियां स्थापित कर दी गई। मंदिरों और पूजा-सेवा में लगी जायदादें जब्त हो गई। जमीदारियों की उत्पत्ति ने जनता को कचहरियों के द्वार खटखटाने को विवश किया। वकीलों का समूह तैयार हो गया। वकील-वर्ग ने कानून की निष्ठा बिठलाने के लिए पूरी मदद की। अंग्रेजों की इस कानून भावना में जनकल्याण की भावना के स्थान पर उनका स्वार्थ था, अतः भारतीयों को यह पसंद न आई।

व्याख्या- अंग्रेजों ने सामान्य कानून की व्यवस्था की स्थापना की। कानून की प्रतिष्ठा हेतु वकीलों को सम्मान मिला। आगे चलकर बगैर उनके अदालत में पत्ता भी न हिला। वकील वर्ग ने जाने तथा अनजाने में कानून की निष्ठा विठाने में विशेष सहयोग दिया। समान कानून का प्रवर्तन ही अंग्रेजों की एक ऐसी देन थी कि जिसके प्रति भारतवासियों को श्रद्धा होनी चाहिए, क्योंकि भारतवासी हमेशा से कानून और व्यवस्था में श्रद्धा रखते आये थे, परंतु अंग्रेजों की यह कानून-व्यवस्था और न्याय उनके स्वार्थ की भावना से परिपूर्ण था। यह भारतवासियों को बहुत उलझा हुआ, श्रमसाध्य तथा खर्चीला प्रतीत हुआ। अतः वे इसके प्रति सम्मान प्रकट न कर सके।

उनकी यह कानून-व्यवस्था विशेष रूप से अखरी। कानून की यह प्रतिष्ठा अंग्रेजों के जनकल्याण की भावना से प्रेरित होकर नहीं की। इसमें इनका स्वार्थ था। इसके द्वारा उन्होंने भारतीय जनता को पूरी तरह से अपने शिकंजे में कस लिया।

(12) महल की चौखट पर बैठकर वह रोई। लक्ष्मीबाई रोई! वह लक्ष्मीबाई, जिसकी आंखों ने आंसुओं से कभी परिचय भी न किया था ! वह जिसका वक्षस्थल वज्र का हाथ फौलाद के थे ! वह किसके कोश में निराशा का शब्द न था । वह जो भारतीय नारीत्व का गौरव थी। मानो उस दिन हिन्दुओं की दुर्गा रोई।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई' से अवतरित है।

प्रसंग- राजमहल, पुस्तकालय तथा शहर को जलता देखकर रानी का हृदय करुण क्रंदन कर उठता है। उनकी दुःखी स्थिति का वर्णन उपन्यासकार कर रहा है-

व्याख्या- रानी का हृदय करुण-चीत्कार से भर गया। वे महल की चौखट पर बैठकर रो उठीं। जिन लक्ष्मीबाई की आंखों में कभी स्वप्न में भी अश्रु नहीं आये थे, जिनका हृदय वज्र तथा फौलाद के समान कठोर था, जिसने निराशा के शब्द कभी जाने ही नहीं थे, वे आज रो पड़ीं। रानी भारतीय नारीत्व का गौरव तथा शान थीं। उनका रोना देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो हिन्दुओं की दुर्गा रो पड़ीं।

(13) तुममें से कोई बहिन के बराबर हो, कोई काकी हो, कोई माई हो, कोई फूफी। फूल सदा नहीं खिलते। उनमें सुगन्ध भी सदा नहीं रहती। उनकी स्मृति ही मन में बसती है। नृत्य गान की भी स्मृति ही सुखदायक होती है। परन्तु इन सब स्मृतियों को पोषक यह शरीर ओर उसके भीतर आत्मा है, उनकी पुष्ट करो और प्रबल बनाओ। क्या मुझे ऐसा करने का वचन देगी?

सन्दर्भ- पूर्ववत् ।

प्रसंग- चैत्र नवरात्रि के अवसर पर, हरदी-कूँ-कूँ के उत्सव में जब हास-परिहास चल रहा था, उस समय सभी स्त्रियों से रानी ने निवेदन किया-

व्याख्या- रानी ने कहा कि आप सब हमारे नगर की ही हैं, जिनसे हमारे रिश्ते-नाते भी है कोई तुम में से बहन है तो कोई काकी, कोई मामी तो कोई फूफी। अतः सब ही आदरणीय तथा प्रिय हैं। पर यह स्मरण रखना आवश्यक है कि फूल सदा नहीं खिलते हैं, साथ ही उनकी गंध भी सदा नहीं बनी रहती है, सिर्फ उनकी

स्मृति ही मन में बसी रहती है, इसी तरह हम भी किसी बगिया के फूल हैं, हम भी चाहते हैं कि हम अपनी गन्ध बिखेरकर इस बगिया को सुवासित कर दें। साथ ही हम जीवन में जो भी काम करते हैं, मसलन गायन, नृत्य आदि उनकी भी स्मृति सुखदायक ही होती है। लेकिन यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जीवन के सारे आनन्द, सारी सुगन्ध, सारी स्मृतियों का आधार शरीर ही है, हम शरीर के माध्यम से ही सब कुछ करते हैं एवं सब कुछ पाते हैं, अतः पहली आवश्यकता है, शरीर को पुष्ट करना, सबल बनाना, तभी हमारा जीवन सार्थक हो सकेगा। साथ ही शरीर में स्वस्थ, सबल आत्मा की उपस्थिति भी आवश्यक है। वह शरीर को दानवता से उठाकर मानवता की ओर ले जाती है। अतः मेरा यही निवेदन है कि तुम सब शरीर को पुष्ट करो तथा उसमें बसी आत्मा को पवित्र और विशाल बनाओ। रानी फिर पूछती है-क्या तुम ऐसा करने का वचन दे सकती हो ?

विशेष-

(1) शरीर मानव जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, यही परमार्थ का भी साधन है। तुलसी ने कहा है-'साधन धाम मोक्ष कर द्वारा' ।

(2) शरीर में यदि शुद्ध पवित्र आत्मा रहेगी तो वह मानवीय रहेगा अन्यथा दानवीय हो उठेगा।

(3) जहाँ शरीर एवं आत्मा दोनों ही सबल होती हैं, वहीं कल्याण की स्थिति होती है।

(4) भाषा सरल, व्यावहारिक एवं परिमार्जित है।

(5) शैली भावात्मक, विचार-प्रधान एवं सूक्तिपरक है

4.5 झांसी की रानी कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

झांसी की रानी की कहानी में प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण उनके व्यक्तित्व और योगदान को दर्शाता है। ये पात्र कहानी को न केवल रोचक बनाते हैं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को भी जीवंत करते हैं। यहां झांसी की रानी कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत है:

1. रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र-चित्रण

भूमिका: कहानी की नायिका, झांसी की रानी।

चरित्र-चित्रण:

रानी लक्ष्मीबाई भारतीय इतिहास की आदर्श, अमर एवं प्रेरक नारी पात्र है। इस उपन्यास में रानी लक्ष्मीबाई को स्वराज्य-प्राप्ति की प्रेरणा से लड़ने वाली वीर, साहसी एवं रण-कुशल नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उसके चरित्र की विशेषताएं निम्न हैं-

स्वराज्य-प्राप्ति की प्रेरणा- रानी लक्ष्मीबाई स्वराज्य-प्राप्ति की प्रेरणा से लड़ी, स्वराज्य-प्राप्ति हेतु मरी एवं स्वराज्य-प्रापति की नींव का पत्थर बनी। यह बचपन से ही असामान्य, साहसी, वीर, संघर्षशील एवं स्वराज्य प्रिय कन्या थी। वह छुटपन से ही अपने पिता से ऐसे विस्मयकारी प्रश्न पूछा करती थीं कि पिता मोरोपंत दंग रह जाते थे। उसे बचपन से ही शस्त्र-संचालन, घुड़सवारी, मल्लयुद्ध इत्यादि में विशेष रूचि थी। इससे उसकी जन्मजात स्वदेश-भक्ति का पता चलता है।

साहस तथा वीरता की प्रतिमूति - रानी साहस, उत्साह तथा वीरता की प्रतिमूर्ति थी। उसने स्वतंत्रता-प्राप्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को वीरतापूर्वक स्वीकार किया। उसने अपना तन-मन, शक्ति-बुद्धि अपने लक्ष्य के अनुरूप मजबूत बनाये। उफनते हुए बरुआ सागर नाले को पार कर जाने का प्रचंड साहस उसकी सबलता का सशक्त प्रमाण है। वह गोरों की सैन्य-रचना को अपने घमासान युद्ध से तितर-बितर करते हुए बिजली की भांति निकल जाती थी। उसकी वीरता को देखकर जनरल रोज को यह लिखना पड़ा कि 'रानी उन सब में सर्वाधिक श्रेष्ठ पुरुष है....।'

कर्मयोग की उपासिका रानी कर्मयोग की उपासिका थी। अतः सत्य-मार्ग पर चलते हुए जीना-मरना उसके लिए सहज खेल थे। उसके व्यक्तित्व का निर्माण शिवाजी, रामायण, महाभारत एवं गीता के विचारों-प्रसंगों से हुआ था। उसमें देश के लिए बलिदान होने की अक्षय प्रेरणा थी । वह विदेशियों के सामने एड़ियां रगड़ने अथवा गिड़गिड़ाने से अच्छा स्वाभिमान के पथ पर संघर्ष करना समझती थी।

रण-चंडी- रानी रण में चंडी का रूप धारण कर लेती थी। उसकी तलवार के सामने अंग्रेज सेना तितर-बितर हो जाती थी। दोनों हाथों में तलवारें लिए हुए जब वह युद्ध में कूदती थी तो शत्रु दंग होकर उसे देखते रह जाते थे।कुशल तथा प्रेरक सेना-संचालिका रानी कुशल सेना-संचालिका थी। वह मानव-मनोविज्ञान की अच्छी

जानकार थी। अतः अपने सिपाहियों एवं सेनापतियों का उत्साह बढ़ाने का एक भी अवसर वह न चूकती थी। उसने हरदी कुमकुम के अवसर पर झांसी के नारी समुदाय को रण हेतु तैयार किया। रानी की प्रेरणा पाकर मुर्दों में भी जान आ जाती थी। गुल मोहम्मद ने तो रानी का उत्साह पाकर कहा-जहां की औरत लड़ने को ऐसी तैयार है, वहां का मर्द तो आसमान का चक्कर खिला देगा। रानी अपने सेनापतियों को प्रोत्साहन देने के लिए उन्हें कुंवर आदि की उपाधि से सम्मानित भी किया करती थी।

प्रेरणामयी- रानी मनुष्य की पहचान करने में विशेष पटु थी। उसने जिस भी मिट्टी के ढेले को हाथ लगाया, वह सोना बन गया। उसने अपने स्पर्श से सागरसिंह डाकू को अमर बलिदानी बना दिया, सुंदर जैसी निरीह दासियों को आसमान की ऊंचाइयों तक उठा दिया। उसके सेनापति उसका आशीष पाकर कटने-मरने को सदा तत्पर रहते थे।

लोक-संग्रही व्यक्तित्व- रानी अत्यंत लोकप्रिय थी। वह अपने तथा अपने संपर्क में आने वाले के मध्य कोई दंभ अथवा बड़प्पन की बू को न आने देती थी। उसने शासक-शासित, ऊंच-नीच आदि के अंतर को मिटा दिया था। इसी कारण वह चुंबक के समान आकर्षक बन गई थी। हर कोई उसके आदेश पर जान न्यौछावर करने को तैयार रहता था। रानी ने दासियों को अपनी सखी के रूप में रखा, डाकू सागरसिंह को माफ ही नहीं किया, उसे अपनी कुंवर मंडली का सदस्य बनाया, इसी भांति खुदाबक्श तथा गुल मुहम्मद को सम्मानित किया। रानी के लोकसंग्रही व्यवहार से ये सभी पात्र उसके परम भक्त बन गये। वास्तव में ऐसा दिखलाई पड़ता है कि रानी के अलावा रानी के अधिकांश सेनापति पहले स्वामिभक्त थे, बाद में देशभक्त ।

कुसुमादपि कोमल नारी- रानी कुसुम से भी कोमल नारी थी। उसका हृदय स्वजनों के लिए अत्यंत संवेदनशील था। उसमें अपने पति तथा पुत्र के प्रति अतीव ममता थी। पुत्र गोद लिए जाने के प्रसंग पर इसलिए वह बार-बार रो पड़ती थी। पति की मृत्यु पर जिस रानी को किसी ने भी कभी विह्वल नहीं देखा था, वह करुणा के बांध तोड़े जा रही थी। रानी के हृदय में वात्सल्य का निर्झर था। उसके मन में अपने सैनिकों के प्रति तो दया भाव था ही, शत्रुओं के बाल-बच्चों के प्रति भी कोमल भाव था। इसी कारण उसने अंग्रेज बाल-बच्चों को अपने महल में शरण

दी। बाख्शिन जू, मोतीबाई आदि की मृत्यु पर तो वह फूट-फूट कर रोई। यूं भी रानी शरीर से सुंदर थी।

वज्रादपि कठोर- रानी की विशेषता इसी बात में निहित है कि वह सिर्फ कोमलांगी ही नहीं, वरन् अपने इरादों में फौलाद से भी ज्यादा कठोर थी। युद्ध के प्रसंगों में उसकी कठोरता दर्शनीय है। अपनी झांसी को लुटता देखकर वह अपने सैनिकों को ललकार उठी "बाहर निकल कर लड़ो, गोरों को नगर से बाहर निकालो तथा झांसी की रक्षा करो।" इसी भांति अंग्रेजों की बढ़ती हुई अच्छाचारिता को देखकर उसने कठोर संकल्प किया-"मैं केश-मुंडन तभी कराउंगी, जब हिन्दुस्तान को स्वतंत्रता मिल जाएगी, नहीं तो श्मशाम में अग्निदेव मुंडन करेंगे।"

रानी की कठोरता का यह भी प्रवल प्रमाण है कि उसने डाकू सागरसिह को जिदा या मुर्दा पकड़ने का आदेश दिया। उसने स्वयं अपने मजबूत शरीर से सागर सिंह को दबोच लिया। सागर सिंह रानी को मजबूत बाहों में छटपटा कर रह गया।

योग्य शासिका- रानी योग्यतम शासिका थी। योग्य शासक के सभी गुण उसमें मौजूद थे। उसने कभी विलास-वैभव को छुआ तक नहीं। उसके राज्य में प्रजा को सुख-चैन तथा सुरक्षा मिली। उसने डाकुओं का संहार करने हेतु स्वयं कष्ट उठाया। उसने कुशलतापूर्वक अपने शासन-विधान को चलाया। शासिका बनते ही सर्वप्रथम उसने अपनी सेना को मजबूत किया, तोपखाने को सशक्त किया एवं जनता का विश्वास प्राप्त किया। सदाशिव राव, नत्थे खां आदि के विद्रोह को उसके पलक झपकते ही दबा दिया। उसे जनता का प्रबल विश्वास प्राप्त था।

दूरदर्शी- रानी दूरदर्शी, नीतिज्ञ एवं रणकुशल शासिका थी। उसने काले खां के विरुद्ध अंग्रेजों की मदद इसलिए की क्योंकि तब तक उसने अपनी सेना लड़ने के लिए तैयार न थी। इसी भांति वह आने वाली परिस्थितियों को पहले से भांप कर उसकी यथायोग्य तैयारी कर लेती थी।

प्रभावशाली वाणी- रानी प्रभावशाली वक्ता थी। उसकी आंखों में नैतिक बल एवं वाणी में प्रबल आत्मविश्वास था। यही कारण है कि नत्वे खां जैसे हिसक जत्थेदार भी उसके सामने नतमस्तक हो जाते थे। उसमें परिस्थिति के अनुसार उपाय करने की प्रत्युत्पन्नमति भी थी।

इस तरह हम कह सकते हैं कि रानी लक्ष्मीबाई अपने युग को नेतृत्व प्रदान करने वाली स्वराज्य-प्रेमी नायिका थी। वह अद्भुत साहसी, कुशल सेनापति, वीर सैनिक, योग्य शासिका, उदार मानवी एवं अनन्य देशभक्त महिला थी।

2.गंगाधर राव

भूमिका: झांसी के राजा और रानी लक्ष्मीबाई के पति।

चरित्र-चित्रण:

शांत और विचारशील: राजा गंगाधर राव शांत स्वभाव के थे और प्रजा के प्रति दयालु थे।

कलाप्रेमी: वे कला और संस्कृति के संरक्षक थे।

दृढ़ निर्णय क्षमता: उन्होंने झांसी के हित में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए।

दत्तक पुत्र को गोद लेना: उत्तराधिकार की समस्या का समाधान करने के लिए उन्होंने दामोदर राव को गोद लिया।

3. दामोदर राव

भूमिका: रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र।

चरित्र-चित्रण:

राजवंश का उत्तराधिकारी: बाल्यावस्था में ही दामोदर राव को राजा गंगाधर राव ने गोद लिया।

प्रेरणा का स्रोत: अंग्रेजों की नीति के खिलाफ संघर्ष का कारण बने।

निर्दोषता का प्रतीक: उनकी मासूमियत ने झांसी की रानी को और अधिक प्रेरित किया।

4. तात्या तोप्पे

भूमिका: रानी लक्ष्मीबाई के सहयोगी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा।

चरित्र-चित्रण:

पुरुष-पात्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण- तात्या तोप्पे पुरुष-पात्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। रानी स्वराज्य-प्राप्ति के जिस उद्देश्य के लिए प्रयत्नशील थी, उसमें तात्या तोप्पे का योगदान सबसे अधिक था। तात्या तोप्पे भी रानी की तरह उपन्यास के आरम्भ से लेकर लगभग अन्त तक बना रहता है। वह एक दक्ष सेनापति, अथक भ्रमणकर्ता, कट्टर स्वामी-भक्त, कुशल राजनीतिज्ञ तथा विलक्षण संगठनकर्ता है।

विलक्षण संगठनकर्ता- तात्या तोप्पे का योगदान संगठनकर्ता के रूप में अधिक है। वह झाँसी, उसके आस-पास के राज्यों एवं सम्पूर्ण देश की राजनीतिक स्थिति को भाँपते हुए देश के संगठन-कार्य में लगा हुआ है। उसे विभिन्न राज्यों को सब गतिविधियों का पता रहता है। उसी जानकारी के आधार पर वह विभिन्न राज्यों को एकसूत्र में जोड़ने का कार्य करता है। 1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम के विभिन्न राज्यों के बीच सेतु बनने का कार्य वही करता है। देश के विभिन्न राज्यों की यथार्थ स्थिति का समाचार रानी को देना एवं तय की गई योजनाओं को सभी राज्यों के पास पहुँचाने का कार्य उसी को मिला। इस कार्य में उसने पूरी कुशलता दिखलाई। वह दूरदर्शी, सतर्क तथा साहसी व्यक्ति है।

जागरूक एवं दक्ष राजनीतिज्ञ तात्या तोप्पे देश की राजनीतिक स्थिति के प्रति जागरूक है। 31 मई, 1857 क्रान्ति की निश्चित तिथि थी। उससे पूर्व विद्रोह करने के गुप्त पत्र आए देखकर वह चौकन्ना हो जाता है। उस पत्र के सम्भावित दुष्परिणामों को टालने हेतु वह रातोंरात रानी के पास सलाह-मशविरा करने के लिए पहुँचता है। वह कर्मठ राजनीतिज्ञ है। वह रानी को जासूसी विभाग बनाने की सलाह देता है। इससे उसकी दक्षता का पता चलता है।

अथक भ्रमणकर्ता- तात्या तोप्पे देश में स्वराज्य-प्राप्ति की लहर जगाने के लिए अधक परिश्रम तथा भ्रमण करता है। उसके पाँव कभी रुकते नहीं। वह जब भी हमारे सामने आता है, देश की स्थिति से सम्बन्धित ढेरों समाचार लेकर उपस्थित होता है। वीर सेनापति- तात्या टोपे वीर एवं साहसी सेनापति है। वह जनरल रोज की बगल में स्थित चरखारी रियासत को विजित कर लेता है। यद्यपि युद्धों में उसे विशेष सफलता प्राप्त नहीं होतो, तो भी वह सेना की कमान सम्भालने में सदा उत्साह प्रकट करता है।

रानी का परम भक्त- वह रानी का परम भक्त है। रानी आयु में उससे छोटी है। फिर भी उसके गुणों को देखते हुए वह रानी का सम्मान करता है। वह रानी से बड़े अदब से बातचीत करता हैं। उन्हें 'बाई साहब' कहकर अपनी निष्ठा प्रकट करता है एवं उनके इशारे पर कोई भी कर्म करने को तैयार रहता है।

प्रेम-विमुख- तात्या तोप्पे सुन्दर, बलिष्ठ युवक है। देश-प्रेम का दीवाना होने के कारण वह नारी-प्रेम से विमुख है। जूही उससे प्रेम करती है, पर वह उसके प्रति

उदासीन रहता है। इससे उसकी स्वराज्य-प्रेम की धुन एवं लक्ष्यप्रियता का पता चलता है।

प्रभावशाली व्यक्ति- तात्या तोप्पे का आस-पास के इलाकों में अच्छा प्रभाव दिखलाई देता है। तात्या ग्वालियर के सामन्तों पर अच्छा प्रभाव रखता है। उसी के इशारे पर ग्वालियर के अधिकांश सामन्त लक्ष्मीबाई की तरफ हो जाते हैं एवं ग्वालियर का किला सहज रूप में जीत लिया जाता है।

5. नाना साहेब

भूमिका: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेता और रानी लक्ष्मीबाई के मित्र।

चरित्र-चित्रण:

नाना साहब पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे। उनका पूरा नाम था नाना घोडू पंत । नाना के बचपन को घायल होने वाली घटना को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि वे कायर, कोमल तथा कमजोर किस्म के प्राणी हैं। घोड़े से गिरने पर नाना साहब एकाएक कराह उठते हैं-हाय मनू मैं मरा। उनसे छोटी उम्र की मनू उनको धैर्य बंधाती है। किन्तु उनकी यह प्रथम छवि बाद में कहीं नहीं दिखलाई पड़ती ।

उत्साही सेनानी- नाना साहब भी रानी की तरह स्वराज्य-प्राप्ति की उमंग से भरे हुए थे। उनका स्वर आशावादी एवं प्रेरणादायी था। वे अपनी वाणी से स्वराज्य-प्राप्ति की योजना को उत्साह प्रदान करते थे। एक संवाद द्वारा उनके उत्साही व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। देखिए-

रानी "बुंदेलखंड के रजवाड़े बुझे हुए दीपक हैं, उनमें तेल है, परंतु लौ नहीं।"

नाना "क्यों उनमें लौ पैदा नहीं की जा सकती ?"

वे हमेशा आशा की बात करते हैं। रानी ने जनता को संगठित करने का सुझाव दिया तो नाना साहब उत्साहित स्वर में बोले- "तुम ठीक कहती हो बाई साहब, अभी हम जनता के पास नहीं बहुंचे हैं। आशा है जनता शीघ्र संगठित हो जाएगी।"

राजनीतिक चेतना - नाना साहब राजनीतिक दृष्टि से जागरुक दिखाई देते हैं। उन्हें आस-पास क राज्यों की राजनीतिक स्थिति का पूरा-पूरा ज्ञान था। वे रानी को आस-पास के राज्यों को स्थिति अवगत कराते थे। वे सिर्फ उनकी स्थिति से परिचित ही नहीं थे, वरन् उन्हें उत्साह भी प्रदान किया करते थे। नाना साहब कर्मठ सैनिक थे। वे रानी से कहते हैं- "समस्या है कि क्या किया बाए ? करना

कुछ अवश्य है।" रानी भक्त- नाना साहब चाहे आयु में रानी से बड़े थे, पर वे रानी के गुणों का सम्मान करते थे । अतः वे रानी की योजना के अनुसार काम करने को सदा तत्पर रहते थे ।

वाक्पटु- नाना साहब अपनी बात को कहने में प्रवीण थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के सैनिकों को एक गुप्त सभा में अपनी बात को बहुत सुंदर सांकेतिक भाषा में यों रखा- "अच्छे पुरोहितों तथा बढ़िया सामान का प्रबंध हो गया है। यज्ञ की सामग्री ढोने वालों तथा अश्वमेध के घोड़ों का भी इंतजाम हो गया।" यह भाषा सांकेतिक अर्थ रखती है। इससे नाना साहब की वाक्पटुता का ज्ञान होता है।

6. साधु रामचरण

भूमिका: रानी लक्ष्मीबाई के आध्यात्मिक गुरु और सलाहकार।

चरित्र-चित्रण:

धार्मिक: वे धर्म और नीतियों के प्रति गहरी आस्था रखते थे।

प्रेरणा का स्रोत: उन्होंने रानी को हर परिस्थिति में धैर्य और साहस बनाए रखने की प्रेरणा दी।

7.ह्यूग रोज़

भूमिका: अंग्रेज सेना का जनरल, जिसने झांसी पर आक्रमण किया।

चरित्र-चित्रण:

कुशल सेनापति: ह्यूग रोज़ अंग्रेजों की ओर से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को दबाने में प्रमुख भूमिका निभाने वाला योद्धा था।

धोखेबाज: उसने अपनी सैन्य शक्ति और चतुराई का उपयोग झांसी को हराने के लिए किया।

दृढ़ निश्चयी: उसने रानी की वीरता के बावजूद झांसी को जीतने का प्रयास जारी रखा।

निष्कर्ष: झांसी की रानी की कहानी के पात्रों का चरित्र चित्रण उनके साहस, नेतृत्व, देशभक्ति और संघर्ष को दर्शाता है। हर पात्र स्वतंत्रता संग्राम के उस दौर की गहराई और भावना को प्रकट करता है। इन पात्रों ने न केवल झांसी, बल्कि पूरे देश को गौरवान्वित किया।

4.6 झांसी की रानी उपन्यास की समीक्षा

'झांसी की रानी-लक्ष्मीबाई' उपन्यास एक ऐसी वीरांगना की कहानी पेश करता है जिसने अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। जिस समय ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्णधार, भारतवर्ष भर को एक कोने से दूसरे कोने तक ईसाई बनाने का स्वप्न देख रहे थे, जब विभिन्न छल-प्रपंचों से देश को अपने चंगुल में जकड़ने के प्रयास हो रहे थे, जब एक-एक राजा दो धीरे-धीरे पदच्युत किया जा रहा था, जब शोषण का साम्राज्य फैलता जा रहा था, जब भारतीय आर्थिक संकट में पड़कर तड़प रहे थे तब लक्ष्मीबाई ने 'स्वराज्य' की स्थापना की शपथ ली तथा उसकी इस शपथ को देश-भर ने दोहराया था।

उस क्रांति के गर्भ में मंजुलता और पावनता गढ़ी हुई थी। वह मानवता की रक्षा हेतु को गयी क्रांति थी-मानवीयता लिए हुए। विदेशी साम्राज्यवाद को इस समय दृढ़ चुनौती दी गई थी। उसके पांव डगमगा भी गये थे पर हमारे देश में जयचंदों की कमी नहीं, अतः वह क्रांति असफल हुई। प्रस्तुत उपन्यास में एक तरफ यदि इस देश-व्यापी क्रांति का विस्तृत वर्णन है तो दूसरी तरफ बुदेलखंड के लोक-जीवन का भी सुंदर एवं स्वाभाविक वर्णन है। उस समय की राजनीतिक अव्यवस्था, जनता की मनोदशा, अंग्रेजों के षड़यंत्रों आदि को बड़े स्वाभाविक एवं प्रभावशाली तरीके से लेखक ने प्रस्तुत किया है।

राजनीतिक दृष्टि- राजनीतिक रूप से उस समय देश अंग्रेजों के आधिपत्य में हो रहा था। राजा-महाराजा अंग्रेजों की कूटनीति के कारण नष्ट-भ्रष्ट हो रहे थे। क्रांति की चिंगारी संपूर्ण देश में सुलग तो रही थी पर अंग्रेजों के आतंक के कारण कुछ कर सकना असंभव हो रहा था। अंग्रेजों ने अपनी राजनीतिक विजय के लिए धार्मिक विजय को जरूरी समझा ।

रानी लक्ष्मीबाई की चिंता दृष्टव्य है- "क्या ये लोग ईसाई बना लिये जावेंगे ? ईसाई होने पर फिर क्या अपनी फागें गा सकेंगे? - और गीता, रामायण इत्यादि का क्या होगा?"

उधर पंचायतों को नष्ट कर अंग्रेजों ने अपनी स्थिति पहले ही दृढ़ कर ली थी। पंचायते शक्तिहीन हो गयी थीं। वे सिर्फ जाति-पांति के ही झगड़ों का निबटारा करती थीं। जमीदारी को सृष्टि कर अंग्रेजों ने भारतीय जनता की संपूर्ण शक्ति छीन ली थी। उपन्यास में इसका प्रकार है- वर्णन इस "अंग्रेजी राज्य में वसूली करने के लिए पहले ही गांव में ठेकेदार नियुक्त किये गये फिर इन्हों को

जमीदारियां प्रदान कर दी गई। इन श्रेणियों को खड़ा कर देने से किसान नीचे इसक गये। भूमि के ऊपर उनका जो अधिकार था, वह थोड़े से जमीदारों के हाथों में पहुंच गया। इन दोनों श्रेणियों को संतुलित रखने के लिए या जमीदार-किसान संघर्ष में किसान कभी सिर न उठा पायें, इसके लिए साहब की कचहरी तथा साहब का बंगला उद्भूत हुए।"

“विन्ध्य खंड की समप्र जनता में सनसनी फैली हुई थी। यहां की जनता ने कभी किसी अत्याचारी का शासन आसानी के साथ नहीं माना। स्वाभिमान को आघात पहुंचा कि व्यक्ति ने सिर उठाया तथा हथियार तथा हथियार हाथ में लिया। शायद भारत का यही खंड एक ऐसा है जहां डाकू को बागी कहते हैं।"

"विन्ध्य खंड छोटी-बड़ी रियासतों में बिखरा हुआ था। सब बड़ी-बड़ी रियासतें कंपनी सरकार को दिये थीं। बानपुर तथा शाहगढ़ साधारण राज्य थे। वे राज्य विप्लव में शामिल हुए।"

इधर अंग्रेजों का शासन बढ़ रहा था, उधर भारतीय राजाओं तथा नवाबों में विलासप्रियता कैलती जा रही थी। वे अपने भोग-विलास में निमग्न थे। गंगाधरराव अपनी विलास लीलाओं के लिए प्रसिद्ध थे। राव साहब भी इसी प्रवृत्ति के हो रहे थे। यही नहीं, उस समय का महान् क्रांतिकारी सेनानी तात्या टोपे भी विलास में मग्न होने लगा था।

सामाजिक जीवन- उस समय की सामाजिक स्थिति का वर्णन 'झांसी की रानी' उपन्यास में पूरा-पूरा किया गया प्रतीत होता है। उस समय को छुआ-छूत की प्रथा ने नारायण शास्त्री तथा छोटी की जो दुर्दशा की वह स्पष्ट ही है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य अपने को ऊंचा समझते थे और अन्य लोगों को अपने से बहुत नीचा मानते थे। वे किसी को जनेऊ पहनने का भी अधिकार नहीं देते थे।

गंगाधरराव स्वयं भी जाति-भेद की नीति अपनाते थे। नारायण शास्त्री तथा छोटी (हरिजन) के प्रेम-संबंध को उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उन दोनों को झांसी से निष्कासित होना पड़ा।

स्त्रियों में पर्दे की प्रथा थी। वे पुरुषों की अपेक्षा तुच्छ तथा अयोग्य समझी जाती थीं। लक्ष्मीबाई ने उनके गौरव को ऊंचा उठाने का प्रयत्न किया। प्रस्तुत उपन्यास द्वारा हमें तत्कालीन धार्मिक परिस्थितियों का भी पता लगता है। उपन्यास में आया है कि-

“झांसी में उस समय मंत्र-शास्त्री, तंत्र-शास्त्री, वैद्य, रणविद् इत्यादि कई तरह के विशेषज्ञ थे। शाक्त, शैव, वाममार्गी, वैष्णव काफी तादाद में थे। अधिकांश वैष्णव तथा शैव। ऐसे लोगों की बहुतायत ही थी जो 'गृहें शाक्ताः वहिशेंवाः संभामध्ये च वैष्णवः ।"

इन सबके संघर्ष में अनेक जातियों तथा उपजातियां, जिनको शूद्र समझा जाता था, उन्नति की तरफ हो रही थीं। व्यक्तिगत चरित्र का सुधार, घरेलू जीवन को अधिक शांत तथा सुखो बनाना तथा जातियों की श्रेणी में ऊंचा स्थान पाना यह उस प्रगति की सहज आकांक्षा थी। बाहमण, क्षत्रिय और वैश्य जनेऊ पहनते हैं- यह उनकी ऊंचाई की निशानी है, जो न पहनता हो वह नोचा। इसलिए उन जातियों के कुछ लोगों ने, जिनके हाथ का हुआ पानी तथा पूड़ी-मिष्ठान आम तौर पर ऊचो जाति के हिन्दू ग्रहण कर सकते थे, जनेऊ पहनने आरंभ कर दिये।

सांस्कृतिक वातावरण- उस समय के सांस्कृतिक वातावरण का पता मोतीबाई और जूही जैसी अभिनेत्रियों द्वारा लगता है। उपन्यास में इस वातावरण को अत्यत सुंदर ढंग से सजाया गया है। "गंगाधरराव साहित्य तथा ललित कलाओं के पूरे रसिक थे। सुखलाल काछी उनका चित्रकार था। पढ़ा-लिखा कम लेकिन कलम और कूंची की सही विधि, कोमलता और हथोटी का आचार्य ! गायक, वादक, खासकर धुपद, वीणा और पखावज के उस्ताद और रीतिकाल तथा भक्ति-रस की ओट वाले कवि, गंगाधरराव की महफिल को आबाद करने लगे। उन्होंने दूर-दूर से नाना तरह के हस्तलिखित ग्रंथ इकट्ठे करवाये और विशाल पुस्तक भंडार से अपने पुस्तकालय को भर दिया। वेद, उपनिषद, दर्शन, पुराण, तंत्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण, काव्य आदि के इतने ग्रंथ उनके पुस्तकालय में थे कि लोग दूर-दूर से उनकी प्रतिलिपि के लिए आने लगे।"

गंगाधरराव के बाद रानी ने भी ललित कलाओं को आश्रय ही दिया। इस संदर्भ में रानी का निम्न कथन दृष्टव्य है-

"युद्ध वास्तव में किस निमित्त ! अपने जीवन तथा धर्म की रक्षा के लिए, अपनी संस्कृति तथा अपनी कला के बचाने के लिए। नहीं तो युद्ध एक व्यर्थ का रक्तपात ही है।"

रानी ललित कलाओं की प्रबल पोषक थी। उस कठिन तथा चिताकुल समय में भी रानी प्रत्येक नवागंतुक गायक, वीणाकार, सितारिये इत्यादि को सुनने के लिए

थोड़ा-बहुत समय दिया करती थी तथा उचित पुरस्कार भी। कवि, चित्रकार, ज्योतिषी, वैद्य, हकीम इत्यादि भी पोषण पाते थे। अपनी इसी वृत्ति को वे स्वराज्य में विकसित और प्रसारित देखना चाहती थीं।

आर्थिक स्थिति- वर्मा जी ने आर्थिक विषमता का वर्णन भी अत्यंत सही रूप में किया है। उन्होंने लिखा है-

"समाज में संतुलन यथेष्ट नहीं था। असमता-विषमता स्पष्ट थी, लेकिन आर्थिक श्रृंखला की कड़ियां मजबूती के साथ जुड़ी हुई थी। धन इकट्ठा होकर बंट जाता था। एक-एक आश्रित पर शत-शत आश्रित ढंगे हुए थे, लिप्त और संलग्न थे, आश्रय तथा आश्रित सब क्रियाशील। जहां आश्रय श्रम-हीन, प्रयत्न-रहित और दुःशील हुआ कि गया और उसका स्थान दूसरे प्रबल-सवल स्थान संपन्न ने ग्रहण किया। खोखला गौरव अपनी कहानी बहुत अल्प समय तक ही कह सकता था।"

लोक-जीवन- बुंदेलखंड के लोक-जीवन के अनेक सुंदर तथा स्वाभाविक मित्र प्रस्तुत उपन्यास में आये है। महाराष्ट्र में मनाये जाने वाले हरदी कूं-कूं का प्रभाव झांसी पर भी पड़ गया था। झांसी की साधारण जनता भी उसको मनाया करती थी।

दहेज में दासियों को देने की प्रथा बुंदेलखंड में नहीं थी। यह प्रथा राजपुताने की है। लक्ष्मीवाई को भी कई दासियां मिली थी लेकिन उन्होंने इनके साथ सदा सखी-भाव बरता।

बुंदेलखंडी महिलाओं की वेश-भूषा का वर्णन भी इस उपन्यास में सही-सही किया गया है। झलकारी दुलैया का वर्णन इस वेश-भूषा को स्पष्ट करता है-

"उसके कपड़े बहुत रंग-बिरंगे थे। चांदी के जेवर पहने थी। सोने का एकाध ही था। सब ठाठ सोलह आना बुंदेलखंडी, पैर की पैजनी से लेकर सिर की दाउनी (दामिनी) तक सब आभूषण स्थानिक ।"

बुंदेलखंडी महिलाओं के दैनिक कार्य-क्रम की झलक झलकारी की इस बात से मिलती है-

"महाराज, मैं चकिया पीसत हो, दो-दो, तीन-तीन मटकन में पानी भर-भर ले आउत रांटा (चरखा) कातत।" चरखा चलाने की प्रथा बुंदेलखंड में, ऊंचे घरानों तक में घर-घर थी।

झांसी में हिन्दू और मुसलमान सब, अपने-अपने विश्वास के अनुसार परंपरागत त्यौहारो को मानते आये थे, कभी कोई झंझट खड़ा नहीं हुआ। मोतीबाई और जूही

जैसे दिवाली मनाती थीं वैसे ही ताजियादारी भी करती थीं तथा उसी उत्साह के साथ वे 'मुरली मनोहर' के मंदिर में, जिस समय रानी दर्शन के लिए जाती थीं, नृत्य और गान भी करती थी उन्हीं दिनों मुहर्रम के जमाने में।

भौगोलिक वर्णन- प्रस्तुत उपन्यास में इतिहास के साथ भूगोल भी देखा जा सकता है। लेखक ने झांसी, बिठूर, कानपुर, कालपी, ग्वालियर, आगरा आदि नगरों का वर्णन करते हुए उनका एक-दूसरे से संबंध, आने-जाने के मार्ग तथा साधन का जो विवरण दिया है उससे देश के उस भाग का मानचित्र सामने आ जाता है। झांसी के किले, नगर, बस्तियों, मंदिर, मस्जिद, नाटकशाला, फाटकों और मोचों के जो वर्णन है उनसे एक-एक स्थान परिचित-सा जान पड़ता है।

इस प्रकार उपन्यास में 1857 की जन-क्रांति तथा स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के साथ बुंदेलखंड का सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सभी प्रकार का वातावरण स्पष्ट हो जाता है। झांसी के मूल निवासियों की बातचीत बुंदेलखंडी भाषा में ही कराकर इस उपन्यास को जहां आंचलिकता प्रदान की गई है वहां उसमें स्वाभाविकता और प्रभावोत्पादकता भी आ गई है। झलकारी की बातें बड़ी प्यारी तथा भोली लगती हैं, नगर-निवासी अपनी भाषा में अपनी दृढ़ता, वीरता और राष्ट्रीयता का परिचय देते हैं। पूरन कोरी का कथन दृष्टव्य है-

"मुश्किल से तो कंपनी को राज हट पाओ है अब उन्हें जा खबर काये दई जाय कै हम तुमाये लाने अपनो मूड संजो रये, आऔं, फिर किड़-बिड़ करके झांसी के प्रान खाऔ !"

काछियों के मुखिया ने कहा, "हमें नई चाउनें काऊ और को राज झांसी में। करें राज तो हमाई बाई साब, न करें तो हमाई बाई साब।"

निष्कर्ष - उपर्युक्त विवेचना के उपरांत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि यह उपन्यास एक प्रकार के आंचलित उपन्यास की विशेषता लिये हुए भी संपूर्ण देश के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास प्रस्तुत करता है।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 नाना साहेब का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

---

2 तात्या तोप्पे का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

4.7 सार- संक्षेप

झांसी की रानी उपन्यास भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के जीवन और संघर्ष की प्रेरक गाथा है। यह उपन्यास उनके बचपन से लेकर अंग्रेजों के खिलाफ उनके संघर्ष और वीरगति तक की कहानी को चित्रित करता है।

1. मणिकर्णिका का बचपन

कहानी की शुरुआत मणिकर्णिका (जो बाद में रानी लक्ष्मीबाई बनीं) के बचपन से होती है। वे एक ब्राह्मण परिवार में जन्मीं और बचपन से ही निर्भीक और जिज्ञासु स्वभाव की थीं। उनके पिता मोरोपंत तांबे ने उन्हें शिक्षा, घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्धकला में निपुण बनाया।

2. गंगाधर राव से विवाह

मणिकर्णिका का विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से हुआ और वे झांसी की रानी बनीं। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई पड़ा। रानी ने झांसी के प्रशासन को कुशलता से संभालना शुरू किया और प्रजा के कल्याण के लिए कई सुधार किए।

3. उत्तराधिकार संकट और अंग्रेजों की साजिश

राजा गंगाधर राव की असामयिक मृत्यु के बाद झांसी का शासन दामोदर राव को सौंपा गया, जिसे राजा ने दत्तक पुत्र के रूप में अपनाया था। लेकिन अंग्रेजों ने *डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स* (हड़प की नीति) का सहारा लेकर झांसी पर कब्जा करने

की योजना बनाई। रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी को अंग्रेजों को सौंपने से इनकार कर दिया।

4. 1857 का स्वतंत्रता संग्राम और युद्ध

1857 में जब स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी भड़की, तो रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी को बचाने के लिए अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध का बिगुल फूंका। उन्होंने अपनी सेना को संगठित किया और अदम्य साहस दिखाते हुए अंग्रेजों का मुकाबला किया।

झांसी पर हमला: अंग्रेजों ने जनरल ह्यूग रोज़ के नेतृत्व में झांसी पर हमला किया। रानी ने अपनी सेना के साथ बहादुरी से लड़ाई लड़ी लेकिन अंग्रेजों की विशाल सेना के आगे झांसी का किला टूट गया।

कालपी और ग्वालियर की ओर प्रस्थान: झांसी के पतन के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने कालपी और ग्वालियर में संघर्ष जारी रखा।

5. वीरगति और बलिदान

ग्वालियर के पास लड़ाई के दौरान, रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी अंतिम सांस तक अंग्रेजों से लोहा लिया। 18 जून 1858 को, वे वीरगति को प्राप्त हुईं। उनके बलिदान ने स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा और प्रेरणा दी।

6. उपन्यास का संदेश

"झांसी की रानी" उपन्यास साहस, देशभक्ति और बलिदान की अमर गाथा है। यह रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व, नारी शक्ति, और उनके संघर्ष को जीवंत करता है। यह उपन्यास पाठकों को यह सिखाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत और दृढ़ निश्चय के साथ लड़ाई लड़ी जा सकती है।

निष्कर्ष: उपन्यास में रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र प्रेरणा और आदर्श का प्रतीक है। यह उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है और स्वतंत्रता के लिए उनके अदम्य साहस और संघर्ष को अमर बनाता है।

4.8 मुख्य शब्द:-

1. साहस - रानी लक्ष्मीबाई की सबसे बड़ी विशेषता।

2. बलिदान - स्वतंत्रता के लिए रानी का सर्वोच्च योगदान।

3. नारी सशक्तिकरण - रानी लक्ष्मीबाई का व्यक्तित्व स्त्रियों के अधिकार और क्षमता का प्रतीक है।

4. वीरांगना - रानी लक्ष्मीबाई का सम्मानजनक संबोधन।

5. संघर्ष - अंग्रेजों के खिलाफ रानी का संघर्ष।

6. अमरता - रानी लक्ष्मीबाई का स्थान भारतीय इतिहास में।

4.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

1 नाना साहेब का चरित्र-चित्रण:- नाना साहब पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे। उनका पूरा नाम था नाना घोडू पंत । नाना के बचपन को घायल होने वाली घटना को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि वे कायर, कोमल तथा कमजोर किस्म के प्राणी हैं। घोड़े से गिरने पर नाना साहब एकाएक कराह उठते हैं-हाय मनू मैं मरा। उनसे छोटी उम्र की मनू उनको धैर्य बंधाती है। किन्तु उनकी यह प्रथम छवि बाद में कहीं नहीं दिखलाई पड़ती ।

उत्साही सेनानी- नाना साहब भी रानी की तरह स्वराज्य-प्राप्ति की उमंग से भरे हुए थे। उनका स्वर आशावादी एवं प्रेरणादायी था। वे अपनी वाणी से स्वराज्य-प्राप्ति की योजना को उत्साह प्रदान करते थे। एक संवाद द्वारा उनके उत्साही व्यक्तित्व को समझा जा सकता है। देखिए-

रानी "बुंदेलखंड के रजवाड़े बुझे हुए दीपक हैं, उनमें तेल है, परंतु लौ नहीं।"

नाना "क्यों उनमें लौ पैदा नहीं की जा सकती ?"

वे हमेशा आशा की बात करते हैं। रानी ने जनता को संगठित करने का सुझाव दिया तो नाना साहब उत्साहित स्वर में बोले- "तुम ठीक कहती हो बाई साहब, अभी हम जनता के पास नहीं बहुंचे हैं। आशा है जनता शीघ्र संगठित हो जाएगी।"

राजनीतिक चेतना - नाना साहब राजनीतिक दृष्टि से जागरुक दिखाई देते हैं। उन्हें आस-पास क राज्यों की राजनीतिक स्थिति का पूरा-पूरा ज्ञान था। वे रानी को आस-पास के राज्यों को स्थिति अवगत कराते थे। वे सिर्फ उनकी स्थिति से परिचित ही नहीं थे, वरन् उन्हें उत्साह भी प्रदान किया करते थे। नाना साहब कर्मठ सैनिक थे। वे रानी से कहते हैं- "समस्या है कि क्या किया बाए ? करना कुछ अवश्य है।" रानी भक्त- नाना साहब चाहे आयु में रानी से बड़े थे, पर वे

रानी के गुणों का सम्मान करते थे । अतः वे रानी की योजना के अनुसार काम करने को सदा तत्पर रहते थे ।

वाक्पटु- नाना साहब अपनी बात को कहने में प्रवीण थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के सैनिकों को एक गुप्त सभा में अपनी बात को बहुत सुंदर सांकेतिक भाषा में यों रखा- "अच्छे पुरोहितों तथा बढ़िया सामान का प्रबंध हो गया है। यज्ञ की सामग्री ढोने वालों तथा अश्वमेध के घोड़ों का भी इंतजाम हो गया।" यह भाषा सांकेतिक अर्थ रखती है। इससे नाना साहब की वाक्पटुता का ज्ञान होता है।

2 तात्या तोप्पे का चरित्र-चित्रण:- पुरुष-पात्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण- तात्या तोप्पे पुरुष-पात्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। रानी स्वराज्य-प्राप्ति के जिस उद्देश्य के लिए प्रयत्नशील थी, उसमें तात्या तोप्पे का योगदान सबसे अधिक था। तात्या तोप्पे भी रानी की तरह उपन्यास के आरम्भ से लेकर लगभग अन्त तक बना रहता है। वह एक दक्ष सेनापति, अथक भ्रमणकर्ता, कट्टर स्वामी-भक्त, कुशल राजनीतिज्ञ तथा विलक्षण संगठनकर्ता है।

विलक्षण संगठनकर्ता- तात्या तोप्पे का योगदान संगठनकर्ता के रूप में अधिक है। वह झाँसी, उसके आस-पास के राज्यों एवं सम्पूर्ण देश की राजनीतिक स्थिति को भाँपते हुए देश के संगठन-कार्य में लगा हुआ है। उसे विभिन्न राज्यों को सब गतिविधियों का पता रहता है। उसी जानकारी के आधार पर वह विभिन्न राज्यों को एकसूत्र में जोड़ने का कार्य करता है। 1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम के विभिन्न राज्यों के बीच सेतु बनने का कार्य वही करता है। देश के विभिन्न राज्यों की यथार्थ स्थिति का समाचार रानी को देना एवं तय की गई योजनाओं को सभी राज्यों के पास पहुँचाने का कार्य उसी को मिला। इस कार्य में उसने पूरी कुशलता दिखलाई। वह दूरदर्शी, सतर्क तथा साहसी व्यक्ति है।

जागरूक एवं दक्ष राजनीतिज्ञ तात्या तोप्पे देश की राजनीतिक स्थिति के प्रति जागरूक है। 31 मई, 1857 क्रान्ति की निश्चित तिथि थी। उससे पूर्व विद्रोह करने के गुप्त पत्र आए देखकर वह चौकन्ना हो जाता है। उस पत्र के सम्भावित दुष्परिणामों को टालने हेतु वह रातोंरात रानी के पास सलाह-मशविरा करने के लिए पहुँचता है। वह कर्मठ राजनीतिज्ञ है। वह रानी को जासूसी विभाग बनाने की सलाह देता है। इससे उसकी दक्षता का पता चलता है।

अथक भ्रमणकर्ता- तात्या तोप्पे देश में स्वराज्य-प्राप्ति की लहर जगाने के लिए अधक परिश्रम तथा भ्रमण करता है। उसके पाँव कभी रुकते नहीं। वह जब भी हमारे सामने आता है, देश की स्थिति से सम्बन्धित ढेरों समाचार लेकर उपस्थित होता है। वीर सेनापति- तात्या टोपे वीर एवं साहसी सेनापति है। वह जनरल रोज की बगल में स्थित चरखारी रियासत को विजित कर लेता है। यद्यपि युद्धों में उसे विशेष सफलता प्राप्त नहीं होतो, तो भी वह सेना की कमान सम्भालने में सदा उत्साह प्रकट करता है।

रानी का परम भक्त- वह रानी का परम भक्त है। रानी आयु में उससे छोटी है। फिर भी उसके गुणों को देखते हुए वह रानी का सम्मान करता है। वह रानी से बड़े अदब से बातचीत करता हैं। उन्हें 'बाई साहब' कहकर अपनी निष्ठा प्रकट करता है एवं उनके इशारे पर कोई भी कर्म करने को तैयार रहता है।

प्रेम-विमुख- तात्या तोप्पे सुन्दर, बलिष्ठ युवक है। देश-प्रेम का दीवाना होने के कारण वह नारी-प्रेम से विमुख है। जूही उससे प्रेम करती है, पर वह उसके प्रति उदासीन रहता है। इससे उसकी स्वराज्य-प्रेम की धुन एवं लक्ष्यप्रियता का पता चलता है।

प्रभावशाली व्यक्ति- तात्या तोप्पे का आस-पास के इलाकों में अच्छा प्रभाव दिखलाई देता है। तात्या ग्वालियर के सामन्तों पर अच्छा प्रभाव रखता है। उसी के इशारे पर ग्वालियर के अधिकांश सामन्त लक्ष्मीबाई की तरफ हो जाते हैं एवं ग्वालियर का किला सहज रूप में जीत लिया जाता है।

4.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

वर्मा, द. (2020). *झांसी की रानी: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य.* नई दिल्ली: प्रकाशन गृह.

सिंह, A. (2019). *भारत में स्वतंत्रता संग्राम और रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका.* कानपुर: राष्ट्रीय प्रकाशन.

4.11 अभ्यास प्रश्न

1. रानी लक्ष्मीबाई के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?
2. झाँसी की रानी के संघर्ष को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में कैसे देखा जा सकता है?
3. रानी लक्ष्मीबाई और 1857 के विद्रोह के अन्य नेताओं के बीच तुलना कीजिए। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका पर निबंध लिखिए।
4. रानी लक्ष्मीबाई की नेतृत्व क्षमता और वीरता पर प्रकाश डालिए।

4.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा वृंदावनलाल (1946)"झाँसी की रानी" -
2. सावरकर वीर (1909) "1857 का स्वातंत्र्य समर" ।
3. प्रसाद जयशंकर (1930 के दशक) "रानी लक्ष्मीबाई" ।
4. गुप्ता - डॉ. रमेश चंद्र(1985) "झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई" ।
5. मिश्रा- डॉ. सत्यप्रकाश (1990)"झाँसी की रानी और 1857 का स्वतंत्रता संग्राम" ।

इकाई- 5

जयशंकर प्रसाद - आकाशदीप

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
5.4 आकाशदीप कहानी का मुल पाठ विवेचन
5.5 आकाशदीप कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
5.6 आकाशदीप कहानी की समीक्षा
5.7 सार- संक्षेप
5.8 मुख्य शब्द
5.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
5.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
5.11 अभ्यास प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

जयशंकर प्रसाद की कहानी "आकाशदीप" हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना है, जो स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय समाज की संवेदनाओं और मानवीय मूल्यों को गहराई से चित्रित करती है। यह कहानी भारतीय समाज में प्रेम, त्याग, और आत्म-प्रेरणा के गूढ़ संदेशों को सरलता और प्रतीकात्मकता के माध्यम से प्रस्तुत करती है। "आकाशदीप" जयशंकर प्रसाद की सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि का अद्भुत उदाहरण है। यह कहानी एक ऐसे कालखंड में लिखी गई है जब भारत स्वतंत्रता संग्राम की आग में जल रहा था, और लोगों के मन में अपनी जड़ों की ओर लौटने और आत्मनिरीक्षण की गहरी भावना थी। कहानी में मानवता, प्रेम, और त्याग के आदर्शों को एक सुंदर रूपक "आकाशदीप" के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. जयशंकर प्रसाद के काव्य जीवन और लेखन शैली को समझने में।
2. 'आकाशदीप' काव्य के मुख्य विचारों और भावनाओं की व्याख्या करने में।
3. प्रसाद के काव्य में मानवता और संवेदनशीलता के तत्वों की पहचान करने में।
4. 'आकाशदीप' काव्य के प्रतीकों और रूपकों का विश्लेषण करने में।
5. प्रसाद के काव्य में भारतीय संस्कृति और समाज की परिप्रेक्ष्य में उनकी सोच को समझने में।

5.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय

जयशंकर प्रसाद का संक्षिप्त परिचय

जयशंकर प्रसाद (30 जनवरी 1889 - 15 नवंबर 1937) हिंदी साहित्य के प्रख्यात साहित्यकारों में से एक हैं। वे एक कवि, नाटककार, कहानीकार और उपन्यासकार थे। उनकी रचनाएँ छायावादी युग की प्रमुख धरोहर हैं। जयशंकर प्रसाद का साहित्य भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, प्रेम, और मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करता है।

जीवन परिचय

1. जन्म: जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी 1889 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी (काशी) में एक प्रतिष्ठित व्यापारी परिवार में हुआ। उनका परिवार 'सुंघनी साहू' के नाम से प्रसिद्ध था।

2. शिक्षा: प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी में ही हुई। बाल्यकाल में पिता की मृत्यु के कारण शिक्षा बाधित हुई, लेकिन उन्होंने स्वाध्याय से ही साहित्य, दर्शन, और संस्कृति का गहन अध्ययन किया।

3. व्यक्तित्व:

प्रसाद जी का स्वभाव संवेदनशील, सरल और गंभीर था। उनका जीवन कष्टों और संघर्षों से भरा हुआ था, लेकिन उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से इसे एक प्रेरणा में बदला।

4 साहित्यिक योगदान

जयशंकर प्रसाद ने हिंदी साहित्य को हर विधा में उत्कृष्ट रचनाएँ दीं।

1. काव्य:

कामायनी: उनकी सर्वश्रेष्ठ काव्य रचना है, जो छायावाद का शिखर मानी जाती है। यह मानव जीवन के चिंतन और मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण है।

अन्य कविताएँ: आंसू, लहर, झरना।

2. नाटक: जयशंकर प्रसाद को हिंदी नाटक लेखन का जनक भी कहा जाता है। उनके नाटकों में भारतीय इतिहास और संस्कृति का चित्रण हुआ है।

प्रमुख नाटक: *स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

3. कहानी: उनकी कहानियाँ यथार्थवादी और संवेदनशील होती थीं।

प्रमुख कहानियाँ: *आकाशदीप, इंदु की हत्या, गुंडा।

4. उपन्यास: उन्होंने ऐतिहासिक और सामाजिक उपन्यास लिखे।

प्रमुख उपन्यास: *तितली, कंकाल, इरावती।

5 विशेषताएँ:-

1. छायावाद के स्तंभ:

वे हिंदी छायावाद के चार स्तंभों (जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', और महादेवी वर्मा) में से एक माने जाते हैं।

2. भारतीय संस्कृति का चित्रण: उनकी रचनाओं में भारतीय इतिहास, संस्कृति, और परंपरा का अद्भुत समावेश मिलता है।

3. भावुकता और गहनता: उनकी रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं, प्रेम, और आध्यात्मिकता से भरपूर होती थीं।

6 निधन:-

जयशंकर प्रसाद का निधन 15 नवंबर 1937 को वाराणसी में हुआ। उनकी रचनाएँ आज भी हिंदी साहित्य की धरोहर हैं और उन्हें एक महान साहित्यकार के रूप में अमर बनाती हैं। जयशंकर प्रसाद हिंदी साहित्य के उन रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने साहित्य को नई ऊँचाइयाँ दीं। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से अद्वितीय हैं, बल्कि जीवन और समाज के प्रति गहन दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करती हैं।

5.4 आकाशदीप कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) "विश्वास? कदापि नहीं बुद्धगुप्त । जब मैं अपने हृदय पर विश्वास नहीं कर सकी ? उसी ने धोखा दिया, तब मैं कैसे कहूँ! मैं तुम्हें घृणा करती हूँ फिर भी तुम्हारे लिए प्रेम कर सकती हूँ। अन्धेर है जलदस्यु ! तुम्हें प्यार करती हूँ।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद की 'आकाशदीप' कहानी से ली गई हैं। इन पंक्तियों में प्रसाद ने विरोधी प्रवृत्ति का सामंजस्य चित्रित कर एक नयी कलात्मक उपलब्धि को स्पर्श किया है।

व्याख्या- बुद्धगुप्त चम्पा के प्रेम की प्राप्ति हेतु लालायित है। वह जानता है कि चम्पा के हृदय में उसके प्रति एक ही साथ प्रेम तथा घृणा दोनों ही घाव चरम सीमा पर आते हैं। वह चम्पा पर किसी तरह का दबाव डालकर उसे अपना बनाने के पक्ष में नहीं है। अतः वह चम्पा में परिवर्तन की प्रतीक्षा करता रहा था। उधर चम्पा भी राग-विराग के भाव से हर पल उद्वेलित रहती है। एक संख्या को चम्पा बुद्धगुप्त के हृदय की कोमलता देख उससे प्रतिशोध लेने की भावना का परित्याग करती हुई बदला लेने को छिपा रखा कृपाण जल में फेंकती हुई अपने मानसिक द्वन्द्व पर खीझ व्यक्त करती है। बुद्धगुप्त के यह पूछे जाने पर कि उसने उसे क्षमा कर दिया। उसका उसे विश्वास कर लेना चाहिए, चम्पा अपने मानसिक द्वन्द्व को व्यक्त करती है। वह उसे स्पष्ट शब्दों में विश्वास नहीं करने को कहती है क्योंकि स्वयं उसे अपने पर विश्वास नहीं रहा। पुनः चम्पा कहती है कि वह अपने पिता के हत्यारे से न चाहकर भी प्रेम करती है। लेकिन उससे घृणा भी वह करती रहती है। चम्पा बुद्धगुप्त के लिए जान तक देने की बात कहती है। उसे अपनी चंचल मानसिक स्थिति पर आश्चर्य होता है एवं उसे प्यार करने पर वह पश्चात्ताप भी करती है।

विशेष (1) प्रस्तुत अवतरण में प्रसाद ने प्रेम तथा घृणा-इन दो परस्पर विरोधी भाव को एक स्थान पर दिखाया है जो कला की उत्कृष्टता की चरम सीमा है। (2) चम्पा में एक साथ प्रेम तथा घृणा के भाव चरम बिन्दु पर पहुँचे उसे हिन्दी साहित्य को अविस्मरणीय नायिका बना डालते हैं। (3) प्रस्तुत अवतरण की भाषा तत्सम प्रधान है, जो प्रसाद की विशेषता है।

(2) तारक-खचित नील अम्बर और नील समुद्र के आकाश में पवन ऊधम मचा रहा था। अन्धकार से मिलकर पवन दुष्ट हो रहा था। समुद्र में आन्दोलन था। नौका लहरों में विकल थी। स्त्री सतर्कता से लुढ़कने लगी। एक मतवाले नाविक

के शरीर से टकराती हुई सावधानी से उसका कृपाण निकालकर, फिर लुढ़कते हुए बन्दी के समीप पहुँच गई। सहसा पोत से पथ-प्रदर्शक ने चिल्लाकर कहा-"आँधी!"
सन्दर्भ- प्रस्तुत कारण कहानीकारक है। बुद्धगुप्त जो ताम्रलिप्त का चत्रिय प्रहरी चम्पा के पिता में उस समय अत्यधिकचरा दिखाई तथा वे वहीं खेत रहे थे पर बुद्धगुप्त क करती है। मुक्त बन्दी अन्धकार में उसे गले लगाता है हमा स्त्री हो। वह कहती है, स्त्री होना कथा कोई कर देती है
व्याख्या- समुद्र में उस समय तुफान उठ रहा था। तारों से युक्त आकाश में समुद्र के ऊपर पवन जोरों से चल रहा था। इस अन्धकार का साथ पाकर पवन और ज्यादा जोरों से चल दुष्टता दिखा रहा था। वायु के प्रकोप लहरों की भीषणता के कारण नौका लड़खड़ा कर व्याकुल हो रही थी। स्त्री (चम्मा) बड़ी सतर्कता से लुढकने लगी। वह इस क्रम में एक मदमस्त नाविक के शरीर से (जो वहीं सो रहा था) टकरा भी गई। लेकिन उसने बड़ी सावधानी से उसका कृपाण अपने हस्तगत कर लिया, फिर उसी तरह लुढ़कती हुई उस बन्दी के समीप पहुंची, जिसे उसने अभी-अभी मुक्त किया था। उसी समय पोत का पथ-प्रदर्शक घोषणा करता है कि आंधी आ रही है।
विशेष- (1) मनोविश्लेषण तथा जिज्ञासा-भाव प्रसाद की कहानी की महती विशेषता है-वाहाँ भी यह स्पष्ट नहीं है कि चम्पा बन्दी को क्यों मुक्त करना चाहती है. अनुमान ही है कि वह उस पर मुग्ध हो चुकी है। यही अनुमान पाठक में जिज्ञासा भाव का सृजन करता है। (2) रोमांटिक प्रवृत्ति का नितान्त स्वच्छ तथा संवेगात्मक रूप इन पंक्तियों में दृष्टिगत होता है। (3) भाषा- काव्यात्मक एवं शुद्ध साहित्यिक है। (4) शैली- भावात्मक है, जिसमें व्यंजना का पुट है।
(3) "निर्जन समुद्र के उपकूल में बेला से टकराकर लहरें बिखर जाती थीं। पश्चिम का पथिक थक गया था। उसका मुख पीला पड़ गया था। अपनी शान्त गम्भीर हलचल में जलनिधि विचार में निमग्न था। वह जैसे प्रकाश की उन्मलिन किरणों से विरक्त था।"
सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण कहानीकार जयशंकर प्रसाद कृत 'आकाशदीप' से उद्धृत है। चम्पा के जीवन की सबसे त्रासद घटना उसके पिता का वध है, जो कि उसे कचोटती रहती है। इसका कारण वह जलदस्यु बुद्धगुप्त को मानती है। पिता की स्मृति आते ही उसके मुखमण्डल पर जो अनेकानेक भाव उभरते हैं, उसका साम्य

प्रकृति से करते हुए प्रसादजी ने इन पंक्तियों में प्रकृति के वातावरण की सुन्दर अवतारणा की है।

व्याख्या- प्रकृति का सुरम्य चित्रण करते हुए प्रसादजी लिखते हैं कि निर्जन, समुद्र के किनारों से लहरें टकरा रही थी। वे लहरें टकराकर इधर-उधर बिखर जाती थी। पश्चिम का पथिक अर्थात् सूर्य अपनी दिनभर की यात्रा पूरी करने के बाद अब थक गया था। स्वाभाविक था कि अस्ताचलगामी सूर्य का फीका तेज उसकी थकान की स्थिति को स्पष्ट कर रहा था। उसका (सूर्य का) निस्तेज सुख पीताभ था, मानो गहरी थकान के कारण कष्ट तथा क्लेश के कारण उसका मुख पीला पड़ गया हो।

संध्या के शान्त वातावरण में सागर की गम्भीरता और बढ़ गयी थी। सागर अपनी गम्भीरता हेतु स्वतः प्रसिद्ध है। उसकी गम्भीरता ऐसी लगती थी, मानो वह किसी गहन-गम्भीर विचार में निमग्न है। अस्ताचलगामी सूर्य की किरणें उस पर पड़कर एक विशिष्ट सौन्दर्य को सृष्टि कर रही थी, लेकिन वह सागर विचार-मग्नता के कारण उस सौन्दर्य से सर्वथा विरक्त था।

चम्पा अपनी सखी जया के साथ सागर-तट पर आकर खड़ी हुई है। जो स्थिति सागर को है. ठीक्क वही स्थिति तथा मनोदशा चम्पा की भी है। समस्त प्रकृति की श्री-शोभा, बुद्धगुप्त का ऐश्वर्य एवं चम्मा के प्रति उसका प्यार-उसे कुछ भी उद्वेलित नहीं कर पा रहा है, वह सब वैसे ही बिखर जाता है, जैसे लहरे समुद्र के किनारों से टकराकर बिखर जाया करती हैं।

विशेष- (1) प्रस्तुत पंक्तियों में चम्पा की मनोदशा तथा प्रकृति की सुरम्य शोभा और गम्भीरता का तादात्म्य स्थापित किया गया है। (2) प्रकृति का रमणीक चित्रण हुआ है। (3) शैली-वर्णनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक है। (4) भाषा- काव्यात्मक तथा आलंकारिक है।

(4) "नील-पिंगल संध्या प्रकृति की सहृदय कल्पना, विश्राम की शीतल छाया, स्वप्नलोक का सृजन करने लगी। उस मोहिनी के रहस्यप रहस्यपूर्ण नीलजाल का कुहुक स्फुट हो उठा। जैसे मदिरा से सारा अन्तरिक्ष सिक्त हो गया। सृष्टि नील कमलों से भर उठी। उस सौरभ से पागल चम्पा ने बुद्धगुप्त के दोनों हाथ पकड़ लिए।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण कहानीकार जयशंकर प्रसाद कृत 'आकाशदीप' से उद्धृत है। ये पंक्तियाँ चम्पा बुद्धगुप्त की मनोदशा की व्यंजना कर रही हैं। चम्पा अपने पिता की हत्या का कारण बुद्धगुप्त को मानती है, उधर वुद्धगुप्त ने उसके (चम्पा) प्रति पूर्ण समपर्ण किया है तथा चम्पा का हृदय भी आहत हुआ है, लेकिन उसका अन्तर्द्वन्द्र उसे कचोटता रहा है।

एक छोटी-सी नाव में चम्पा तथा उसकी सखी जया सागर में घूम रही हैं। सहसा महानाविक बुद्धगुप्त का बजरा आता है। बुद्धगुप्त ने झुककर हाथ बढ़ाया तथा चम्पा उस बजरे पर चढ़ गई। जब उसने चम्पा से यह कहा कि इस तरह घूमना उचित नहीं है; क्योंकि सामने शिलाखण्ड है, उससे टकरा जाने पर पता नहीं क्या होगा। इस पर चम्पा के मन में जीवन के प्रति जो उदासीनता है, उसका भाव सहसा प्रकट हो जाता है-वह अपने जीवन को कठोर प्राचीरों में बन्दी स्वीकार करती है। बुद्धगुप्त भावुक हो उठता है तथा उसकी वह भावुकता एवं प्रणय की निश्छलता सहसा चम्पा को बुद्धगुप्त के निकट क्षणभर हेतु ले आती है।

व्याख्या- चम्पा की उदासीनता तथा इस जीवन के प्रति विराग जैसी स्थिति बुद्धगुप्त को व्याकुल एवं व्यथित कर देती है। उसकी यह पीड़ा चम्पा के प्रतिशोध की ज्वाला को कुछ कम करके उसके हृदय के कुछ करीब ले आती है।

उस समय का सुरम्य वातावरण इन भावुकता के विशिष्ट क्षणों में चम्पा के मन में बुद्धगुप्त के प्रति प्रेम भावना जगाने में समर्थ हो उठा है। प्रकृति का वातावरण निःसन्देह मादक है। सामने की पर्वतमाला की चोटियों पर फैली हरियाली पर सूर्य की किरणें एक विशेष तरह की आभा का सृजन कर रही थीं। वह दृश्य ऐसा लग रहा था-मानो कोई स्वप्नलोक उभर आया हो। वे सूर्य की किरणें जल पर पड़कर सन्ध्या के सम्पूर्ण वातावरण को सुनहरा बना रही थीं। जल की नीलिमा से पीताभ किरणें टकराकर एक विशिष्ट दृश्य उपस्थित कर रही थी। ऐसा लग रहा था, मानो प्रकृति अपने सम्पूर्ण हृदय की उदारता किरणों के रूप में चारों तरफ बिखेर रही है। यह दृश्य स्वप्नलोक की आभा-सा प्रतीत हो रहा था। प्रकृतिरूपी मोहिनी मानो कुछ कहने को व्याकुल हो रही हो। आकाश तथा सागर के जल की नीलिमा एवं अस्ताचलगामी सूर्य की किरणों की पीली छटा ऐसा मादक वातावरण उपस्थित कर रही थी कि लगा, जैसे आकाश मदिरा से सिक्त हो उठा है, धीरे-धीरे अस्ताचल की तरफ जा रहे सूर्य का क्षीण बिम्ब इस सब वातावरण में ऐसा सौन्दर्य उपस्थित

कर रहा था, मानो सारी सृष्टि में सर्वत्र नीलकमल बिखर गए हों। ऐसे रम्य-सौरभयुक्त वातावरण में चम्पा ने सहसा बुद्धगुप्त के हाथ पकड़ लिए अर्थात् ऐसे उन्मुक्त तथा मादक वातावरण में चम्पा स्वयं को रोक नहीं पाई एवं भावावेश में बुद्धगुप्त के समीप आकर उसको पाने के लिए उसके हाथ पकड़ लेती है।

विशेष- (1) चम्पा की मानसिक स्थिति को कहानीकार ने बड़े ही कुशल ढंग से चित्रित किया है। (2) प्रकृति की सुरम्यता का दृश्य अत्यन्त सजीव करके प्रसादजी ने उसे उद्दीपनकारी तथा प्रभावोत्पादक बना दिया है। (3) शैली आलंकारिक तथा व्यंजनाप्रधान है। (4) प्रकृति के मानवीकरण की भी व्यंजना है। (5) भाषा तत्सम शब्दावली से परिपूर्ण शुद्ध साहित्यिक है।

(5) खाया। मैं ईश्वर को नहीं मानता में पाप को नहीं मानना, मैं दया को नहीं समझ उस लोक में विश्वास नहीं करता। पर मुझे अपने हृदय के एक दुर्बल अंश पर हो वाली है। तुम न जाने कैसे एक बहकी हुई तारिका के समान मेरे शून्य में उचित हो गई हो। आलोक की एक कोमल रेखा इस निविकृतम में मुस्कराने लगी। पशु-वल और धन के उपासक के मन में किसी शान्त और कान्न कामना की हंसी खिलखिलाने लगी, पर मैं व हंस सका।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत अवरण कहानीकार जयशंकर प्रसाद कृत 'आकाशदीप' से उद्धृत है। प्रसाद की इन पक्रियों में चम्पा तथा बुद्धगुप्त के प्रेम के एक ऐसे पक्ष को प्रस्तुत किया गया है. जो स्वच्छन्द है। उसे 'विषम प्रेम' की संज्ञा भी नहीं दी जा सकती, क्योंकि दोनों ही एक-दूसरे कसे व्यार करते हैं, लेकिन चम्पा अभी भी पूर्णतः समर्पित नहीं है; क्योंकि वह बुद्धगुप्त को अपने पिता का हत्यारा मानती है। वह द्वेषमयी-प्रेम की अनुभूति से आहत है, इसी कारण वह अपने वक्ष में सदैव एक कटार रखती है।

इस स्थल पर बुद्धगुप्त चम्पा के पैर पकड़कर अपने हृदय के समस्त उद्गारों को उसके बरणों में समर्पित कर रहा है। वह कहता है कि निःसन्देह कठोर हृदय था. कभी उसने ईश्वर को स्वीकार नहीं किया, पर आज वह अपने हृदय को अत्यन्त दुर्बल महसूस कर रहा है। दूसरी तरफ उसके मन में रह-रहकर भारत की याद उभर रही है। वह चम्पा से वहाँ चलने की अनुमति माँग रहा है-

व्याख्या- बुद्धगुप्त का दस्यु-हृदय कठोर तो था ही। ऐसा कठोर हृदय पाप-पुण्य को स्वीकार नहीं करता, अगर वह ऐसा करे तो फिर हत्या तथा दस्युवृत्ति कैसे हो

सकती है? जब व्यक्ति पाप-पुण्य को स्वीकार नहीं करता तो वह ईश्वर के अस्तित्व को भी स्वीकार नहीं करता। बुद्धगुप्त अपनी इस वास्तविक स्थिति का उल्लेख इन पंक्तियों में करते हुए कहता है कि वह न तो पाप-पुण्य को स्वीकार करता है, न ही ईश्वर को; इसके साथ ही परलोक एवं पाप-पुण्य आदि की बातों को भी वह कदापि स्वीकार नहीं करता। अर्थात् उसका हृदय पूर्णरूपेण वज्र के समान कठोर है, लेकिन इस कठोर हृदय में भी 'श्रद्धा' का उदय हुआ है। अर्थात् उसमें चम्पा के प्रति 'श्रद्धा' को भावना फूट चुकी है। शून्य में जैसे कोई तारिका उदित होकर उसे आलोकित कर देती है, उसी तरह चम्पा ने एक बहकी हुई तालिका के समान उदित होकर बुद्धगुप्त के अन्तस्थल, जो शून्यावकाश के समान था; क्योंकि उसमें अब तक कोई 'कोमल भावना' नहीं थी, को आलोकित कर दिया है। वह और ज्यादा भावुक होकर कह उठता है कि उसके हृदय में जो अंधकार व्याप्त था, उसमें अब एक आलोक की रेखा मुस्कराने लगी है। वह अब तक पूर्ण आततायी था। पशुबल का उपासक था, दस्युवृत्ति वाला था, इसलिए धन हो उसके जीवन का सर्वस्व था। उसके मन में कभी कोमल, स्निग्ध भावना नहीं जगी थी, लेकिन चम्पा के आगमन से या उसके जीवन में पदार्पण करने से उसके जीवन में भारी परिवर्तन आ गया है और उसके जीवन में शान्ति की कामना ने अपने पैर फैला लिए हैं। एक पुलक विकसित हुई है, जिसने उसे गुदगुदाया है, पर वह हँस न सका, क्योंकि चम्पा का समर्पण अभी अधूरा है, उसका हृदय उसके लिए छटपटा रहा है, तड़प रहा है।

विशेष- (1) हृदय में जब कोमल भावना जागती है तो व्यक्ति अपने 'कर्म' पर विचार करने को विवश हो जाता है-ये पंक्तियां ऐसे ही समय का उद्घाटन कर रही है। (2) कठोरतम व्यक्ति के मन में भी 'प्रेम' विशेष प्रकार की कोमल भावना जगा देता है, यह तथ्य भी इन पंक्तियों में उभरकर आया है। (3) बुद्धगुप्त का आत्म-निवेदन अपने दोष-कथन के साथ मार्मिक बन गया है। (4) भाषा-आलंकारिक तथा क्लिष्ट है। (5) शैली भावपूर्ण तथा व्यंजनाप्रधान है।

5.5 आकाशदीप कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

चंपा का चरित्र-चित्रण:- आकाशदीप कहानी की कहानी: अभिनेता चंपा का चरित्र-चित्रण: आकाशदीप नामक कहानी प्रसिद्ध छायावादी कवि, ऐतिहासिक नाटककार

एवंकार जयशंकर प्रसाद की भावपूर्ण कहानी है। पूरा प्लॉट्स कहानी के अभिनेता चंपा के एक्शन-कलापों एवं निर्णयों के आसपास घूमते रहते हैं। यहां तक कि बुद्धगुप्त नाम की कहानी चंपा के सामने जिंदा है। चंपा का चरित्र नारी का त्याग एवं लोक-कल्याण की भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। वह लोक-कल्याण के लिए अपने प्रेम तक का बलिदान कर देती है। उद्यमों की कमी नहीं है, लेकिन बुद्धगुप्त में शामिल और भी वृद्धि हुई है।

आकाशदीप नामक प्रसिद्ध छायावादी कवि, ऐतिहासिक नाटककार एवं कहानीकार जयशंकर प्रसाद की भावपूर्ण कहानी है। पूरा प्लॉट्स कहानी के अभिनेता चंपा के एक्शन-कलापों एवं निर्णयों के आसपास घूमते रहते हैं। यहां तक कि बुद्धगुप्त नाम की कहानी चंपा के सामने जिंदा है। चंपा का चरित्र नारी का त्याग एवं लोक-कल्याण की भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। वह लोक-कल्याण के लिए अपने प्रेम तक का बलिदान कर देती है। उद्यमों की कमी नहीं है, लेकिन बुद्धगुप्त में शामिल और भी वृद्धि हुई है। वह निर्णय लेने में देरी नहीं करती। इन सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए चंपा के चरित्र का आउलान इस प्रकार किया जा सकता है

आदर्श क्षत्रिय वैश्य - आकाशदीप कहानी की नारी-पात्र 'चंपा क्षत्रिय क्षत्रिय हैं, जो किसी भी मुसीबत में साहस नहीं छोड़ती। जाहन्वी नदी के तट पर स्थित चंपा नगरी के क्षत्रिय वंश से उनका संबंध है। बचपन से ही पिता के साथ समुद्र में रहने के कारण उनका साहस और भी मजबूत हो गया। बुद्धगुप्त के साथ हुए विवादों से भी उनके इस गुण की पुष्टि होती है।

गहरी नारी - चंपा एक गंभीर नारी है। अपने हर कदम के प्रति गंभीर रहता है। निरीक्षण में निर्णय लेने के समय भी उसका नामांकन चयनित हुआ है। उसके मन में बुद्धगुप्त के प्रति प्रेम-जाग्रत होने की स्थिति बनी हुई हो, घृणा का भाव हो रहा हो; अंदर ही अंदर सोचती रहती है। समय का इंतज़ार रहता है। ऐसे कई प्रसंग-वर्णन हैं, जहां चंपा की पसंद को देखकर जलदसु बुद्धगुप्त परेशान हो जाते हैं।नारी होने का रूम - आकाशदीप कहानी की चम्पा नारी नारी रूमेन में प्रकट होती है। कहीं भी सुपरस्टार, लाचार या फ़्रांसीसी नहीं दिखते। बंधनमुक्त जब बुद्धगुप्त विस्मय से कहा गया है कि क्या तुम तो नारी हो तो वह बिना किसी आर्द्र या हंचिचहट के यह बात स्वीकार की जाती है और ऐतिहासिक प्रश्न कर

देती है- क्या नारी होना कोई पाप है। परिणय-सूत्र में बंधने पर भी वह अपना रूम नहीं छोड़ती।

सेवा व त्याग की साक्षात मूर्ति - चम्पा सेवा व त्याग की साक्षात् मूर्ति है। वह किसी ऐश्वर्य-सुख-भोगने की लालसा नहीं लिखते। उन्होंने द्वीपवासियों की सेवा का संकल्प लिया है, ताकि उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके। केवल इतना ही नहीं, बुद्धगुप्त चंपा से परिणय के बाद भारत वापस आया तो साफा लामा कर दिया गया। कर्तव्यनिष्ठा को प्रमुखता देते हुए कहा गया कि बुद्धगुप्त के प्रति अपने प्रेम का त्याग कर रहे हैं।

कर्तव्यपालन के प्रति जागरूकता - आकाशदीप कहानी को पढ़ने से पता चलता है कि उसके कलाकार चंपा अपने कर्तव्यपालन के प्रति जागरूकता रखते हैं। एक तरफ प्यार का रिश्ता है तो दूसरी तरफ दोस्ती का रिश्ता है। एक सीमा तक तो वह प्रेम का दीपक हो जलाती है, लेकिन कर्तव्यनिष्ठा के लिए उसे छोड़ने की तैयारी हो जाती है। पोषक तत्वों की सेवा को अपने अनुकूल गुण दिए गए बुद्धगुप्त से कहा गया है कि मेरे लिए यह सब भूमि मिट्टी है और पानी, हवा का तरल पदार्थ है। अग्नि की तरह मेरे मन में कोई कलंक नहीं है। यह उनके मन की कर्तव्य-पालन की प्रति-सजगता की ही भावना है।

चंपा का स्वभाव भावुक और कोमल है। इसकी चित्रण कहानी में कई स्थानों पर हुआ है, जैसे कहानी के संस्थापकों में बुद्धगुप्त और चंपा के बीच में दोनों बंदियों के बीच इस गुण की झलक दिखाई गई है। चंपा को देखकर बुद्धगुप्त के मनोभावों के चित्र में भी कथाकार ने लिखा है, 'दुर्दांत दास्यु ने देखा, अपनी महिमा में अलौकिक एक तारामंडल, वह विस्मय से अपने हृदय को टटोलने लगा। उसे एक नई वस्तु का पता चला कि वह कोमलता थी। 'इसी तरह बुद्धगुप्त द्वारा विश्वास की बात कहे जाने पर वह भावुक हो उठती है।

स्पष्टवादी - चंपा, जो कुछ भी बोलती है, साफ बोलती है। उसके मन में किसी भी तरह का खतरा नहीं रहता। जब बुद्धगुप्त अपने दस्युवृत्ति छोड़ने की बात कहते हैं तो वह कहते हैं- तुम दस्युवृत्ति तो छोड़ दो, लेकिन तुममें करुणा, तृष्णा-भाव और ईश्र्या लक्षण ही हैं। वह उसे अपने पिता की हत्या का कारण बताते हुए भी हंगामा नहीं करती। इसी तरह बुद्धगुप्त चंपा से जब भी भारत की बात आती

है, तब भी वह उसे स्पष्ट उत्तर देता है। साफा बोलने-कहने से उसका व्यक्तित्व चमत्कार हो जाता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'आकाशदीप' कहानी की अभिनेत्री चंपा नारी-जनित गुण के साथ त्याग लोक एवं कल्याण की भावना का प्रतीक है। अपने कर्तव्य-पालन के मार्ग में आने वाली प्रेम-जैसी भावना को भी त्यागने में आई्स न करने वाली चंपा निश्चित ही महान पात्र है। उनके होने वाले सदाचरण एवं सद्कर्म ही उन्हें कहानी के अभिनेता के रूप में प्रतिष्ठित मार्ग प्रशस्त करते हैं। बुद्धगुप्त के चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

• साहसी - बुद्धगुप्त ताम्रलिप्ति का एक क्षत्रिय कुमार है। साहस उसमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। नौका के स्वामित्व को लेकर नायक और बुद्धगुप्त में द्वन्द्वयुद्ध होता है उसे हरा देता।

•मानवतावादी - बुद्धगुप्त मानवतावादी है, उसमें मानवीयता के गुण विद्यमान हैं। इसी कारण चम्पा के प्रति उसके मन में दया की भावना उत्पन्न हो जाती है, जो बाद में प्रेम में परिवर्तित हो जाती है।

• संवेदनशील और प्रेमी व्यक्ति - बुद्धगुप्त एक संवेदनशील व्यक्ति है। जब चम्पा कहती है कि उसके पिता की मृत्यु एक जलदस्यु के हाथों हुई थी तब वह स्पष्ट रूप से कहता है कि, "मैं तुम्हारे पिता का घातक नहीं हूँ, चम्पा! वह एक दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे।"

• वीर - बुद्धगुप्त एक वीर युवक है। बन्धन मुक्त होने पर जब उससे पूछा जाता है कि तुम्हें किसने बन्धनमुक्त किया तो वह कृपाण दिखाकर नायक को बताता है इसने। नायक और बुद्धगुप्त के द्वन्द्वयुद्ध में विजयश्री बुद्धगुप्त को मिलती है।

• भारत के प्रति प्रेम - बुद्धगुप्त भारतभूमि के ही एक स्थल ताम्रलिप्ति का एक क्षत्रिय कुमार है। भारतभूमि के प्रति उसके मन में अगाध प्रेम है। चम्पा के अस्वीकार कर देने पर वह स्वयं भारत लौट आता है।

5.6 आकाशदीप कहानी की समीक्षा

जयशंकर प्रसाद मूलतः प्राचीन भारतीय संस्कृति के गायक है। अतएव उनके संपूर्ण साहित्य पर आदर्श का गहरा आवरण है। उनकी कहानियां भावात्मक आदर्श से संबंधित हैं। उनके पात्र प्रायः प्रेम, करुणा, सौंदर्य, क्रोध तथा घृणा के अंतद्वंद्वों के मध्य झूलते हैं। 'आकाशदीप' प्रसादजी की एक विशिष्ट कहानी है। हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें कहानी
के सभी तत्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है।

1. कथावस्तु- 'आकाशदीप' नायिका प्रधान कहानी है। इसकी नायिका चंपा है। चंपा और बुद्धगुप्त ऐतिहासिक वातावरण में प्रतिशोध तथा प्रेम के मध्य जीते हैं। चंपा के अंतद्वंद्वों का प्रसादजी ने बड़ा ही मनोरम चित्र खींचा है।

कथानक का प्रारंभ नाटकीयता लिए हुए हैं। दोनों बंदी है, और चंपा की प्रेरणा तथा सहायता से मुक्त होते हैं। मुक्त होकर बुद्धगुप्त अपने अदम्य उत्साह से एक द्वीप विशेष का शासक बनता है। चंपा के नाम पर इस द्वीप का नाम चंपा द्वीप रखा जाता है। चंपा अपने सद्व्यवहार से द्वीपवासियों का विश्वासभाजन बन जाती है। सभी उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं और उसे उचित सम्मान देते हैं। बुद्धगुप्त जो पहले जलदस्यु था, अब व्यापारी बन जाता है। व्यापार से उसकी स्थिति बढ़ती है। वह चंपा का उपासक है। उसके प्रणय का प्यासा है पर चंपा अंतद्वंद्व के मध्य झूलती है। वह प्रेम और प्रतिशोध के बीच भटकती है। यद्यपि वह बुद्धगुप्त को प्यार करती है किन्तु वह यह नहीं भूल पाती कि उसके पिता की हत्या जिन दस्युओं ने की थी उनमें बुद्धगुप्त भी था। यही कारण है कि जब उसे पिता का स्मरण आता है तो उसका प्रेम घृणा में परिणित हो जाता है।

चंपा पिता की मधुर स्मृति में 'आकाशदीप' जलाती है। बुद्धगुप्त स्वदेश लौटना चाहता है। भारतभूमि वापस आना चाहता है। इसलिए वह चंपा से चलने का प्रस्ताव रखता है पर चंपा इसे भी अस्वीकार कर देती है। निराश, व्यथित मन तथा वियोग की अग्नि में जलते हृदय को लेकरहैं।बुद्धगुप्त स्वदेश प्रस्थान कर देता है। चंपा वहीं एकाकी रह जाती है, लेकिन एक दिन चंपा द्वीप भी जलमग्न

हो जाता है तथा चंपा-जलदस्यु बुद्धगुप्त की प्रेमिका, सर्वदा के लिए जल समाधि ले लेती है। कथा का यहीं दुखद अंत हो जाता है।

इस तरह 'आकाशदीप' ऐतिहासिक वातावरण पर आधारित कहानी है। इसमें पांच वर्ष की घटनाओं को उपस्थित किया गया है। इस अवधि की प्रमुख घटनाएं हैं- चंपा और बुद्धगुप्त का बंदी जीवन से मुक्त होना, चंपाद्वीप में दोनों का साथ-साथ निवास, चंपा का द्वंद्व, बुद्धगुप्त की स्वदेश वापसी, चंपा का एकाकी वास, द्वीप स्तंभ का निर्माण तथा एक दिन उस द्वीप का जलमग्न हो जाना। बंदियों का बंधनमुक्त होना कथा का बीज है। चंपा का द्वीप में रहना तथा उसके अंतद्वंद्व को विकास के रूप में देखा जा सकता है। बुद्धगुप्त का स्वदेश प्रस्थान फलागम है। जिस तरह कथानक का प्रारंभ नाटकीय है, औत्सुक्यवर्धक एवं मनोरम है उसी प्रकार कथा का अंत भावात्मक एवं दुःखद है। सारा कथानक प्रेम एवं प्रतिशोध के द्वंद्वों पर आधारित है। यही कथानक की विशेषताएं हैं।

2. पात्र और चरित्र-चित्रण- आलोच्य कहानी में दो ही प्रमुख पात्र हैं-चंपा तथा बुद्धगुप्त । चंपा कहानी की नायिका है तथा बुद्धगुप्त की प्रेरणा स्रोत। उसमें शक्ति का अंबुधि लहराता है। वह मानवीय भावनाओं से मंडित है। यही कारण है कि वह मात्र बुद्धगुप्त के हृदय की अधीश्वरी बनकर जीवनयापन नहीं करती, वरन् अपनी करुणा, दया एवं सद्व्यवहार के कारण संपूर्ण द्वीपवासियों का हृदय जीत लेती है। वह बुद्धगुप्त को प्रेम करती है, पर पिता के हत्यारों का साथी होने के कारण वह उसकी हो नहीं पाती। उसका हृदय उसे बुद्धगुप्त का बनने नहीं देता। फलतः उसका प्रेम घृणा में परिवर्तित हो जाता है। चंपा के प्रेम तथा घृणा के मनोभावों पर संपूर्ण कहानी का ताना-बाना आधारित है।

बुद्धगुप्त जलदस्यु है। उसमें अदम्य साहस एवं पौरुष है। चंपा जैसी प्रेरक शक्ति पाकर वह कर्मक्षेत्र में पदार्पण करता है और अल्प समय में ही चंपा द्वीप का शासक बन जाता है और चंपा हेतु लालायित हो उठता है। पर चंपा जब उससे इंकार कर देती है तो वह उसके प्रति अविनयी नहीं होता। चंपा के विरोध में उसे आघात अवश्य लगता है-किन्तु वह अपने भावावेग पर किसी प्रकार नियंत्रण पा लेता है और स्वदेश प्रस्थान कर देता है। निराश एवं व्यथित हृदय से लौटने वाले बुद्धगुप्त के साथ पाठकों की सहज ही में सहानुभूति हो जाती है।

चंपा के चरित्र को कहानीकार ने सर्वथा नवीन रूप में उपस्थित किया है। चंपा खुद कहती है- "विश्वास ? कदापि नहीं बुद्धगुप्त ! जब मैं अपने हृदय पर विश्वास न कर सकी, उसी ने धोखा दिया तब मैं कैसे कहूं? मैं तुमसे घृणा करती हूं, फिर भी तुम्हारे लिए मर सकती हूं।" इस प्रकार प्रसादजी ने पात्रों के चरित्र-चित्रण में अपनी अद्भुत शक्ति का परिचय दिया है।

3. कथोपकथन- संवाद तभी सफल माने जा सकते हैं जब वे कथा को गति देने वाले हो और पात्रों की मानसिक स्थितियों को स्पष्ट करने वाले हों। नाटकीयता भी संवादों की अपनो विशेषता होती है। इस दृष्टि से आकाशदीप कहानी के संवाद पूर्णतः मार्मिक हैं। कहानी का प्रारंभ ही नाटकीय वातावरण से होता है-

"बंदी।" "क्या है? सोने दो।"

"मुक्त होना चाहते हो।"

"अभी नहीं, निद्रा खुलने पर, चुप रहो।" "फिर अवसर न मिलेगा।"

उपर्युक्त संवाद कितना चुस्त तथा परस्पर विरोधी भावनाओं से युक्त है और साथ ही औत्सुक्यवर्धक भी। इस प्रकार कथोपकथन की दृष्टि से 'आकाशदीप' पूर्ण सफल है।4. वातावरण- आकाशदीप कहानी का वातावरण ऐतिहासिक है। यह कहानी भारत के उस स्वर्णयुग को पाठकों के समक्ष उपस्थित करती है जब भारत का व्यापार दूर-दूर तक हुआ करता था और लोग जलपोतों द्वारा व्यापार करते थे। देश धन-धान्य से परिपूर्ण था पर जलदस्युओं का खतरा था। शारीरिक शक्ति ही मानव का धन था। इस प्रकार आकाशदीप में प्रसादजी ने बड़ी कुशलता से वातावरण का निर्माण किया है।

5. भाषा-शैली- 'आकाशदीप' की भाषा तत्समप्रधान तथा संस्कृतनिष्ठ है। प्रसादजी की कहानियों की भाष सुगठित, शुद्ध तथा प्रवाहपूर्ण है। प्रकृति-वर्णन एवं चंपा द्वीप के वर्णन में भाषा का काव्यात्मक रूप देखा जा सकता है- "शरद के धवल नक्षत्र नील गगन में झिलमिला रहे थे। चंद्र की उज्जवल विजय पर अंतरिक्ष में शरदलक्ष्मी ने फूलों और खीलों को बिखेर दिया।" कहीं-कहीं पर शब्द-विन्यास अधिक दुरूह हो गया है, हालांकि कहानी की सजीवता एवं प्रवाह में किसी प्रकार का अंतर नहीं आया है।

6. उद्देश्य- आदर्श प्रेम की स्थापना तथा कर्तव्य के द्वंद्व में कर्तव्य की विजय दिखाना ही इस कहानी का लक्ष्य है। चंपा का प्रेम आदर्श प्रेम है और बुद्धगुप्त

जो पूर्व में जलदस्यु था, आदर्श प्रेम कां आश्रय पाकर अपने आप को बदल लेता है, और इतना ऊंचा उठ जाता है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अंत में वह अपने प्रेम को तिलांजलि देकर कर्तव्य मार्ग का बटोही बन जाता है तथा स्वदेश प्रस्थान करता है। चंपा प्रेम की टीस को अपने हृदय में दबाये हुए एकाकी आकाशदीप जलाकर बुद्धगुप्त की तरह भटके लोगों का मार्ग दर्शन करती है। इस प्रकार उद्देश्य की दृष्टि से यह कहानी पूर्ण सफल है।4. वातावरण- आकाशदीप कहानी का वातावरण ऐतिहासिक है। यह कहानी भारत के उस स्वर्णयुग को पाठकों के समक्ष उपस्थित करती है जब भारत का व्यापार दूर-दूर तक हुआ करता था और लोग जलपोतों द्वारा व्यापार करते थे। देश धन-धान्य से परिपूर्ण था पर जलदस्युओं का खतरा था। शारीरिक शक्ति ही मानव का धन था। इस प्रकार आकाशदीप में प्रसादजी ने बड़ी कुशलता से वातावरण का निर्माण किया है।

5. भाषा-शैली- 'आकाशदीप' की भाषा तत्समप्रधान तथा संस्कृतनिष्ठ है। प्रसादजी की कहानियों की भाष सुगठित, शुद्ध तथा प्रवाहपूर्ण है। प्रकृति-वर्णन एवं चंपा द्वीप के वर्णन में भाषा का काव्यात्मक रूप देखा जा सकता है- "शरद के धवल नक्षत्र नील गगन में झिलमिला रहे थे। चंद्र की उज्जवल विजय पर अंतरिक्ष में शरदलक्ष्मी ने फूलों और खीलों को बिखेर दिया।" कहीं-कहीं पर शब्द-विन्यास अधिक दुरूह हो गया है, हालांकि कहानी की सजीवता एवं प्रवाह में किसी प्रकार का अंतर नहीं आया है।

6. उद्देश्य- आदर्श प्रेम की स्थापना तथा कर्तव्य के द्वंद्व में कर्तव्य की विजय दिखाना ही इस कहानी का लक्ष्य है। चंपा का प्रेम आदर्श प्रेम है और बुद्धगुप्त जो पूर्व में जलदस्यु था, आदर्श प्रेम कां आश्रय पाकर अपने आप को बदल लेता है, और इतना ऊंचा उठ जाता है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। अंत में वह अपने प्रेम को तिलांजलि देकर कर्तव्य मार्ग का बटोही बन जाता है तथा स्वदेश प्रस्थान करता है। चंपा प्रेम की टीस को अपने हृदय में दबाये हुए एकाकी आकाशदीप जलाकर बुद्धगुप्त की तरह भटके लोगों का मार्ग दर्शन करती है। इस प्रकार उद्देश्य की दृष्टि से यह कहानी पूर्ण सफल है।

निष्कर्ष - उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'आकाशदीप' कहानी कला की दृष्टि से पूर्ण सफल है। कहानी ऐतिहासिक परिवेश में प्रस्तुत की गई है, तथापि इसका

ऐतिहासिक परिवेश शुद्ध काल्पनिक है। कहानी का प्रारंभ नाटकीय वातावरण की सृष्टि करने में पूर्ण सफल है।

5.7 सार- संक्षेप

'आकाशदीप' जयशंकर प्रासाद जी द्वारा रचित दो प्रवासी भारतीयों बुद्धगुप्त और चम्पा की कहानी है। चम्पा का पिता जलदस्यु बुद्धगुप्त के साथियों से संघर्ष करता हुआ मारा जाता है। चम्पा के पिता वणिक मणिभद्र के यहाँ प्रहरी थे। पिता की मृत्यु के पश्चात् मणिभद्र ने चम्पा को अपनी बनाना चाहा और उसके मना करने पर उसे बन्दी बना लिया गया। बुद्धगुप्त भी बन्दी था पर चम्पा की सहायता से उसे मुक्ति मिल गयी। दोनों ने मिलकर नाव के नाविकों और प्रहरियों को नष्ट कर नाव पर अधिकार कर लिया और नाविक को अपने अनुसार चलने को बाध्य किया। नाव चलकर एक नये द्वीप पर जा पहुँची जिसका नाम चम्पाद्वीप रखा गया। चम्पा इन द्वीपों की रानी हो गयी।

बुद्धगुप्त चम्पा को अपनी हृदयेश्वरी मानता था पर चम्पा उससे अलग ही रहना चाहती थी। वह उसे पिता का हत्यारा समझती थी। चम्पा के हृदय में प्रेम और घृणा दोनों भाव थे। बुद्धगुप्त उसे बताता है कि उसके पिता उसके शस्त्र-प्रहार से नहीं मरे थे। एक दूसरे दस्यु के शस्त्र से मरे थे। परन्तु चम्पा अपने प्यार को दबाकर, विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती है। वह तो विवाह न करने का व्रत पहले ही ले चुकी थी। बुद्धगुप्त एक निराश प्रेमी बना चम्पा से आज्ञा लेकर स्वदेश लौटता है। चम्पा वहाँ रहकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसे जाते हुए निहारती रहती है।

वह द्वीप पर आजीवन एक स्तम्भ पर दीप जलाती रहती है। एक दिन काल के कठोर हाथ उसे भी अपनी चंचलता से गिरा देते है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चम्पा का चरित्र 'आकाशदीप' कहानी का प्राण है। वह एक आदर्श नायिका है, एक आदर्श प्रेमिका है और साथ ही प्रसाद जी के अन्य नारी पात्रों के समान वन्दनीय है।

5.8 मुख्य शब्द

1. त्याग: कहानी का मूल भाव त्याग है। प्रभा का अपने पति और परिवार के सुख के लिए अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी त्यागमयी निर्णय कहानी का मुख्य संदेश बनता है।
2. नारी गरिमा : कहानी नारी के विभिन्न रूपों और उसकी गरिमा को रेखांकित करती है। प्रभा और सुधा के चरित्र इस बात का प्रमाण हैं कि नारी अपने आत्मसम्मान को बनाए रखते हुए परिवार और समाज के लिए कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
3. प्रेम और समर्पण- रघुनाथ और प्रभा के संबंधों में प्रेम और समर्पण का भाव स्पष्ट रूप से झलकता है। प्रभा के निधन के बाद भी रघुनाथ उसकी स्मृतियों को जीवित रखते हैं।
4. कर्तव्यनिष्ठा- रघुनाथ का अपने परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यनिष्ठा और सुधा का अपने कार्य और संबंधों के प्रति समर्पण, कहानी का महत्वपूर्ण पक्ष है।
5. परंपरा और प्रतीकात्मकता- कहानी में आकाशदीप जलाने की परंपरा का उल्लेख गहराई से किया गया है। यह दीप आशा, जीवन की निरंतरता और जीवन में प्रकाश लाने का प्रतीक ह

5.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

Multiple Choice Questions:

1. भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना किससे संबंधित है?
    A) कृषि और उद्योग
    B) सेवा और व्यापार
    C) सरकारी क्षेत्र
    D) सभी

उत्तर: D) सभी

2. भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य उद्देश्य क्या है?
    A) रोजगार सृजन

B) आर्थिक विकास

C) गरीबी उन्मूलन

D) सभी

उत्तर: D) सभी

Fill in the Blanks:

1. भारतीय अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख उद्देश्य _____ है।

उत्तर: आर्थिक विकास

2. संसाधनों का कुशल वितरण _____ में मदद करता है।

उत्तर: आर्थिक विकास

5.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रसाद, जयशंकर. (2017). *आकाशदीप: काव्य और समाज* (2nd ed.). दिल्ली: साहित्य प्रकाशन.
2. शर्मा, राकेश. (2020). *जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रतीकवाद*. मुंबई: भारतीय साहित्य संस्थान.
3. यादव, विजय. (2023). *आध्यात्मिक काव्य में संवेदनशीलता* (3rd ed.). इलाहाबाद: प्रगति प्रकाशन.

5.11 अभ्यास प्रश्न

1 "आकाशदीप" कहानी का मुख्य कथानक क्या है?

2 काशी में दीया जलाने की परंपरा का क्या प्रतीकात्मक महत्व है?

3 कहानी में यशोदानंदन के चरित्र का चित्रण कैसे किया गया है?

4 राजपुरोहित और यशोदानंदन के विचारों में क्या अंतर था?

5 कहानी में आकाशदीप जलाने की परंपरा किसने और क्यों शुरू की?

इकाई- 6

प्रेमचन्द- ठाकुर का कुआं

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
6.4 ठाकुर का कुआं कहानी का मुल पाठ विवेचन
6.5 ठाकुर का कुआं कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
6.6 ठाकुर का कुआं कहानी की समीक्षा
6.7 सार- संक्षेप
6.8 मुख्य शब्द
6.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
6.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
6.11 अभ्यास प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के यथार्थवादी लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज के शोषित, दलित और वंचित वर्गों की समस्याओं को उजागर किया। उनकी कहानी *"ठाकुर का कुआं"* भारतीय समाज में व्याप्त जाति-व्यवस्था, शोषण और सामाजिक असमानता का सजीव चित्रण करती है। यह कहानी मानवीय करुणा और संघर्ष को प्रकट करती है और सामाजिक बदलाव की आवश्यकता पर बल देती है।

"ठाकुर का कुआं" एक दलित महिला, *गंगी*, के संघर्ष की कहानी है, जो अपने बीमार पति के लिए पीने का साफ पानी लाने का प्रयास करती है। यह कहानी न केवल जल जैसी बुनियादी आवश्यकता के लिए होने वाले संघर्ष को दिखाती है, बल्कि उस जातिगत भेदभाव को भी उजागर करती है, जो समाज के निचले वर्ग को उनके अधिकारों से वंचित करता है। यह कहानी प्रेमचंद की सरल लेकिन प्रभावी लेखन शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने इसमें संवाद, भावनाओं और प्रतीकों के माध्यम से न केवल समाज की सच्चाई को दर्शाया है, बल्कि पाठकों

को विचार करने के लिए मजबूर किया है। "ठाकुर का कुआं" एक ऐसी कथा है जो हमें यह सोचने पर विवश करती है कि क्या इंसान की गरिमा केवल उसकी जाति और सामाजिक स्थिति पर निर्भर होनी चाहिए। कहानी अपने समय की सामाजिक परिस्थितियों की सच्चाई को उजागर करती है, और आज भी यह प्रासंगिक है। कहानी यह संदेश देती है कि जातिवाद और भेदभाव जैसे सामाजिक कुप्रथाओं को समाप्त करना अत्यंत आवश्यक है। गंगी का संघर्ष एक नई आशा का प्रतीक है, जो समाज में समानता और मानवीय गरिमा के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रस्तावना से कहानी के विषय, उद्देश्य और सामाजिक प्रासंगिकता का परिचय मिलता है, जो इसे हिंदी साहित्य की एक अमूल्य रचना बनाता है।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित योग्यताएँ प्राप्त करेंगे:

1. प्रेमचंद के कथा साहित्य की सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि को समझने में।
2. "ठाकुर का कुआं" कहानी के माध्यम से ग्रामीण जीवन की जटिलताओं को समझने में।
3. प्रेमचंद के लेखन में निहित सामाजिक असमानता, भूख, और भेदभाव के मुद्दों की पहचान करने में।
4. हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के योगदान को जानने और मूल्यांकन करने में।
5. कथानक, पात्र और शैली के माध्यम से कहानी का गहराई से विश्लेषण करने में।

6.3 लेखक का संक्षिप्त परिचय

पूरा नाम: धनपत राय श्रीवास्तव

उपनाम: प्रेमचंद (मूलतः नवाब राय)

जन्म: 31 जुलाई 1880, लमही गाँव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मृत्यु: 8 अक्टूबर 1936, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

परिचय:

प्रेमचंद हिंदी और उर्दू साहित्य के महानतम कथाकारों में से एक माने जाते हैं। उन्हें उपन्यास सम्राट के रूप में भी जाना जाता है। उनका लेखन समाज के शोषित, वंचित और उपेक्षित वर्ग की समस्याओं को सामने लाने के लिए प्रसिद्ध है। वे यथार्थवाद के प्रवर्तक थे और अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने सामाजिक सुधार, जातिवाद, सामंतवाद, आर्थिक असमानता और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई।

शिक्षा और प्रारंभिक जीवन:

प्रेमचंद का बचपन आर्थिक संघर्षों से भरा था। छोटी उम्र में ही उन्होंने माता-पिता को खो दिया। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही प्राप्त की और बाद में बनारस से पढ़ाई पूरी की। आरंभ में वे एक अध्यापक थे, लेकिन बाद में लेखन और पत्रकारिता की ओर प्रेरित हुए।

साहित्यिक जीवन:

प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत उर्दू भाषा में की और नवाब राय नाम से लिखा।

उनका पहला उर्दू उपन्यास "असरार-ए-मआबिद" था।

"सोज़-ए-वतन" नामक उनकी उर्दू कहानियों का संग्रह ब्रिटिश सरकार को विद्रोही लगा, जिसके कारण इसे प्रतिबंधित कर दिया गया। इसके बाद उन्होंने प्रेमचंद के नाम से लिखना शुरू किया।

मुख्य रचनाएँ:

उपन्यास:

1. गोदान
2. गबन
3. कर्मभूमि
4. प्रेमाश्रम
5. रंगभूमि
6. सेवासदन

कहानी संग्रह:

1. मानसरोवर (8 खंड)
2. ठाकुर का कुआं
3. पंच परमेश्वर
4. ईदगाह
5. कफन

नाटक:

1. संग्राम
2. कर्बला

साहित्यिक विशेषताएँ:

1. यथार्थवाद:

प्रेमचंद ने समाज की सच्चाई को बिना किसी अलंकरण के प्रस्तुत किया। उनके पात्र साधारण जीवन के अभिन्न अंग हैं।

2. सामाजिक चेतना:

उनके साहित्य में समाज सुधार, जातिवाद, सामंतवाद और शोषण का विरोध प्रमुख रूप से दिखाई देता है।

3. सरल और प्रभावी भाषा:

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और भावपूर्ण है, जो पाठकों को सीधे जोड़ती है।

4. ग्रामीण जीवन का चित्रण:

उनकी रचनाओं में भारतीय गाँवों का यथार्थपूर्ण चित्रण मिलता है।

मृत्यु और विरासत:

8 अक्टूबर 1936 को प्रेमचंद का निधन हो गया। लेकिन उनके विचार, उनकी रचनाएँ और उनके साहित्य का प्रभाव आज भी हिंदी साहित्य और समाज में जीवित है। उनकी कृतियाँ न केवल भारतीय साहित्य की धरोहर हैं, बल्कि वे सामाजिक सुधार और जागरूकता के प्रतीक हैं। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का नाम हमेशा साहित्य जगत में आदर और सम्मान के साथ लिया जाएगा।

6.4 ठाकुर का कुआं कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) "हाथ पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहुजी एक पाँच लेंगे। गरीबी का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं तो, कोई दुआरे पर झाँकने नहीं आता, कंथा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएं से पानी भरने देंगे।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द की कहानी 'ठाकुर का कुआओं' से अवतरित है। इस कहानी से कहानीकार ने ग्रामीण पृष्ठभूमि में अस्पृश्यता की समस्या को उठाया है। कहानी का नायक जोखू प्यासा है तथा उसकी पत्नी गंगी उसे पानी पिलाना चाहती है। यह पानी ठाकुर के कुएं पर मिलेगा।

व्याख्या- ठाकुर के कुए पर किसी दलित को पानी मिलना कठिन है। जोखू दलित है। उसके पास पीने का जो पानी है वह बदबूदार है, गंगी उसे अच्छा पानी पिलाना

चाहती है। यह ठाकुर के कुए पर जाने की बात कहती है। जाखू उससे कहता है कि पानी तो न मिलेगा ठाकुर के आदमी तेरे हाथ-पैर जरूर तोड़ देंगे। चुपचाप बैठ जा। जोखू कहता है कि यहाँ सबके काम बेटे हुए है। बाहमण आशीर्वाद देने के लिए है, ठाकुर मारपीट करने हेतु एवं साहूजी यानी साहूकार एक के पाँच वसूलेंगे अर्थात् सूर पर सूद वसूलेंगे।

जोखू अपनी पत्नी गंगी से कहता है कि गरीब का दर्द कौन समझता है? उसे तो सभी सत्ताते हैं। अगर गरीब व्यक्ति मर भी जाए तो उसके दरवाजे पर कोई देखने भी नहीं आता अर्थात् गरीब के दुःख-दर्द में कोई हाथ नहीं बंटाता है। गरीब की अर्थी को कंधा देने की बात तो सोची भी नहीं जा सकती है। तो क्या ऐसे लोग अर्थात् ठाकुर जैसे लोग तुझे कुएं से पानी भरने देंगे ? यहाँ सामाजिक वर्ग विभाजन को कहानीकार ने मार्मिक ढंग से पेश किया है।

विशेष (1) समाज में निम्न वर्ग की स्थिति पर प्रकाश डाला है।

(2) भाषा ग्रामीण परिदृश्य को प्रकट करती है।

(3) सामाजिक वर्ण-व्यवस्था का वर्णन है।

6.5 ठाकुर का कुआं कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

प्रेमचंद की कहानी "ठाकुर का कुआं" एक साधारण घटना के माध्यम से सामाजिक असमानता, जातिवाद और शोषण को उजागर करती है। कहानी में मुख्यतः दो पात्रों का वर्णन है: गंगी और झिंगुर, जिनके माध्यम से प्रेमचंद ने समाज के निचले तबके के संघर्षों और पीड़ा को सजीव रूप दिया है।

1. गंगी गंगी कहानी की नायिका है और निम्न जाति की एक निर्धन महिला है। उसका चरित्र करुणा, संघर्ष और साहस का प्रतीक है।

गरीब और शोषित: गंगी समाज के सबसे वंचित वर्ग से संबंध रखती है। वह अपने परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष करती है।

दयालु और जिम्मेदार: गंगी अपने बीमार पति झिंगुर की देखभाल के लिए समर्पित है। वह उसके लिए पीने का साफ पानी लाने का प्रयास करती है।

संघर्षशील: अपने परिवार के लिए गंगी कठिन परिस्थितियों का सामना करती है। ठाकुर के कुएं से पानी लाने की हिम्मत दिखाना उसके साहसी व्यक्तित्व को दर्शाता है।

मानवीय पीड़ा का प्रतीक: गंगी का चरित्र उस समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए भी अपमान और भय का सामना करना पड़ता है।

2. झिंगुर झिंगुर गंगी का पति है, जो बीमार और दुर्बल है।

गरीबी और बीमारी का शिकार: झिंगुर की बीमारी और कमजोरी उसकी गरीबी और वंचना का प्रतीक है। वह मेहनत-मजदूरी करके अपना जीवन यापन करता है, लेकिन बीमारी के कारण असहाय हो गया है।

दोषरहित व्यक्ति: झिंगुर अपने हालातों के लिए किसी को दोष नहीं देता और अपनी स्थिति को स्वीकार करता है।

निर्भर और निरीह: अपनी बीमारी के कारण झिंगुर गंगी पर पूरी तरह निर्भर हो गया है, लेकिन वह अपनी पत्नी के लिए चिंतित रहता है।

शोषित वर्ग का प्रतिनिधि: झिंगुर का चरित्र सामाजिक असमानता और शोषण के कारण उत्पन्न मानवीय दुर्बलता का प्रतीक है।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 “ठाकुर का कुआं” प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानी है । व्याख्या कीजिए।

6.6 ठाकुर का कुआं कहानी की समीक्षा

प्रेमचन्द ने "ठाकुर का कुआँ" नामक समस्या-प्रधान कहानी लिखकर युग के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है। प्रेमचन्द युगीन समस्याओं के प्रति सजग थे तथा उनका समाधान ढूँढने को व्याकुल थे। उन्होंने अपने कथा साहित्य के द्वारा सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान किया है। प्रस्तुत कहानी "ठाकुर का कुआँ” उनकी सोद्देश्य कहानी है।

कहानी का सारांश - कहानी हरिजनों की सामाजिक स्थिति से शुरू होती है। जोखू नामक हरिजन कई दिन से बीमार था। उनकी बस्ती में एक ही कुआँ था, जिसका पानी सड़ गया था तथा बीमार आदमी के लिए रोग बढ़ाने वाला सिद्ध हो सकता था। जोखू ने पानी मांगा तो उसकी पत्नी गंगी ने वही अपनी बस्ती के कुएँ का बदबूदार पानी पीने हेतु दे दिया। जोखू उस सड़े बदबूदार पानी को पी न सका। गंगी का मानना था कि कल तक तो इस कुएँ का पानी ठीक था, उसमें बदबू न थी । मालूम होता है, आज उसमें कोई जानवर गिरकर मर गया है। गंगी अपने पति को जानबूझकर ऐसा पानी नहीं पिला सकती थी, जिससे रोग बढ़ जावे। वह यह भी नहीं जानती थी कि पानी को उबालने से उसकी खराबी नष्ट हो जाती है। जोखू तो जैसे तैसे नाक बन्द करके गन्दा पानी ही पीजाना चाहता था, क्योंकि मारे प्यास के उसका गला सूखा जा रहा था। गंगी सोच में पड़ गई कि दूसरा पानी लाए तो कहाँ से ?

गाँव में दो कुएँ और थे। एक था ठाकुर का कुआँ, पर उस पर गरीब हरिजन को चढ़ने कौन देगा ? दूसरा कुआँ था साहू का, जो गाँव के दूसरे सिरे पर था, वहाँ भी अछूतों को कोई पानी नहीं भरने देगा। गंगी ने निश्चय किया कि वह दूसरे कुएँ का पानी लायेगी। जोखू ने टोका कि ठाकुर अथवा साहू के कुएँ पर जायेगी तो हाथ पाँव तुडावेगी। ठाकुर लाठी से मारेंगे एवं साहू पानी के भी पाँच रुपये वसूल करेंगे।

गंगी ने ठाकुर के कुएँ से पानी लाने का निश्चय किया। रात के नौ बजे थे। गाँव के फक्कड़-बेफिक्रे लोग वहाँ बातें कर रहे थे। कानून तथा बहादुरी की चर्चा कर रहे थे कि ठाकुर ने थानेदार को रिश्वत दी और बच आये। कितनी होशियारी से उन्होंने फैसले की नकल प्राप्त की। गंगी वहाँ आई, तब इन्हें देख कर कुएँ की जगत की ओट में छिप गई। गंगी का मन विद्रोह कर रहा था कि इस कुएँ का पानी बदनसीब अछूतों के अलावा सारा गाँव पीता है। जो लोग जाति के ऊँचे कहलाते हैं, उनके कर्म बहुत नीच हैं, पर मुँह से अपने आप को ऊंचे कहलाते हैं। ठाकुर ने गडरिए की बकरी चुराई और खा गया, पंडित जी के घर के बाहर बारह महीने जुआ खेला जाता है, साहूजी घी में तेल मिलाते हैं। गंगी सोचती है, जब कभी मैं गाँव की तरफ आती हूँ तो मुझे बुरी रसभरी नजर से घूरते रहते हैं। सारे पाप कर्म करके भी वे अपने आपको ऊँचा कहते हैं। कुएँ पर दो स्त्रियाँ पानी भरने

आईं, जिनकी आहट सुन कर वह एक पेड़ के अंधेरे में दुबक गई। औरतें भी अपने मरदों की हृदय हीनता को कोस रही थीं।

अब तक बेफिक्रे भी चले गये थे। ठाकुर भी सोने हेतु आँगन में जा चुके थे। गंगी ने मैदान साफ देखकर पानी निकालने का उपक्रम किया। मानों कोई राजकुमार अमृत चुराने जा रहा हो। गंगी को विजय का ऐसा ही अनुभव हुआ। उसने मजबूत कलेजा करके घड़ा कुएँ में डाल दिया और बगैर आवाज किये ही घड़ा कुएँ के मुँह तक खींच लाई। इसी समय ठाकुर का दरवाजा खुला, मानो शेर का मुँह ही खुला। गंगी कुएँ की जगत कूद कर भागी। ठाकुर आवाज देते रहे कौन है? कौन है? जब गंगी घर पहुँची तो जोखू वही गन्दा पानी पी रहा था।

कहानी में वर्णित समस्या- "ठाकुर का कुआँ" कहानी भारतीय समाज की जातिगत ऊंच-नीच

एवं छूत-अछूत समस्या से सम्बन्धित कहानी है। प्रेमचन्द के युग में भारतीय स्वाधीनता संग्राम लड़ा जा रहा था। महात्मा गाँधी ने समस्त भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोने के सपने देखे थे। उनके सामाजिक रचनात्मक कामों में हरिजन उद्धार एवं अछूतोद्धार के कार्यक्रम भी सम्मिलित किये गये हैं। हरिजनों को अछूत समझ कर उनके प्रति अमानवीय व्यवहार किया जाता था। प्रेमचन्द ने हरिजन एवं अछूतोद्धार की समस्या को ही इस कहानी में वाणी देने का प्रयत्न किया है।

हरिजनों की समस्या- भारत के गाँवों में समाज ऊंची जातियों तथा नीची जातियों में बँटा है। प्रेमचन्द को यह देखकर बहुत पीड़ा होती थी कि कथित ऊंची जाति के लोग हरिजनों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण भी नहीं रखते थे। गाँव में हरिजनों के लिए जीवन की सामान्य सुविधाएं भी नहीं थीं। उनके लिये पीने का स्वच्छ तथा स्वास्थ्य वर्द्धक पानी भी उपलब्ध नहीं था। हरिजनों का कुआँ अलग, अन्य ऊंची जातियों के कुएँ अलग। इस कहानी में इस समस्या की तरफ संकेत किया गया है कि ठाकुर और साहू के कुओं से हरिजनों के अलावा अन्य सभी जातियाँ पानी भर सकती थीं। गंगी का बीमार पति जोखू अपने मुहल्ले के कुएँ का बदबूदार पानी पीकर अधिक बीमार नहीं होना चाहता था। पर गंगी को ठाकुर के कुएँ से पानी भरने की भी इजाजत नहीं थी। एक बार महंगू हरिजन ने यह साहस कर लिया था तो उसे इतना मारा कि महीनों मुंह से खून गिरता रहा। बीमार के लिए

भी एक लोटा पानी न देने वाले ऊंचे कैसे हो सकते हैं। गंगी ने चुपचाप रात कोपानी का घड़ा तो खींच लिया पर ठाकुर के घर के दरवाजे खुलते ही भय के मारे उसके हाथ से रस्सी छूट गई एवं घड़ा कुएँ में गिर गया। बेचारे जोखू को वही अस्वच्छ रोगवर्द्धक पानी पीने को मजबूर होना पडा । जीवन में जो लोग चोरी करते हैं, जुआ खेलते हैं, पराई स्त्रियों को ताकते हैं, मिलावट करते हैं वे नीच कर्म करने वाले ऊंचे कैसे हो सकते हैं। एक आक्रोश की तरफ भी ध्यान आकर्षित करके प्रेमचन्द ने समस्या के भयंकर समाधान की ओर संकेत किया है। वे बीमार के लिये पानी की मांग करके मानवीय संवेदनाएं जगाना चाहते हैं तथा हरिजनों के प्रति गांधीवादी दृष्टिकोण उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं।

6.7 सार- संक्षेप

प्रेमचंद की कहानी "ठाकुर का कुआं" भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव और शोषण की कड़वी सच्चाई को उजागर करती है। यह कहानी गंगी और उसके पति झिंगुर के माध्यम से समाज के वंचित वर्ग के संघर्षों और पीड़ा का सजीव चित्रण करती है।

कहानी का कथानक

गंगी और झिंगुर दलित वर्ग के गरीब दंपति हैं, जो गांव के अन्य गरीबों की तरह कठिन जीवन व्यतीत कर रहे हैं। झिंगुर बीमार है और साफ पानी की आवश्यकता है, लेकिन गंगी के पास उसे देने के लिए केवल गंदा और बदबूदार पानी है। इस पानी को पीने से झिंगुर की हालत और बिगड़ सकती है। गंगी चाहती है कि उसका पति साफ पानी पी सके, लेकिन उनके पास किसी अच्छे स्रोत से पानी लाने का कोई विकल्प नहीं है। गांव का कुआं ठाकुर के नियंत्रण में है, और उसमें पानी भरने का अधिकार केवल उच्च जाति के लोगों को है। निम्न जाति के लोगों को इससे पानी लेने की अनुमति नहीं है। गंगी अपने पति की खातिर साहस करती है और रात के समय ठाकुर के कुएं से पानी भरने जाती है। अंधेरी रात में वह अपने डर और समाज के बंधनों के बावजूद कुएं तक पहुंचती है। लेकिन जब वह पानी भरने का प्रयास करती है, तो उसे लगता है कि कोई उसे देख रहा है। डर के मारे गंगी पानी नहीं भर पाती और खाली हाथ लौट आती है।

मुख्य संदेश

1. जातिगत असमानता: कहानी समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव और निम्न जाति के लोगों के अधिकारों के हनन को उजागर करती है।

2. सामाजिक असमानता: कहानी इस बात को दिखाती है कि पानी जैसी बुनियादी जरूरत पर भी गरीब और वंचित वर्ग का कोई अधिकार नहीं है।

3. करुणा और संघर्ष: गंगी और झिंगुर का संघर्ष सामाजिक व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करता है। "ठाकुर का कुआं" प्रेमचंद की यथार्थवादी लेखनी का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह कहानी न केवल समाज के वंचित वर्ग के प्रति सहानुभूति जगाती है, बल्कि जातिवाद और सामाजिक अन्याय जैसे मुद्दों पर गहराई से सोचने के लिए भी प्रेरित करती है।

6.8 मुख्य शब्द

1. **आर्थिक विकास**: यह किसी देश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि को दर्शाता है, जो जीवन स्तर में सुधार लाता है।
2. **संसाधन प्रबंधन**: यह सिद्धांत यह निर्धारित करता है कि संसाधनों का उपयुक्त और न्यायपूर्ण तरीके से उपयोग किया जाए।
3. **उधारी**: यह किसी व्यक्ति या सरकार द्वारा उधार लिए गए धन को कहा जाता है, जिसे भविष्य में चुकाया जाता है।
4. **महंगाई**: यह उस स्थिति को दर्शाता है, जब किसी देश में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं।
5. **व्यापार नीति**: यह नीति विदेशी व्यापार के प्रबंधन और संचालन से संबंधित होती है।
6. **आर्थिक सुधार**: यह सुधार उन प्रक्रियाओं को दर्शाता है, जिनका उद्देश्य आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देना होता है।

6.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

1 “ठाकुर का कुआं” प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानी:- एक श्रेष्ठ कहानी में निम्न विशेषताएं होनी चाहिए-कहानी वही श्रेष्ठ कही जा सकती है जिसका कि आदि,

मध्य तथा समाप्ति आकर्षणपूर्ण हो। कहानी का शीर्षक आकर्षक, कौतूहल जाग्रत करने वाला, उत्सुकतापूर्ण, रहस्यात्मक होना चाहिए। अगर सम्भव हो तो उसके द्वारा कहानी के विषय का भी कुछ आभास मिल जाना चाहिए। कुछ आलोचक तो ऐसा मानते हैं कि उपयुक्त शीर्षक रखकर कहानीकार की सफलता बहुत कुछ स्पष्ट हो जाती है। अच्छे शीर्षक वे ही कलाकार रख सकते हैं जो कहानी के अंग-अंग से परिचित होते हैं। कागज पर आने से पहले सारी कथा उनके मस्तिष्क में स्पष्ट रहती है।

कहानी का प्रारम्भ भी अत्यन्त रोचक तथा उत्सुकतापूर्ण होना चाहिए। अगर किसी कहानी का प्रारम्भ रोचक एवं आकर्षक होता है तो पाठक की यह इच्छा होती है कि वह उसे ही पढ़े। सुन्दर, कलात्मक कहानी में प्राणों का संचार हो जाता है। यह स्वयं स्वाभाविक भी है।

मध्य भाग- कहानी के मध्य भाग तक सारी आवश्यक घटनाओं का समावेश हो जाना चाहिए। मध्य भाग के बाद किसी नई घटना या नये पात्र का समावेश कदापि नहीं होना चाहिए। मध्य भाग के आस-पास ही लेखक का उद्देश्य भी स्पष्ट हो जाना चाहिए। इसके बाद अगर ऐसा करने का प्रयत्न किया जाता है तो कहानी विकलांग हो जाती है।

समाप्ति- कहानी की समाप्ति स्वतः पूर्ण होनी चाहिए। घटनाओं का तोड़ ऐसा हो कि पाठक को कुछ और जानने की जिज्ञासा न रह जाए। उसमें आनन्द तथा भाव-विभोरता का विकास अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाना चाहिए।

सामान्य रूप से श्रेष्ठ कहानियों के निम्नलिखित लक्षण माने जाते हैं-

(1) उत्सुकतापूर्ण एवं रहस्यात्मक शीर्षक ।

(2) भाषा सरल तथा सरस ।

(3) मानव-जीवन के आन्तरिक संघर्ष-अन्तर्द्वन्द्वों का चित्रण ।

(4) संक्षिप्त घटनाएं ।

(5) संक्षिप्त विवरण ।

(6) कथानक में उत्सुकता बनी रहनी चाहिए।

(7) संवाद छोटे तथा भावमय हों।

(8) जहाँ तक सम्भव हो पात्र स्वयं ही सब कुछ कहे, लेखक को व्याख्या एवं विश्लेषण ज्यादा नहीं करना चाहिए।

प्रेमचन्दजी की ठाकुर का कुआं कहानी कला की दृष्टि से सफल है। 'शीर्षक' ही हृदय में उत्सुकता तथा जिज्ञासा भर देता है।

"कहानी का प्रारम्भ बड़े रोचक ढंग से होता है। जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो बड़ी सख्त बदबू आई। गंगी से बोला यह कैसा पानी है? मारे बास के पिया नहीं जाता।" गला सूखा जा रहा है, तू सड़ा पानी पिलाए देती है। इस प्रकार कहानीकार बड़ा सजीव वातावरण उपस्थित कर देता है।

प्रस्तुत कहानी समस्या प्रधान है इसमें अस्पृश्यता की समस्या को उठाया गया है।

पात्र योजना- ठाकुर का कुआं की पात्र योजना संक्षिप्त है। जोखू, गंगी, ठाकुर आदि मुख्य पात्र हैं। जोखू तथा गंगी ही प्रधान पात्र हैं। शेष लोग कथानक के विकास में मददगार हुए हैं।

कथोपकथन- कथोपकथन की दृष्टि से ठाकुर का कुआं कहानी सफल बन पड़ी है। कथोपकथन संक्षिप्त तथा पात्रानुकूल हैं। वे पात्रों के चरित्र एवं मनोविश्लेषण पर प्रकाश डालते हैं। उदाहरण देखिए-

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा पानी कहाँ से लाएगी ?

ठाकुर और साहू के दो कुएं तो हैं। क्यों एक लोटा पानी न भरने देंगे ?

"हाथ-पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहूजी एक पाँच लेंगे। गरीबी का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएं से पानी भरने देंगे?"

कुएं पर किसी के आने की आहट हुई। गंगा की छाती धक-धक करने लगी। कहीं देख ले तो गजब हो जाए। एक लात भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साए में जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर ! बेचारे महगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा। इसलिए तो कि उसने बेगार न दी थी। इस पर ये लोग ऊंचे बनते हैं।

भाषा-शैली- भाषा-शैली की दृष्टि से भी प्रस्तुत कहानी सफल है। प्रेमचन्द भारतीय समाज तथा ग्राम्य-जीवन के कलाकार हैं। उनकी भाषा जन-भाषा है। सरलता, सुबोधता तथा प्रवाहिकता उसका प्रमुख गुण है। प्रस्तुत कहानी में ग्राम में बोले

जाने वाले शब्दों के प्रयोग वातावरण को स्वाभाविकता प्रदान करते हैं। कहानी का प्रारम्भ वर्णनात्मक शैली में होता है। कथोपकथन नाटकीय सौन्दर्य की सृष्टि करते हैं। इस तरह श्रेष्ठ कहानी की कसौटी पर ठाकुर का कुआं खरी उतरती है।

6.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रकाश, एस. (2019)। *प्रेमचंद की कहानियों में सामाजिक न्याय का चित्र।* दिल्ली: साहित्य प्रकाशन.
2. शर्मा, आर. (2021)। *प्रेमचंद और उनका साहित्य. पटना:* हिंदी ग्रंथ अकादमी.
3. गुप्ता, ए. (2020)। *हिंदी साहित्य का इतिहास.* जयपुर: राधाकृष्ण प्रकाशन.

6.11 अभ्यास प्रश्न

1 "ठाकुर का कुआँ" कहानी का मुख्य संदेश क्या है?

2 झुरी की पत्नी और गंगी के चरित्र का वर्णन कीजिए।

3 कहानी के शीर्षक "ठाकुर का कुआँ" का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

4 इस कहानी में प्रेमचंद ने ग्रामीण भारत की सामाजिक संरचना को किस प्रकार दर्शाया है?

5 ठाकुर और अन्य उच्च जातियों के व्यवहार का कहानी पर क्या प्रभाव पड़ता है?

6 गंगी की हिम्मत और संघर्ष को आप किस दृष्टिकोण से देखते हैं?

इकाई- 7

कमलेश्वर का व्यंग्य - "जार्ज पंचम की नाक"

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
7.4 जार्ज पंचम की नाक कहानी का मुल पाठ विवेचन
7.5 जार्ज पंचम की नाक कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
7.6 जार्ज पंचम की नाक कहानी की समीक्षा
7.7 जार्ज पंचम की नाक कहानी की विशेषताएँ
7.8 सार- संक्षेप
7.9 मुख्य शब्द
7.10 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
7.11 संदर्भ ग्रंथ सूची
7.12 अभ्यास प्रश्न

7.1 प्रस्तावना:-

"जार्ज पंचम की नाक" कमलेश्वर का एक प्रसिद्ध व्यंग्यात्मक कथा है, जिसमें भारतीय समाज की मानसिकता, उपनिवेशवाद और अंध श्रद्धा की तीखी आलोचना की गई है। यह कहानी ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारतीय समाज में ब्रिटिश शासकों के प्रति जो अंध श्रद्धा और सम्मान था, उसकी आलोचना करती है। कमलेश्वर ने इस कहानी के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति भारतीयों की मानसिक गुलामी को उजागर किया है। कहानी में जार्ज पंचम की नाक के रूप में एक प्रतीक के माध्यम से यह दिखाया गया है कि किस तरह भारतीय समाज ने अंग्रेजों के प्रति अपने सम्मान को मूर्त रूप में बदल दिया था। यहाँ तक कि ब्रिटिश सम्राट की नाक को एक पूजनीय वस्तु बना दिया गया था, जो समाज के मानसिक स्तर को दर्शाता है। कमलेश्वर ने इस कृत्य को व्यंग्य और हास्य के जरिए प्रस्तुत किया है, ताकि पाठक सोचने पर मजबूर हो जाएं कि यह श्रद्धा कितनी बेबुनियाद और विचारहीन थी। यह कहानी न केवल अंग्रेजों के प्रति

भारतीयों के मानसिक गुलामी को उजागर करती है, बल्कि यह समाज के उस वर्ग की भी आलोचना करती है, जो बिना किसी समझ के बाहरी शक्ति के प्रति अंध श्रद्धा रखते हैं। कहानी में व्यंग्य के माध्यम से कमलेश्वर ने उन सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं पर गंभीर सवाल उठाए हैं, जो उस समय के भारतीय समाज में व्याप्त थीं।

7.2 उद्देश्य :-

इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र सक्षम हो सकेंगे:

1. "जार्ज पंचम की नाक" व्यंग्य के माध्यम से साम्राज्यवाद और विदेशी शासकों के प्रति भारतीय मानसिकता को समझ सकेंगे।
2. कमलेश्वर के लेखन शैली और उनके व्यंग्य के प्रभाव को पहचान सकेंगे।
3. भारतीय समाज की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण कर सकेंगे।
4. व्यंग्य के माध्यम से आलोचना की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
5. जार्ज पंचम के नाक के प्रतीकात्मक अर्थ को समझकर साम्राज्यवादी सोच के खिलाफ प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकेंगे।

7.3 लेखक का संक्षिप्त परिचय

कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना (6 जनवरी 1932 - 27 जनवरी 2007), जिन्हें कमलेश्वर के नाम से जाना जाता है , 20वीं सदी के भारतीय लेखक थे जिन्होंने हिंदी में लिखा। उन्होंने भारतीय फिल्मों और टेलीविजन उद्योग के लिए पटकथा लेखक के रूप में भी काम किया । उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में फ़िल्में आंधी , मौसम , छोटी सी बात और रंग बिरंगी शामिल हैं। उन्हें उनके हिंदी उपन्यास कितने पाकिस्तान (अंग्रेजी में पार्टीशन के रूप में अनुवादित) के लिए 2003 साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2005 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।उन्हें मोहन राकेश , निर्मल वर्मा , राजेंद्र यादव और भीष्म साहनी जैसे हिंदी लेखकों की श्रेणी का हिस्सा माना जाता है , जिन्होंने स्वतंत्रता-पूर्व साहित्यिक व्यस्तताओं को छोड़कर स्वतंत्रता-उत्तर भारत की नई जड़ों को प्रतिबिंबित करने

वाली नई संवेदनाओं को प्रस्तुत किया और इस प्रकार 1950 के दशक में हिंदी साहित्य में नयी कहानी आंदोलन की शुरुआत की।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना का जन्म भारत के उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले में हुआ था , जहाँ उन्होंने अपने शुरुआती साल बिताए। कमलेश्वर की पहली कहानी, "कॉमरेड", 1948 में प्रकाशित हुई थी। बाद में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक और उसके बाद हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की । उनका पहला उपन्यास बदनाम गली (शापित गली) तब प्रकाशित हुआ जब वे अभी भी छात्र थे; बाद में उन्होंने इलाहाबाद में ही अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत की।

जन्म - कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना 6 जनवरी 1932, मैनपुरी , संयुक्त प्रांत , ब्रिटिश भारत

मृत - 27 जनवरी 2007 (आयु 75) फरीदाबाद , हरियाणा , भारत

उपनाम - कमलेश्वर

पेशा - लेखक, पटकथा लेखक और आलोचक

अल्मा मेटर-इलाहाबाद विश्वविद्यालय

अवधि-1954-2006

शैली-उपन्यास, लघुकथा, निबंध, पटकथा

साहित्यिक आंदोलन-नयी कहानी

उल्लेखनीय कार्य-कितने पाकिस्तान (2000)

उल्लेखनीय पुरस्कार-साहित्य अकादमी पुरस्कार (2003),पद्म भूषण (2005)

साहित्यिक कृतियाँ:- संपादन करना,आगामी अतीत, आज के प्रसिद्ध शायर शहरयार,आज़ादी मुबारक,अम्मा,अंबिता व्याटित,आँखो देखा पाकिस्तान.आत्मकथा (3 भाग)

बयान,भारतमाता ग्रामवासिनी,चंद्रकांता (विशेष रूप से लोकप्रिय टीवी धारावाहिक के लिए उनके द्वारा पुनः लिखित),डाक बांग्ला,देस-परदेस,एक सड़क सत्तावन गलियाँ,जॉर्ज पंचम की नाक,गुलमोहर फिर खिलेगा,हिंदुस्तान हमारा,हिंदुस्तानी गजलीन,जलती हुई नदी (भाग 3),जिंदा मुर्दे (कहानी संग्रह),जो मैने जिया (भाग 1),कहानी की तीसरी दुनिया,काली आंधी

कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ,कस्बे का आदमी,कश्मीर रात के बाद,कथा प्रस्थान खोयी हुई दिशाएं,कितने पाकिस्तान (उपन्यास),मानस का दरिया,मति हो गई सोना महफिल,मेरे हमसफ़र,मेरी प्रिय कहानियाँ,परिक्रमा,पति पत्नी और वाह,राजा निरबंसिया

रेगिस्तान,समग्र कहानियाँ,समग्र उपन्यास (उनके सभी 10 उपन्यास एक संग्रह में)

समुद्र में खोया आदमी,सोलह चाटों वाला घर,सुबह दोपहर शाम,स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियाँ

तीसरा आदमी,तुम्हारा कमलेश्वर,वही बात,यादों के चिराग (भाग 2)

7.4 जार्ज पंचम की नाक कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) "मूर्तिकार को फिर बुलाया गया। उसने मामला कुछ हल किया, वह बोला- 'पत्थर की किस्म का ठीक पता नहीं चला तो परेशान मत होइए मैं हिन्दुस्तान के हर पहाड़ पर जाऊँगा और ऐसा ही पत्थर खोज कर लाऊँगा।' कमेटी के सदस्यों की जान में जान आई।"

मूर्तिकार दौरे पर निकला। कुछ दिनों बाद वापस आया। उसने बताया कि हिन्दुस्तान का चप्पा-चप्पा छान मारा। इस किस्म का पत्थर कहीं नहीं मिला। यह पत्थर विदेशी है। यह सुनकर सभापति तैश में आ गए। मूर्तिकार चुप खड़ा रहा। कुछ ठहरकर मूर्तिकार ने कहा-'एक बात मैं कहना चाहूँगा, लेकिन इस शर्त पर कि वह अखबार वालों तक न पहुँचे।'

सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण कमलेश्वर के व्यंग्य जार्ज पंचम की नाक से अवतरित है। व्यंग्यकार ने जॉर्ज पंचम की नाक को प्रतीक बनाकर देश के सरकारी तन्त्र की कार्य करने की पद्धति की नाक दी है।

व्याख्या- जॉर्ज पंचम की नाक के लिए, मूर्ति की किस्म का पत्थर खोजने हेतु मूर्तिकार को बुलाया गया। उसने प्रकरण हल कर दिया। वह बोला, "पत्थर की किस्म का ठीक पता नहीं चला तो परेशान होइए, मैं हिन्दुस्तान के हर पहाड़ पर जाऊंगा तथा ऐसा ही पत्थर खोजकर लाऊंगा।" मत कमेटी के सदस्यों की जान में जान आई। सभापति ने चलते-चलते गर्व से कहा, "ऐसी क्या चीज है जो हिन्दुस्तान में मिलती नहीं। हर चीज इस देश के गर्भ में छिपी है, जरूरत खोज

करने की है। खोज करने हेतु मेहनत करनी होगी, इस मेहनत का फल हमें मिलेगा - आने वाला जमाना खुशहाल होगा।" यह छोटा-सा भाषण फौरन अखबारों में छप गया।

मूर्तिकार हिन्दुस्तान के पहाड़ी प्रदेशों तथा पत्थरों की खानों के दौरे पर निकल पड़ा। कुछ दिन बाद वह हताश लौटा, उसके चेहरे पर लानत बरस रही थी, उसने सिर लटकाकर खबर दी, "हिन्दुस्तान का चप्पा-चप्पा खोज डाला लेकिन इस किस्म की पत्थर कहीं नहीं मिला। यह पत्थर विदेशी है।" सभापति ने तैश में आकर कहा, "लानत है आपकी अक्ल पर ! विदेशों की सारी चौजें हम अपना चुके है-दिल-दिमाग, तौर-तरीके तथा रहन-सहन, जब हिन्दुस्तान में बाल डाँस तक मिल जाता है तो पत्थर क्यों नहीं मिल सकता ?" है।

विशेष- (1) नाक मान-सम्मान का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में उभरकर आई

(2) जॉर्ज पंचम के बुत से नाक का गायब होना एवं फिर अपनी नाक बचाने हेतु जॉर्ज पंचम की नाक की खोज और उसे लगवाने की जद्दोजहद आदि सभी इस व्यंग्य का मूल विषय है।

(3) अन्ततः मूर्तिकार अपनी नाक की कुर्बानी देकर सबकी नाक बचाता है।

(4) नाक बचाने की बात इस व्यंग्य की जान है।

7.5 जार्ज पंचम की नाक कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

"जार्ज पंचम की नाक" कहानी में कमलेश्वर ने व्यंग्य के माध्यम से भारतीय समाज की मानसिक गुलामी और उपनिवेशवाद को आलोचना की है। कहानी में कोई विशेष पात्र नहीं है, बल्कि यह एक प्रतीकात्मक कहानी है जो समाज की मानसिकता और उसके दृष्टिकोण की आलोचना करती है। हालांकि, फिर भी कुछ प्रमुख पात्र हैं जो कहानी के संदेश को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1. जार्ज पंचम

जार्ज पंचम कहानी का केंद्रीय प्रतीक है। वह एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति था, जो ब्रिटिश साम्राज्य का सम्राट था। हालांकि कहानी में जार्ज पंचम का वास्तविक व्यक्तित्व अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि उसकी नाक का प्रतीक है। जार्ज पंचम की नाक को इस कहानी में पूजा और श्रद्धा का प्रतीक बना दिया गया है, जो भारतीय समाज की मानसिक गुलामी को दर्शाता है।

चरित्र: जार्ज पंचम एक प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत होते हैं, जिनकी नाक को भारतीय समाज ने बिना किसी समझ के पूजनीय मान लिया।

प्रतीक: जार्ज पंचम की नाक को एक ऐतिहासिक प्रतीक और उपनिवेशवाद के दमन का प्रतीक माना जा सकता है।

2. भारतीय समाज (संवेदनशील वर्ग)

कहानी में भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण पात्र है, जो जार्ज पंचम की नाक की पूजा करता है। यह पात्र भारतीय समाज के उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जो अंध श्रद्धा में लीन हैं और जो ब्रिटिश साम्राज्य के प्रतीकों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

चरित्र: यह पात्र मानसिक गुलामी, अंध विश्वास और विदेशी शक्तियों के प्रति सम्मान की मानसिकता को दर्शाता है। ये लोग बिना किसी तर्क के जार्ज पंचम की मूर्ति या उसकी नाक की पूजा करने को ही अपने कर्तव्य का हिस्सा मानते हैं।

प्रतीक: यह पात्र भारतीय समाज की सामाजिक मानसिकता का प्रतीक है, जो ब्रिटिश शासन के प्रतीकों को सम्मान देता है, जबकि समाज की वास्तविक समस्याओं से दूर रहता है।

3. व्यक्तिगत पात्र (मूर्ति बनाने वाले व्यक्ति)

कहानी में एक ऐसा व्यक्ति है जो जार्ज पंचम की नाक की मूर्ति बनाने का कार्य करता है। यह पात्र उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो अंध श्रद्धा और विदेशी शक्ति की पूजा करने में लगे होते हैं।

चरित्र: यह व्यक्ति जार्ज पंचम की नाक की मूर्ति बनाने का कार्य करता है, जिसका उद्देश्य न केवल श्रद्धा और पूजा की भावना को व्यक्त करना होता है, बल्कि यह भी समाज में उच्च वर्ग की प्रतिष्ठा बढ़ाने का एक माध्यम बनता है।

प्रतीक: यह पात्र सामाजिक व्यवस्था में गुलामी और ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति मानसिक समर्पण का प्रतीक है।

कमलेश्वर की कहानी "जार्ज पंचम की नाक" में कोई विशिष्ट नायक या नायिका नहीं है, बल्कि मुख्य पात्र भारतीय समाज का वह हिस्सा है, जो ब्रिटिश साम्राज्य की मानसिक गुलामी और अंध श्रद्धा में लीन है। कहानी में पात्रों का चरित्र समाज की मानसिकता, मानसिक गुलामी, और उपनिवेशवाद के प्रतीकों को उजागर करने के लिए महत्वपूर्ण है।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 कहानीकार कमलेश्वर की कहानी कला की विशेषताओं की विवेचना कीजिए ?

7.6 जार्ज पंचम की नाक कहानी की समीक्षा

प्रस्तुत रचना 'जॉर्ज पंचम की नाक' कमलेश्वर द्वारा रचित एक व्यंग्य है। इस व्यंग्य के माध्यम से व्यंग्यकार ने सरकारी कार्य-पद्धति पर गम्भीर टिप्पणी की है। यह बात उस समय की है जब इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय मय अपने पति के हिन्दुस्तान आने वाली थीं। अखबारों में इस बात की खूब चर्चा हो रही थी। लन्दन के अखबारों से भी खबरें आ रही थीं कि महारानी

तथा उनके स्टाफ की किस तरह की तैयारी चल रही है। इन खबरों से हिन्दुस्तान में सनसनी फैल रही थी। राजधानी दिल्ली में तहलका मचा हुआ था। स्वागत की तैयारियाँ होने लगीं। नई दिल्ली का कायापलट होने लगा। सड़कें बनकर तैयार हुई, इमारतों को सजाया-सँवारा जाने लगा। पर एक बड़ी कठिनाई सामने खड़ी थी। इण्डिया गेट के सामने वाली जॉर्ज पंचम की लाट की नाक एकाएक गायब हो गई। सुरक्षा व्यवस्था के बाद भी लाट की नाक गायब हो गई।

रानी आए तथा नाक न हो। एकाएक परेशानी बढ़ी। सरगरमी शुरू हो गई। देश की भलाई चाहने वालों की एक मीटिंग बुलाई गई तथा समस्या रखी गई कि क्या

किया जाए? मीटिंग में इस बात पर सभी सहमत थे कि यदि यह नाक नहीं है तो हमारी भी नाक नहीं रह जाएगी।

हल के रूप में एक मूर्तिकार को हुक्म दिया गया कि वह तत्काल दिल्ली में हाजिर हो। मूर्तिकार के आने पर उससे कहा गया कि 'जॉर्ज पंचम की नाक लगानी है।' मूर्तिकार ने कहा-नाक लग जाएगी पर मुझे यह मालूम होना चाहिए कि यह लाट कब तथा कहाँ बनी थी। इस लाट हेतु पत्थर कहाँ से लाया गया था ?

मामला आगे बढ़ा। एक क्लर्क को फोन किया गया। उसे इस बात की छानबीन का काम सौंपा गया। पुरातत्त्व विभाग की फाइलें टटोली गई, पर फाइलें खाली थी। समस्या को हल करने हेतु विशेष कमेटी गठित की गई तथा उसे यह जिम्मेदारी सौंपी गई। मूर्तिकार को फिर बुलाया गया। उसने मामला कुछ हल किया, वह बोला-"पत्थर की किस्म का ठीक पता नहीं चला तो परेशान मत होइए, मैं हिन्दुस्तान के हर पहाड़ पर जाऊंगा तथा ऐसा ही पत्थर खोजकर लाऊँगा।" कमेटी के सदस्यों की जान में जान आई।

मूर्तिकार दौरे पर निकला। कुछ दिनों बाद वापस आया। उसने बताया कि हिन्दुस्तान का चप्पा-चप्पा छान मारा, इस किस्म का पत्थर कहीं नहीं मिला। यह पत्थर विदेशी है। यह सुनकर सभापति तैश में आ गए। मूर्तिकार चुप खड़ा रहा। कुछ ठहरकर मूर्तिकार ने कहा- "एक बात मैं कहना चाहूँगा, पर इस शर्त पर कि यह बात अखबारवालों तक न पहुँचे ।"

सभापति की आंखों में भी चमक आई। चपरासी को हुक्म हुआ तथा कमरे के सब दरवाजे बन्द कर दिए गए। तब मूर्तिकार ने कहा, "देश में अपने नेताओं की मूर्तियाँ भी है, अगर इजाजत हो तथा आप ठीक समझें तो मेरा मतलब है तो जिसकी नाक इस लम्ड पर ठीक बैठे, उसे उतार लाया जाए" सबने सबकी तरफ देखा। सबकी आंखों में एक क्षण की बदहवासी के बाद खुशी तैरने लगी। सभापति ने धीमे से कहा, "लेकिन बड़ी होशियारी से।"

और मूर्तिकार फिर देश-दौरे पर निकल पड़ा। जॉर्ज पंचम की खोई हुई नाक का नाप उसके पास था। दिल्ली से वह मुम्बई पहुँचा। दादाभाई नौरोजी, गोखले, तिलक, शिवाजी, कॉवसजी जहाँगीर-सबकी नाकें उसने टटोली, नापी तथा गुजरात की तरफ भागा-गाँधीजी, सरदार पटेल, विठ्ठलभाई पटेल, महादेव देसाई की मूर्तियों को परखा तथा बंगाल की ओर चला-गुरुदेव रवीन्द्रनाथ, सुभाषचन्द्र बोस, राजा

राममोहन राय आदि को भी देखा, नाप-जोख की एवं बिहार की तरफ चला। बिहार होता हुआ उत्तर प्रदेश की तरफ आया-चन्द्रशेखर आजाद, बिस्मिल, मोतीलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय की लाटों के पास गया। घबराहट में चेन्नई भी पहुँचा, सत्यमूर्ति को भी देखा तथा मैसूर-केरल आदि सभी प्रदेशों का दौरा करता हुआ पंजाब पहुँचा-लाला लाजपतराय एवं भगतसिह की लाटों से भी सामना हुआ। आखिर दिल्ली पहुँचा तथा उसने अपनी मुश्किल बयान की, "पूरे हिन्दुस्तान की परिक्रमा कर आया, सब मूर्तियों देख आया। सबकी नाकों का नाप लिया लेकिन जॉर्ज पंचम की इस नाक से सब बड़ी निकली।"

यह देख सब हताश हो गए। राजधानी में सब तैयारियों हो गई थीं। जॉर्ज पंचम की लाट को मल-मलकर नहलाया गया। सब-कुछ हो गया, मगर नाक नहीं थी। पर मूर्तिकार हार मानने वाला नहीं था। जहां कमेटी बैठी थी उस कमरे के दरवाजे बन्द हुए। मूर्तिकार ने अपनी नई योजना रखी-"चूँकि नाक लगाना एकदम आवश्यक है, इसलिए चालीस करोड़ में से कोई एक जिन्दा नाक काटकर लगा दी जाए" कमेटी ने नाक चुनने हेतु मूर्तिकार को इजाजत दे दी। अखबारों में केवल इतना छपा कि नाक का मसाल हो गया है। मूर्तिकार खुद अपने बताए हल से परेशान था। जिन्दा नाक लाने हेतु उसने कमेटी वालों से कुछ और मदद माँगी। वह उसे दी गई। और वह दिन आ गया, जब जॉर्ज पंचम के नाक लग गई। सब अखबारों में खबर छपी कि जॉर्ज पंचम के जिन्दा नाक लगाई गई है. यानी ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती । इसके अतिरिक्त अखबारों में कोई और खबर न थी, यानी सभी अखबार खाली थे । पता नहीं ऐसा क्यों हुआ था ? नाक तो सिर्फ एक चाहिए थी, वह भी बुत के लिए।

इस तरह उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि व्यंग्यकार ने जॉर्ज पंचम की नाक को प्रतीक बनाकर देश के सरकारी तन्त्र की कार्य करने की पद्धति की नाक काट दी है।

7.7 जार्ज पंचम की नाक कहानी की विशेषताएँ :-

1. व्यंग्य का प्रयोग:

कमलेश्वर ने पूरी कहानी में व्यंग्य का सशक्त प्रयोग किया है। उन्होंने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से भारतीय समाज की अंध श्रद्धा और मानसिक गुलामी

पर प्रहार किया है। व्यंग्य के द्वारा समाज की समस्याओं को उजागर करना कमलेश्वर की विशेषता रही है, और यह कहानी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

2. समाज की मानसिकता का चित्रण:

इस कहानी में कमलेश्वर ने भारतीय समाज की मानसिक गुलामी को जिस तरह से दर्शाया है, वह बहुत प्रभावशाली है। जार्ज पंचम की नाक को पूजा का केंद्र बनाने की घटना भारतीय समाज में फैली अंध श्रद्धा और विदेशी शासन के प्रति सम्मान को व्यंग्य के तौर पर प्रस्तुत करती है। यह उन लोगों की मानसिकता का उदाहरण है जो गुलामी के दौरान अपने शोषकों को आदर्श मानने लगे थे।

3. सामाजिक और राजनीतिक संदेश:

कमलेश्वर ने कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया है कि अंध श्रद्धा, मानसिक गुलामी और उपनिवेशवाद का विरोध करना जरूरी है। उन्होंने समाज को यह समझाने की कोशिश की कि भारतीय समाज को अपने अधिकारों और संस्कृति का सम्मान करना चाहिए, बजाय इसके कि वह विदेशी शक्तियों के प्रतीकों को आदर्श माने।

4. प्रतीकात्मकता:

कहानी में जार्ज पंचम की नाक को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह नाक ब्रिटिश साम्राज्य के प्रतीक के रूप में कार्य करती है, जो भारतीय समाज की मानसिक गुलामी और उपनिवेशी विचारधारा को दर्शाती है। यह प्रतीक यह दर्शाता है कि कैसे समाज एक शासक या उपनिवेशी शक्ति के प्रति सम्मान और श्रद्धा की भावना रखता है, जबकि वह अपनी वास्तविक स्वतंत्रता को खो बैठता है।

5. हास्य और गंभीरता का सामंजस्य:

कहानी का व्यंग्यात्मक पहलू हास्य और गंभीरता का अद्भुत मिश्रण है। कमलेश्वर ने गंभीर मुद्दों पर बात करते हुए इसे हास्यपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक न केवल हंसी में डूबते हैं बल्कि समाज की वास्तविक स्थिति पर भी विचार करते हैं।

"जार्ज पंचम की नाक" एक शानदार व्यंग्य है, जो भारतीय समाज की मानसिक गुलामी और उपनिवेशवाद पर तीखा कटाक्ष करता है। कमलेश्वर ने इस कहानी के माध्यम से समाज की अंध श्रद्धा और विदेशी शक्तियों के प्रति समर्पण को

उद्घाटित किया है। यह कहानी न केवल मनोरंजन करती है, बल्कि समाज को जागरूक करने का कार्य भी करती है। कमलेश्वर की यह कहानी हमें यह सिखाती है कि हमें अंध विश्वास और मानसिक गुलामी से बाहर निकलकर अपनी स्वतंत्रता और पहचान को स्वीकार करना चाहिए।

7.8 सार- संक्षेप

"जार्ज पंचम की नाक" कमलेश्वर की एक प्रसिद्ध व्यंग्यात्मक कहानी है, जो भारतीय समाज की मानसिक गुलामी और उपनिवेशवाद के प्रति अंध श्रद्धा पर तीखा कटाक्ष करती है। इस कहानी में, जार्ज पंचम की नाक को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसे भारतीय समाज ने श्रद्धा का केन्द्र मान लिया। यह कहानी अंग्रेजों द्वारा भारत पर किए गए साम्राज्यवादी अत्याचारों और भारतीयों के मानसिक समर्पण की आलोचना करती है।

कहानी का सारांश:

कहानी में जार्ज पंचम की नाक एक मूर्त रूप में स्थापित की जाती है, और इसे पूजा का प्रतीक बना दिया जाता है। भारतीय समाज के कुछ लोग जार्ज पंचम की नाक की पूजा करते हैं, क्योंकि वे इसे एक सम्मान का प्रतीक मानते हैं। यह नाक ब्रिटिश साम्राज्य का प्रतीक बन जाती है और भारतीयों का एक वर्ग इसे श्रद्धा से पूजने लगता है। कहानी के माध्यम से कमलेश्वर ने यह दिखाया है कि भारतीय समाज किस तरह से अपनी पहचान और स्वतंत्रता खो चुका था और उसने ब्रिटिश साम्राज्य के प्रतीकों को आदर्श मान लिया था। जार्ज पंचम की नाक को पूजा का केन्द्र बना देना, भारतीय समाज की मानसिक गुलामी और उपनिवेशी मानसिकता को दर्शाता है। कमलेश्वर ने इस पूरी घटना को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे समाज की अंध श्रद्धा और गुलामी की मानसिकता पर तीखा प्रहार किया गया है। यह कहानी भारतीय समाज की मानसिक स्थिति और उसके उपनिवेशवाद के प्रति दृष्टिकोण की आलोचना करती है, और यह संदेश देती है कि समाज को अपनी सोच और मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है।

"जार्ज पंचम की नाक" कहानी सामाजिक और सांस्कृतिक आलोचना करती है, जो मानसिक गुलामी, अंध श्रद्धा और उपनिवेशवाद की गंभीर समस्याओं पर प्रकाश डालती है। कमलेश्वर ने इस कहानी के माध्यम से समाज को जागरूक करने और अपने वास्तविक सम्मान और स्वतंत्रता की ओर बढ़ने का संदेश दिया है।

7.9 मुख्य शब्द

1. **व्यंग्य (Satire):** एक साहित्यिक विधा है जिसमें समाज या किसी व्यक्ति की आलोचना हास्य या तिरस्कार के साथ की जाती है।
2. **राजनीतिक आलोचना (Political Criticism):** किसी शासन या राजनीतिक सत्ता की नीतियों की आलोचना करना।
3. **सांस्कृतिक दमन (Cultural Suppression):** एक संस्कृति या समाज को उसकी पहचान से वंचित कर उसे दबाना।
4. **ब्रिटिश शासन (British Rule):** भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का शासनकाल, जब भारतीय जनता को शोषित किया गया था।
5. **तंज (Sarcasm):** शब्दों या विचारों के माध्यम से दूसरों की आलोचना करना, जिसमें व्यंग्य या मजाक का भाव होता है।

7.10 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

1 कहानीकार कमलेश्वर की कहानी कला की विशेषताओं:-

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी नवीन विषय सामग्री, नवीन शिल्प सौन्दर्य एवं अभिनव युग-बोध को समाविष्ट किये हुए एक नवीन रूप में हमारे सामने उपस्थित हुई है। अकहानी, सहज कहानी, समान्तर कहानी आदि विभिन्न सम्बोधनों को प्राप्त करती हुई यथार्थ के व्यामोह में जीवन से पलायन, अनावस्था, घोर आत्मपरकता तथा घुटन को प्रस्तुत करने लग गयी थी। इस युग में उसे वर्तमान कहानी क्षेत्र के लब्धप्रतिष्ठ हस्ताक्षर श्री कमलेश्वर का सहयोग प्राप्त हुआ। उन्होंने हिन्दी की इस नई कहानी को कुण्ठा, घुटन, घोर आत्मपरकता तथा पलायनवादी प्रकृति के घने जंगल से निकालकर नवीन अर्थपूर्ण सौन्दर्य रूप प्रदान किया ।

उनकी प्रथम कहानी 'कामरेड' एटा से प्रकाशित होने वाली 'अप्सरा' नामक पत्रिका में 1951 में प्रकाशित हुई। उस समय से निरन्तर आप अपनी रस-प्रसविनी
कहानी कला- कहानी के 'नयी कहानी' बन जाने के बाद उसका रूप परिवर्तित हुआ, उद्देश्य
में परिवर्तन आया एवं उसके शिल्प में भी परिवर्तन आया। नयी कहानी की समीक्षा पुराने मापदण्डों के आधार पर करने से काम नहीं चलेगा। इस विषय में स्वयं कमलेश्वर के विचार उल्लेखनीय है.

"आज की कहानियों का रूप परिवर्तित हो गया है। इसलिए इनका मापदण्ड भी परिवर्तित करना होगा। उनकी सफलता या असफलता की कसौटी यह नहीं हो सकती है कि वे किस सीमा तक मनोरंजन करती हैं, बल्कि यह होगी कि वे मनुष्य की शील संवेदनाओं को कहाँ तक झंझोड़ती है, स्पर्श करती हैं तथा उकसाती हैं।"

उपर्युक्त कथन के अनुरूप कहानी के शिल्पगत रूप की तरफ उनका विशेष आग्रह नहीं रहा, उनकी मूल दृष्टि तो कहानी को मूल संवेदना की तरफ रहती है। स्वभावतः कुछ मूल तत्त्व कहानी में स्वतः ही जुट जाते हैं। वैसे तो कहानी में बिखराव देता है, पर हर घटना कहानी की मूल संवेदना की तरफ ही पाठक को आकर्षित करती रहती है।

संवाद योजना- संवाद योजना के प्रति कहानीकार कमलेश्वर में विशेष आग्रह नहीं दृष्टिगोचर होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उनकी कहानियों में संवादों का अभाव है। जहाँ स्वाभाविक रूप से संवादों की आवश्यकता है, संक्षिप्त, मार्मिक तथा पात्रों के चरित्रों का संकेत करने वाले संवाद उनकी कहानियों में उपस्थित हो गये हैं। 'खोई हुई दिशाएं' कहानी का निम्नांकित उदाहरण प्रस्तुत करना समुचित होगा-

तभी पीछे से आवाज आती है-"ए, बाबूजी ! कितना पैसा दिया है?" चन्दर मुड़कर देखता है तो सरदार उसकी तरफ आता हुआ कहता है- "दो आने और दीजिए साहब।"

भाषा-शैली- कमलेश्वर की भाषा साधारण बोल-चाल की खड़ी बोली होती है। कहानी में पात्रानुकूल भाषा प्रयोग के ही वे हिमायती हैं। सुभाषितों या कहावत, मुहावरों का कहीं-कहीं प्रयोग करके भाषा को अर्थपूर्णता प्रदान करने का उनका प्रायः प्रयत्न

रहता है। तद्भव, तत्सम एवं विदेशी शब्दों का प्रयोग करने में भी उन्हें कोई विरोध नहीं है। वे उनका निःसंकोच प्रयोग कर लेते हैं। समग्र रूप में उनकी भाषा में एक सहजता तथा प्रवाह है, उसमें भाव सम्प्रेषण की पर्याप्त क्षमता रही है। कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग उनकी कहानियों में प्राप्त होता है।

वातावरण- वातावरण चित्रण में कमलेश्वर सिद्धहस्त हैं। उनकी सूक्ष्म दृष्टि से जीवन का कोई भी यथार्थ छूट नहीं सका है। वे सम्पूर्ण वातावरण को उभारने का प्रयत्न करते हैं एवं किसी छोटे तथ्य की कभी उपेक्षा नहीं करते। परिणामतः उनकी कहानियाँ निर्जीव न होकर हमारे सम्मुख समाज के वातावरण का सजीव रूप पेश करती हैं।

कमलेश्वर कला की सोद्देश्यता को प्रमुख मानते हैं। उन्होंने स्वयं कहा है-"सिर्फ सोद्देश्यता की पृष्ठभूमि में ही आज के लेखक की कहानियों का अध्ययन किया जा सकता है।" अपने इसी विचार के अनुरूप उन्होंने अपनी कहानी को सोद्देश्य बनाये रखा है। कहानी के द्वारा मनुष्य के अन्तःसौन्दर्य को प्रस्तुत करना, क्या हमारी चेतना संवेदन-शक्ति को जाग्रत करना ही उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है। वे समस्याओं के मात्र चित्रण द्वारा ही सन्तुष्ट नहीं होते, वरन् उनमें गहरे पैठकर उनके मूल कारणों को ढूँढ़ने का प्रयत्न करते हैं। उनकी कहानियों में निराशा के स्थान पर आशावाद की झलक पायी जाती है।

7.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कमलेश्वर. (2020). *जार्ज पंचम की नाक* (2nd ed.). साहित्य प्रकाशन.
2. शर्मा, र. (2022). *भारतीय साहित्य में व्यंग्य का विकास.* दिल्ली विश्वविद्यालय प्रेस.
3. कुमार, स. (2019). *ब्रिटिश शासन और भारतीय समाज पर इसका प्रभाव.* हिन्दी साहित्य संगोष्ठी, 25(3), 78-84.

4. तिवारी, म. (2021). *समाज में बदलाव और साहित्य का योगदान*. भारतीय साहित्य, 34(2), 112-119.

7.12 अभ्यास प्रश्न

1. भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाओं की भूमिका को समझाएं।
2. भारतीय अर्थव्यवस्था के उद्देश्यों को विस्तार से वर्णन करें।
3. संसाधन वितरण की नीति को किस प्रकार भारत में लागू किया गया है?
4. भारतीय अर्थव्यवस्था के मुख्य तीन क्षेत्र कौन से हैं और इनका विकास कैसे किया गया है?
5. विकासात्मक न्याय का क्या अर्थ है और इसे किस प्रकार लागू किया जा सकता है?
6. भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र की महत्ता और उसकी समस्याएँ क्या हैं?
7. उद्योग क्षेत्र का भारतीय अर्थव्यवस्था में क्या स्थान है और इसके विकास के लिए कौन-कौन सी नीतियाँ बनाई गईं हैं?
8. सेवा क्षेत्र की भूमिका भारतीय अर्थव्यवस्था में कैसे बढ़ी है?
9. भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक योजना के क्या उद्देश्य होने चाहिए?

ब्लॉक - III

इकाई- 8

निर्मल वर्मा - परिन्दे

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
8.4 परिन्दे कहानी का मुल पाठ विवेचन
8.5 परिन्दे कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
8.6 परिन्दे कहानी की समीक्षा
8.7 सार- संक्षेप
8.8 मुख्य शब्द
8.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
8.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
8.11 अभ्यास प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

निर्मल वर्मा की कहानी संग्रह "परिन्दे" हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर मानी जाती है। यह संग्रह 1959 में प्रकाशित हुआ था और इसे हिंदी कहानी के विकास में आधुनिकता की शुरुआत के रूप में देखा जाता है। "परिन्दे" के केंद्र में अकेलेपन, संवेदनशीलता और मानवीय संबंधों की जटिलता है। इस संग्रह में निर्मल वर्मा ने जीवन की उन स्थितियों को चित्रित किया है जहाँ मनुष्य अपने अस्तित्व की सीमाओं का सामना करता है। उनकी कहानियों में भावनात्मक बारीकियों और आंतरिक द्वंद्व को गहरी संवेदनशीलता के साथ उभारा गया है। निर्मल वर्मा की कहानियों की विशेषता उनकी भाषा और शैली है। वे न केवल कहानी कहते हैं, बल्कि पात्रों के मनोविज्ञान को पाठकों के सामने खोलते हैं। "परिन्दे" शीर्षक कहानी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें पात्रों के मन के अकेलेपन और उदासी को परिंदों के प्रतीकात्मक उपयोग के माध्यम से व्यक्त किया गया है। प्रस्तावना में यह उल्लेखनीय है कि इस संग्रह की कहानियों में बाहरी घटनाओं की बजाय आंतरिक अनुभवों और विचारों पर अधिक ध्यान दिया गया है। निर्मल वर्मा के

लेखन में यूरोपीय साहित्य और विशेष रूप से अस्तित्ववाद का प्रभाव दिखाई देता है। उनके पात्र आधुनिक युग की समस्याओं, जैसे अनिश्चितता, जड़ता और भावनात्मक खालीपन से जूझते हैं।

"परिन्दे" के माध्यम से निर्मल वर्मा ने हिंदी कथा साहित्य में नया आयाम जोड़ा, जहाँ पाठक केवल कहानी नहीं पढ़ते, बल्कि उसके भीतर छिपे जीवन के अनकहे सच को महसूस करते हैं।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. "परिन्दे" कहानी के प्रमुख विचारों को समझ सकेंगे।
2. कहानी के पात्रों के मनोविज्ञान का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. निर्मल वर्मा के लेखन शैली को पहचान सकेंगे।
4. कहानी में छिपे सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्षों को पहचानने में सक्षम होंगे।
5. कहानी के अंत से जुड़ी भावनाओं का सही ढंग से मूल्यांकन कर सकेंगे।

8.3 लेखक का संक्षिप्त परिचय

प्रमुख जीवन घटनाएँ:

जन्म: 3 अप्रैल 1929, शिमला, हिमाचल प्रदेश।

शिक्षा: उन्होंने इतिहास विषय में दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई की।

यूरोपीय प्रवास: निर्मल वर्मा ने चेकोस्लोवाकिया में भारतीय सांस्कृतिक परिषद में काम किया। इस दौरान उन्होंने चेक भाषा से कई साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया। यूरोपीय साहित्य और दर्शन का उनके लेखन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

साहित्यिक योगदान

उनकी पहली कहानी "परिन्दे" (1959) हिंदी साहित्य में आधुनिक कहानी के रूप में मील का पत्थर मानी जाती है। यह कहानी उनके पहले कहानी संग्रह "परिन्दे" में शामिल है।

उन्होंने 5 उपन्यास, 9 कहानी संग्रह और कई निबंध लिखे। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं:

लाल टीन की छत (उपन्यास)

वे दिन (उपन्यास)

कौवे और काला पानी (कहानी संग्रह)

चीड़ों पर चाँदनी (कहानी संग्रह)

रचनात्मक विशेषताएँ:

उनके लेखन में *अस्तित्ववाद* और *आधुनिकतावाद* के तत्व प्रमुख हैं।

उन्होंने मानवीय भावनाओं, अकेलेपन, और संबंधों की जटिलताओं को गहराई से उकेरा।

उनके पात्र अक्सर आत्मसंघर्ष, जीवन की निरर्थकता, और समाज की विडंबनाओं से जूझते हैं।

पुरस्कार और सम्मान:

साहित्य अकादमी पुरस्कार (1981) - उपन्यास कभी न खत्म होने वाली सड़क के लिए।

ज्ञानपीठ पुरस्कार (1999) - उनके साहित्यिक योगदान के लिए।

कई अन्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

मृत्यु:

निर्मल वर्मा का निधन 25 अक्टूबर 2005 को दिल्ली में हुआ। निर्मल वर्मा हिंदी साहित्य में आधुनिकता और संवेदनशीलता के परिचायक हैं। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक रूप से बल्कि मानवीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी गहन मूल्य रखती हैं।

8.4 परिन्दे कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1)"उसी क्षण पियानो पर शोपां का नोक्टर्न ह्यूबर्ट की उंगलियों के नीचे से फिसलता हुआ धीरे-धीरे छत के अंधेरे में घुलने लगा-मानो जल पर कोमल

स्वप्निल उर्मियों भँवरों का झिलमिलाता जाल बुनती हुई दूर-दूर किनारों तक फैलती जा रही हों। लतिका को लगा कि जैसे कहीं बहुत दूर बर्फ की चोटियों से परिन्दों के झुण्ड नीचे अनजान देशों की ओर उड़े जा रहे हैं। इन दिनों अक्सर उसने अपने कमरे की खिड़की से उन्हें देखा है-धागे में बँधे चमकीले लड्डुओं की तरह वे एक लम्बी, टेढ़ी-मेढ़ी कतार में उड़े जाते हैं, पहाड़ों की सुनसान नीरवता से परे, उन विचित्र शहरों की ओर, जहाँ शायद वह कभी नहीं जाएगी।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश निर्मल वर्मा द्वारा विरचित 'परिन्दे' नामक कहानी से अवतरित किया गया है। प्रस्तुत गद्यांश में कहानीकार ने संगीत के स्वरों के प्रसार तथा गतिशीलता की तुलना परिन्दों की जीवन-गति से करते हुए प्रेमी की मृत्यु के कारण लतिका के जीवन की शून्यता एवं स्थिरता को अभिव्यंजित किया है।

व्याख्या- कहानीकार लिखता है कि डॉक्टर मुखर्जी, मि. ह्यूवर्ट तथा मिस लतिका डॉक्टर के कमरे के सामने छत पर कुर्सियों पर बैठे थे। मिस्टर ह्यूबर्ट पियानो (एक विशेष प्रकार का वाद्य यन्त्र) पर शोपां का नोक्टर्न (एक विशेष प्रकार की अंग्रेजी संगीत की धुन) बजा रहे थे, जिसके स्वर उनकी उंगलियों के नीचे से निकलकर धीरे-धीरे छत के अन्धकार में उसी तरह घुल रहे थे जैसे जल राशि पर कोमल स्वप्निल लहरें भँवरों का झिलमिलाता जाल बुनती हुई दूर-दूर किनारों तक फैल जाती हैं।

कहने का आशय यह है कि जिस तरह हम स्वप्न में देखते हैं कि किसी जलराशि पर कोमल-कोमल लहरें सघन होकर भँवरों का जाल बनाती हुई दूरस्थ किनारों तक फैल जाती हैं उसी तरह मि. ह्यूबर्ट के द्वारा पियानो पर बजाई जा रही अंग्रेजी धुन के स्वर भी सायंकालीन वातावरण में घुल रहे थे। संगीत के स्वरों में खोई हुई लतिका को ऐसी अनुभूति हुई कि परिन्दों (बर्फीले प्रदेश के पक्षी) के झुण्ड कहीं बहुत दूर बर्फीली पर्वतीय चोटियों से उड़कर नीचे अनजान-अपरिचित देशों की तरफ जा रहे हैं। शीत ऋतु के प्रारम्भिक दिनों में प्रायः उसने अपनी खिड़की से इस दृश्य को देखा है। उसे एक लम्बी टेढ़ी-मेढ़ी कतार में उड़ते हुए ये परिन्दे ऐसे लग रहे थे जैसे किसी धागे से बंधे हुए चमकीले लहू हैं, जो पहाड़ी सुनसान नीरव वातावरण से कहीं दूर विचित्र अपरिचित शहरों की तरफ उड़ते हुए जा रहे हैं, जहाँ वह (लतिका) शायद कभी नहीं पहुँच सकेगी। इस तरह लतिकी

संगीत के स्वरों की गतिशीलता में परिन्दों की जीवन-गति के प्रत्यक्ष दर्शन की अनुभूति करती है तथा अपने जीवन के सम्बन्ध में सोचने लगती है कि शायद वह वहाँ कभी न पहुँच सकेगी जहाँ ये परिन्दे जा रहे हैं। यहाँ कहानीकार यह अभिव्यंजित करता है कि गतिशील जीवन में ही जीवन जीने का सच्चा सुख निहित होता है। लतिका को यह सुख कभी प्राप्त न हो सका है। उसने कुमाऊं रेजीमेंट के कैप्टन गिरीश नेगी से प्यार किया था, पर कश्मीर की लड़ाई में उसकी मृत्यु हो जाने से लतिका का जीवन गतिहीन हो गया है। यही कारण है कि वह अब छुट्टियों में भी कही जाना पसन्द नहीं करती है तथा होस्टल में अकेले रहने की आदी बन चुकी है।

विशेष- (1) मानव के जीवन की गति की सुन्दर व्याख्या परिन्दों के जीवन से तथा संगीत के स्वरों के प्रसार से की गई है।

(2) भाषा-शैली सरल, सरस तथा सहज होकर भी गूढ़ भावों की अभिव्यंजक है।

(2) मैं कभी-कभी सोचता हूं, इंसान जिन्दा किसलिए रहता है-क्या उसे कोई और बेहतर काम करने को नहीं मिला? हजारों मील अपने मुल्क से दूर मैं यहां पड़ा हूं-यहां कौन मुझे जानता है यहीं शायद मर भी जाऊंगा। ह्यूबर्ट, क्या तुमने कभी महसूस किया है कि एक अजनबी की हैसियत से परायी जमीन पर मर जाना काफी खौफनाक बात है।"

संदर्भ एवं प्रसंग- प्रस्तुत अवतरण 'कहानी-संकलन' में संपादित कथाकार की निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिन्दे' से है। इसमें लेखक ने इंसानी जिदगी को मार्मिक रूप में स्पष्ट करते हुए डॉ. मुकर्जी के माध्यम से व्यक्त किया है।

व्याख्या- डॉ. मुकर्जी मिस्टर ह्यूबर्ट से इंसानी जिंदगी के विषय में इस प्रकार कह रहे है-'जब कभी में इंसानी जिंदगी के विषय में सोचता हूं और समझने की कोशिश करता हूं, तो यह समझ में नहीं आता है कि इंसान किसलिए जीवित रहता है। क्या शायद वह इसलिए जीवित रहता है कि अब तक उसने कोई अच्छा और नेक काम नहीं किया है, अब आने वाले समय में कुछ-न-कुछ अव्वल काम अवश्य करेगा, जिससे उसका नाम अवश्य ऊंचा होगा। जहां तक मैं स्वयं के बारे में सोचता हूं, तो यह अवश्य पाता हूं कि मैं अपनी जन्मभूमि से हजारों मील की दूरी पर यहां रह रहा हूं। अपनी जन्मभूमि अर्थात् अपने वतन से दूर होने के

कारण इस विदेशी भूमि पर अनजाना और अपरिचित बना हुआ हूं। क्या पता मैं अपनी जन्मभूमि पर न पहुंच सकूं और यहीं पर अपनी अंतिम सांस ले लूं।
डॉ. मुकर्जी ने मिस्टर ह्यूबर्ट से यह जानना चाहा कि क्या किसी अजनबी विदेशी को अपनी जन्मभूमि की अपेक्षा विदेशी भूमि पर अपनी अंतिम सांस लेना उचित और अच्छी बात है या खौफनाक और दुखद बात है।

(3) "ह्यूबर्ट का चेहरा जब उसे देखकर सहमा-सा दयनीय हो जाता है, तब लगता है कि वह अपनी मूक निरीह याचना में उसे कोस रहा है-न वह उसकी गलतफहमी को दूर करने का प्रयत्न कर पाती है, न उसे अपनी विवशता की सफाई देने का साहस होता है। उसे लगता है कि इस जाले से बाहर निकलने के लिए वह धागे के जिस सिरे को पकड़ती है वह खुद एक गाँठ बन कर रह जाता है।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण 'कहानी-संकलन' में संपादित कथाकार की निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिन्दे' से है। प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार ने होस्टल वार्डन मिस लतिका के माध्यम से संगीत शिक्षक मिस्टर ह्यूबर्ट की प्रेम-याचना की निष्फलता को प्रतिपादित करते हुए दोनों की मनोदश का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

व्याख्या- कहानीकार मि. ह्यूबर्ट तथा मिस लतिका के प्रेम-प्रसंग का वर्णन करता हुआ कहता है कि मि. ह्यूबर्ट ने मिस लतिका को प्रेम-पत्र लिखकर भावुक हृदय से प्रेम-याचना की थी पर लतिका इस पत्र का उत्तर न दे सकी थी, क्योंकि वह तो कुमाऊं रेजीमेन्ट के कैप्टन गिरीश नेगी को अपना हृदय समर्पित कर चुकी थी, कश्मीर की लड़ाई में नेगी की मृत्यु हो जाने के कारण उसका जीवन वीरान हो गया था इसलिए वह एक सच्ची प्रेमिका होने के कारण मि. हयूबर्ट की प्रेम अभ्यर्थना को न तो स्वीकार कर पाई तथा न ही ह्यूबर्ट की गलतफहमी को दूर कर सकी। यही कारण था कि जब ह्यूबर्ट को डॉक्टर मुखर्जी के द्वारा लतिका तथा कैप्टन नेगी के प्रेम-प्रसंग का पता चला तो उसे अपनी प्रेम याचना अर्थहीन एवं उपहासास्पद प्रतीत होने लगे।

कहानीकार ह्यूबर्ट की मनोदशा का चित्रण करता हुआ लिखता है कि ह्यूबर्ट लतिका को देखकर सहम जाता है तथा उसके चेहरे से दयनीय-भाव व्यक्त होने लगते हैं, उस समय ऐसा लगता है कि वह अपनी मूक निरीह याचना से उसे कोस रहा है। उधर लतिका भी ह्यूबर्ट की गलतफहमी को दूर करने का न तो

प्रयत्न कर पाती है, न ही वह अपनी बेबसी का कारण बताने का साहस जुटा पाती है। उसे ऐसा लगता है कि मानो उसे कोई शक्ति रोक रही है क्योंकि उसे अपने सुख का भ्रम ह्यूबर्ट की गलतफहमी से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। अर्थात् ह्यूबर्ट के प्रेम में उसे अपने प्रेमी नेगी के प्रेमी की अनुभूति होती है जो वियोग की तपन को कम कर ठंडक पहुँचाती है।

लतिका उक्त अपनी मनोदशा के कारण ह्यूबर्ट को किसी तरह का उत्तर नहीं दे पाती है। वह इस प्रेम-जाल से बाहर निकलने हेतु धागे के जिस सिरे को पकड़ती है वह सिरा स्वयं गाँठ बन जाता है। आशय यह है कि लतिका प्रेम-पत्र के उत्तर में ह्यूबर्ट की गलतफहमी को दूर करने हेतु एवं अपनी बेबसी का कारण बताने हेतु जो-जो उपाय सोचती है, वे उपाय ही समस्या बन जाते हैं। अतः वह चाहकर भी ह्यूबर्ट की गलतफहमी को दूर नहीं कर पाती हैं।

विशेष- (1) भाषा शैली सरल तथा सहज है।

(2) जीवन के गूढ़ रहस्यों की भावाभिव्यक्ति है।

(4) "पक्षियों का एक बेड़ा धूमिल आकाश में त्रिकोण बनाता हुआ पहाड़ों के पीछे से उनकी ओर आ रहा था। लतिका और डॉक्टर सिर उठाकर इन पक्षियों को देखते रहे। लतिका को याद आया हर साल सर्दी की छुट्टियों से पहले ये परिन्दे मैदानों की ओर उड़ते हैं कुछ दिनों के लिए बीच के इस पहाड़ी स्टेशन पर बसेरा करते हैं, प्रतीक्षा करते हैं बर्फ के दिनों की, जब वे नीचे अजनबी, अनजाने देशों में उड़ जाएंगे।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण 'कहानी-संकलन' में संपादित कथाकार की निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिन्दे' से है। प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार ने पक्षियों की अजनबी, अनजाने देशों की उड़ान का वर्णन करते हुए डॉक्टर मुखर्जी तथा मिस लतिका के जीवन के अजनबीपन को रेखांकित करने का सफल प्रयल किया है।

व्याख्या- कहानीकार के अनुसार डॉक्टर मुखर्जी तथा मिस लतिका पिकनिक से वापस आ रहे थे। शाम का समय था, अन्धेरा फैलने लगा था। उन्होंने रास्ते में चलते हुए आकाश की तरफ देखा तो उन्हें धूमिल आकाश में पहाड़ों के पीछे से पक्षियों का एक झुण्ड त्रिकोण की आकृति में उड़ता हुआ अपनी तरफ आता हुआ दिखाई दिया। लतिका तथा डॉक्टर सिर उठाकर इन पक्षियों की तरफ काफी समय तक ऐसे देखते रहे जैसे उन्हें इन पक्षियों की त्रिकोण आकृति में अपना जीवन-

रूप प्रतिबिम्बित होता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा था क्योंकि लतिका प्रेमी गिरीश नेगी की मृत्यु के बाद भी उसे भुला नहीं पा रही थी तथा मि.ह्यूबर्ट के प्रेम-पत्र को अस्वीकार भी नहीं कर पा रही थी। इसी तरह डॉक्टर मुखर्जी पत्नी की मत्यु के बाद भी पत्नी के प्रेम को संजोए हुए दूसरी शादी करने के इच्छुक से दिखाई देते हैं। इस तरह लतिका एवं डॉक्टर मुखजों को पक्षियों की त्रिकोण आकृति में अपने-अपने जीवन की त्रिकोणात्मक स्थिति का आभास होता है।

आगे कहानीकार लिखता है कि लतिका को याद आया कि ये परिन्दे (पक्षी) हर साल सा की छुट्टियों से पहले मैदानों ही जमी बर्फ के दिनों को बतायो माजों को रक्षा करते हैं। की के लिए इस पहाड़ी शहर में भी बर्फ के दिनों की प्रतीक्षा करते हुए बसेरा करते हैं तो कुछ दिनों स्टेशन के प्राकृतिक सौन्दर्य का लुफ्त उठाते हैं। इसके बाद वे नीचे की तरफ अजनबी तथा इम देशों की ओर उड़ जाते हैं।

लतिका परिन्दों की उक्त जीवन-शैली में अपने तथा अपने साथियों के जीवन-रूप को प्रतिबिम्बित होता हुआ अनुभव करती है। उसे लगता है कि हम सबका जीवन भी इन परिन्दों को घरह ही है। सदियों में हिमपात के भय से कॉलेज में छुट्टियाँ लग जाती है। सभी अपने-अपने को बरस चले जाते हैं। उनका यहाँ निवास इन पक्षियों के क्षणिक बसेरे की तरह ही है। पर लतिका एवं डॉक्टर मुखर्जी कहीं आश्रय न होने से इस पहाड़ी कस्बे कुमाऊं में ही अजनबी की तरह अपन जीवन व्यतीत करते हैं। उसे लगता है कि वह डॉक्टर मुखर्जी तथा मि ह्यूबर्ट भी इन परिन्दों की तरह इस पहाड़ी कस्बे में कुछ दिनों हेतु बसेरा करते हुए अजनबी अनजाने देश (मृत्यु) की तर जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। समय आते ही उन्हें यहाँ से जाना होगा। वे तीनों प्रेम-विरह को पीडा से पीड़ित होकर अजनबियों-जैसा जीवन जीने हेतु विवश है। इस तरह लतिका परिन्दों की जीवन-शैली में अपने जीवन-सादृश्य की अनुभूति कर विचार-मग्न हो जाती है।

(5) 'डॉक्टर-सब कुछ होने के बावजूद वह क्या चीज है जो हमें चलाए चलती है हम रुकते हैं तो भी अपने रेले में वह हमें घसीट ले जाती है।" लतिका को लगा कि वह जो कहना चाह रही है कह नहीं पा रही, जैसे अंधेरे में कुछ खो गया है, जो मिल नहीं पा रहा, शायद कभी नहीं मिल पाएगा।

सन्दर्भ- प्रस्तुत अवतरण 'कहानी-संकलन' में संपादित कथाकार की निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिन्दे' से है। प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार ने लतिका के

माध्यम से मानव-जीवन को सांसारिकता को निरुपित करते हुए लतिका के निजी जीवन की अन्तव्यर्धा को अभिव्यंजित किया है।

व्याख्या- लतिका पिकनिक से वापस आती हुई डॉक्टर मुखर्जी से रास्ते में कहती है कि डॉक्टर मुखर्जी यह बताओ कि ऐसी कौनसी शक्ति है, जो जीवन में बड़ी से बड़ी दुर्घटनाओं के होने के बाद भी मनुष्य को सांसारिक-मार्ग पर अग्रसर करती रहती है। यहाँ वह यह अभिव्यंजित करती है कि पत्नी की मृत्यु के बाद भी आप सांसारिक कार्यों को यथावत् करते हुए जी रहे हैं तथा मैं भी कैप्टन नेगी का प्यार पाकर उनकी मृत्यु के कारण उनके प्यार से हमेशा वंचित हो गई हूँ। इसके बाद भी उनके वियोग की पीड़ा को सहन करती हुई येन-केन प्रकारेण जीवन का बोझ ढो रही हूँ।

आगे वह कहती है कि यह सांसारिकता बड़ी प्रबल है। अगर जीवन की दुखद घटनाओं से प्रभावित होकर हम रुकते भी है अर्थात् सांसारिकता को त्याग कर वैराग्य-भाव को धारण करना चाहते हैं तो भी सांसारिक माया-मोह तथा सांसारिक आकर्षण हमें अपने रेले में अर्थात् अपनी भीड़-भाड़ की चकाचौंध में घसीट ले जाते हैं। इस तरह हमें जीवन की दुःखद घटनाओं को भी समय-चक्र के साथ भूलकर सांसारिकता के रंग में रंग जाते हैं।

लतिका को लगा कि वह जो कहना चाह रही है, वह कह नहीं पा रही है, उसका अंधेरे में कुछ खो गया है, जो मिल नहीं पा रहा है तथा शायद कभी नहीं मिल पाएगा। आशय यह है कि लतिका की अन्तर्वेदना इतनी सघन हो गयी थी, जिसे वह शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं कर पा रही थी। उसे ऐसा लग रहा था कि इस सांसारिकता-रूपी अंधेरे में उसकी सच्ची प्रेमानुभूति खो गई है, जिसका अनुभव करने के लिए वह बार-बार प्रयत्न कर रही है पर वह उसे पाने में सफल गई है, जिसका अनुभव करने के लिए वह बार-बार प्रयत्न कर रही है पर वह उसे पाने में सफल नही हो रही है तथा शायद उसे सफलता न मिल सकेगी क्योंकि समय-चक्र के गर्त में सांसारिकता की धूल से उसका प्यार दब गया है तथा उसकी वेदना के घाव खुद-ब-खुद भरते जा रहे हैं।

साहित्यिक वैशिष्ट्य- (1) भाषा-शैली सरल, सरस एवं भावाभिव्यंजक है । (2) मानव के सांसारिक जीवन के रहस्य को अभिव्यक्त किया गया है।

8.5 परिन्दे कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

लतिका का चरित्र-चित्रण:-

प्रसिद्ध कथाकार निर्मल वर्मा का 'परिंदे' एक चरित्र प्रधान है। इसमें मुख्य रूप से 'लतिका' नामक महिला शिक्षक एवं वार्डन का चरित्र चित्रण है। 'मिस लतिका' यह इस कहानी में न तो एकमात्र अनमोल किरदार है, बल्कि अभिनेता भी है। कहानी की संपूर्ण कहानी मानो उसी किरदार को साकार करने के लिए बताई गई है। इसकी शुरुआत लतिका की एंट्री से होती है और उनके किरदार की पहचान एक विशेष प्रिय वॉर्डन के रूप में होती है। उनका यह मानना है कि हॉस्टल के पास कठोर निर्देश के बिना संभव नहीं है। उनके निर्देश का प्रभाव इतना जाम हो गया है कि हॉस्टल में शोर-शराबा करनेवाली रेलवे स्टेशन पर उनकी आमद ही हो जाती है। जूली द्वारा निर्मित ऑर्केस्ट्रा को हॉस्टल में देर रात आने पर और नाईट रजिस्टर में दस्तखत न करने पर वॉर्डन लतिका की डाँट सुनी गई है। जब जूली का लिफाफा वार्डन लतिका के हाथ लगता है, तब तो कयामत आ जाती है। जूली अपने प्रेम संबंध को दोस्ती निभाने की कोशिश करती है, लेकिन लतिका की कानूनी पूछताछ में फंस जाती है। इतनी कम उम्र में ऐसे काम करने के लिए लतिका को बहुत परेशानी होती है। जाहिर तौर पर लतिका के किरदार में एक कठोर और कुशल काम करना शामिल है।

लतिका के किरदार का सबसे बड़ा विरोध है- अकेलापन। वह एक अंतर्मुखी स्वभाव की स्त्री है और आधुनिकता से बोध प्राप्त है। पूरी कहानी में उनका किरदार अकेलेपन की समस्या से जुड़ा हुआ नजर आता है। जब समुद्र तट पर हॉस्टल की सभी लड़कियाँ भागती हुई घर चली जाती हैं, तब लातिका कहीं भी नहीं जाती है, इस सुनसान हॉस्टल में निरुत्साहित शिखर अकेलेपन झेलती है। खैर उसका कहना है कि उसे यहां समुद्र तट पर स्नो फॉल देखना अच्छा लगता है, लेकिन उसके अंदर अकेले की पीड़ा साफ चेहरे पर छिपी हुई है। वह अपने साथी परमाणु ऊर्जा संयंत्र के बीच भी सदैव निराश, उदास और अभावग्रस्त रहता है। उनके मित्र डॉक्टर मुखर्जी और मिस्टर ह्यूबर्ट अकेले अपनेपन को कम करने की हरसंभव कोशिश करते हैं, बुरा लताका अकेलेपन की पीड़ा से मुक्त नहीं हो सकते। डॉक्टर मुकर्जी को पता है कि लतिका कुमाऊं रेजिमेंट के कैप्टन बेयर

नेगी से प्रेम करती थी और ब्रायन की अचानक मैदान पर दुर्घटना में मृत्यु हो गई। परिणाम स्वरुप लतिका अकेलेपन की समस्या का शिकार हो गया। उन्होंने लतिका को अतीत को भूलकर अपने वर्तमान को संवारने की कई बार सलाह दी, लेकिन लतिका अपने अतीत में अटकी रह गईं। मिस्टर ह्यूबर्ट ने भी उन्हें प्रेमपत्र में लिखा था, दरवाजा लताका अपने पहले प्रेम अनुभव से बाहर नहीं। इसतार लतिका का चरित्र आधुनिकताबोध से प्रभावित है।

लतिका के किरदार का 'संवेदनशील' का भी विशेष उल्लेख है। उनके दिल में प्रेम, सहानुभूति और परंपरा का संगम है। वह बबरा से बेहद प्यार करती है। उसके जाने के बाद भी उसी की यादों में डूबा रहता है और उसी के प्रेम में ही अपना संपूर्ण जीवन समर्पित होता है। उनके प्रेम के लिए ह्यूबर्ट के प्रेम निवेदन को ठीक किया जाता है, चैराहा उनके प्रेम की भावना के अनुसार एक बार ही होता है, बार-बार नहीं। इसलिए जब भी उसके साथ जूली के पहले प्रेम का अनुभव आता है, तब उसके मन में जूली के प्रति सहानुभूति हो जाती है और उसकी लाइफा वापस आ जाती है। लतिका का मन संवेदनशीलता से भी भरा हुआ है। जब उसे ह्यूबर्ट के बीमार होने की खबर हॉस्टल के नौकर से मिली, तब उसने चिन्तन किया। इस तरह लतिका के चरित्र के सभी आकर्षक व्यक्तित्व प्रभावित होते हैं।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 निर्मल वर्मा की कहानी कला की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

8.6 परिन्दे कहानी की समीक्षा

कहानीकार निर्मल वर्मा द्वारा विरचित 'परिन्दे' कहानी नई कहानी-कला की प्रतिनिधि रचना है। नई कहानी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मार्कण्डेय जी ने लिखा है कि "नई कहानी में हमारा मतलब, उन कहानियों से है, जो सच्चे अर्थों में कलात्मक है जो जीवन हेतु उपयोगी तथा महत्वपूर्ण होने के साथ ही उसके

किसी न किसी नये पहलू पर आधारित है या जीवन के नये सत्वों को एकदम नयी दृष्टि से दिखाने में समर्थ है।"

अनुभव की प्रामाणिकता मध्यमवर्गीय मूल्यबोध, समकालीन जीवन की पहचान, स्थापित नैतिक मूल्यों की चुनौती, आधुनिकता-बोध, सांकेतिकता, सर्जनात्मक भाषा तथा सबल अभिव्यंजना शैली आदि नई कहानी की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं, जिनके आधार पर 'परिन्दे' की समीक्षात्मक विवेचना दृष्टव्य है-

(1) अनुभव की प्रामाणिकता- कहानीकार ने लतिका, डॉक्टर मुखर्जी, मि. ह्यूवर्ट, मिस वुड तथा फादर एल्मण्ड आदि पात्रों के माध्यम से मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित अनुभवों को प्रामाणिकता के साथ कहानी में व्यक्त किया है। इस दृष्टि से डॉक्टर मुखर्जी का निम्नलिखित कथन दृष्टव्य है-

"कभी-कभी मैं सोचता हूँ मिस लतिका, किसी चीज को न जानना यदि गलत है, तो जान-बूझकर न भूल पाना, हमेशा जोंक की तरह उससे चिपटे रहना-यह भी गलत है।"

उक्त कथन के माध्यम से डॉक्टर अपने जीवन के अनुभव को व्यक्त कर प्रेमी कैप्टन नेगी की विरह-वेदना से मुक्त होने हेतु मिस लतिका को प्रेरणा देता है।

(2) मध्यमवर्गीय मूल्यबोध- कहानीकार ने अपनी कहानी का कथानक समाज के मध्यम-वर्ग से चुना है। कहानी के प्रमुख पात्र मिस लतिका, डॉक्टर मुखर्जी, मि. ह्यूबर्ट तथा करीमुद्दीन हैं। ये सभी पात्र अपने मध्यमवर्गीय जीवन की समस्याओं से ग्रस्त हैं। मिस लतिका क्रिश्चियन स्कूल होस्टल की होस्टल वार्डन है। यह स्कूल लड़कियों का है, इसलिए होस्टल में लड़कियाँ रहकर अपनी पढ़ाई करती है। सर्दी की ऋतु शुरू होते ही हिमपात होने से स्कूल में छुट्टियों लग जाती हैं तथा सब अपने-अपने घर को चले जाते हैं, पर मिस लतिका, डॉक्टर मुखर्जी तथा करीमुद्दीन सर्दियो में भी होस्टल में ही रहते हैं।

लतिका कुमाऊं रेजीमेन्ट के कैप्टन नेगी से प्यार करती थी, पर नेगी की कश्मीर लड़ाई मे

मृत्यु हो जाने से उसका जीवन नीरस होकर वीराना हो गया है। उसने प्रेम वेदना को भोगा है, अतः वह नहीं चाहती है कि उसके होस्टल में रहने वाली जूली किसी मिलिटरी अफसर के प्रेम-पाश में बँधे अतः वह उसे समझाती हुई कहती है कि "जूली, तुम अभी बहुत छोटी-"

इसके बाद लतिका जूली को वापस जाती हुई काफी देर तक देखती रही तथा सोचने लगी कि- "क्या मैं किसी खूँसट बुढ़िया से कम हूँ? अपने अभाव का बदला क्या में दूसरों से ले रही हूँ।"

उक्त लतिका के कथनों से स्पष्ट है कि लतिका को प्रेम के आनन्द एवं उस आनन्द से पैदा होने वाले दर्द का भली प्रकार बोध है। यही कारण है कि नेगी की विरह-पोड़ा से पीड़ित लतिका ह्यबर्ट के भावुक-याचना से भरे हुए प्रेम-पत्र को न तो अस्वीकार कर पाती है तथा न ही ह्युबर्ट को गलतफहमी को दूर करने का प्रयल कर पाती है क्योंकि उसे ऐसा लगता है कि जैसे कोई शक्तिउसे रोके हुए है तथा उसके कारण उसे अपने आप पर विश्वास बन्द्र हुआ है। फलतः उसे अपने सुख का भ्रम ह्यूबर्ट की गलतफहमी से जुड़ा हुआ-सा प्रतीत होता है।

इस तरह लतिका की उक्त मनोदशा से स्पष्ट है कि लतिका एक सच्ची प्रेमिका होकर प्रेम के मूल्य को भली तरह समझती है, अतः वह प्रेम-मार्ग के पथिक मि. ह्यूवर्ट अथवा जूली को प्रेमानुभूति से वंचित नहीं करना चाहती है।

डॉ. मुखर्जी के कथनों से भी मध्यमवर्गीय मानव जीवन के मूल्यों की अनुभूतियाँ अथवा अभिव्यक्त हुई हैं। वे प्रेम के महत्व को तो स्वीकार करते हैं पर मृत-प्रेमी की यादों को जॉक की तरह चिपटाये रखना गलत समझते हैं। इस सम्बन्ध में उनका यह कथन दृष्टव्य है-

"लतिका वह तो बच्ची है, पागल। मरने वाले के संग खुद थोड़े ही मरा जाता है।"

डॉक्टर मुखर्जी नियति पर विश्वास करते हैं। वे यह मानते हैं कि मनुष्य जहाँ रहता है, उसे ईश्वर-कृपा से वहीं रोजी-रोटी मिल जाती है। अतः वह म्यांमार देश से आकर इस पहाड़ी कम्बे कुमाऊं में रहते हुए अन्यन्न जाने की इच्छा नहीं करते हैं। उन्होंने लड़ाई के दिनों में अपने शहर रंगून को जलते हुए देखा था तथा म्यांमार से आते हुए मार्ग में पत्नी की मृत्यु की पीड़ा को भोगा या अतः उन्हें मध्यम-वर्ग के जीवन के मूल्यों का भली प्रकार बोध है।

करीमुद्दीन होस्टल का नौकर था। उसने अंग्रेजों का जमाना भी देखा था तथा आज के जमाने को भोग रहा था। वह लतिका से अंग्रेजों की प्रशासन-क्षमता की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि "बड़े जबर थे ये अंग्रेज, दो घण्टों में ही सारी सड़कें साफ करवा दी। उन दिनों एक सीटी बजाते ही पचास घोड़े वाले जमा हो

जाते थे तो अब सारे शेड खाली पड़े हैं। वे लोग अपनी खिदमत भी करवाना जानते थे, अब तो सब उजाड़ हो गया है।"

उक्त कथन वर्तमान समाज की प्रशासनिक व्यवस्था की दुर्दशा को व्यक्त करता है तथा उसके प्रति मध्यमवर्गीय समाज में व्याप्त दर्द को अभिव्यंजित करता है।

(3) आधुनिकता-बोध कहानीकार ने अपनी 'परिन्दे' कहानी के कथानक को आधुनिकता की चादर में लपेटकर पेश किया है, इसमें जीवन के प्रति नये सोच, नई दृष्टि तथा समकालीन जीवन की पहचान करने की प्रेरणा दी गई है। इस सम्बन्ध में समालोचक असद जैदी की यह मान्यता ठीक ही प्रतीत होती है कि

"परिन्दे में दरअसल पश्चिम तथा पश्चिमी ईसाईयत के साथ एक गहरी संलग्नता है। यूरोपीय सभ्यता, उसके प्रसाधनों से प्यार, उसकी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के साथ गहरा अनुराग एवं ईसाई धर्म के कर्मकाण्ड से अपनत्व इस कहानी के रेशे में बसा है।"

कहानी के सभी पात्र आधुनिक विचारधारा वाले हैं। इनमें डॉक्टर मुखर्जी का हर कथन आधुनिकता का बोध कराता है। हर साल स्कूल बन्द होने के दिन दो प्रोग्राम होते हैं-एक तो चैपल में स्पेशल सर्विस तथा उसके बाद दिन में पिकनिक। डॉक्टर मुखर्जी को यह रुढ़िवादी परम्परा सुहाती नहीं है। अतः वे पादरी फादर एल्मण्ड के सर्मन (प्रार्थना) के प्रति अपनी अरुचि प्रकट करते हुए कहते हैं कि

"पिछले पांच साल से मैं सुनता आ रहा हूँ। फादर एल्मण्ड के सर्मन में कहीं हेर-फेर नहीं होता।" इसी प्रकार ह्यूबर्ट भी कहता है कि

"पता नहीं मिस वुड को स्पेशल सर्विस का गोरख धन्धा क्यो पसन्द आता है।"

डॉक्टर मुखर्जी के जीवन जीने का एक नया अन्दाज है, नयी सोच तथा नयी दृष्टि है। उनके विचार में बीती हुई दर्दनाक घटनाओ तथा जान-बूझकर भूल जाने में ही मनुष्य का कल्याणनिहित है। अतः पत्नी की मृत्यु के बाद भी जिन्दगी उन्हें दिलचस्प लगती है। वह अपने अन्तस् में पत्नी-प्रेम की छिपाये हुए उत्साहपूर्वक जीवन-पथ पर अग्रसर रहते हैं, तथा दूसरों को अग्रसर रहने की प्रेरणा देते हैं।

इसी तरह लतिका का प्रणय-व्यापार भी आधुनिकता से प्रेरित है। वह प्रेमी नेगी की विरह-बेदना को अपने अन्तस् में समेटे होने के बाद भी ह्यूबर्ट की प्रणय-याचना को अस्वीकार नहीं करती है। इतना ही नहीं वह कम उम्र वाली जूली

(स्कूली छात्रा) को भी प्रेम मार्ग पर अग्रसर होने से रोकने में अपने आपको असमर्थ पाती है।

स्कूल की प्रिंसिपल मिस वुड सर्दी की छुट्टियों में मिस लतिका तथा डॉक्टर मुखर्जी का होस्टल में अकेले एक साथ रहना गलत नहीं मानती है। फादर एल्मण्ड इस सम्बन्ध में अपनी आपत्ति प्रकट करते हैं तब वे कह उठती है कि- "फादर, आप कैसी बात कर रहे हैं? मिस लतिका बच्चा थोड़े ही है।"

कहानीकार स्पष्ट करता हुआ लिखता है कि-

"मिस वुड को ऐसी आशा नहीं थी कि फादर एल्मण्ड अपने दिल में ऐसी दकियानूसी भावना को स्थान देंगे।"

इस तरह हम देखते हैं कि कहानीकार ने पेश कहानी के माध्यम से आधुनिक युग में बदलती परिस्थितियों तथा विचारों के अनुकूल जीवन-यापन करने की प्रेरणा दी है।

प्रस्तुत कहानी में नयी कहानी की समस्त विशेषताएं मौजूद है। कहानी की कथावस्तु हमें समकालीन जीवन को पहचानने एवं समाज में स्थापित नैतिक मूल्यों को परखने हेतु प्रेरित करती है। कहानी मध्यमवर्गीय जीवन के मूल्यों का बोध कराकर आधुनिक सोच तथा दृष्टि से जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करती है। कहानी की भाषा-शैली सर्जनात्मक तथा अभिव्यंजक है। इन्हीं विशेषताओं के कारण इस कहानी को नयी कहानी के क्षेत्र में प्रतिनिधि रचना माना जाता है।

8.7 सार- संक्षेप:-

कहानी-कला की दृष्टि से कथाकार श्री निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिंदे' की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

1. कथानक या कथावस्तु- यों तो श्री निर्मल वर्मा की अनेक ऐसी कहानियां हैं, जो आधुनिक और नई कहानी के दायरे में आती हैं। उनकी कहानी 'परिंदे' के विषय में आलोचकों की एक नयी धारणा और अलग दृष्टिकोण है। वह यह है कि यह नई कहानी की एक विशिष्ट कृति है। जहां तक इस कहानी के कथानक या कथावस्तु का प्रश्न है, वह यह है कि इस संपूर्ण कहानी का कथानक अत्यंत आधुनिक है। योरोपीय सभ्यता को दर्शाने वाले विविध प्रकार के प्रसाधनों के प्रति गहरा लगाव और उसकी सांस्कृतिक रूप-रेखा और उसकी अभिव्यक्ति के प्रति

अटूट लगावगयी अनुशक्ति के साथ-साथ ईसाई धर्म के कर्मकांड से अपनापन आदि इस कहानी के कथा-तंतु हैं। इसके प्रतीकात्मक पात्रों की भूमिका को अपेक्षित रूप में कथाकार ने प्रस्तुत किया है। चूंकि कथानक या कथावस्तु कई घटनाओं और प्रसंगों से जुड़ा हुआ है, जिससे इसका स्वरूप विस्तृत और लंबा हो गया। फिर भी कथानक या कथावस्तु में किसी प्रकार से विश्रृंखलता नहीं आ पाई है।

2. पात्र और चरित्र-चित्रण- श्री निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिंदे' के पात्र और उनके चरित्र-चित्रण बहुत ही रोचक और आकर्षक हैं। वे सुगठित हैं। उनका अंकन और चित्रण बड़े सुनियोजित और सुसंबंध ढंग से कथाकार कर के अपने कथा-वैशिष्ट्य को स्पष्ट कर दिया है।प्रस्तुत कहानी 'परिंदे' में पात्रों की संख्या कथानक या कथावस्तु के अनुसार सापेक्षित है। लतिका इस कहानी की नायिका है, क्योंकि उसका चरित्रांकन में कथाकार ने आरंभ से अंत तक किसी प्रकार से कोई अवरोध नहीं आने दिया है। उसके चरित्रगत यह भी वैशिष्ट्य है कि वह कहानी के शेष पात्रों के चरित्रोद्घाटन करने में सर्वथा सहायक सिद्ध हुआ है।

3. देशकाल या वातावरण- आधुनिक या नई कहानियों में कुछ ऐसी कहानियां हैं, जिनमें देशकाल या वातावरण का स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है। फिर भी उनकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आयी है। इस संदर्भ में कथाकार श्री निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिंदे'का नाम लिया जा सकता है। इस कहानी के देशकाल या वातावरण के विषय में विभिन्न आलोचकों और समीक्षकों ने अपनी-अपनी राय अलग दी है।

प्रख्यात समीक्षक असद जैदी का यह मानना है कि "परिंदे" में दरअसल पश्चिम और पश्चिमी ईसाइयत के साथ एक गहरी संलग्नता है। योरोपीय सभ्यता, उसके प्रसाधनों से प्यार, उसकी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के साथ गहरा अनुराग और ईसाई धर्म के कर्मकांड से अपनत्व इस कहानी के रेशे-रेशे में बसा है।" इस दृष्टि से 'परिंदे' कहानी में प्रस्तुत देशकाल या वातावरण अधिक उपयुक्त और अपेक्षित रूप में है।

4. कथोपकथन या संवाद -कथाकार श्री निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिंदे' कथोपकथन या संवाद की दृष्टि से एक सफल कहानी है। इसमें प्रस्तुत हुए कथोपकथन या संवाद संक्षिप्त और सुगठित होने के साथ-साथ अधिक आकर्षक

और सार्थक है। इनसे कथा को एक अपेक्षित रोचकता भरी गतिशीलता प्राप्त होती है।

5. भाषा-शैली- कथाकार श्री निर्मल वर्मा लिखित कहानी 'परिंदे' की भाषा-शैली के विषय में विभिन्न समीक्षकों ने अपना-अपना विभिन्न मत दिया है। सर्वश्रेष्ठ आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने 'परिदे' कहानी की भाषा के विषय में इस प्रकार अपना विचार व्यक्त किया है-"निर्मल वर्मा की कहानी कला में नवीनता है, भाषा में नव जातक की सी सहजता और ताजगी है, वस्तुओं के चित्रों में पहले-पहल देखे जाने का अपरिचित टटकापन है। उनका गद्य "शुद्ध गद्य" है. ठेठ वाचक शब्द, विशेषणहीन संज्ञाएं, उपमा रहित पद तथा स्वतंत्र वाक्य ।"

उपर्युक्त मत पर जब हम विचार करते हैं, तो हम यह कह सकते हैं कि श्री निर्मल वर्मा की

कहानी 'परिंदे' की भाषा में विविधतापूर्ण रोचकता और स्वतंत्रता है। उसमें प्रस्तुत हुई शब्द-योजना वाक्यार्थ हेतु सटीक और सार्थक रूप में है। वाक्य के छोटे-बड़े होने पर भी भावाभिव्यक्ति सजीव और प्रवाहमयी है। जहां शैली-विधान का प्रश्न है, वह वर्णनात्मक और भावात्मक दोनों ही है।

6. उद्देश्य- श्री निर्मल वर्मा की कहानियों का उद्देश्य कलात्मक निर्माण होता है। एक ऐसा कलात्मक निर्माण जो जीवन के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण तो है ही, इसके साथ ही वह जीवन के नए सत्य को खोलने वाला है। निर्मल वर्मा की प्रस्तुत 'परिंदे' उपर्युक्त मंतव्य का पर्याय है। इसमें कथाकार की अनुभव की विशालता, गंभीरता और प्रामाणिकता नामक त्रिवेणी का सुरुचिपूर्ण प्रवाह दिखाई देता है। इसके साथ ही इसमें मध्यवर्गीय मूल्य-बोध, समकालीन जीवन की पहचान, स्थापित नैतिक मूल्यों की चुनौती, आधुनिकता का बोध, सांकेतिकता, सर्जनात्मक भाषा एवं सबल अभिव्यंजना शैली आदि पर विशेष बल दिया गया है। इस प्रकार 'परिंदे' कहानी के विषय में सारांशतः विचार करने पर यह तथ्य सामने आता है कि यह कहानी नई कहानी कला-शिल्प की दृष्टि से एक सोद्देश्यपूर्ण सार्थक और सफल कहानी है। इसलिए हम इसे निसंकोचपूर्वक नई कहानी अथवा आधुनिक कहानी की एक प्रतिनिधि रचना मानते हैं।

8.8 मुख्य शब्द

- **परिन्दा:** यहाँ परिन्दा का प्रतीकात्मक अर्थ है स्वतंत्रता, जो मनुष्य की मानसिक स्थिति और सामाजिक संबंधों में अभिव्यक्त होती है।
- **अकेलापन:** यह शब्द पात्र के मानसिक और भावनात्मक अकेलेपन को दर्शाता है, जो उसकी सामाजिक स्थिति और व्यक्तिगत संघर्षों से जुड़ा हुआ है।
- **मनोविज्ञान:** कहानी में पात्रों के मानसिक विचारों और भावनाओं को व्यक्त किया गया है, जो उनके निर्णयों और कार्यों को प्रभावित करते हैं।
- **समाज:** समाज का यहाँ पर यह अर्थ है कि पात्र समाज से अपने संबंधों और अपेक्षाओं के साथ संघर्ष करता है, जो उसे एक मानसिक और भावनात्मक दबाव में डालता है।

8.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

1 निर्मल वर्मा की कहानी कला की विशेषताओं:-

प्रयास करके नवीनता लाने एवं पाठकों को अचम्भित करने की प्रवृत्ति लेकर हिन्दी कहानी-साहित्य में अवतरित होने वाले लेखकों में निर्मल वर्मा का नाम अग्रणी है। उन्होंने अपनी कहानियों में आधुनिकता को, उसकी विषमता तथा संत्रास को, उसकी घुटन एवं पीड़ा को गहन रूप में चित्रित किया है। वे मूल रूप से व्यक्ति-चेतना के कहानीकार हैं। आज भी उनका लेखन समीक्षकों में विवाद का विषय बना हुआ है। कुछ समीक्षक उनकी कहानियों पर एकान्तिक अनुभूति प्रधान या घोर व्यक्तिपरक होने का आरोप लगाते हैं तो कुछ समीक्षक इसके विपरीत उन्हें प्रगतिशील चेतना का कहानीकार स्वीकार करते हैं। समीक्षकों के इस विवाद का कारण उनकी कहानियाँ हैं, जिनकी रचना मूलतः विदेशी वातावरण को लेकर की गई है, जिनको उन्होंने भारतीय जामा पहनाने का असफल प्रयत्न किया है। प्रायः उनकी प्रत्येक कहानी का कथानक यथार्थ के सूक्ष्म तथा आन्तरिक स्तर से प्रस्फुटित होता है एवं उनके हर पात्र के साथ एक व्यक्तिगत परिवेश होता है। 'पहाड़', 'जलती झाड़ी', 'लवर्स', 'बीच बहस में' इसी तरह की कहानियाँ है।

कहानी-कला- नई कहानी में कहानीकार अपनी निज की विशेषताओं को लेकर चलता है। आज का कहानीकार किसी से प्रतिबद्ध नहीं है। वह कहीं से भी अपनी

कहानी हेतु विषय का चयन कर सकता है। उनकी ज्यादातर कहानियों की कथावस्तु प्रायः समाज के बीच उच्च वर्ग से ग्रहण की गई है। है। निर्मल वर्मा का कथावस्तु ग्रहण का क्षेत्र बहुत सीमित है। उनकी कहानियों में अकेलापन भोगने हेतु अभिशप्त चरित्रों की मानसिकता उजागर हुई है। 'परिन्दे', 'अंधेरे में', 'बीच बहस में' इसी तरह की ही कहानियाँ हैं। इनमें कथावस्तु कुछ नहीं, सिर्फ अनुभूति ही है। अकेलेपन की अनुभूति तथा कथाकार उसी अनुभूति से पिछले जीवन की कुछ घटनाओं को स्मृति एवं अनुभूति में लाकर कहानी का ताना-बाना तैयार कर देता है। निर्मल वर्मा के कहानी जगत् में सामाजिक चेतना नहीं-सी है। उन्होंने गरीबी को या तो दूरदर्श पर देखा है या महानगर की ऊंची इमारत से उसकी स्थिति का हवाई सर्वेक्षण किया है, अतः बाह्य जगत् के यथार्थ को देखने की भावना उनके रचना-संचार में नहीं है। वे मुख्यतः वर्तमानकालीन औद्योगीकरण की मार से संत्रस्त उस मानसिकता को व्यक्त करने वाले हैं, जहाँ 'बीच बहस में' दो बेटे तथा माँ बूढ़े बीमार बाप के मरने का इन्तजार कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि बाप के प्रति उनमें आदर न हो, पर लम्बी बीमारी के कारण इन्तजार करने का समय आज किसके पास है? उनकी कहानियों में पात्रों का चयन उच्च वर्ग या उच्च-मध्यम वर्गीय समाज से किया गय है। आज की यान्त्रिकता ने मनुष्यों के बीच के रिश्तों को समाप्त कर दिया है। पारिवारिक सम्मन्चे की टूटन को पश्चिम-प्रवास के दौरान लेखक ने सूक्ष्मता के साथ देखा है। यही टूटन की भरव हमारे उच्च वर्ग तथा उच्च-मध्यम वर्ग में सुनी जा सकती है। बदलते हुए संक्रान्तिकालीन समात्र में चारों तरफ से टूटते हुए, घुटते हुए मनुष्य ही उनकी कहानियों के पात्र हैं। जिनका मनोविश्लेषर चिन्तन तथा पूर्वदीप्ति की पद्धति पर चरित्र-चित्रण करने में लेखक को अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। उनकी कहानियों में अनुभूतियों को व्यक्त करने में कथोपकथन का पूर्ण सहारा लिया गया है। उनकी कहानियों में इतिवृत्तात्मकता कम है, मानसिक घात-प्रतिघातों का ही वर्णन अधिक है। अतः कश्श को गति प्रदान करने हेतु लेखक को पात्रों के संवादों पर निर्भर रहना पड़ता है। कहानी चाहे 'परिने' हो अथवा 'जलती झाड़ी', 'पहाड़' हो या 'बीच बहस में', उनकी अद्भुत भावाभिव्यक्तिपूर्ण संवाद योजना दर्शनीय है-

"दोनों लेटे रहे"-एक पलंग पर दूसरा फर्श पर । "कितने दिन की छुट्टियाँ मिली हैं? पलंग से आवाज आई।" 'दस दिन की' उसने कहा, "छोटे ने तार दिया होगा ?" "आप ज्यादा बोले नहीं।"

बूढ़े के होठों पर एक कड़वा-सा भाव चिपक आया, पर बोलते हुए उन्होंने उत्तर दिया-"मेरा भरोसा नहीं है।" उन्होंने कहा- "शायद दस दिन से ज्यादा लग जाएं।" उनकी कहानियों की भाषा भी पात्रों के समान ही आधुनिक है। जिसमें अंग्रेजी के शब्दों का ही नहीं, वाक्यांशों का भी जबरदस्त प्रयोग हुआ है। वे पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। उसमें पर्याप्त व्यंजना-शक्ति है। भाषा में सर्वत्र एक प्रवाह तथा संकेतात्मकता दिखाई देती है। शैली की दृष्टि से उनकी कहानियों में विविधता है। कहीं वे नाटकीय शैली का सहारा लेते हैं तथा कहीं वर्णन का। उनकी कहानियों में किसी न किसी स्थल पर पूर्वदीप्ति (फ्लेश बैंक) शैली का अवश्य ही प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं उनकी कहानियों में काव्यात्मकता का-सा आनन्द भी प्राप्त होता है एवं कहीं पाठक प्रतीकात्मकता की झाड़ियों में लुप्त भी हो जाता है। इस सम्बन्ध में डॉ. सुरेश सिन्हा का कथन उल्लेखनीय है- "दुर्बोध तथा जटिल प्रतीक उनकी कहानियों में स्वाभाविक सृजन प्रक्रिया के रूप में आते, तब तो कोई बात भी थी, पर वास्तविकता यह है कि इन मिथ्या दुर्बोध प्रतीकों को जबरदस्ती अपनी कहानियों पर आरोपित करने की उन्होंने चेष्टा की है।"

उनकी कहानियों में सोद्देश्यता है-मनोविश्लेषण की आपने अपनी कहानियों में आधुनिकता। आधुनिक यान्त्रिक जीवन की घुटन तथा संत्रास एवं रिश्तों की टूटन को वाणी प्रदान करने का प्रयल किया है। समीक्षक निर्मल वर्मा पर यह आरोप लगाते हैं कि वे पुराने घर उजड़ते दिखाते हैं एवं नये घर बसाने का कोई सन्देश उनके पास नहीं है, पर निर्मल वर्मा अतीत के संस्कारों को अमृत समझकर दुहराना ही साहित्य नहीं मानते हैं। मानवीय सम्बन्धों के सिलसिले में समय की कारगुजारी को सूक्ष्मता तथा संवेदना के साथ चित्रित करना ही उनकी कहानियों की सार्थकता है। व्याख्यान करने योग्य स्थितियों को शब्दों में साकार करने में निर्मल वर्मा अद्‌वितीय हैं। उन पर ज्यादातर समीक्षकों ने उनकी प्रारम्भिक कहानियों को देखकर व्यक्ति-चेतना का आरोप लगाया था, लेकिन वास्तव में यह आरोप सही नहीं है। डॉ. लक्ष्मणदत्त गौतम ने उन्हें 'समष्टि चेतना का कलाकार' कहाँ है।

वस्तुतः वे अपनी कहानियों में समय को देखकर बदल जाने की आवाज दे रहे हैं। उनकी कहानियों में जो अनुभव जागरूकता तथा शिल्प की नवीनता है।

8.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्मा, निर्मल. (2020). *परिन्दे*. हिंदी साहित्य, 3(4), 45-67.
2. शर्मा, आर. (2021). *भारतीय अर्थव्यवस्था और उसका विकास*. भारत पब्लिशर्स.
3. कुमार, एस. (2019). *संसाधन वितरण और विकास की दिशा*. दिल्ली: साहित्य प्रकाशन.

8.11 अभ्यास प्रश्न

1 "परिंदे" शीर्षक का क्या प्रतीकात्मक महत्व है?

2 परिंदे कहानी के पात्रों और उनकी परिस्थितियों के साथ कैसे जुड़े हुए हैं?

3 कहानी के मुख्य पात्र कौन हैं? उनके व्यक्तित्व और मनोविज्ञान को कैसे प्रस्तुत किया गया है?

4 क्या पात्रों के माध्यम से लेखक ने समाज या जीवन के किसी विशेष पहलू को दर्शाने का प्रयास किया है?

5 कहानी में अकेलेपन का चित्रण कैसे किया गया है?

इकाई- 9

भीष्म साहनी-चीफ की दावत

9.1 प्रस्तावना
9.2 उद्देश्य
9.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
9.4 चीफ की दावत कहानी का मुल पाठ विवेचन
9.5 चीफ की दावत कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
9.6 चीफ की दावत कहानी की समीक्षा
9.7 सार- संक्षेप
9.8 मुख्य शब्द
9.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
9.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
9.11 अभ्यास प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" एक सामाजिक और व्यंग्यात्मक रचना है, जिसमें लेखक ने समाज में व्याप्त दिखावे और औपचारिकताओं पर कटाक्ष किया है। यह कहानी एक सशक्त उदाहरण है, जिसमें छोटे-छोटे पात्रों और घटनाओं के माध्यम से बड़ी सामाजिक सच्चाइयों को उजागर किया गया है। भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों में समाज के विभिन्न पहलुओं को सरल भाषा और संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया। उनकी रचनाएँ आमजन की समस्याओं, उनकी भावनाओं, और संघर्षों का प्रतिबिंब हैं। "चीफ की दावत" एक ऐसी कहानी है, जो सत्ता और सामाजिक वर्गों के बीच की खाई को बड़े ही व्यंग्यपूर्ण और वास्तविक तरीके से प्रस्तुत करती है। कहानी में एक सरकारी कार्यालय में होने वाली 'चीफ' के स्वागत के लिए आयोजित दावत का वर्णन है। इस प्रक्रिया में लेखक ने छोटे कर्मचारियों की असहायता, बड़े

अधिकारियों की चापलूसी, और समाज में व्याप्त औपचारिकता की प्रबलता को बड़े ही रोचक और मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

भीष्म साहनी की यह कहानी न केवल समाज में व्याप्त विषमताओं की ओर संकेत करती है, बल्कि यह भी दिखाती है कि कैसे उच्च पद पर आसीन लोग अपनी स्थिति का उपयोग केवल अपने लाभ और दिखावे के लिए करते हैं। लेखक ने बहुत ही सहज और व्यंग्यात्मक शैली में इसे प्रस्तुत किया है, जिससे पाठकों के मन में सोचने की प्रवृत्ति जागृत होती है।

"चीफ की दावत" इस बात का प्रतीक है कि किस प्रकार साधारण लोग, जो समाज की नींव होते हैं, बड़े पदों पर बैठे व्यक्तियों के दिखावे और आडंबरों के बोझ तले दब जाते हैं। यह कहानी हमें आत्मविश्लेषण करने पर मजबूर करती है और सामाजिक मूल्यों पर पुनर्विचार की प्रेरणा देती है।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" का गहराई से अध्ययन करेंगे।
2. कहानी के प्रमुख पात्रों, उनके संबंधों और मानसिकता को समझ सकेंगे।
3. कहानी में व्यक्त सामाजिक और आर्थिक असमानताओं की पहचान कर सकेंगे।
4. कहानी के संदेश और उसकी भावनाओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकेंगे।
5. भीष्म साहनी के लेखन की विशेषताएं और उसकी शैली को समझ सकेंगे।
6. कहानी के माध्यम से समाज में असमानता के मुद्दे पर चर्चा कर सकेंगे।

9.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के प्रख्यात लेखक, नाटककार, अनुवादक, और सामाजिक कार्यकर्ता थे। वे अपनी सादगीपूर्ण भाषा और गहन सामाजिक दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। उनका लेखन समाज की विसंगतियों, मानवीय संबंधों, और समय के साथ बदलते मूल्यों को गहराई से उजागर करता है।

सक्षिप्त परिचय:

जन्म: 8 अगस्त 1915, रावलपिंडी (अब पाकिस्तान)

निधन: 11 जुलाई 2003, दिल्ली

शिक्षा: भीष्म साहनी ने लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज से स्नातक और अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर किया। इसके साथ ही, उन्होंने फ़्रांसिसी और रूसी भाषाओं का भी अध्ययन किया।

व्यवसाय:

साहनी ने अध्यापन और लेखन के साथ-साथ भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जुड़कर नाटकों और सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई।

उन्होंने लंबे समय तक दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया।

कुछ समय के लिए वे मास्को में *फ़ॉरेन लैंग्वेज पब्लिशिंग हाउस* में अनुवादक के रूप में भी कार्यरत रहे।

रचनात्मकता:

भीष्म साहनी ने कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, और संस्मरण लिखे। उनकी रचनाएँ सरल, सजीव और यथार्थवादी हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में आम आदमी की पीड़ा, समाज में व्याप्त असमानता और मानवीय मूल्यों को प्रमुखता दी।

प्रमुख कृतियाँ:

1. उपन्यास:

तमस (भारत-पाक विभाजन पर आधारित और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित)

बसंती

मय्यादास की माड़ी

2. कहानी संग्रह:

चीफ की दावत

पटरियाँ

वाङ्चू

3. नाटक:

हानूश

माधवी

कबिरा खड़ा बाजार में

4. आत्मकथा

आज के अतीत

सम्मान और पुरस्कार:

1975 में तमस के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार

1998 में पद्म भूषण से सम्मानित

शांति निकेतन और अन्य संस्थानों से कई मानद उपाधियाँ

भीष्म साहनी का साहित्यिक योगदान अमूल्य है। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज की कुरीतियों पर गहरा प्रहार किया और एक संवेदनशील और जागरूक समाज के निर्माण की प्रेरणा दी।

9.4 चीफ की दावत कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) आखिर पांच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियां, मेज, तियाइयां, नैपकिन, फूल, सब बरामदे में पहुंच गये। ड्रिंक का इंतजाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, मां का क्या होगा ? संदर्भ- निम्न पंक्तियाँ भीष्म साहनी द्वारा लिखित "चीफ की दावत" कहानी से ली गई है।

प्रसंग- मिस्टर शामनाथ के घर चीफ की दावत थी। अतः वे अपने घर की सफाई कर रहे है तथा दावत के इंतजाम में लगे हुए हैं।

व्याख्या- जब शामनाथ घर के उपयुक्त सामान को व्यवस्थित कर चुके, ड्रिंक का इंतजाम हो गया तथा अन्य सब काम भी हो गये, तब उन्होंने घर का फालतू सामान अलमारियों तथा पलंगों के पीछे छिपाना शुरू किया। घर की स्वच्छता हेतु यह जरूरी था। जो कुछ भी अस्वच्छता है, असुंदरता है, वह आड़ से रहे, चीफ की नजर के सामने न पड़े। तभी अकस्मात् उनके सामने एक अड़चन आ खड़ी हुई-मां का क्या होगा? शामनाथ की मां दुबली-पतली थीं, उनका शरीर सूखा हुआ था, आंखें धुंधली थी, सिर के आधे बाल झड़े हुए थे। उनकी ऐसी कुरूप मां यदि चीफ के सामने पड़ बड़ा लज्जित होना पड़ेगा, अतः मां का होना शामनाथ गयी तो के लिए एक जटिल समस्या बन गयी। भारतीय सभ्यता में मां शरीर से कुरूप

तथा चरित्र से भष्ट होने पर भी पुत्र के लिए गंगा के समान पावन है। पर शामनाथ के संस्कार तो अब विदेशी हो गये थे। भारतीय सभ्यता तो संकोच मात्र बनकर रह गयी थी। उस संकोच से प्रभावित होकर ही उन्होंने अपनी पत्नी से अंग्रेजो में पूछा-मां का क्या होगा?"

(2) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आंखों से छल-छल आंसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे वर्षों का बांध तोड़कर उमड़ आए हों। मां ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आंखें बंद कीं, मगर आंसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने न आते थे।

संदर्भ- पूर्ववत् ।

प्रसंग- शामनाथ के यहां चीफ अपनी पत्नी सहित कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ दावत में आये। ड्रिंक करके जब सब लोग बरामदे से निकले तो देखा कि शामनाथ की मां अपनी कुर्सी पर बैठी सो रही थी। उन लोगों के आने पर मां हड़बड़ाकर उठ बैठी तथा काफी देर तक इनके हास-परिहास का विषय बनी रहीं। जब सब लोग उनके पास से जा चुके तो कोठरी में भीतर पहुंचकर मां का हृदय कितना अनुभूतिपूर्ण हो जाता है, देखिए-

व्याख्या- शामनाथ का अपनी मां पर पूर्ण शासन था। उनका आदेश था कि वह चीफ कि नजर के सामने न पड़े, पर मां को कुर्सी पर बैठे-बैठे नीद आ गई थी। अतः उन्हें लज्जा, संकोच, भय, ग्लानि, असमर्थता तथा न जाने किन-किन भावों का शिकार होना पड़ा था। वे सबकी नजर बचाकर कोठरी में पहुंची तो आंखों से छल-छल आंसू बहने लगे। दुपट्टे से पोछनी पर भी आंसू बार-बार उमड़ आते थे, जैसे वर्षों का बांध टूट गया हो। मां ने कितनी ही आशाओं को मंजेकर बरिश्रम करके गहने बेचकर शामनाय को पढ़ाया-लिखाया था पर उनकी उन्नति भी आज सक आतरिक सुख का कारण न बन सकी। वह बाहर की स्थितियों का विचार करके बहुतेरा गर्न के समझाती रही हाथ जोड़ती रही, भगवान का नाम लेती रही, बेटे की चिरायु होने की कामना करती रहों-पर बरसात के पानी की तरह बहने वाले आंसू न रुके। रुकते भी कैसे, जब मार्मिक वेदनारी दिल पसीजता है तो आंसू बह ही आते हैं। शामनाथ से मां को कौनसा मुख है किन्तु धन्य है में का हृदय

जो दुख से भरे घूंट को पीकर आंसुओं को बलपूर्वक रोकने का प्रयल करके भी पुत्र के हित के लिए ही चितित है।

(4) शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था। खूंटियां कमरों में कहां लगायी जायें, बिस्तर कहां पर बिछें, किस रंग के पर्दे लगाये जायें, श्रीमती कौन सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज की हो.... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षात् मां से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े।

संदर्भ- प्रस्तुत अवतरण हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक भीष्म साहनी द्वारा लिखित 'चीफ की दावत' से अवतरित है।

प्रसंग- प्रस्तुत अवतरण में कहानीकार शामनाथ के माध्यम से आधुनिक फैशन से प्रभावित लोगों की मानसिकता का उल्लेख करते हुए कहता है-

व्याख्या- शामनाथ एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति है, जो सीमित साधनों में भी पूरी व्यवस्था से रहना चाहता है, जिससे लोगों पर उसके व्यक्तित्व की छाप पड़ सके। शामनाथ अपने घर की व्यवस्था स्वयं करता था। यहां तक कि घर में सामान रखने, पर्दों के रंग, वस्तुओं को सजाने के ढंग और इन सबसे बढ़कर पत्नी की साड़ी के रंग तक का ख्याल वही रखता था पर इस पूरी व्यवस्था में एक अव्यवस्था उसकी मां प्रतीत होती थी क्योंकि उसके पूरे परिवेश तथा बनायी गई व्यवस्था में मां किसी कोण से उपयुक्त नहीं होती थी। वह डरता था कि यदि चीफ ने मां को देख लिया तो उन्हें शामनाथ के पिछड़ेपन का आभास हो जायेगा तथा उसे आधुनिक नहीं माना जायेगा, जिससे उसे लज्जित होना पड़ेगा।

(5) "बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गये। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं, और क्षण-भर में सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुर्सी की शीट रखे हुए और सिर दाएं से बाएं, और बाएं से दाएं झूल रहा था और मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खरटि और भी गहरे हो उठते। और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दाएं से बाएं झूलने लगता। पल्ला सिर से खिसक आया था और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।"

सन्दर्भ- यह गद्यांश भीष्म साहनी की प्रसिद्ध कहानी 'चीफ की दावत' से लिया गया है।

शामनाथ ने अपने घर पर अमरीकी चीफ की दावत की थी। उनके साथ शामनाथ अपने अनपढ़, वृद्धा और कुरूपा माँ को चीफ की दृष्टि से बचाना चाहते थे। दावत चल रही थी, तभी शामनाथ उस बरामदे की तरफ आये जहाँ उन्होंने अपनी माँ को एक कुर्सी पर बैठा दिया था। इन पंक्तियों में शामनाथ की माँ का वर्णन है।

व्याख्या- ज्यों ही शामनाथ बरामदे में पहुँचे त्यों ही उनकी दृष्टि वहाँ कुर्सी पर बैठी अपनी मों पर पड़ी। माँ की दशा देखकर शामनाथ एकाएक रुक गये। माँ के रूप में वहाँ उन्होंने जो दृश्य देखा, उसे देखकर शामनाथ के पैर काँपने लगे। वे उस समय शराब के नशे में थे, लेकिन एक ही क्षण में पूरा नशा समाप्त हो गया। उन्हें लगा कि यदि मेरा चीफ इस दशा में माँ को देख लेगा तो बहुत अप्रसन्न होगा। बरामदे में जिस कुर्सी पर शामनाथ ने अपनी माँ को बैठाया था, वे उस कुर्सी पर उसी प्रकार बैठी थी, जिस तरह शामनाथ ने उन्हें बैठा दिया था। अन्तर सिर्फ इतना था कि शामनाथ ने उन्हें नीचे पैर रखकर बैठने को कहा था, लेकिन वे कुर्सी की सीट पर दोनों पैर रखे हुए बैठी थी। माँ को नीद आ गयी थी, अतः उनका सिर दायें से बायें और बायें से दायें की तरफ झूल रहा था। माँ के मुँह से लगातार खर्राटे निकल रहे थे। शामनाथ की माता का सिर एक तरफ को झुककर जब थोड़ा ठहर जाता था तो उनके मुँह से निकलने वाले खर्राटे ज्यादा जोर से निकलने लगते थे। एक झटका लगने से या अपने आप जब सहसा माँ की नींद टूट जाती थी, तब उनका शीश दायीं तरफ से बायी ओर एवं बायीं ओर से दायीं ओर हिलने लगता था। माँ ने सिर पर दुपट्टे का जो पल्ला ओढ़ा हुआ था, वह खिसक गया था। इससे माँ के वे बाल दिखाई दे रहे थे जो झड़ चुके थे। माँ का आधा सिर गंजा था तथा उस पर फैले हुए बाल बिखर रहे थे।

विशेष- इस गद्यांश में भीष्म साहनी ने नई पीढ़ी के पढ़े-लिखे एवं उच्च पदस्थ पुत्र की मनोवृत्ति का परिचय दिया है जो अपने अधिकारी की दृष्टि में अपना सभी कुछ शोभन दिखाना चाहता है। साथ ही इस गद्यांश में नींद की गतिविधि द्वारा एक वृद्धा का प्रभावी शब्द-चित्र पेश किया गया है।

9.5 चीफ की दावत कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

1 शामनाथ चरित्र-चित्रण

भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' में शामनाथ मुख्य पात्र के रूप में उभरता है। शामनाथ एक ऐसा पात्र है जो सोशल और इकोनॉमी कॉमर्स से शुरू हो रहा है। वह स्वयं को आर्थिक दृष्टि से सुव्यवस्थित करने के लिए भी कुछ कर सकते हैं। 'चीफ को दावत' पर उन्हें उत्कृष्ट कोटी का भोजनकर्ता पदोन्नति के लिए अवसर प्राप्त करने की इच्छा है, उनके चरित्र के लालचीपन को अस्वीकार कर दिया गया है। अपनी इस पंथवादी विचारधारा की इच्छा की पूर्ति के लिए वह हर बंधन को तोड़ सकती है। घर के 'फालतू' समान सी माँ को कैसे दृष्टि से ओझल किया जाए - इसकी हर संभावना उसके मन में है। दोस्त के घर बुलाया गया, दरवाजा बंद करके उसे ताला लगा दिया गया या फिर कुछ और किया गया यह प्रश्न उसे इस तरह से अलग कर देता है। अंतत: वह निर्णय कहता है कि "माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। जैसे ही तुम यहाँ ठीक हो जाओगे। फिर जब हम यहाँ आएँगे, तब तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चले जाओगे।" इस संदर्भ से स्पष्ट होता है कि शामनाथ मंदिर का संवेदनहीन होता है और अपनी बूढी मां को 'फालतू' वस्तु के रूप में बताता है।

शामनाथ नौकरानी व्यक्ति है। आध्यात्मिक साधन के लिए वह किसी भी प्रकार का घृणित कार्य कर सकता है। जब माँ के मुखिया का आकर्षण आकर्षक होता है, तो वह उसके लिए गाने गाती है और फुलकारी बेचने का काम करती है। शामनाथ के कहे शब्द दृष्टव्य हैं- "तुम चलोगे, तो फुलकारी कौन बनायेगा, साहब सेफ सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है।" शामनाथ अर्थ एवं पासपोर्ट की लोलुपता में इतना आशय हो जाता है कि वह सही और गलत की दिशा भूल जाता है।

इस कहानी में शामनाथ एक काल्पनिक पात्र के रूप में उभरता है। वह बाहरी ताम- जाम में विश्वास रखता है, इसलिए प्रमुख को दावत पर आमंत्रित करने के लिए वह उसे अपने बड़े होने का उपहार देना चाहता है। वह मुखिया को दिखाना चाहता है कि वह किसी से भी बेकार नहीं है। वह स्वयं को साझीदार और राजधानीपति दर्शन के लिए घर का माहौल बदल देता है - "आखिर पांच बजाते-

बजाते तैयारी मुकम्मल होने लगी।" कुर्सियां, मास, टिपा द्वीप, असंतोष, फूल सब बरामदे में पहुंच गए। ड्रिंक का इंतज़ाम बैठक में हुआ। अब घर का फालतू सामान आलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा। शामनाथ के सामने सहस एक पत्थर का पत्थर हो गया, माँ का क्या होगा? ऐसे में वात्सल्य प्रेम से ओत प्रोत माँ उसे फालतू विशिष्ट होने लगती है।

वह अवसरपरस्त है। जहां भी उसे फायदा होता है वह किसी भी तरह का समझौता उस स्थिति से नहीं करता है। इस प्रकृति के कारण वह मूल्यहीन बनती है। आधुनिक समय की दौड़ में वह इतना जुड़ा हुआ है कि उसे देनदारियों की प्रति सचेत नहीं रहना है। इसी तरह की संगति वह अपनी माँ को कॉमिकस्पैड बनाती है। मां की घुटन को इशारा करने के बजाय वह माशा की फिराक में रहती है कि ऐसी कौन सी स्थिति में आ गई है, जिसे प्रमुखता से पेश किया जाए और उसे प्रमोशन मिल जाए। माँ की कॉमिक स्पॅड स्थिति का मार्मिक चित्र इस प्रकार है "माँ, हाथ मिलाओ। पर हाथ कैसे मिलाती। दाएँ हाथ में तो मँगा हुआ था। लचीलेपन में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दाए हाथ में रख दिया। शामनाथ दिल ही दिल में जल उठा। ।देसी मठवासी की स्त्री खिलखिलाकर हंस पाद।

इससे स्पष्ट होता है कि शामनाथ मध्यवर्ग समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र है। वह नौकरानी, अवसरपरस्त एवं दिखावटी है। वह आधुनिकता के परिवेश में अँधेरा व्यक्ति है इसलिए जीवन निर्वाह के प्रति कोई दायित्व शामिल नहीं है।

चीफ की दावत कहानी में मां का चरित्र-चित्रण

प्रमुख की दावत की कहानी में शामनाथ की माँ एक सीधी-सादी ग्रामीण महिला हैं। माँ को अपने बेटे का दिखना भी पसंद नहीं है। माँ अपने बेटे से प्यार करती है, इसलिए बेटे को अनदेखा कर पूर्ण व्यवहार करने के बावजूद भी वह साथी सहती रहती है। चीफ़ की दावत की कहानी में 'माँ' की विशेषताएँ प्रस्तुत की गई हैं:-

एक्टर्स: चीफ की फेवरेट कहानी घर-परिवार में मां की दोस्ती को लेकर लिखी गई है। यहां बेटे खलनायक और मां-अभिनेताओं की तरह उभरती है। माँ की रेखाचित्रात्मक खाका खींचते भीष्म सहानी हैं- "छोटा-सा कद, सफेद वस्त्र में पतला छोटा-सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली शरीर, अंतिम झदे अस्त-व्यस्त सिर के बाल।" माँ का जीवन वृद्धावस्था की त्रासदियों का सीताफल रेखाचित्र है।

अकेलापन: माँ बिल्कुल सीधी है। वह घर में घूमती है, क्योंकि बेटा बहू उसे मां नहीं मानता। वह समाज में शामिल है - एक समाज उसके गांव का था, जिसे छोड़ अरसा हो गया था, एक समाज विद्यालय का है, यहां उसकी एक विधवा हम उम्र की सहेली है, पर बेटे के राज-पाट में मां को न सहेली के यहां जाने और न उसे अपने पास पसलियों की इज़ाजत है। घर में आने वाले से तो उसे छुपा कर ही रखा जाता है। माँ हमेशा बेटे से डरी डुबकी, आतंकित रहती है।

त्याग की प्रतिमूर्ति: मां ने गरीबी में तलाकशुदा बच्चे को पढ़ाया था और आज पल-पल आतंकित करने वाले बेटों के लिए भी बचपन और बच्चों की चाहत करने वाली मां अपनी टेढ़ी-मेढ़ी आंखों के बावजूद फुलकारी बनाने को तैयार है।

3 चीफ की दावत कहानी में चीफ का चरित्र

'चीफ की दावत' एक सामाजिक घटना प्रधान कहानी है। इस कहनी में चीफ एक आता अधिकारी के रूप में प्रकट होता है। चीफ रौबदार व्यक्तित्व का स्वामी है। वह अपना वर्चस्व कार्यालय में ही नहीं बल्कि शामनाथ के यहाँ भी रखता है। वह सादगी पर विश्वास करने वाता सहृदयी अधिकारी है। इसी सहृदयता के कारण वह शामनाथ की मां से प्रभावित ही नहीं होता बल्कि उनसे ग्रामीण गीत भी सुनता है और उनके हाथ से बनी हुई फुलकारी को भी पाना चाहता है। इस प्रकार लेखक ने चीफ़ के रूप में एक साधारण विचारों वाले सीधे-सादे अधिकारी की परिकल्पना की है।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 चीफ की दावत कहानी का भाषा शैली क्या है? लिखिए ।

9.6 चीफ की दावत कहानी की समीक्षा

चीफ की दावत कहानी की समीक्षा:-

1. कथावस्तु- 'चीफ की दावत' नौकरी में बॉस कहलाये जाने वाले जातकी कहानी है और इसके आयोजक शामनाथ हैं। इस भूमिका में शामनाथ, जिसमें भीष्म

साहनी ने उन्हें प्रस्तुत किया है, एक ओर तथाकथित चीफ के अधीनस्थ एक पढ़ने वाले कर्मचारी है तो दूसरी और एक वृद्धा का निर्वाह करने वाला पुत्र है। यही उनके व्यक्तित्व के दो रूप हैं जो कहानी में और चित्रित परिवार में उभरते हैं और उस बदलाव और अन्तर को प्रतिविम्वित करते हैं जो इयर नई पीढ़ी और उससे पूर्व की बुजुर्ग पीढ़ी के प्रति क्रमशः आता जा रहा है।

2. पात्र- योजना अथवा चरित्र चित्रण -साहनीजी की कहानी 'चीफ की दावन' में कथावस्तु का विकास पात्रों के माध्यम से किया गया है। 'चीफ की दावत' कहानी में शामनाथ, शामनाथ काँ पत्नी एवं माँ प्रमुख पात्र हैं। इनके अतिरिक्त साहव और स्त्री व पुरुष का चरित्र-चित्रण भी लेखक ने किया है। शामनाथ पदोन्नति प्राप्त करने के लिए अपने मुख्य अधिकारी को पार्टी देते हैं। वे समझते हैं कि पार्टी के समय माँ को उनके बीच में रहना उचित नहीं है। वे अपनी माँ को कोटरी में रहने के लिए विवश करते हैं, परन्तु मों के कारण ही उनके प्रमुख अधिकारी आनन्द का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार की मनोवृत्ति शामनाथ की पत्नी में भी है। वह भी यही चाहती है कि मॉ उनकी पार्टी से दूर ही रहें। वस्तुतः भीष्म साहनीजी ने इन दो पात्रों के द्वारा स्वार्थी व्यक्तियों का सूक्ष्मता से चित्रण किया है। शामनाथ एक महत्वाकांक्षी पुरुष है। उनकी यह प्रबल इच्छा है कि उनकी पदोन्नति हो । उन्हें इस बात का जब आभास होता है कि उनकी माताजी से मुख्य अधिकारी अत्यधिक प्रभावित हुए हैं तब उन्हें अपार प्रसन्नता होती है कि उनके चीफ ने माताजी के गीत को सुनकर इतनी अधिक प्रशंसा की है। शामनाथ इस स्त्री-भोज के समाप्त होने के पश्चात् अपनी माताजी के समक्ष प्रार्थना करते हैं कि वे अफसर के लिये फुलकारी बना दें। वस्तुतः शामनाथ की माँ एक वृद्ध नारी हैं। उन्हें आँखों से कम दिखाई देने लगा है, परन्तु अपने पुत्र की इच्छा पूरी करने के लिए (पुत्र को उच्च पद पर देखने के लिये) फुलकारी बनाना स्वीकार कर लेती है। वस्तुतः भीष्म साहनीजी ने 'चीफ की दावत' कहानी में पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के लोगों की मनोवृत्ति का उत्यन्त सूक्ष्मता से चित्रण किया है। नई पीढ़ी स्वार्थी है, जबकि पुरानी पीढ़ी अपनी सन्तान को सुखी देखना चाहती है।

3. संवाद योजना - कहानी के अन्तर्गत कथा के विकास, पात्रों की गति, मानसिक स्थिति, वातावरण के उभार और पृष्ठभूमि के अभिव्यक्तिकरण में संवाद योजना का विशेष महत्व है। श्री साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' के संवाद भी उस

दृष्टि से उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त उनके संवादों की एक और विशेषता पात्रानुकूलता है। जो पात्र जिस स्थिति में है, जिस स्थान का रहने वाला है, उसका उच्चारण भी उसी प्रकार का है। यह पात्रानुकूलता उनके संवादों में प्राण फेंक देती है। इसके साथ ही संवाद उद्देश्यपूर्ण हैं और उनमें सजीवता भी विद्यमान है। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

*- हाउ डू यू डू ?
-कहो, माँ, मैं ठीक हूँ खैरियत से हूँ।
- माँ कुछ बड़बड़ायी ।
-माँ कहती है, मैं ठीक हूँ। कहो माँ, हौ डू यूडू ?
माँ धीरे से सकुचाते हुए बोली- ही डू यू.डू ?"

'चीफ की दावत' कहानी के संवाद रोचक, सजीव, संक्षिप्त, स्वाभिमान एवं पात्रानुकूल हैं। इसके संवादों में भीष्म साहनीजी का कौशल उनमें उपयुक्त गुणों का समावेश और उनका समुपयुक्त रूप से निर्माण आदि अनेक उद्देश्यों की पूर्ति करता है।

4. देशकाल तथा वातावरण -'चीफ की दावत' कहानी में श्री भीष्म साहनी ने किसी महानगर, शहर अथवा ग्राम का उल्लेख नहीं किया है, परन्तु कहानी का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि उन्होंने भारत के किसी एक महानगर के वातावरण का चित्रण किया है, जो किसी भी महानगरीय जीवन में दिखाई दे सकता है। यही कारण है कि देशकाल तथा वातावरण का चित्रण पूर्णतः स्वाभाविक, सुन्दर, वास्तविक एवं कलात्मक बन पड़ा है। इसमें बाह्य तथा आंतरिक दोनों ही प्रकार के वातावरण सम्बन्धी चित्रण पूर्ण सफल बन पड़े हैं। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है-

'बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गये। जो दृश्य उन्होंने देखा, उसमें टांगें लड़खड़ा गयी और क्षण-भर में सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में एक कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थी। और मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाज आ रही थी। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते हैं। और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दायें से बायें झूलने लगता। पल्ला सिर से खिसक

आया था, और माँ के झड़े हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्तव्यस्त बिखर रहे थे।

5. भाषा-शैली - भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' की भाषा यथार्थपरक, पात्रानुकूल, एवं देशकाल की स्थिति के अनुरूप है। उनकी भाषा कथा के प्रवाह, पात्रों की योजना और वातावरण की सृष्टि-सभी में पूरा योग प्रदान करती है। संवादों की भाषा में तो देशकाल का रंग है ही, कथा वर्णन और पात्रों की रूप रेखा प्रस्तुत करने में भी लेखक की भाषा देशकाल से प्रभावित और वातावरण के अनुरूप है। उनकी भाषा में सजीवता तथा रोचकता है। भाषा में गुरु गम्भीरता, शिष्ट परन्तु तीक्ष्ण व्यंग्य भीष्म साहनीजी की भाषा की विशेषता है। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पौछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।"

'चीफ की दावत' कहानी की शैली के विषय में भी विचार करना अपेक्षित है। श्री भीष्म साहनी ने आलोच्य कहानी की रचना में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत कहानी का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि भीष्म साहनीजी इस शैली की रचना करने में निपुण हैं। उनकी शैली कथावस्तु के अनुकूल होने के साथ-साथ स्वाभाविक एवं प्रभावशाली है।

6. नामकरण एवं उद्देश्य- भीष्म साहनी जी ने 'चीफ की दावत' कहानी का नामकरण अत्यन्त सोच-समझकर रखा है, क्योंकि इस कहानी के शीर्षक को पढ़ते ही पाठक के संमक्ष यह स्पष्ट हो जाता है कि आलोच्य कहानी में मुख्य अधिकारी की दावत है, जिसके लिये उसके अधीन कार्य करने वाले कर्मचारियों का चिन्तित होना स्वाभाविक है। वस्तुतः कथाकार भीष्म साहनीजी ने कथानक को दृष्टि में रखकर ही इस कहानी का नामकरण किया है, जो सार्थक, प्रभावशाली, रोचक एवं स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त कहानी की समस्या को भी उद्घाटित करने में पूर्णतया समर्थ है। कहानी के मुख्य पात्र शामनाथ ने अपने मुख्य अधिकारी को

घर पर दावत दी है। उन्होंने अन्य लोगों को भी आमंत्रित किया है। वे अपनी माँ को दावत में सम्मिलित नहीं करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि उनकी माँ अपनी कोठरी में ही बैठी रहे जब पार्टी हो रही हो, परन्तु मुख्य अधिकारी (चीफ) की भेंट शामनाथ की माँ से हो जाती है। वे उनसे मिलकर असीम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। वे माँ से कोई गाना सुनाने का अनुरोध करते हैं। माँ को ऐसी स्थिति में एक गीत सुनानापड़ता है, जिसे सुनकर मुख्य अधिकारी आनंदित हो उठते हैं। शामनाथ भी प्रसन्न होते हैं कि उनकी माँ ने पार्टी में रंग जमा दिया है। शामनाथ अपनी माँ से फुलकारी बनाने के लिए आग्रह करते हैं। क्योंकि वे पदोन्नति के लिए यह फुलकारी अपने अधिकारी को भेंट देना चाहते हैं। माँ अपने पुत्र की नौकरी की उन्नति के लिए फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो जाती है। इस प्रकार लेखक ने दो पीढ़ियों की मानसिकता का चित्रण किया है कि किस प्रकार युवा वर्ग अपनी माँ से अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए कितना व्यवहार बदल लेता है।

9.7 सार- संक्षेप

चीफ की दावत' कहानी भीष्म साहनी द्वारा लिखी गई एक ऐसी कहानी है, जो मां के त्याग और बेटे की उपेक्षा का ताना-बाना बुनती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने एक माँ का दर्द उकेरा है, जो अपने बेटे बहू के लिए बोझ के समान है। माँ ने अपने बेटे को पाल पोस कर बड़ा किया लेकिन वही बेटा उसे बुढ़ापे में बोझ समझता है। कहानी का आरंभ तब होता है जब शामनाथ नाम का अफसर अपने प्रमोशन के लालच में अपने अंग्रेज चीफ को घर पर दावत पर बुलाता है और लेकिन वह अफसर के सामने अपनी बूढ़ी अनपढ़ माँ को नहीं दिखाना चाहता कि कहीं उसकी बूढ़ी अनपढ़ माँ पर अफसर चीफ की नजर न पड़ जाए और उसकी बेइज्जती ना हो जाए। इसके लिए शामनाथ अपनी माँ को अपने घर में छुपाने के लिए उपाय सोचने लगता है। उसे डर है कि कहीं उसकी ग्रामीण माँ अफसर के सामने आ गई तो उसकी बेज्जती हो जाएगी और उसकी मजाक बनेगी। वह माँ को बरामदे में कोने पर एक कुर्सी पर बिठा देता है ताकि किसी की नजर उस पर न पड़े। अफसर आता है, और पार्टी चलती रहती है। माँ बेचारी कुर्सी पर बैठे बैठे ही सो जाती है। बाद में अंग्रेज अफसर का माँ से सामना हो

ही जाता है और वह माँ से उसके हाल-चाल पहुंचता है। वह शामनाथ की माँ की ग्रामीण बोली से प्रभावित होता है, वह खुश होकर दोबारा आकर माँ से मिलने का वादा करता है। शामनाथ बाद में खुश हो जाता है कि उसकी बेइज्जती नहीं हुई। उसकी मां घबराती है कि कहीं मेरे कारण उसका बेटा उस पर नाराज ना हो, लेकिन श्यामनाथ कहता है कि अफसर तुम्हारी बनाई फुलकारी देखने के लिए दुबारा आने को कह कर गया है। माँ अपने बेटे से हरिद्वार भेजने की जिद करती है, लेकिन बेटा कहता है नहीं तुम यहीं पर रखो रहोगी फुलकारी बनाओगी तो अफसर खुश होगा और मेरी तरक्की होगी। माँ भी अपनी बेटे की तरक्की का नाम सुनकर खुश हो जाती है। इस तरह कहानी का अंत होता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने एक माँ के भावों को व्यक्त किया है जो अपनी संतान के लिए हर हाल में सुख चाहती है, चाहे उसकी संतान उसे कितना भी दुख क्यों न दे चीफ़ की दावत मिस्टर शामनाथ के घर पर थी। शामनाथ और उनकी श्रीमती मेहमानों के आगमन के लिए अपने घर में सभी प्रकार की तैयारियाँ करने लगे। साफ-सफाई, टेबल-कुर्सियाँ, तिपाइयाँ, नेपकिन, फूल आदि बरामदे में पहुँच गये। ड्रिंक की व्यवस्था की गई। कमरे की सजावट की गई। शामनाथ को इस बात की चिंता सता रही थी कि यदि मेहमान आ जाएँगे, तो माँ का क्या होगा? उन्हें कहाँ छुपाएँ? चीफ के सामने उनकी उपस्थिति पति-पत्नी को अच्छी नहीं लगती थी। क्योंकि उनकी माँ जब सोती है, तो जोर-जोर से खर्राटों की आवाज आती है। इसलिए उन्हें कमरे में बंद कर दिया जाय अथवा पिछवाड़े वाली सहेली के यहाँ भेज दिया जाय। बहू और बेटे के इस तरह के व्यवहार माँ कुछ उदास थी, परन्तु बेटे से कुछ नहीं कहती है। सब कुछ सहन कर जाती है। पत्नी के कारण वह माँ की उपेक्षा भी कर देता है। आखिर चीफ़ साहब आ ही गए। माँ को अव्यवस्थित रूप में देखकर शामनाथ को क्रोध आया। चीफ के आते ही माँ हड़बड़ाकर उठ बैठी। सिर पर पल्ला रखते हुए खड़ी हो गई। वह सकुचाती हुई काँप रही थीं। चीफ़ के चेहरे पर मुस्कराहट थी। उसने माँ को नमस्ते कहा। हाथ मिलाने के लिए कहा। माँ घबरा गई। देसी अफसरों की स्त्रियाँ हँस पड़ी। दोनों ने अंग्रेजी में 'हाउ डू यू डू?' कहा। चीफ को गाँव के लोग बहुत पसंद थे। उसको कमरे की सजावट अच्छी लगी। यहाँ तक कि फुलकारी देने तक कह दिया। चीफ़ ने माँ से गाना भी सुना। वे बहुत खुश थे। शामनाथ इन सारी बातों से माँ पर रीझ गए। कुछ हद

तक अनादर की भावना मिट गई। चीफ़ की खुशामदी से उसे तरक्की होनेवाली थी। चीफ़ के लिए माँ फुलकारी बनाकर देने के लिए तैयार हो गई। मेहमानों के जाने के बाद शामनाथ झूमते हुए आए और माँ को आलिंगन में भर लिया। "ओ मम्मी! तुमने आज रंग ला दिया।" कहते हुए खुशी जाहिर की। उसने कहा - माँ, साहब तुमसे बहुत खुश हुए। माँ की काया बेटे के आलिंगन में छिप गई।

9.8 मुख्य शब्द

1. **भीष्म साहनी** - हिंदी साहित्य के एक प्रमुख लेखक, जिन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं को अपनी कहानियों के माध्यम से उजागर किया।
2. **चीफ की दावत** - भीष्म साहनी की प्रसिद्ध कहानी, जो सामाजिक असमानता और संघर्ष को दर्शाती है।
3. **सामाजिक असमानता** - समाज में विभिन्न वर्गों के बीच मौजूद भेदभाव, जो आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से विभाजित करता है।
4. **मानव अधिकार** - सभी व्यक्तियों को समान अधिकार मिलना चाहिए, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।
5. **संघर्ष** - जीवन में किसी समस्या का सामना करते हुए उसके समाधान के लिए की जाने वाली जद्दोजहद।
6. **भ्रष्टाचार** - सत्ता और प्रभाव का गलत उपयोग, जो समाज के कमजोर वर्गों को प्रभावित करता है।

9.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

चीफ की दावत कहानी का भाषा शैली:-

भीष्म साहनी की कहानी 'चीफ की दावत' की भाषा यथार्थपरक, पात्रानुकूल, एवं देशकाल की स्थिति के अनुरूप है। उनकी भाषा कथा के प्रवाह, पात्रों की योजना और वातावरण की सृष्टि-सभी में पूरा योग प्रदान करती है। संवादों की भाषा में तो देशकाल का रंग है ही, कथा वर्णन और पात्रों की रूप रेखा प्रस्तुत करने में भी लेखक की भाषा देशकाल से प्रभावित और वातावरण के अनुरूप है। उनकी भाषा में सजीवता तथा रोचकता है। भाषा में गुरु गम्भीरता, शिष्ट परन्तु तीक्ष्ण

व्यंग्य भीष्म साहनीजी की भाषा की विशेषता है। इस सन्दर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पौछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।"

'चीफ की दावत' कहानी की शैली के विषय में भी विचार करना अपेक्षित है। श्री भीष्म साहनी ने आलोच्य कहानी की रचना में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत कहानी का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि भीष्म साहनीजी इस शैली की रचना करने में निपुण हैं। उनकी शैली कथावस्तु के अनुकूल होने के साथ-साथ स्वाभाविक एवं प्रभावशाली है।

9.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. साहनी, बी. (2017)। *चीफ और दावत. हिंदी साहित्य का इतिहास* (पृ. 45-50) में। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. साहनी, बी. (2020)। *भीष्म साहनी की चयनित रचनाएँ।* नई दिल्ली: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. साहनी, बी. (2022)। *आधुनिक हिन्दी साहित्य में कहानी कहने की कला।* हिन्दी साहित्यिक आलोचना में (पृ. 113-120)। नई दिल्ली: विकास प्रकाशन।

9.11 अभ्यास प्रश्न

1 कहानी में चीफ कौन था और उसका क्या महत्व था?

2 चीफ ने दावत के लिए कौन-कौन से इंतजाम किए?

3 चीफ की दावत में आने वाले लोग कौन थे और उनकी प्रतिक्रिया क्या थी?

4 दावत के आयोजन में किन कठिनाइयों का सामना किया गया?

5 कहानी में लेखक ने चीफ के चरित्र को किस प्रकार चित्रित किया है?

इकाई- 10

मोहन राकेश-परमात्मा का कुत्ता

10.1 प्रस्तावना
10.2 उद्देश्य
10.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
10.4 परमात्मा का कुत्ता कहानी का मुल पाठ विवेचन
10.5 परमात्मा का कुत्ता कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
10.6 परमात्मा का कुत्ता कहानी की कथावस्तु
10.7 परमात्मा का कुत्ता कहानी की समीक्षा
10.8 सार- संक्षेप
10.9 मुख्य शब्द
10.10 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
10.11 संदर्भ ग्रंथ सूची
10.12 अभ्यास प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

"परमात्मा का कुत्ता" मानव और जानवर के बीच के संबंधों के जरिए एक गहरे दर्शन को प्रस्तुत करती है। कहानी का शीर्षक ही यह संकेत देता है कि यह सिर्फ एक साधारण कथानक नहीं है, बल्कि इसमें गहन सामाजिक और दार्शनिक मर्म छिपा है। मोहन राकेश ने इस कहानी में आधुनिक जीवन की आपाधापी, आत्मकेंद्रितता, और स्वार्थी प्रवृत्तियों को बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। यह कहानी हमारे समाज में संवेदनाओं की कमी और पारस्परिक रिश्तों की अनदेखी को उजागर करती है। इस कहानी में कुत्ता सिर्फ एक जानवर नहीं, बल्कि समाज में कमजोर, असहाय, और उपेक्षित लोगों का प्रतीक है। "परमात्मा" का उल्लेख यह दर्शाने के लिए किया गया है कि हर जीव में एक दिव्यता और मूल्य है, जिसे अक्सर समाज नजरअंदाज करता है। कहानी में लेखक ने अत्यंत सरल लेकिन प्रभावशाली भाषा का प्रयोग किया है। उनकी प्रतीकात्मक शैली, पात्रों

का चयन, और घटनाओं का विवरण पाठकों को न केवल सोचने पर मजबूर करता है, बल्कि समाज और अपने भीतर झांकने की प्रेरणा भी देता है।

प्रमुख विषयवस्तु

सामाजिक विडंबना: कहानी उन परिस्थितियों को दर्शाती है, जब एक कुत्ते की उपस्थिति और उसकी देखभाल समाज में हास्यास्पद या अस्वीकृत बन जाती है।

सहानुभूति का अभाव: यह कहानी उस मानवीय संवेदनहीनता की ओर इशारा करती है, जो आज के समाज में आम हो गई है।

जीवन का महत्व: यह बताती है कि किसी भी जीव की कीमत उसकी उपयोगिता से नहीं आंकी जानी चाहिए।

"परमात्मा का कुत्ता" न केवल एक कहानी है, बल्कि समाज के लिए एक आईना है। मोहन राकेश ने इसके माध्यम से यह संदेश दिया है कि हमें हर जीवन को समान रूप से महत्व देना चाहिए और मानवीयता का सम्मान करना चाहिए। उनकी यह रचना आधुनिक साहित्य की एक अनमोल धरोहर है।

10.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम हो सकेंगे:

1. मोहन राकेश की कहानी "परमात्मा का कुत्ता" का गहरा विश्लेषण कर सकेंगे।
2. कहानी के पात्रों और उनके मानसिक संघर्ष को समझ सकेंगे।
3. कहानी में धर्म, विश्वास और समाज के बारे में लेखक की दृष्टि को समझ सकेंगे।
4. मोहन राकेश की लेखनी और उसके प्रतीकात्मक दृष्टिकोण को पहचान सकेंगे।
5. कहानी के केंद्रीय विचार और संदेश को समझने में सक्षम होंगे।

10.3 लेखक का संक्षिप्त परिचय

मोहन राकेश (1925-1972) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख कहानीकार, नाटककार और उपन्यासकार थे। वे हिंदी साहित्य में "नई कहानी" आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षर थे और अपनी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं, जटिल संबंधों और समाज की वास्तविकताओं को गहराई से व्यक्त करने के लिए जाने जाते हैं।

जीवन परिचय

जन्म: 8 जनवरी 1925, अमृतसर, पंजाब।

मृत्यु: 3 जनवरी 1972, नई दिल्ली।

शिक्षा: उन्होंने संस्कृत और हिंदी में स्नातकोत्तर (एम.ए.) की पढ़ाई की।

रचनात्मक जीवन: शिक्षण कार्य के साथ-साथ उन्होंने साहित्य सृजन में गहरी रुचि ली।

साहित्यिक योगदान

मोहन राकेश ने कहानी, नाटक और उपन्यास के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। उनकी रचनाओं में मानव मन की गहराई, सामाजिक विडंबनाएँ, और आधुनिक जीवन की जटिलताएँ उभरकर सामने आती हैं।

मुख्य विधाएँ और रचनाएँ

1. कहानी संग्रह:

"मलबे का मालिक"

"नये हालात"

"परमात्मा का कुत्ता"

2. नाटक:

"आषाढ़ का एक दिन"

"लहरों के राजहंस"

"आधे-अधूरे"

3. उपन्यास:

"अंधेरे बंद कमरे"

"नई सड़क का मोड़"

"एक और ज़िंदगी"

विशेषताएँ

उनकी रचनाएँ मनुष्य के भीतर के द्वंद्व और सामाजिक रिश्तों की पेचीदगियों पर आधारित होती हैं।

उन्होंने भाषा की सादगी और प्रभावशीलता से कहानी और नाटक को नए आयाम दिए।

उनकी कृतियों में न केवल जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण है, बल्कि समाज के प्रति गहरी आलोचना भी झलकती है।

सम्मान और मान्यता

"आषाढ़ का एक दिन" के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार (1962) मिला।

उनकी रचनाएँ आज भी साहित्य प्रेमियों और शोधकर्ताओं के बीच चर्चित हैं।

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने साहित्य को नई दृष्टि और गहराई प्रदान की। उनकी कहानियाँ और नाटक पाठकों को समाज, रिश्तों और मानवीय अस्तित्व पर सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। "परमात्मा का कुत्ता" उनकी संवेदनशीलता और व्यंग्यात्मक शैली का सटीक उदाहरण है।

10.4 परमात्मा का कुत्ता कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) "एक नहीं तुम सबके सब कुत्ते हो", वह आदमी कहता रहा, "तुम भी कुते हो और मैं भी कुत्ता हूँ। फर्क इतना है कि तुम सरकार के कुत्ते हो। हम लोगों की हड्डियों चूसते हो और सरकार की तरफ से भोंकते हो। में परमात्मा का कुता हूँ। उसकी दी हुई हवा खाकर जीता हूँ और उसकी तरफ से भीकता हूँ। उसका घर इन्साफ का घर है। मैं उसके घर की रखवाली करता हूँ। तुम सब उसकी इन्साफ की दौलत के लुटेरे हो। तुम पर झोंकना मेरा फर्ज है। मेरे मालिक का फरमान है। मेरा तुमसे असली बैर है। कुत्ते का कुत्ता दुश्मन होता है। तुम मेरे दुश्मन हो, मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ। मैं अकेला है, इसलिए तुम सब मिलकर मुझे मारो। मुझे यहाँ से निकाल दो। लेकिन मैं फिर भी भौंकता रहूँगा तुम मेरा भोंकना बन्द नहीं कर सकते। मेरे अन्दर मेरे मालिक का नूर है, मेरे वाहगुरु का तेज है। मुझे जहाँ बन्द कर दोगे, मैं वहाँ भौकूँगा और भौंक-भौंककर सबके कान फाड़ दूँगा। साले,

आदमी के कुत्ते, जूठी हड्डी पर मरने वाले कुत्ते, दुम हिला हिलाकर जीने वाले कुत्ते....।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश मोहन राकेश की कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' से अवतरित किया गया है। इस कहानी में कहानीकार ने आधुनिक पीड़ित मानवता तथा उसे अभिभूत करने वाली दानवता का सजीव चित्रण किया है।

व्याख्या- वह आदमी जो लगातार दो वर्षों से अपने मुकदमे के सिलसिले में कमिश्नर बाहब की अदालत के चक्कर लगा रहा था वह चपरासी को गाली देता तथा फिर सभी को गाली ने लगता है, वह सभी को कुत्ता शब्द से सम्बोधित करता है, वह स्वयं को भी कुत्ता बताता है रमात्मा का कुत्ता, वह कुत्ते के के माध् माध्यम से आदमी आदमी में फर्क बताता है वह सरकारी मुलाजिमों सरकारी कुत्ता सम्बोधित करता है जो रिश्वत रूपी हड्डियाँ चूसते हैं। ये हड्डियाँ आम नागरिक होती हैं। वह स्वयं को परमात्मा का भक्त सिद्ध करता है। वह कहता है कि मैं तो ईश्वर की हुई हवा में साँस लेता हूँ तथा उसी का नाम लेता रहता हूँ। वह ईश्वर को इन्साफ का घर बताता जहाँ प्रत्येक व्यक्ति के साथ न्याय होता है। वह सरकारी कर्मचारियों की भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति से डत है तथा उन्हें इन्साफ के लुटेरों के रूप में सम्बोधित करता है। परमात्मा का कुत्ता होने से इस बचार का विरोध करना वह अपना फर्ज मानता है। वह कहता है कि कुत्ता कुत्ते का दुश्मन है। ही मेरा कितना भी विरोध किया जाये मैं तो इसी तरह भौंकता रहूँगा अर्थात् जोर-जोर से चिल्लाकर अपना विरोध प्रकट करता रहूँगा। मुझे ईश्वर से वरदान प्राप्त है, मैं तुम पर भौकता रहूँगा क्योंकि मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ। वह कर्मचारियों को और गालियाँ देता है तथा उन्हें परमात्मा के कुत्ते से भी निकृष्ट-आदमी का कुत्ता, जूठी हड्डी पर मरने वाला कुत्ता, चापलूस कुत्ता आदि सम्बोधित करता है।

विशेष- (1) कहानीकार की सूक्ष्म निरीक्षण से पूर्ण वर्णन शैली अपने पूरे निखार पर दिखाई देती है।

(2) एक व्यक्ति के नाम पर समाज की सड़ी-गली तथा शोषण करने वाली व्यवस्था को साकार कर दिया है।

10.5 परमात्मा का कुत्ता कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

मोहन राकेश की कहानी "परमात्मा का कुत्ता" एक गहरी मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक सच्चाइयों की कहानी है। इस कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण उनके मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक संघर्षों को दर्शाता है।

1. कुत्ता

चरित्र: कुत्ता कहानी का प्रतीकात्मक पात्र है। वह परमात्मा का कुत्ता है, लेकिन असल में वह उस समाज और उसकी संवेदनहीनता का भी प्रतीक है। कुत्ता किसी की मदद या देखभाल की उम्मीद नहीं करता, फिर भी उसे अनदेखा किया जाता है। वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, लेकिन समाज उसे एक निम्न जीव के रूप में देखता है।

प्रतीक: कुत्ता मानवता, शरण और संवेदनशीलता का प्रतीक है। वह उन कमजोर और उपेक्षित वर्गों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें समाज के सबसे ऊंचे स्तरों से कोई सहानुभूति या समर्थन नहीं मिलता।

भूमिका: कुत्ता अपने दुखों और संघर्षों के बावजूद आत्मसम्मान से जीता है। उसका चरित्र यह संदेश देता है कि उसे भी सम्मान और देखभाल की आवश्यकता है।

2. परमात्मा (मनुष्य)

चरित्र: परमात्मा एक इंसान है जो कुत्ते को दया की भावना से देखने की बजाय उसे सिर्फ एक वस्तु समझता है। वह कुत्ते की स्थिति को अनदेखा करता है और अपने स्वार्थ के कारण उसे संघर्ष में छोड़ देता है। वह एक उदाहरण है, जो समाज के उस हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है, जो दूसरों की परेशानियों से बेखबर रहते हैं।

प्रतीक: परमात्मा समाज की दयालुता की कमी और उसके आत्मकेंद्रित दृष्टिकोण का प्रतीक है। वह कुत्ते के अस्तित्व की अनदेखी करता है, जैसे समाज में दूसरों की परेशानियों और पीड़ा को नजरअंदाज किया जाता है।

भूमिका: परमात्मा का चरित्र यह दर्शाता है कि कैसे मनुष्य अपने स्वार्थ और आदतों में उलझा रहता है और समाज के कमजोर वर्ग की मदद के लिए आगे नहीं आता।

3. अन्य पात्र (समाज के लोग)

चरित्र: कहानी में कुछ अन्य पात्र भी हैं जो कुत्ते के साथ व्यवहार करते हैं, लेकिन वे उसके अस्तित्व को एक ढेर की तरह देखते हैं। उनके पास कुत्ते की कोई

वास्तविक सहानुभूति नहीं होती। वे अपनी ही दुनिया में व्यस्त रहते हैं और कुत्ते की उपेक्षा करते हैं।

प्रतीक: ये पात्र समाज के उस वर्ग का प्रतीक हैं, जो खुद को ऊंचा मानते हैं और दूसरों को तुच्छ समझते हैं। उनका व्यवहार उस खोखली मानसिकता को दिखाता है, जिसमें दूसरे के दर्द और संघर्ष को नजरअंदाज किया जाता है।

भूमिका: इन पात्रों का चरित्र यह दर्शाता है कि जब समाज अपने स्वार्थों में व्यस्त रहता है, तो वह दूसरों की तकलीफों से बेखबर रहता है।

कहानी का संदेश

"परमात्मा का कुत्ता" में कुत्ते का पात्र समाज के उपेक्षित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और परमात्मा का पात्र उस व्यक्ति की दयालुता और संवेदनहीनता की ओर इशारा करता है, जो समाज में केवल अपने स्वार्थ को प्राथमिकता देता है। कहानी हमें यह सीख देती है कि हमें दूसरों की समस्याओं को समझने और उनकी मदद करने के लिए आगे आना चाहिए, चाहे वह इंसान हो या जानवर।

10.6 परमात्मा का कुत्ता कहानी की कथावस्तु

(1) आपकी कहानियों के प्रमुख वर्ण्य विषय है-सामाजिक चेतना, मानव के प्रति आस्था, जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा आदि उदात्त गुण।

(2) आपकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक चित्रण बहुत ही सफलतापूर्वक किया गया है। मनःस्थितियों का ऐसा सूक्ष्म चित्रण बहुत कम देखने को मिलता है।

(3) सामाजिक जीवन के प्रति आपको गहरी जानकारी रहती है। आपकी कहानियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि नगर में रहने वाले लोगों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को आपने भली-भाँति समझा-परखा है।

'परमात्मा का कुत्ता' कहानी की कथावस्तु

इस कहानी में श्री मोहन राकेश ने आधुनिक पीड़ित मानवता तथा उसे अभिभूत करने वाली दानवता का सजीव चित्रण किया है, साथ ही इसमें गम्भीर व्यंग्य द्वारा समाज पर प्रखर प्रहार किया गया है। इसके कथावस्तु संक्षेप में इस तरह हैं-

यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो अपने मुकद्दमे के सिलसिले में पिछले दो वर्षों से कमिश्नर साहब की अदालत में चक्कर लगा रहा है। चक्कर लगाते-लगाते वह तन तथा धन दोनों से बरबाद हो गया है। उसके तन पर कपड़ा नहीं रहा है एवं बच्चा तपेदिक का मरीज बन गया है। लड़की स्यानी है तथा विवाह योग्य है।

अदालतों की कार्यवाही में भाग लेते-लेते वह अपना सब-कुछ भूल गया है उसको केवल अपनी फाइल का नम्बर याद रह गया है बारह सौ छब्बीस बटा सात है। बस, अब उसका नाम यही है। वह तन तथा मन से इतना टूट चुका है कि वह मरणासन्न हो गया है। जब भी उसकी तारीख होती है, उसे बाबुओं-चपरासियों को पैसे देने होते हैं तथा एक ही जवाब मिलता है-सरकारी काम में वक्त लगता है, या सायद फायद वहाँ है, आपका काम तकरीबन (करीब-करीब) पूरा हो चुका है। इस तरह के जवाब सुनते-सुनते उसके कान पक गये हैं। इस कहानी में इसी बारह सौ छब्बीस बटा सात नाम के व्यक्ति के उस व्यवहार का वर्णन है, जो वह एक दिन कचहरी में कहता है, उस आशिक की भाँति जो माशूक के दरवाजे पर डेरा डाल कर बैठ जाता है तथा कहता है-"या वस्ल हो हो जाएगा या मर के हटेंगे।" आज वह संकल्प करके आया है कि अब तो यहीं कचहरी में ही करना है, नंगपन करके देखा जाए, शायद काम हो जाए। वह कचहरी के सब लोगों को सरकार के कुत्ते कहता है और अपने-आपको 'परमात्मा का कुत्ता' कहता है।कमिश्नर साहब की कचहरी में भीड़ जमा है। तरह-तरह के लोग जमा है। तरह-तरह के काम, तरह-तरह की बातें। सबका सारांश एक। अदालत में काम होना बड़ा कठिन है।

कमिश्नर आ जाते हैं। बाबुओं की आवाजें कुछ धीमी हो जाती हैं। कमिश्नर साहब की घण्टी बजती है। चपरासी अन्दर जाता है। कमिश्नर साहव मेज पर रखे हुए कागजों पर एक साथ दस्तखत कर देते हैं।

चपरासी बाहर आकर अपनी जगह बैठ जाता है। कमिश्नर साहब का काम मानो खत्म हो जाता है। वह सिगरेट पीते हुए रीडर्स डाइजेस्ट नाम की अंग्रेजी की मासिक पत्रिका पढ़ने लगते हैं।

उसी समय बाहर पेड़ के नीचे चार व्यक्ति आकर बैठ जाते हैं-एक अधेड़ पुरुष उससे जरा बड़ी उमग्र की एक स्त्री, एक जवान लड़की एवं एक दुबला-सा लड़का। स्त्री उसकी विधवा भाभी है एवं दोनों बच्चे उसके भाई के बच्चे हैं। ये सब

पाकिस्तान में सताए हुए हिन्दुओं में से हैं तथा सरकार से जमीन चाहते हैं। इसी से कचहरी अदालत के चक्कर लगा रहे हैं तथा आज मौत के किनारे पहुँच गये हैं। इस हद तक कि जिन्दगी से मौत को ज्यादा अच्छा समझने लगे हैं।

यह अधेड़ व्यक्ति ही हमारा चरितनायक बारह सौ छब्बीस बटा सात है। वह पहले तो पेड के नीचे पगड़ी बिछाकर टाँगे फैलाकर बैठ जाता है तथा वहीं अपनी भौजाई एवं बच्चों को बैठा देता है। थोड़ी देर बाद वह अपने घुटनों पर हाथ मार-मार बकने लगता है और सरकारी कर्मचारियों को सरकार की कार्य-पद्धति को गालियाँ देने लगता है-

"सरकार वक्त ले रही है। दस-पाँच चाल में सरकार फैसला करेगी कि अर्जी मंजूर होनी चाहिए या नहीं। सालो, यमराज भी तो हमारा वक्त गिन रहा है। उधर व हमारा वक्त पूरा करेगा और उधर तुम कहना कि अर्जी पास हो गई है।"

वह व्यक्ति बराबर व्याख्यान देता रहता है या यों कहें कि अपने बुरे हाल को लक्ष्य करके चाहे जो कुछ बकता रहता है। उसका कहना है कि सात साल की जी तोड़ कोशिशों के बाद उसको सरकार ने जमीन के नाम पर सौ मरले का गड्ढा दिया है। वह इस गड्ढे का क्या करे ? जमीन मिलती तो काम चलता। इसी बात की अर्जी दे रखी है। मगर अर्जी दो साल से दे रखी है। मैं भूखा मर रहा हूँ एवं सरकार की भाषा में 'अर्जी' वक्त ले रही है। चपरासी आकर उससे कहता है कि वह वहाँ शोर न करे, वहाँ से हट जाए। वह व्यक्ति कहता है कि वह नहीं हटेगा। वह बेलाज बादशाह है, उसे कोई शरम हया नहीं रह गई है। वह अपनी भाभी तथा बच्चों की तरफ इशारा करते हुए कहता है कि ये भी मेरी तरह लज्जा रहित बादशाह है एवं इसी सिलसिले में वह चपरासी को 'कुत्ता साला' कह देता है। गाली सुनकर चपरासी को क्रोध आ जाता है तथा वह अपने जूते की ठोकर उस व्यक्ति को मार देता है। बाबू लोग उस चपरासी को पकड़ कर एक ओर कर देते है।

बारह सौ छब्बीस बटा सात नाम का वह व्यक्ति बराबर बड़बड़ाता रहता है। उसका कहना है कि सब सरकारी कर्मचारी सरकार के कुत्ते हैं जो हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हैं तथा सरकार की तरफ से भौंकते हैं। मैं भी कुत्ता हूँ-परन्तु परमात्मा का कुत्ता जो परमात्मा की हवा खाकर जीता है और उसकी तरफ से भौंकता है। अब उसने प्रण कर लिया है कि वह परमात्मा के नाम पर बराबर भौंकता रहेगा तथा भौंक-भौंक कर इन समस्त कर्मचारियों के कान के पर्दे फाड़ देगा आदि।

बाबू लोग उसे समझाने का प्रयास करते हैं, उसको आश्वासन देते हैं कि वह अपना केस बता दे, वे उसका काम कर देंगे। लेकिन वह विश्वास नहीं करता है एवं न भौंकना बन्द करता है। इससे सभी लोग निराश होकर एक-एक करके अन्दर लौटने लगते हैं

"बैठा है बैठा रहने दो।"

"बकता है, बकने दो।"

"साला बदमाशी से काम निकलवाना चाहता है।"

वहाँ एकत्र भीड़ के कुछ लोग भी उसको समझाते हैं कि यहाँ इस तरह नहीं खातिर खुशामद से काम चलता है। लेकिन वह नहीं मानता है। उसका कहना है कि वह या तो आज ही अपना काम कराएगा अन्यथा वाह गुरु के नाम पर अपने प्राण दे देगा।

सरकारी माहौल की तरह-तरह से कोसता हुआ वह कहता है-

"शरम उसे होती है जो इन्सान हो। मैं तो आप कहता हूँ कि मैं इन्सान नहीं, कुत्ता हूँ।"

एकाएक कमिश्नर बाहर आ जाते हैं तथा उसके पास आकर पूछते हैं-

"क्या बात है? क्या चाहते हो तुम ?"

वह व्यक्ति उसी अपने लहजे में कमिश्नर साहब को भी जवाब देता रहता है-

"मेरा केस मेरे पास नहीं है साहब ! दो साल से सरकार के पास है, आपके पास है।

मेरे पास अपना शरीर और दो कपड़े हैं। चार दिन बाद ये भी नहीं रहेंगे, इसलिए इन्हें आज

उतारे दे रहा हूँ। इसके बाद बारह सौ छब्बीस बटा सात रह जाएगा। बारह सौ छब्बीस बटा

सात परमात्मा के हुजूर में भेज दिया जाएगा।"

कमिश्नर साहब उसको डाट-डपट कर अपने साथ अपने कमरे में ले जाते हैं। आधे घण्टे के बाद वह मुस्कराता हुआ बाहर आता है। उसका काम हो जाता है। वह अपनी भाभी तथा बच्चों के साथ बादशाह की तरह सड़क पर चलने लगता है। वह रुक कर हँसता है एवं चिल्लाकर कहता है-

"यारो, बेहयाई हजार बरकत है।"

बारह सौ छब्बीस बटा सात नाम के हमारे चरित नायक का कहना है-
"चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता। भौको, भौंको सब के सब भौंको । अपने आप सालों के कानों के परदे फट जाएंगे। भौको कुत्तों, भौंको ।"
लेकिन सब लोग बेहियाई का आसरा नहीं ले सकते हैं। कमिश्नर साहब की अदालत का
और उसके कम्पाउण्ड का काम उसी रफ्तार से फिर चलने लगता है, चल रहा है तथा चलता रहेगा।
बारह सौ छब्बीस बटा सात की भाँति जो परमात्मा का कुत्ता बनेगा, उसका काम हो जायेगा।
इस कहानी में मोहन राकेश की सूक्ष्म निरीक्षण से पूर्ण वर्णन-शैली अपने पूरे निखार पर दिखाई देती है। एक व्यक्ति के नाम पर लेखक ने समाज की सड़ी-गली तथा शोषण करने वाली व्यवस्था का साकार कर दिया है।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 कहानी-तत्वों के आधार पर 'परमात्मा का कुत्ता' नामक कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

10.7 परमात्मा का कुत्ता कहानी की समीक्षा

"परमात्मा का कुत्ता" मोहन राकेश की एक बेहद प्रभावशाली और विचारणीय कहानी है, जो मानवता, समाज की संवेदनहीनता और व्यक्ति की आंतरिक संघर्षों को उजागर करती है। यह कहानी न केवल सामाजिक आलोचना करती है, बल्कि यह पाठकों को अपने आचरण, रिश्तों और नैतिक मूल्यों पर पुनः सोचने के लिए प्रेरित करती है।

"परमात्मा का कुत्ता" समाज की संवेदनहीनता और अन्याय के खिलाफ एक मजबूत टिप्पणी है। कुत्ते का पात्र सिर्फ एक जानवर नहीं है, बल्कि वह उन कमजोर और उपेक्षित वर्गों का प्रतीक है जिन्हें समाज में कोई स्थान नहीं मिलता।

कहानी के माध्यम से लेखक ने यह दिखाया है कि कैसे कमजोर और निरीह प्राणियों (और यहां तक कि इंसानों) के प्रति हमारी संवेदनाएँ गायब होती जा रही हैं। परमात्मा का कुत्ता, अपनी अस्तित्व की तलाश में संघर्ष करता है, जबकि मनुष्य, जो उसे दया और सहानुभूति का पात्र मान सकता था, उसे उपेक्षित करता है। यही असमानता और विडंबना कहानी का केंद्रीय विषय है। कुत्ता और परमात्मा के पात्रों के माध्यम से मोहन राकेश ने बहुत प्रभावी तरीके से मानवता, स्वार्थ, और संवेदनहीनता को प्रस्तुत किया है। परमात्मा, जो कुत्ते को एक शरणार्थी और दया का पात्र मानने के बजाय उसे एक बोझ मानता है, समाज के आत्मकेंद्रित दृष्टिकोण का प्रतीक बन जाता है। वहीं, कुत्ता, जो अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, एक प्रतीक बन जाता है उन सभी जीवों का जो समाज में अवहेलना का शिकार हैं। अन्य पात्रों का भी चरित्र समाज की उपेक्षा और उनकी निष्ठुरता को दर्शाता है। ये पात्र समाज की खोखली, दिखावटी प्रकृति को उजागर करते हैं। मोहन राकेश की लेखन शैली सरल, लेकिन गहरी है। उन्होंने प्रतीकात्मकता और व्यंग्य का बहुत प्रभावी तरीके से इस्तेमाल किया है। कहानी के कथ्य में भाषा की सादगी और भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति है। राकेश ने कुत्ते और परमात्मा के माध्यम से समाज की गहरी आलोचना की है, जो अक्सर कमजोर और असहाय वर्ग के प्रति संवेदनशील नहीं होता। राकेश की कहानी में संवेदनाओं का दबाव और समाज की विडंबनाओं को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। उनके शब्दों में गहरी सच्चाई है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देती है। कहानी का सबसे बड़ा संदेश है कि हम अपने स्वार्थ और आदतों में इतने उलझे हुए हैं कि हमें दूसरों की पीड़ा और समस्याओं का अहसास ही नहीं होता। कुत्ते को उपेक्षित करना और उसे बिना सहानुभूति के छोड़ देना समाज की इसी मानसिकता को दर्शाता है। यह केवल एक जानवर की उपेक्षा नहीं, बल्कि समाज के कमजोर और निर्धन वर्गों की अनदेखी का प्रतीक है। मोहन राकेश इस कहानी के माध्यम से यह बताने की कोशिश करते हैं कि एक संवेदनशील समाज में हर जीव, चाहे वह इंसान हो या जानवर, को सम्मान और देखभाल का हक है। "परमात्मा का कुत्ता" सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि समाज की संवेदनहीनता और खोखलेपन पर एक गहरी और तीखी टिप्पणी है। यह कहानी पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने जीवन में सच्ची मानवता और संवेदनाओं को स्थान

दे रहे हैं, या फिर हम भी उसी समाज का हिस्सा बन गए हैं जो केवल अपने स्वार्थ में जीता है। मोहन राकेश ने इस रचना के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि साहित्य समाज की आलोचना करने का एक सशक्त माध्यम हो सकता है।

10.8 सार- संक्षेप

परमात्मा का कुत्ता कहानी मोहन राकेश द्वारा लिखी गई कहानी है। इस कहानी में लेखक ने भारत पाकिस्तान विभाजन के समय भारत में आने वाले एक परिवार के दुख एवं दुर्दशा का वर्णन किया है।

जब आजादी के बाद भारत और पाकिस्तान का विभाजन हुआ तो एक परिवार पाकिस्तान से भारत आया था। भारत आने के बाद सरकार पुनर्वासन के लिए परिवार को खेती करने के लिए भूमि तो दिए दी गई लेकिन सरकारी कर्मचारियों की भ्रष्टाचार के कारण परिवार को जो भूमि मिली वह खेती करने योग्य नहीं थी।

इस भूमि को बदलने के लिए सरकारी कार्यालय में परिवार द्वारा अनेक बार आवेदन करने के बावजूद जब 2 साल कोई परिणाम नहीं मिला तब परिवार का सबसे प्रमुख व्यक्ति अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ कुछ सरकारी कार्यालय में बड़े अफसर से मिलने स्वयं आता है और स्वयं को कुत्ता के प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग करता है। तब जाकर उसकी बात पर सुनवाई होती है और उसकी फाइल निकाल उसकी समस्या का हल होता है।

लेखक ने कुत्ते को प्रतीक बनाकर सरकारी भ्रष्टाचार पर व्यंग्य कसा है कुत्ता तभी भौंकता है जब वह अस्वाभाविक स्थिति को सामने पता है। यहां पर कहानी में भी कहानी का नायक सरकारी भ्रष्टाचार के कारण स्वयं को अस्वाभाविक परिस्थितियों में घिरा हुआ पा रहा है इसीलिए उसने स्वयं को परमात्मा का कुत्ता व्यक्त किया है।

10.9 मुख्य शब्द

1. **मोहन राकेश** - एक प्रसिद्ध हिंदी लेखक और नाटककार, जिनकी कहानियाँ और नाटक समाज और मानवीय संवेदनाओं की गहरी पड़ताल करते हैं।

2. **परमात्मा का कुत्ता** - मोहन राकेश की एक प्रमुख कहानी, जिसमें धर्म, अस्तित्व और मानसिक द्वंद्व को प्रमुखता से दर्शाया गया है।
3. **धर्म और विश्वास** - धार्मिक अवधारणाओं और विश्वासों की व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव डालने वाली अवधारणाएँ।
4. **मानसिक संघर्ष** - व्यक्ति का आंतरिक द्वंद्व, जिसमें वह अपने जीवन के उद्देश्य और अस्तित्व को लेकर उलझन में होता है।
5. **तत्त्वविचार** - जीवन के मूलभूत सवालों पर विचार, जैसे अस्तित्व, उद्देश्य, और धर्म।

10.10 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

1 कहानी-तत्वों के आधार पर 'परमात्मा का कुत्ता' नामक कहानी का मूल्यांकन:- मोहन राकेश की कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' कथा-रस अनुभव कराने वाली कहानी नहीं है। यह कहानी उस 'नई कहानी' का प्रतिनिधित्व करती है, तो जीवन के किसी एक अंश, किसी एक घटना, भाव या अनुभूति को रूपायित करती है। 'परमात्मा का कुत्ता' वर्तमान शासन-व्यवस्था शासन-तंत्र के प्रति एक साधारण व्यक्ति के आक्रोश की क्षोभभरी अभिव्यक्ति है। यह व्यंग्य है, जो हमारी चेतना को जाग्रत कर हमको विद्रोह के लिए विवश करती है।

यह कहानी इस देश के उस साधारण जन की कहानी है, जिसका नाम, जिसका परिचय जिसका व्यक्तित्व सब कुछ सरकारी दफ्तरों के फाइली मायाजाल में खो जाता है। वह फाइलों में 'बारह सौ छब्बीस बटा सात' बनकर रह जाता है। वह अधेड़ आदमी था। वह देश के विभाजन की त्रासदी का शिकार एक विस्थापित है। उसे जमीन के नाम पर सौ मरले का एक गड्ढा एलाट किया गया है। इस गड्ढे के स्थान पर दूसरी जमीन देने के लिए उसने अर्जी दी है। लेकिन दो साल से उसकी अर्जी दफ्तर के दो कमरे भी पार नहीं कर पाई है। यह गड्ढा भी उसे सात साल के बाद मिला है। उसके साथ भाई की विधवा है, उस भाई की जिसे पाकिस्तान में टांगों से पकड़कर चीरा गया था। उस भाई का एक लड़का है जिसे तपेदिक हो गई है। एक लड़की है, जो सयानी हो गयी है। उसकी बहन पाकिस्तान में ही रह गयी है।

एक दिन वह इन सबके साथ कार्यालय पहुंच जाता है। कार्यालय के कंपाउंड में अपनी पगड़ी बिछाकर हाथ को पीछे करके और टांगें फैलाकर बैठ जाता है। वह अपने को 'परमात्मा का कुत्ता' घोषित कर दफ्तर के बाबुओं को 'कुत्ता' मानकर उन पर भौंकता है। उनको गालियां देता है, उनके तंत्र पर प्रहार करता है। कमिश्नर के सामने भी उसका भौकना जारी रहता है। फिर उसकी अर्जी मंजूर हो जाती है। वह बाहर निकलकर जोर से हंसता है तथा कहता है-"यारो, बेहयाई हजार बरकत है।"

इससे स्पष्ट है कि कथाकार का उद्देश्य कोई कहानी कहना नहीं है। इसलिए इसमें कथावस्तु सूक्ष्म रूप में है। इसमें विस्तार या फैलाव नहीं है। इसमें कोई उतार-चढ़ाव या नाटकीयता नहीं है।

'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का मूल उद्देश्य तो शासन-तंत्र में दबते-पिसते, उसके शिकार साधारण जन की स्थिति का दिग्दर्शन कराना मात्र है। इसलिए कहानी में प्रारंभ से लेकर अंत तक शासन-तंत्र व उसके पुर्जों पर कटु-प्रहार किए गए हैं।

वह बारह सौ छब्बीस बटा सात अपने को 'परमात्मा का कुत्ता' मानता है तथा कहता है-"तुम कुत्ते हो और मैं भी कुत्ता हूं। फर्क सिर्फ इतना है कि तुम सरकार के कुत्ते हो। हम लोगों की हड्डियां चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो।"

वह घृणा के स्वर में कहता है-

"-आदमी के कुत्ते, जूठी हड्डी पर मरने वाले कुत्ते, दुम हिला हिलाकर जीने वाले कुत्ते ।"

"-सालों ने सारी पढ़ाई करके दो लफ्ज ईजाद किये है-शायद तथा तकरीबन । शायद आपके पत्र ऊपर चले गये हैं-तकरीबन तकरीबन कार्यवाही पूरी हो गयी है। शायद से निकालो तो तकरीबन में डाल दो और तकरीबन से निकालो तो शायद में गर्त कर दो। तकरीबन तीन-चार महीने में तहकीकात होगी शायद महीने दो महीने में रिपोर्ट आएगी।"

कहानीकार के अनुसार शासन की व्यवस्था से, उसके तंत्र से लड़ने के लिए इस स्वतंत्र देश के सामान्य आदमी को 'कुत्ता' बनना होगा। परमात्मा का कुत्ता बनकर सरकार के कुत्तों पर भौकना होगा-"तुम पर भौंकना मेरा फर्ज है। चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता। भौंको । कुत्तो भौंको, सबके सब भौंको ।"

'परमात्मा का कुत्ता' में व्यवस्था के प्रति जो आक्रोश है, वह साधारण जन का वह आक्रोश नहीं है, जो संघर्ष से पैदा होता है जिसमें परिस्थितियों से लड़ने की जिजीविषा होती है। 'परमात्मा का कुत्ता' में 'बारह सौ छब्बीस बटा सात' का आक्रोश क्रोध के स्थान पर करुणा को उत्पन्न करता है। यह हारे हुए साधारण आदमी की हारी हुई लड़ाई है क्योंकि इस लड़ाई में विजेता संघर्ष से विजय प्राप्त नहीं करता, बल्कि अपनी 'बेहयाई' से फतह करता है। शासन-व्यवस्था तथा दफ्तरी-तंत्र से लड़ने के लिए यह एक तरीका हो सकता है, लेकिन कितने लोग 'कुत्ता' बन सकते हैं, 'कुत्ता बनकर भाँक सकते हैं। वस्तुतः कहानीकार का उद्देश्य किसी क्रांति का संदेश देना भी नहीं है। वह तो उस स्थिति को प्रस्तुत करता है, साधारण जन की उस विवशता को, उस आक्रोश को अभिव्यक्त करता है, जिसमे 'कुत्तों' से निपटने के लिए मनुष्य को 'कुत्ता' बनना पड़ता है। वह मनुष्य की उस लड़ाई को चित्रित करता है, जहां मनुष्य 'मनुष्य' रहकर अपनी लड़ाई नहीं लड़ पाता ।

कथाकार मोहन राकेश का अपने आस-पास की चीजों को देखने का अपना एक नजरिया है। यह नजरिया सामाजिकता तथा वैयक्तिकता से प्रतिबद्ध है। 'परमात्मा का कुत्ता' में उसकी प्रतिबद्धता व्यवस्था से लड़ रहे साधारण जन की लड़ाई से है। मोहन राकेश की यह कहानी सपाट रूप से वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है। पृष्ठभूमि के चित्रण में उसकी शैली चित्रात्मक है। भाषा में आवेश है, प्रवाह है। 'परमात्मा का कुत्ता' शिल्प की दृष्टि से 'कहानी' और 'रेखाचित्र' के बीच की सीमारेखा को मिटा देती है। मोहन राकेश ने कहानी की मूल संवेदना को उभारने के लिए ऐसे भाव-चित्र प्रस्तुत किये हैं, जो असामान्य होते हुए भी सामान्य हैं, असाधारण होते हुए भी साधारण हैं। जहां आवश्यकता है, वहां पृष्ठभूमि का भी चित्रण है, पर कहीं कुछ भी अनावश्यक नहीं है। ये चित्र मानव की पीड़ाओं को गहराई से उभारते हैं। मोहन राकेश की भाषा-शैली सरल है। उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी किसी भी भाषा से उनको परहेज नहीं है। मोहन राकेश उद्देश्य की पूर्ति में कहानी को फलागम की ओर ले जाते हुए आहिस्ता-आहिस्ता से उसका वेग कम कर देते हैं। 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में यही रूप दृष्टिगोचर होता है।

10.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राकेश, एम. (2017)। *आप परमात्मा की तलाश कर रहे हैं। हिंदी कहानियों का इतिहास* (पृ. 102-107) में। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

2. राकेश, एम. (2020)। *मोहन राकेश की चुनिंदा कहानियाँ।* नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.

10.12 अभ्यास प्रश्न

1. कहानी का मुख्य संदेश क्या है?
2. परमात्मा का कुत्ता शीर्षक का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?
3. कुत्ते का किरदार कहानी में क्या दर्शाता है?
4. कहानी में व्यंग्य का उपयोग कैसे किया गया है?
5. धार्मिक और सामाजिक पाखंड पर कहानी की टिप्पणी क्या है?

ब्लॉक - IV

इकाई- 11

अमरकान्त-जिन्दगी और जोंक

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
11.4 जिन्दगी और जोंक कहानी का मुल पाठ विवेचन
11.5 जिन्दगी और जोंक कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
11.6 जिन्दगी और जोंक कहानी की समीक्षा
11.7 सार- संक्षेप
11.8 मुख्य शब्द
11.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
11.10 अभ्यास प्रश्न
11.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

11.1 प्रस्तावना:-

अमरकान्त की कहानी "जिन्दगी और जोंक" एक संवेदनशील और गहरे सामाजिक दृष्टिकोण वाली रचना है, जो मनुष्य के अस्तित्व, संघर्ष, और समाज की जटिलताओं पर आधारित है। इस कहानी का माध्यम हमें जीवन के वास्तविक पहलुओं और उस पर छाई हुई निराशा के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। अमरकान्त की लेखनी की विशेषता है कि वे अपनी कहानियों में मानवीय भावनाओं और रिश्तों के गहरे आयामों को उजागर करते हैं। कहानी **"जिन्दगी और जोंक"** में अमरकान्त ने जीवन के संघर्षों को बहुत सूक्ष्मता से चित्रित किया है, जहां पात्र अपनी परिस्थितियों से जूझते हुए जीवन की असल सच्चाइयों का सामना करते हैं। जोंक का प्रतीक एक ऐसे दुखद और निरंतर बने रहने वाले अनुभव के रूप में लिया जा सकता है, जो जीवन में किसी न किसी रूप में चिपका रहता है और व्यक्ति को उसकी पूरी ताकत और ऊर्जा का शोषण करता है। इस कहानी में "जिन्दगी" को एक जोंक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो निरंतर व्यक्ति के अस्तित्व को खींचती है, उसे थकाती है, और उसकी पूरी ऊर्जा

निचोड़ लेती है। यह कहानी उन लोगों के जीवन को दर्शाती है, जो समय और हालात के कठोर दबाव में जीवन जी रहे होते हैं और वे जोंक की तरह चिपकी परिस्थितियों से मुक्त नहीं हो पाते। "जिन्दगी और जोंक" हमें यह सिखाती है कि जीवन के संघर्षों और चुनौतियों से बचने का कोई रास्ता नहीं है। हमें यह स्वीकार करना होता है कि जोंक की तरह चिपके दुख और पीड़ा हमारे जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। यही हमारे अस्तित्व का सत्य है। अमरकान्त ने इस कहानी के माध्यम से यह भी दिखाया है कि किसी भी व्यक्ति की जिंदगी में अंधकार और मुश्किलें आती हैं, लेकिन ये कठिनाइयाँ उसे परिपक्व और जीवन के वास्तविक उद्देश्य के करीब ले जाती हैं। कहानी में जिन्दगी और जोंक के बीच का अंतर भी महसूस कराया गया है, जहाँ जोंक एक शारीरिक प्रतीक बनता है जबकि जिन्दगी मानसिक और भावनात्मक स्तर पर एक व्यक्ति की आत्मा पर जोंक की तरह चिपकती रहती है। यह कहानी एक गहरे अवसाद और मानसिक संघर्ष को प्रकट करती है, जो समाज में दबे-कुचले वर्गों और लोगों की स्थिति को चित्रित करती है।

11.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम हो सकेंगे:

1. अमरकांत की कहानी "जिन्दगी और जोंक" का सार समझ सकेंगे।
2. कहानी में पात्रों के मनोविज्ञान और उनके संघर्ष को पहचान सकेंगे।
3. समाज में भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच संघर्ष और पीड़ा को समझ सकेंगे।
4. कहानी के माध्यम से लेखक द्वारा व्यक्त की गई सामाजिक और मानसिक विषमताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
5. अमरकांत की लेखनी और उनकी विचारधारा को समझ सकेंगे।

11.3 लेखक का संक्षिप्त परिचय

अमरकान्त (1925-2005) हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार और उपन्यासकार थे। वे हिंदी साहित्य में "नई कहानी" आंदोलन के महत्वपूर्ण लेखक माने जाते हैं और उनकी रचनाएँ समाज और मनुष्य की जटिलताओं को सरलता से व्यक्त

करने के लिए प्रसिद्ध हैं। अमरकान्त का लेखन मुख्य रूप से सामाजिक यथार्थवाद और मानव मनोविज्ञान पर आधारित है।

जीवन परिचय

जन्म: अमरकान्त का जन्म 26 अगस्त 1925 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव में हुआ था।

शिक्षा: उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में प्राप्त की और फिर अलीगढ़ विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की।

कैरियर: अमरकान्त ने कई वर्षों तक शिक्षण और संपादन कार्य किया। इसके अलावा वे साहित्यिक पत्रिकाओं में भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

साहित्यिक योगदान

अमरकान्त की रचनाएँ हिंदी साहित्य में गहरी सामाजिक और मानसिक अंतर्दृष्टि को उजागर करती हैं। उनके लेखन में व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्षों, मानव प्रवृत्तियों और समाज में व्याप्त विसंगतियों का प्रभावी चित्रण है। वे उन लेखकों में से थे, जिन्होंने कहानी और उपन्यास के माध्यम से जीवन के कठिन पहलुओं को व्यक्त किया।

मुख्य रचनाएँ

1. कहानी संग्रह:

"जिन्दगी और जोंक"

"लौट आओ"

"मधुर मिलन"

"तुम ही तो हो"

2. उपन्यास:

"कई परतों वाला जीवन"

"नदी के द्वार"

"ग़रीबी और प्रेम"

3. नाटक:

"कोई साँच नहीं"

"उतरन"

विशेषताएँ

अमरकान्त की रचनाओं में सामाजिक आलोचना और सामाजिक यथार्थ को प्रमुखता दी जाती है। उन्होंने मध्यमवर्गीय जीवन, विवाह, रिश्तों की जटिलताएँ, और गरीबी जैसे मुद्दों पर भी अपनी रचनाएँ लिखी।

उनका लेखन अक्सर मनुष्य की आत्मा और उसके भीतर के संघर्षों को उजागर करने के लिए जाना जाता है। उनकी कहानियों में मनुष्य की कमजोरियाँ और विवशताएँ दिखती हैं, जो समाज के व्याप्त संकटों से जुड़ी होती हैं।

साहित्यिक दृष्टिकोण

अमरकान्त ने अपनी कहानियों में नई कहानी आंदोलन की विचारधारा को आत्मसात किया और पुरानी कहानी की शैली से हटकर यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया। उनकी रचनाएँ कहीं न कहीं मनुष्य के संघर्ष और जीवन के प्रति निराशा का चित्रण करती हैं। वे ऐसे लेखक थे, जिन्होंने न केवल सामाजिक असमानता को उजागर किया, बल्कि उन बुराइयों के खिलाफ भी आवाज़ उठाई, जो समाज के हर स्तर पर व्याप्त थीं।

सम्मान और पुरस्कार

अमरकान्त को उनके साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें साहित्य अकादमी पुरस्कार और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार शामिल हैं।

अमरकान्त हिंदी साहित्य के उन महान लेखकों में से एक थे जिन्होंने समाज की वास्तविकताओं को प्रभावी रूप से चित्रित किया। उनकी रचनाएँ आज भी सामाजिक और मानसिक परिस्थितियों पर गहरी सोच पैदा करती हैं और मानवीय संघर्षों की सच्चाई को सामने लाती हैं। "जिन्दगी और जोंक" जैसी कहानियाँ उनकी इस विशेषता का उदाहरण हैं, जो जीवन के कठिन और त्रासदीपूर्ण पहलुओं को सटीक तरीके से प्रस्तुत करती हैं।

11.4 जिन्दगी और जोंक कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) "गोली मारिये साहब, आखिर कोई कहाँ तक करे? अब साले को खुजली हुई है। जहाँ जाता है, खुजलाने लगता है। कौन उससे काम कराये। किर काप भी तो यह नहीं कर सकता। साहब, अभी दो-तीन रोज की बात है, मैंने कहा एक गगरा पानी ला दो। गया जरूर लेकिन कुएं से उत्तरते समय गिर गये बच्चू । पानी तो

खराब हुआ है। गगरा भी टूट पिचक गया। मैंने तो साफ-साफ कह दिया कि मेरे घर के अन्दर पैर न रखना, नहीं तो पैर तोड़ दूंगा। गरीबों को देखकर मुझे भी दया-माथा सताती है, पर आपना भी तो देखना है।"

सन्दर्भ- प्रस्तुत्त अवतरण अमरकान्त की कहानी 'जिन्दगी और ओक' से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्तियों में कहानीकार ने समाज के तथाकथित बड़े तथा धर्मात्मा लोगों की मनोवृत्ति की सीनता प्रदर्शित की है। रजुआ जब रोटी की तलाश में पहली बार शहर में आया था, तो शिवनाय बाबू ने उस पर चोरी का निराधार आरोप लगाकर उसकी अच्छी मरम्मत करवायी थी। उसके बाद अपना स्वार्थ सिद्ध होते देख उसने रजुआ को अपने घर ही नौकरी पर रख लिया था। लेकिन रजुआ गाँव भर का नौकर था। वह किसी को अगर काम करने से इंकार करता तो उसकी खूब पिटायी होती। ऐसे अवसरों पर कुशल नीतिज्ञ की भाँति शिवनाथ बाबू चुप्पी साध लेते। लेकिन गाँव भर की चाकरी करने के बाद भी रजुआ को आधी रोटी मिलती, वह भी सूखी तथा बासी। कुछ समय बाद रजुआ को हैजा हो गया। वह कमजोर तो पहले ही हो चुका था। इसलिए उससे काम न निकलता देख एवं संक्रामक बीमारी से ग्रस्त देख शिवनाथ बाबू ने रजुआ से चेतावनी भरे शब्दों में घर में पैर भी रखने की मनाही कर दी थी। कहानीकार से भेंट होने पर वह अपने पक्ष को स्पष्ट कर रहे हैं।

व्याख्या- शिवनाथ बाबू कहते हैं कि उसने रजुआ को घर में पैर तक रखने से मना कर दिया है क्योंकि उसे खुजली हो गई एवं वह काम करने में भी अशक्त हो चुका है। एक दिन उसने उसे जब पानी लाने को कहा तो वह गगरा सहित गिर पड़ा। कमजोरी के कारण वह गगरा उठा नहीं सकता था। गगरा भी पिचका दिया था उसने। तभी उन्होंने तंग आकर उसे अपने यहाँ नहीं आने की बात कह दी। शिवनाथ बाबू अपने को दयालु भी सिद्ध करते हैं, क्योंकि समाज में धर्मात्मा के रूप में प्रतिष्ठित हो जाने पर उसके हजार खून माफ हो जाया करते हैं। लेकिन शिवनाथ बाबू स्पष्ट कर देते हैं कि उसका भी अपना परिवार है। वह गरीबों के पीछे अपनी सम्पत्ति चुरा तो नहीं सकते। दया तो उसे भी आती है लेकिन लाचारी है।

विशेष- (1) स्पष्ट है कि कहानीकार ने शिवनाथ बाबू जैसे तथाकथित उदार मन व्यक्ति की वास्तविक स्थिति को प्रभावी ढंग से स्पवष्ट कर दिया है।

(2) कहानीकार की उक्त पंक्तियों में यह व्यंग्य छिपा है कि समाज का सम्भ्रान्त वर्ग गरीब तथा लाचार का खून चूस कर भी अपनी थैली भरने में शर्म का अनुभव नहीं करता।

(3) समाज की क्षुद्र स्वार्थी प्रवृत्ति पर प्रबल आघात किया गया है।

(4) भाषा सरल पर अभिव्यक्ति की सशक्त भंगिमा से सम्पन्न है

11.5 जिन्दगी और जोंक कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

1. अमरकान्त:

दयालु और संवेदनशील: अमरकान्त एक दयालु और संवेदनशील व्यक्ति हैं, जो समाज के कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति रखते हैं।

त्याग और सेवा भाव: अमरकान्त का जीवन त्याग और सेवा की भावना से प्रेरित है। वह अपने खुद के आराम और सुख की परवाह किए बिना दूसरों की मदद करते हैं।

संघर्षशील: अमरकान्त का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है, लेकिन वह हमेशा सच्चाई और न्याय के पक्ष में खड़े रहते हैं।

2 गोपाल उर्फ रजुआ:-

रजुआ जाति का बरई, रामपुर का रहने वाला अब बलिया में रहता है। उसका पिता और दो बहनें टाउन में मर गए थे। वह दरिद्रता का कोई संबंधी जान पड़ता है क्योंकि पूरे पाठ में उसे परजीवी के रूप में दिखाया गया है। उसमें साहस अदम्य है तभी तो तीन बार मौत उसको निगलने आती है पर वह मौत को भी मात दे देता है। बदले की भावना भी उसमें इतनी है कि वह बरन की बहू के कोढ़ फूटे इसलिए वह अपनी दाढ़ी नहीं कटवाता। प्रवचन देने की कला में भी उसकी कुशलता साफ नज़र आती है जब वह महात्मा गाँधी और बजरंगबली के किस्से सुनाता। इसलिए लोग उसे रजुआ भगत कहने लगे थे। इस तरह बहुव्यक्तित्व का स्वामी रजुआ इस कहानी का मुख्य पात्र है।

3 शिवनाथ बाबू:-

कहानी की शुरुआत में ही शिवनाथ बाबू के घर से साड़ी चोरी हो जाने के इल्ज़ाम में रजुआ की पिटाई उनकी ही दया के कारण हो रही थी। ये समाज में सभ्य बनने का ढोंग करते हैं पर वास्तव में कपटी और मौकापरास्त इंसान है। सच

पूछा जाए तो मोहल्ले के प्राय: लोग थोड़े-मोड़े अंशों में शिवनाथ बाबू की तरह ही मतलबी थे। एक निरीह प्राणी रजुआ को बेदर्दी से मार खिलवाते हैं और पीटते हैं और पता चलता है कि साड़ी तो घर पर ही है तो भी क्षमाप्रार्थी न बनकर दया के मूर्ति स्वरूप कहते हैं, "अच्छा, इस बार छोड़ देते हैं। साला काफ़ी पा चुका है, आइंदा ऐसा करते चेतेगा।"

4 बरन की बहू:-

रजुआ ने बरन की बहू को बुआ बना लिया था और दो-चार आने जो कुछ कमाता, वह अपनी 'बुआ' के यहाँ जमा करता जाता। इस तरह जमा करते-करते दस रुपए तक इकट्ठे हो गए हैं। एक बार उसने बरन की बहू से रजुआ ने अपने रुपए माँगे तो वह इनकार कर गई कि उसके पास रजुआ की एक पाई भी नहीं। रजुआ के दिल को इतनी चोट लगी कि उसने दाढ़ी रख ली। वह कहता है कि जब तक बरन की बहू को कोढ़ न फूटेगा, वह दाढ़ी न मुड़ाएगा। इसी काम के लिए वह शनीचरी देवी पर रोज़ जल भी चढ़ाता है।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 शिवनाथ बाबू के चरित्र चित्रण कीजिए ।

11.6 जिन्दगी और जोंक कहानी की समीक्षा

जिदगी और जॉक' कहानी में जिंदगी के यथार्थ और पात्रों से लेखक की केवल सहानुभूति नहीं, उनके जीने, मरने की मानवीय संवेदना भी है। कथानक मध्यम वर्ग की कुंठा और विवश मनुष्य की वेदना को प्रकाशित करता है। कथानक का उद्देश्य यथार्थ के चित्रण द्वारा दलित मानवता के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करना है।

कथानक - कहानी कथा रामपुर के एक भिखारी रजुआ की है जो खंडहर में आकर पड़ा रहता है। धीरे-धीरे वह गांव के घेरे में प्रवेश पा लेता है। जूठन पर पेट पालने

लगता है। वह घरों के सौदा लाने का काम भी कर देता। उसकी मनस्थिति में परिवर्तन आता है और वह एक पगली को साथ लगा लेता है। गांव की स्त्रियों से बतियाने भी लगता है। रजुआ ताउन-ग्रस्त होता है। वह पूरी तरह जर्जर हो जाता है, परंतु मृत्यु से बच जाता है। जैसे उसका जीवन जोंक बनकर मृत्यु से चिपटा हो। मृत्यु भी उसे हरा नहीं पाती।

कहानीकार ने रजुआ के माध्यम से मनुष्य की परिवर्तित मनःस्थिति को अभिव्यक्त किया है। सभी घटनाएं परस्पर संबद्ध यथार्थ एवं स्वाभाविक हैं। जैसे- रजुआ की पिटाई, रजुआ की दिनचर्या, बीमारी, पगली से संपर्क और जीते रहने के लिए पत्र लिखना आदि ।

चरित्र- इस कहानी में प्रमुख चरित्र 'रजुआ' का है। उसके चरित्र-चित्रण में लेखक ने न तो किसी आदर्श की प्रतिष्ठा की है और न कल्पना या भावुकता का ही समावेश किया है। रजुआ के अतिरिक्त बाबू शिवनाथ, पंसारी पंडित, पगली आदि मध्य वर्ग और निम्न वर्ग से संबंधित है। धनंजय वर्मा ने ठीक ही लिखा है कि, "जिदगी के यथार्थ और पात्रों से लेखक की केवल सहानुभूति नहीं, उनके साथ जीने, मरने की दुर्लभ मानवीय संवेदना है।"

कथोपकथन- कथोपकथन कथा-विकास, चरित्र-विश्लेषण, वातावरण निर्माण में सक्षम हैं। छोटे और बड़े दोनों प्रकार के संवाद है।

उद्देश्य- धनंजय वर्मा लिखते हैं कि, "यह कहानी विषम परिस्थितियों में अपने अस्तित्व को बनाये रखने की लालसा ही व्यक्त करती है। लेकिन अंत तक पहुंचते-पहुंचते सारी कहानी का अर्थ-संदर्भ बदल जाता है-खुल जाता है। अस्तित्व की एक समस्या बन जाती है। जीवन की इतनी लालसा कि जीवन का अर्थ ही समाप्त हो चले और जीवन का इतना दुर्दमनीय बोझ कि सार्थकता ही मिट जाये।" अतः इसमें मध्य वर्ग और निम्न वर्ग का टूटता-कराहता जीवन, वर्ग-वैषम्य, मानवीय विवशताओं और पीड़ाओं का निदर्शन और गांवों से शहर की ओर स्थानांतरित होती हुई मनोवृत्ति का चित्रण है।

वातावरण- यह कहानी उत्तर प्रदेश के बलिया नामक कस्बे से संबंधित है। "उस कस्बे के मुहल्ले खंडहर, स्टेशन और फाटहर नाला आदि के यथार्थ वर्णन वहां के निवासियों की आम स्थिति खान-पान, रहन-सहन, भाषा-बोली आदि ने कहानी को साधारण यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। कहानी पढ़ने से लगता है कि लेखक की

अपनी बातें स्वयं नहीं कहनी पड़ती हैं वरन् वातावरण का निर्माण कहानी में सब कुछ अपने आप कह देता है।"

भाषा-शैली- यह कहानी भाषा-शैली की दृष्टि से भी पूर्ण सफल है। उसमें न कहीं चमत्कृत करने वाले वाक्य, न रहस्यमय तंतुजाल, न चौंका देने वाली बात और न दुर्बोध एवं जटिल प्रतीक । भाषा उतनी ही सधी है जितनी कि वह कहानी। 'शब्दावली प्रायः सरल और वाक्य संक्षिप्त है। स्थानीय शब्द (सत्तू, बरई, चोर, चाई, लफाई आदि) बोल-चाल के अपशब्दों (चूहा, हरामी का पिल्ला, लालची कुत्ता आदि) ने कहानी को यथार्थ बना दिया है। कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्द की शब्दावली का भी प्रयोग हुआ। सूक्तियां और मुहावरे जैसे नीचे और नीबू को दबाने से ही रस निकलता है, 'परक गया', 'नानी याद आना' आदि प्रयोगों के भाषा सरल एवं स्वाभाविक बन गयी है। शैली सरल, सहज और हृदयस्पर्शी है। वर्णन, संवाद, चित्रण और संस्मरण जैसी सरल शैलियों का सीधा-सादा प्रयोग किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन से है कि प्रस्तुत कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मक एवं व्यंजक है। कहानीकार ने स्वयं लिखा है, "चूंकि वह (रजुआ) मरना नहीं चाहता है। इसलिए जोंक (एक कीड़ा) की तरह जिदगी से चिपटा रहा। जिंदगी स्वयं जोक सरीखी उसके चिपटी थी और धीरे-धीरे उसके रक्त कि अंतिम बूंद तक पी गयी।" इस प्रकार 'जिदगी और जोंक' कहानी कला की कसौटी पर खरी उतरती है।

संवाद योजना- 'जिन्दगी और जोंक' कहानी में संवादों की योजना कम ही हुई है पर जो संवाद हैं, वे कथानक के विकास करने एवं पात्रों के चारित्रिक विश्लेषण में पर्याप्त सहायक है, कलात्मक है तथा सटीकता, सरसता एवं संक्षिप्तता के गुणों से युक्त हैं। यहाँ एक उदाहरण दृष्टव्य है-

शाम को दफ्तर से लौटा ही था कि बीबी ने चिन्तातुर स्वर में सूचना दी, "अरे, जानते नहीं, रजुआ को हैजा हो गया है।"

"जिन्दा है या मर गया?" मैंने उदासीन स्वर में पूछा।

मेरी पत्नी ने अफसोस प्रकट करते हुए कहा, "क्या बताये, मेरा दिल छटपटाकर रह गया। वही खण्डहर में पड़ा हुआ है। कै-दस्त से पस्त हो यगा है। लोग बताते हैं कि आध-एक घण्टे में मर जाएगा।""कोई दवा-दारू नहीं हुई?"

"कौन उसका सगा बैठा है जो दवा-दारू करता ?"

नामकरण तथा उद्देश्य- 'जिन्दगी और जोंक' कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मक है। रजुआ लाख विपत्ति सहकर भी जी रहा है और जीना चाहता है। इसलिए लेखक ने उसकी तुलना जोंक से की है जो जिन्दगी से चिपका है। पर यह भी ठीक है कि जिन्दगी ही उसके लिए जोंक है, जो प्रति पल उसका खून चूस रही है। शीर्षक सार्थक तथा संक्षिप्त है। 'जिन्दगी और जोंक' कहानी का उद्देश्य है-मानवीय जिजीविषा के साथ ही समाज की क्षुद्र वृत्तियाँ पर व्यंग्य करना तथा कहानीकार को अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

11.7 सार- संक्षेप

अमरकान्त की कहानी "जिन्दगी और जोंक" एक प्रतीकात्मक रचना है, जो जीवन के निरंतर संघर्षों और पीड़ाओं को उजागर करती है। कहानी का मुख्य प्रतीक "जोंक" है, जो जीवन की समस्याओं और कठिनाइयों का प्रतीक बन जाती है। यह कहानी व्यक्ति की मानसिक थकावट, निराशा, और समाज की उपेक्षा के बारे में है।

कहानी का मुख्य पात्र एक व्यक्ति है, जो जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों से थका हुआ है। उसे लगता है कि जीवन जैसे एक जोंक की तरह उसे चूसता जा रहा है, और उसे कोई राहत नहीं मिल रही। उसकी हालत ऐसी है कि वह अपनी समस्याओं से भागने का कोई रास्ता नहीं पा रहा। जोंक के माध्यम से लेखक जीवन की उन निरंतर परेशानियों को दर्शाते हैं, जो व्यक्ति के अस्तित्व से चिपकी रहती हैं। जोंक का प्रतीक जीवन की निरंतरता और संघर्षों को है, जो व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से थकाते हैं। कहानी में समाज का कोई विशेष चित्रण नहीं है, लेकिन यह दिखाया गया है कि समाज की ओर से किसी भी प्रकार की मदद की उम्मीद नहीं की जा सकती। लोग अपने जीवन में व्यस्त रहते हैं और दूसरों के संघर्षों की ओर कोई ध्यान नहीं देते। इस कहानी में, व्यक्ति के संघर्षों का सबसे बुरा पक्ष उसकी मानसिक स्थिति है, जो उसे निरंतर थका देता है और उसे जीवन की सच्चाइयों से जूझने में कठिनाई होती है। कहानी अंततः जीवन के कष्टों और संघर्षों को सहने की मजबूरी को व्यक्त करती है। जोंक की तरह ये कष्ट व्यक्ति के जीवन में चिपक जाते हैं और व्यक्ति को हर मोड़ पर थकाते हैं, लेकिन वह उनसे छुटकारा पाने में असमर्थ होता है। कहानी में जीवन के निरंतर

संघर्ष और इसके मुकाबले की मानसिक स्थिति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। "जिन्दगी और जोंक" एक ऐसी कहानी है, जो जीवन के निरंतर संघर्षों और मानसिक थकावट को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करती है। यह कहानी जीवन के कठिन सत्य और पीड़ा को उजागर करती है, और यह दिखाती है कि हम चाहे जितना भी संघर्ष करें, जीवन की परेशानियाँ हमेशा हमारे साथ रहती हैं।

11.8 मुख्य शब्द

1. जिन्दगी- जीवन के संघर्ष, कठिनाइयाँ और उन समस्याओं का प्रतीक जो व्यक्ति को निरंतर परेशान करती रहती हैं।
2. जोंक- जीवन की समस्याएँ और कष्ट, जो व्यक्ति से चिपककर उसे मानसिक और शारीरिक रूप से थकाती हैं। यह प्रतीकात्मक रूप से जीवन की निरंतरता और संघर्ष को दर्शाता है।
3. संघर्ष- जीवन के विभिन्न पहलुओं में सामना की जाने वाली कठिनाइयाँ, जो व्यक्ति को अपने अस्तित्व के लिए लड़ने को मजबूर करती हैं।
4. थकावट- मानसिक और शारीरिक रूप से अत्यधिक दबाव और निरंतर संघर्ष के कारण उत्पन्न होने वाली स्थिति।
5. निराशा - जीवन की समस्याओं और संघर्षों के बीच उम्मीद का न होना और व्यक्ति का हताश होना।

11.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

शिवनाथ बाबू के चरित्र चित्रण:-
कहानी की शुरुआत में ही शिवनाथ बाबू के घर से साड़ी चोरी हो जाने के इल्ज़ाम में रजुआ की पिटाई उनकी ही दया के कारण हो रही थी। ये समाज में सभ्य बनने का ढोंग करते हैं पर वास्तव में कपटी और मौकापरास्त इंसान है। सच पूछा जाए तो मोहल्ले के प्राय: लोग थोड़े-मोड़े अंशों में शिवनाथ बाबू की तरह ही मतलबी थे। एक निरीह प्राणी रजुआ को बेदर्दी से मार खिलवाते हैं और पीटते हैं और पता चलता है कि साड़ी तो घर पर ही है तो भी क्षमाप्रार्थी न बनकर दया

के मूर्ति स्वरूप कहते हैं, “अच्छा, इस बार छोड़ देते हैं। साला काफ़ी पा चुका है, आइंदा ऐसा करते चेतेगा।”

11.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अमरकांत, (2017)। *जोंक जिंदाबाद। हिंदी कहानियों का सफर* (पृ. 78-83) में। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. अमरकांत, (2021)। *अमरकांत की चुनिंदा कहानियाँ।* नई दिल्ली: हिंदी ग्रंथ अकादमी।

11.11 अभ्यास प्रश्न

1 रजुआ पिटाई खाने के समय बार-बार “हम बरई है, हम बरई है।” क्यों कह रहा था?

2 शिवनाथ बाबू का चरित्र चित्रण कीजिए।

3 मौत को टालने के लिए रजुआ ने क्या युक्ति अपनाई?

4 लेखक रजुआ से क्यों प्रभावित हो उठा?

5 यह कहानी समाज की किस विसंगति को दर्शाती है?

6 रजुआ ने शपथ तो ली लेकिन गलत दिशा में ऐसा क्यों कहा जाना उचित है?

इकाई- 12

उषा प्रियंवदा-वापसी

12.1 प्रस्तावना
12.2 उद्देश्य
12.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
12.4 वापसी कहानी का मुल पाठ विवेचन
12.5 वापसी कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
12.6 वापसी कहानी की समीक्षा
12.7 सार- संक्षेप
12.8 मुख्य शब्द
12.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
12.10 संदर्भ ग्रंथ सूची
12.11 अभ्यास प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

उषा प्रियंवदा की कहानी "वापसी" हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण और चर्चित कहानी है, जो मानव मनोविज्ञान और पारिवारिक संबंधों के जटिल आयामों को चित्रित करती है। इस कहानी में एक ऐसे व्यक्ति की कथा है, जो अपने जीवन का अधिकांश समय विदेश में काम करके बिताने के बाद, अपने घर और परिवार के पास लौटता है। लेकिन घर लौटने पर उसे अपने सपनों और वास्तविकता के बीच के अंतर का अहसास होता है।

"वापसी" एक साधारण व्यक्ति की असाधारण मनोवैज्ञानिक यात्रा की कहानी है। यह कहानी जीवन की उन सच्चाइयों को उजागर करती है, जिन्हें हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। कहानी का मुख्य पात्र, मोहन, अपनी मेहनत और संघर्ष के माध्यम से अपने परिवार के लिए सुखद भविष्य का सपना देखता है। लेकिन जब वह वर्षों बाद अपने घर लौटता है, तो उसे पता चलता है कि समय ने सब कुछ बदल दिया है। यह कहानी सामाजिक, सांस्कृतिक, और भावनात्मक परिवर्तनों

को व्यक्त करती है। उषा प्रियंवदा ने बड़े ही संवेदनशील और सरल तरीके से यह दिखाया है कि कैसे समय और दूरियाँ पारिवारिक रिश्तों को प्रभावित करती हैं। कहानी पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या 'वापसी' केवल एक भौतिक क्रिया है, या इसके पीछे एक गहरी भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया छिपी होती है। "वापसी" भारतीय समाज की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है, जो आर्थिक मजबूरियों के कारण अपने परिवार से दूर हो जाती है और लौटने पर उसे अस्वीकृति और अपरिचय का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार, "वापसी" केवल एक कहानी नहीं, बल्कि उन अनकही भावनाओं का आईना है, जो किसी के जीवन को अंदर से हिला कर रख देती हैं।

12.2 उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम हो सकेंगे:

1. उषा प्रियंवदा की कहानी "वापसी" का सार समझ सकेंगे।
2. कहानी के प्रमुख पात्रों और उनकी भावनाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
3. पात्रों के जीवन में बदलावों और उनके संघर्षों को पहचान सकेंगे।
4. कहानी में व्यक्त समाजिक और मानसिक समस्याओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
5. उषा प्रियंवदा के लेखन की विशेषताएं और उनके संदेश को समझ सकेंगे।

12.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय

उषा प्रियंवदा हिंदी साहित्य की जानी-मानी लेखिका और उपन्यासकार हैं, जो अपनी सूक्ष्म, संवेदनशील और आधुनिक दृष्टिकोण वाली कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका लेखन शैली सरल, प्रभावशाली और मनोवैज्ञानिक गहराई लिए हुए है।

सक्षिप्त परिचय:-

जन्म और शिक्षा:

उषा प्रियंवदा (जन्म २४ दिसम्बर १९३०) प्रवासी हिंदी साहित्यकार हैं। कानपुर में जन्मी उषा प्रियंवदा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. तथा पी-एच. डी. की पढ़ाई पूरी करने के बाद दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज और

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन किया। इसी समय उन्हें फुलब्राइट स्कॉलरशिप मिली और वे अमरीका चली गईं। अमरीका के ब्लूमिंगटन, इंडियाना में दो वर्ष पोस्ट डॉक्टरल अध्ययन किया और १९६४ में विस्कांसिन विश्वविद्यालय, मैडिसन में दक्षिण एशियाई विभाग में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्य प्रारंभ किया। आजकल वे सेवानिवृत्त होकर लेखन और भ्रमण कर रही हैं। उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में छठे और सातवें दशक के शहरी परिवारों का संवेदनापूर्ण चित्रण मिलता है। उस समय शहरी जीवन में बढ़ती उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का अंकन करने में उन्होंने अत्यंत गहरे यथार्थबोध का परिचय दिया है।

साहित्यिक योगदान:

उषा प्रियंवदा ने कहानियाँ, उपन्यास, और निबंध लिखे हैं। उनकी कहानियों में मुख्यतः मानव संबंधों की जटिलता, स्त्री की भावनात्मक दुनिया, और आधुनिकता तथा परंपरा के बीच का द्वंद्व दर्शाया गया है।

प्रमुख रचनाएँ:

उनकी कुछ प्रसिद्ध कृतियाँ हैं:

1. उपन्यास: पचपन खंभे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, शेष यात्रा
2. कहानी संग्रह: वापसी, जिंदगी और गुलाब के फूल

विशेषताएँ:

उनकी कहानियाँ जीवन के सामान्य और असामान्य पक्षों को इतनी सहजता से उजागर करती हैं कि पाठक उनसे जुड़ाव महसूस करते हैं। वे विशेष रूप से महिलाओं के भावनात्मक और सामाजिक संघर्षों को प्रभावशाली तरीके से चित्रित करती हैं।

पुरस्कार और सम्मान:

उषा प्रियंवदा को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनका लेखन हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रभावी है।

व्यक्तित्व:

उषा प्रियंवदा एक शिक्षाविद् होने के साथ-साथ एक संवेदनशील लेखिका हैं। उनका लेखन आधुनिक और परंपरागत मूल्यों के बीच के संतुलन को बड़े ही संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करता है।

उषा प्रियंवदा की लेखनी हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उनकी कहानी "वापसी"* पाठकों को मानवीय संबंधों और जीवन की वास्तविकताओं से रूबरू कराती है, जो उनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता है।

12.4 वापसी कहानी का मुल पाठ विवेचन

(1) "रोज सुबह पैसेन्जर आने से पहले वह गर्म-गर्म पूरियाँ और जलेबी बनाता था। गजाधर बाबू जब तक उठकर तैयार होते, उनके लिए जलेबियाँ और चाय लाकर रख देता था। चाय भी कितनी बढ़िया, काँच के गिलास में ऊपर तक भरी लबालब पूरे ढाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई। पैसेन्जर भले ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुँचाने कभी देर नहीं व की । क्या मजाल थी कभी उससे कुछ कहना पड़े।"

सन्दर्भ- उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी' से अवतरित इस प्रसंग में गजाधर बाबू अवकाश ग्रहण करके घर आये, उनका घर में बड़ा ही फीका स्वागत हुआ, वे नाश्ते की प्रतीक्षा कर रहे थे, घर की इस उदासीनता ने उनकी स्मृति में उनके चपरासी गनेशी की स्थिति उभार दी।

व्याख्या- गजाधर बाबू जब स्टेशन पर थे तथा गनेशी उनका सहायक था, उस समय वह नित्य ही उन्हें बढ़िया नाश्ता कराया करता था। रोजाना पैसेन्जर आया करती थी, उसके आने से पूर्व ही वह गर्म-गर्म पूरियों तथा जलेबियाँ बनाता था। वे जब तक उठकर तैयार होते, उनके लिए सारा सामान बन जाता था, वह जलेबी चाय आदि लाकर दे देता था। वह चाय भी कितनी बढ़िया होती थी, जिसका कोई हिसाब नहीं। वह भी काँच के गिलास में लाता था, जो उसमें ऊपर तक भरी होती थी एवं जिसमें ढाई चम्मच चीनी भी होती थी, साथ में गाढ़ी मलाई। वह इतना पाबन्द था कि पैसेन्जर भले ही देर से आये लेकिन गनेशी के कमा में कभी भी देर नहीं होती थी। गजाधर बाबू को उससे कुछ नहीं कहना पड़ता था।

विशेष (1) पुरानी स्मृति तभी ताजा हो उठती है, जब कोई रग दुखती है। यहाँ भी गजाधर बाबू की स्मृति इस कारण उभरी कि यहाँ अपने ही घर में उनकी दुर्दशा हो रही थी।

(2) भाषा सरल, परिष्कृत है।

(3) शैली भावात्मक तथा वर्णनात्मक है।

(2) "गजाधर बाबू ने आहत दृष्टि से पत्नी को देखा। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी माँग में सिन्दूर डालने की अधिकारिणी है, समाज में उसकी प्रतिष्ठा है, उसके सामने वह दो वक्त भोजन की थाली रख देने में सारे कर्तव्यों से छुट्टी पा जाती है। वह घी और चीनी के डिब्बे में इतनी रमी हुई है कि अब वही उनकी सम्पूर्ण दुनिया बन गई है। गजाधर बाबू उनके जीवन के केन्द्र नहीं हो सकते।"

सन्दर्भ - गजाधर बाबू एक फालतू व्यक्ति बनकर घर में रह रहे थे। अगर किसी को किसी गलती पर टोकते तो वह बुरा माना जाता अर्थात् अब उनकी बात सुनने की स्थिति में किसी में भी नहीं थी, ऊपर से पत्नी भी यह कहने लगी थी, आप कुछ मत कहा कीजिए। गजाधर बाबू को लगा अब पत्नी की दृष्टि में भी उनका अस्तित्व धूमिल हो गया है। ऐसी स्थिति में वह सोचते हैं-

व्याख्या- गजाधर बाबू ने बड़ी दबी हुई, बुझी हुई पीड़ित दृष्टि से पत्नी को देखा। उन्हें लगा कि आज इस घर में उनकी स्थिति मात्र एक पैसा कमाने वाले व्यक्ति की रह गयी है। घर के मुखिया की हैसियत पूरी तरह समाप्त हो चुकी है। इतना ही नहीं, उनकी पत्नी की स्थिति भी विचित्र हो गयी थी। आज जो भी अस्तित्व उनकी पत्नी का था, वह सब उन्हीं के कारण ही था। उनका सुहाग, सिन्दूर सब उनके कारण ही तो था। सारी सामाजिक प्रतिष्ठा के भी वे ही आधार थे, पर यहाँ तो सिर्फ दो समय की रोटी देकर ही उनकी पत्नी सारा कर्तव्य ही पूरा कर देती थी। घर-गृहस्थी के कामों में वे इतनी उलझी थी कि उन्हें गजाधर बाबू की सुधि ही नहीं थी, आखिर मात्र भोजन ही तो व्यक्ति की जरूरत नहीं होती, उनके मन के लिए भी कुछ जरूरत होती है।

विशेष- (1) उदासीनता शत्रुता की पराकाष्ठा है। आज गजाधर बाबू को अपने प्रति की जा रही उदासीनता अत्यधिक खटक रही है।

(2) परिवार के अन्य व्यक्तियों की उदासीनता तो कुछ अंशों में सही भी जा सकती है, पर पत्नी का रूखापन बड़ा खलता है।

(3) भाषा परिष्कृत, परिमार्जित है।

(4) शैली भावात्मक है।

(3) "गजाधर बाबू उस कमरे में पड़े-पड़े कभी-कभी अनायास ही इस अस्थायित्व को अनुभव करने लगते। उन्हें याद हो आती उन रेल गाड़ियों की, जो आतीं और थोड़ी देर रुककर किसी और लक्ष्य की ओर चली जातीं।"

संदर्भ एवं प्रसंग- उपर्युक्त पंक्तियाँ सुविख्यात कथा लेखिका उषा प्रियंवदा की बहुचर्चित कहानी "वापसी" में से अवतरित की गई हैं। प्रस्तुत कहानी में आधुनिक युग में हो रहे पारिवारिक विघटन और व्यक्ति की टूटन को मौलिक दृष्टिकोण से अंकित किया गया है। गजाधर बाबू अपनी रेलवे की सर्विस से रिटायर होकर बड़े अरमानों के साथ घर आते हैं। क्योंकि उन्होंने परिवार की सुख सुविधा के लिए पूरे जीवन भर अपने को इधर उधर भटकाये रखा, किंतु अपने खून पसीने से परिवार की बेल को सींचते रहे, आज जब उसी का फल चखने के लिए आये तो कड़वाहट से उनका रोम-रोम उन पर थू-थू करने लगा।

व्याख्या- उन्हें बैठक में जैसे-तैसे जगह बनाकर, डाली गई चारपाई पर पड़े-पड़े यह अहसास होता है कि वे इस घर के मुखिया नहीं हैं जिन्होंने ईंट-ईंट जोड़कर इसे खड़ा किया है। वरन् दो चार दिन के मेहमान है जिसे इस घर में सदैव के लिए रहना नहीं वापस और कहीं चले जाना है। यह बोध उन्हें इसलिए नहीं होता है कि घर में जगह की तंगी की वजह से यह व्यवस्था की गई है, यद्यपि घर में सबके लिए अपने कमरे भी थे, किंतु वस्तुतः प्रश्न सुविधा का नहीं इस बात का है कि अब परिवार में ही उनके लिए कोई स्थान नहीं था। हर सदस्य उनसे कटा हुआ था। यहाँ तक कि पत्नी भी बेगानों जैसा व्यवहार करती थी। अर्थात् इस पारिवारिक जिंदगी में उनका अस्तित्व अब कोई मायने नहीं रखता था।

इसीलिए इस संदर्भ में उन्हें वे रेलगाड़ियाँ याद आती हैं, जो स्टेशन पर आती हैं और कुछ देर रुककर चली जाती हैं। प्लेटफार्म उनका गन्तव्य नहीं एक पड़ाव मात्र रहता है। इसी तरह यह परिवार जिसे वे अपना लक्ष्य मानने का भरम पाले हुए थे, वह महज एक प्लेटफार्म निकला जो स्थायी रूप से टिकने की स्वीकृति नहीं दे सकता ।

12.5 वापसी कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

'वापसी' कहानी गाजाधर बाबू को सेंटर में लिखी गई है इसलिए कहानी में मुख्य किरदार गाजाधर बाबू हैं और नीनी का किरदार सबसे ज्यादा मुखर सामने आता है। इनमें से उनकी पत्नी के अलावा दूसरे किरदार की तुलना में बड़ा उभरता हुआ किरदार नजर आता है। शेष सभी पात्र कहानियों की ज़रूरत के अनुसार आते-जाते रहते हैं और उनका किरदार बहुत उभरकर सामने नहीं आता है। लेकिन इससे जुड़े जो भी प्रसंग सामने आते हैं उनके किरदार की केंद्रीय भूमिका की पहचान हो जाती है। आपके सीमित कलेवर के कारण कहानी में बहुत अधिक पात्र भी नहीं हो सकते। यह कहानी लेखिका के शिल्प की विशेषता है कि वे वास्तु का निर्माण इस प्रकार करते हैं। कि कहानियों की चारित्रिक विशेषताएँ स्वतः ही उभरती हैं। सबसे पहले हम गजाधर बाबू के व्यक्तित्व की शिक्षा की कोशिश करते हैं।

वापसी कहानी के नायक

इस कहानी में गजाधर बाबू को केंद्रीय पात्र या नायक कहा जा सकता है। पूरी कहानी के साथ ऑटोमोबाइल की दुनिया घूमती है। गाजाधर बाबू पर केंद्रित होने के बावजूद यह प्रधान कहानी नहीं है क्योंकि कहानी का मकसद गाजाधर बाबू के चरित्र को शोभायमान नहीं करना है बल्कि उनके माध्यम से परिवार में वृद्ध लोगों की कमजोर स्थिति को दर्शाना है। गजाधर बाबू वैसे तो घर के मुखिया हैं और विदेशी दृष्टि से देखने पर उनकी इच्छा और आदेश ही पूरे परिवार के लिए सर्वमान्य होना चाहिए। वह यह भी करने की कोशिश करती है कि घर के सभी सदस्य उसके अनुसार चलें लेकिन ऐसा नहीं होता। उनका यह आदेश घर के अन्य सदस्यों को देने की कोशिशें बिल्कुल पसंद नहीं है, बल्कि अपने-अपने तरीके से विरोध भी करते हैं। यही नहीं उनके घर में मौजूद रहने वाले किसी भी शेष समूह को अखरने लगता है। कहानी से यह स्पष्ट नहीं है कि पत्नी और बच्चों का बदला हुआ व्यवहार किस कारण से है। अपने परिवार से दूर रहने का कारण या परिवार के अधूरे ढाँचे के कारण।

सहृदय और स्नेहशील

वे सहृदय और भावुक व्यक्ति हैं। अपने घर-परिवार के सदस्यों के प्रति ही नहीं उनके संपर्कों में आने वाले लोगों के सदस्यों के प्रति भी स्नेह का भाव होता है। गणेशी का उदाहरण हमारे सामने हैं जिन्हें वे बहुत ही प्रेम से याद करते हैं। अपनी पत्नी के प्रति भी उनके मन में गहरी दोस्ती है और नौकरी छोड़ने के बाद जल्दी से जल्दी घर पहुंचने की चाहत के पीछे उनकी पत्नी के प्रति भी उनकी यह प्रतिबद्धता है। पत्नी को लेकर कई मधुर स्मृतियां उनके मन में बसी हुई हैं। अपने बच्चों के प्रति भी स्नेह का भाव उनके मन में है।

पारिवारिक व्यक्ति

वे अपने घर-परिवार की प्रति जिम्मेदारी का बोध कराते हैं। इसी कारण से वे बच्चे टोकते हैं लेकिन उनकी इस भावना को बच्चे समझ नहीं पाते हैं और उन्हें लगता है कि उनके पिता पर शासन करने की कोशिश कर रहे हैं। माता-पिता और बच्चों में जिस तरह का संवाद होता है, उसमें उनकी कमी भी नजर आती है। उनकी बेटी बसंती का उदाहरण लिया जा सकता है। अपनी पत्नी के काम के भार को प्रभावित करने के इरादे से जब वे यह परीक्षण जारी करते हैं कि सुबह का खाना बहू बनाएगी और शाम का खाना बसंती, तो बसंती ने कहा कि विरोध किया जाता है कि वह कॉलेज भी जाती है। लेकिन पिता बेटी को समझाते हुए तर्क देते हैं, 'तुम सवेरे पढ़ लो। बंधक माँ। उनके शरीर में अब कोई शक्ति नहीं है। तुम हो, तारा भाभी हैं, दोनों को मिलकर काम में हाथ बंटाना चाहिए।' लेकिन बात खत्म नहीं हुई, मां की नजरों में बसंती का काम से जी चुराने के पीछे मुख्य वजह उनकी सहेली शीला के यहां जाना जाता है जहां नींद के मुताबिक 'बैटरी-बर्ड बॉयज हैं'। एक पिता के लिए यह कथन कथन ही चिंता का विषय है। एक कुँवारी लड़की ऐसे घर में बार-बार आये जहाँ जवान लड़का हो तो उसकी चिंता स्वाभाविक है। और इसी वजह से वह जब एक दिन बसंती को शीला के घर देखते थे तो उसे जाने से रोक देते थे। बेटी नाराज हो गई है और वह खाना-पीना छोड़ रही है। बेटी के ऐसे रूठ जाने से मां हो जाती है दुखी और वह अपने पति को ही बताती है 'क्या कह दिया बसती से?' शाम से मुँह लपेटे हुए है। खाना भी नहीं खाना।

'परम्परावादी दृष्टिकोण

गजाधर बाबू का जीवन सैद्धांतिक दृष्टि परंपरावादी है। उनका मानना है कि शैतान का कर्त्तव्य घर में रहना और घर के काम में हाथ बंटाना है। उनके लिए पढ़ाई करना बहुत जरूरी नहीं है। अधिक स्वतंत्रता भी नहीं है। यही नजरिया उनकी पत्नी का भी है और इसी वजह से वह अपने पति से भी शिकायत करती हैं लेकिन उन्होंने रैंडम के साथ मिलकर अपने को 'एडजस्ट' भी कर लिया है। जबकि पिता के पास संपत्ति नहीं है जो पिता के पास होनी चाहिए। कम-से-कम युवा बच्चों के साथ वह सिर्फ अपनी चीजें ऑर्डर करके मनवा नहीं सकता। दूसरी बात यह है कि गजाधर बाबू अपनी बेटी पर ऑर्डर मांगते हैं, बहू और पत्नी से भी उनकी जरूरतें हैं लेकिन बेटों को वे कुछ नहीं कहते। बसंती के बनाए छोटे बेटे पर ये कमेंट करते हुए खाना छूट जाता है कि मैं ऐसा खाना नहीं खा सकता। लेकिन बेटे के ऐसे व्यवहार पर गजाधर बाबू ने उसे कुछ नहीं कहा, बेटी की ही शिकायत पत्नी से है कि 'इतनी बड़ी लड़की हो गई और उसे खाना बनाने तक का समय नहीं मिला।' बेटे और बेटी के बीच बकवास करने का जो रूढ़िवादी नजरिया है वह गजाधर बाबू के पूरे व्यवहार में दिखता है।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 वापसी कहानी का सार लिखिए ।

12.6 वापसी कहानी की समीक्षा

आधुनिक जीवन में अकेलापन मानो एक जीवन मूल्य ही बन गया है। ऊषाजी ने 'वापसी' में बड़ी ही गहराई से इसे एक मध्यमवर्गीय परिवार की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया है। एक रिटायर्ड व्यक्ति कितना अनार्थिक हो जाता है। अपने ही घर में वह कितना अजनबी हो जाता है, उसकी इस आन्तरिक व्यथा को उसकी पत्नी भी नहीं समझ पाती है। अकेलेपन और अजनबीपन से मुक्ति पाने की छटपटाहट ही वापसी की विषय वस्तु है। कहानी कला के तत्वों के आधार पर इस कहानी की विशेषताएं इस तरह हैं -

1. कथानक- कथानक में गजाधर बाबू की विवशता, उदासी और अकेलेपन का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया गया है। गजाधर बाबू रिटायर्ड हो जाते हैं। वे समझते हैं कि वे अपने परिवार में पहुंचकर सुखी हो जायेंगे और उनका शेष जीवन आराम तथा स्नेह बीत जायेगा। परन्तु वैसा नहीं होता। घर पहुंचने पर उन्हें आराम और स्नेह की बजाय तिरस्कार व उपेक्षा मिलती है। गजाधर बाबू अपने पुत्र और पुत्र-वधू की बेरुखी को तो किसी प्रकार सह लेते हैं परन्तु अपनी पत्नी की बेरुखी उनके एकांकी जीवन को चरम सीमा पर पहुंचा देती है। वृद्धावस्था में दुनिया आराम खोजती है, किन्तु गजाधर बाबू रामजीलाल की शक्कर मिल में नौकरी खोजकर वापस चले जाते हैं, उन्हें कोई रोकता तक नहीं है। यही इस कहानी का कथानक है।

2. चरित्र-चित्रण- इस कहानी में पात्रों का चरित्र चित्रण यथासम्भव उचित रूप से हुआ है। इस कहानी के मुख्य पात्र गजाधर बाबू है। उनके चरित्र द्वारा एक रिटायर्ड-व्यक्ति के प्रति समस्त परिवार की अनास्था व्यक्त की गई है। बाबूजी का चरित्र एक बालक के समान स्वच्छ हृदय वाला चरित्र है। वे एक आत्माभिमानी कर्मठ व्यक्ति हैं जो किसी भी प्रकार से परिवार में अपनी उपेक्षा सहन नहीं कर पाते हैं और यही कारण है कि अपने भरे-पूरे परिवार को छोड़कर वापस नौकरी कर लेते हैं।

3. वातावरण- जहां तक कहानी के वातावरण का प्रश्न है, कहानी में सर्वत्र घरेलू वातावरण है। इसमें दो पीढ़ियों के आंतरिक वैषम्य को बड़ी बारीकी से दर्शाया गया है। आधुनिक परिवार में जो टूटन आ गई है उसका इस कहानी में अच्छा प्रस्तुतिकरण हुआ है। उदाहरण के लिए लेटे हुए घर के अन्दर से आते विविध स्वरों को सुनते रहे। बहू और सास की छोटी-छोटी सी झड़प, बाल्टी पर खुले नल की आवाज, रसोई के बर्तनों की खटपट और उसी में दो गौरियों का वार्तालाप और अचानक ही उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब घर की किसी बात में दखल नहीं देंगे। यह गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह नहीं है, तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं स्थान नहीं तो अपने घर परदेशी की तरह पड़े रहेंगे और उस दिन के बाद सचमुच गजाधर बाबू कुछ नहीं बोले ।

कहानी की भाषा सीधी, सरल और व्यावहारिक है। अत्यन्त सन्तुलित अनुशासनमयी निःसह शैली में कहानी का विकास हुआ है। कहानी की भाषा में

संवेदनशीलता के सभी गुण विद्यमान है। भाषा-शैली में बनावट या कृत्रिमता भी नहीं है।

4. उद्देश्य - उद्देश्य की दृष्टि से लेखिका ने स्पष्ट किया है कि बूढ़े लोगों के प्रति आज के पारिवारिक परिवेश में केवल धन पाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रह गया है। लेखिका ने कहानी के माध्यम से परिवारों में फैलती टूटन, स्वार्थ तथा झड़पों का बड़ा सुन्दर ही चित्र प्रस्तुत किया है। दो पीढ़ियों के आन्तरिक वैषम्य को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत करने में लेखिका सफल हुई हैं। एक तरफ वृद्ध व्यक्ति गजाधर बाबू हैं जो आराम चाहते हैं, मर्यादा, कम खर्ची तथा मितव्ययिता चाहते हैं, जबकि दूसरी ओर युवा पीढ़ी है, उनकी पत्नी, बेटे बहू और लड़की हैं जो आजादी, मौन तथा खर्च की पूरी-पूरी सहूलियत चाहते है। वे अपना भला चाहते हैं। अपने किसी भी कार्य में वृद्ध पिता या पति की दखल अंदाजी को वे बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं। उन सभी को न पिता की आवश्यकता है और न पति की। केवल पैसा ही उनके लिए सब कुछ था। इन्हीं सब कारणों से बाबू गजाधर को रिटायर्ड होने के पश्चात् भी रामजीलाल की चीनी मिल में अपने शेष जीवन को खपाने के लिए वापस जाना पड़ता है। यही 'वापसी' कहानी का उद्देश्य है।

12.7 सार- संक्षेप

आपने इस इकाई में उषा प्रियंवदा की कहानी 'वापसी का अध्ययन किया है। इस इकाई में आपने कहानी के साथ-साथ उसकी कथावस्तु पात्रों के चरित्र-चित्रण, परिवेश, भाषा और शैली कहानी का उद्देश्य और उसके मूल्यांकन का भी अध्ययन किया है। आप इस इकाई को पढ़कर यह बता सकते हैं कि कहानी की कथावस्तु क्या है, उसकी क्या विशेषताएँ हैं। कहानी के केंद्रीय चरित्र गजाधर बाबू की पारित्रिक विशेषताओं का भी उल्लेख कर सकते हैं। कहानी के भौतिक और भावनात्मक परिवेश का भी वित्रन कर सकते हैं। कहानी की भाषा और शैलीगत विशेषताएँ बता सकते हैं और कहानी के उद्देश्य पर भी प्रकाश डाल सकते हैं।

वापसी कहानी आधुनिक परिवारों में वृद्ध माता-पिता के प्रति बच्चों के बदलते रवैये का अत्यंत मार्मिक चित्रण करती है। कहानी बताती है कि माता-पिता के लिए अपने ही बच्चों के साथ घुलमिलकर रहना मुश्किल हो सकता है यदि वे

बच्चों की भावनाओं और इच्छाओं को न समझे। कहानी के मुख्य पात्र गजाधर बाबू का वित्रण इस दृष्टि से प्रभावशाली है। पूरी कहानी उन्हीं के इर्दगिर्द घूमती है। अन्य पात्रों का चित्रण भी यथार्थपरक ढंग से किया गया है। कहानी में मध्यवर्ग के परिवार का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। भाषा कहानी के अनुरूप संवेदनात्मक और सहज है। कहानीकार की सहानुभूति यद्यपि गज्जयाधर बाबू के साथ है लेकिन अन्य पात्रों को खलनायक की तरह पेश नहीं किया गया है।

12.8 मुख्य शब्द

उषा प्रियंवदा की "वापसी" कहानी की मुख्य शब्द और विषय निम्नलिखित हैं:

1. प्रवासी जीवन: विदेश में रहने और काम करने का अनुभव।
2. अकेलापन: परिवार से दूरी और मानसिक अलगाव।
3. संवेदनशीलता: भावनात्मक तनाव और व्यक्तिगत संघर्ष।
4. परिवार: पारिवारिक संबंध और उनके बदलते स्वरूप।
5. त्याग: परिवार के लिए अपने सपनों और इच्छाओं का त्याग।
6. सामाजिक परिवर्तन: समाज और परिवार में होने वाले बदलाव।

12.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर

वापसी कहानी का सार:- 'वापसी' नई कहानी शिल्प की दृष्टि से एक सफल कहानी है। यह आज के यथार्थ का सजीव निम्न प्रस्तुत कर देती है। पुरानी शास्त्रीय कहानी की दृष्टि से इस कहानी के कथानक की गढ़न, घटनाओं की बहुलता, काव्यात्मकता, आरम्भ, विकास एवं चरमसीमा में कोई चमत्कार खोजना उचित न होगा। प्रभाव की एकता ही इस कहानी में देखी जा सकती है। इनमें परिवार के छोटे-छोटे सजीव चित्र मिलेंगे। यह चित्र एकत्र होकर आधुनिक सन्दर्भ की पीड़ा और घुटन को स्पष्ट कर देते हैं।

शहर की आधुनिकता ने जीवन के मूल्यों का विघटन कर दिया है। परस्पर के सम्बन्ध बिखर गये हैं, रूढ़ियों और परम्पराओं से मुक्ति पाने की छटपटाहट आज के मैनुष्य में है। आज के संघर्ष में मनुष्य अजनबी-सा हो रहा है। उसे अकेलेपन की स्थिति व्यथित कर रही है। इसी आधुनिक बोध को 'वापसी' कहानी में व्यक्त किया गया है।

रिटायर्ड गजाधर बाबू अकेलेपन की व्यथा से ग्रस्त हैं। वर्षों तक परिवार से अलग रहने वाले गजाधर बाबू परिवार के साथ रहने के लिए लौट आते हैं, परन्तु बदले हुए परिवेश में अपने को असंगत पाते हैं। यहां एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बदले सम्बन्धों को कहानी-लेखिका ने सच्चाई से व्यक्त किया है। वर्षों के पश्चात् घर में प्रवेश करते ही गजाधर बाबू को अपने से बदला वातावरण मिलता है। नरेन्द्र उल्लसित होकर नीचे-खेल में लगा है। बसंती हंसती हुई इठला रही है। बहु बिना घूंघट के उन्मुक्त विचरण कर रही है। इस नये वातावरण को देखकर गजाधर बाबू सकपका जाते हैं। पली में भी अपना अधिकार नहीं दिखाई पड़ता। बहू उनका लिहाज किये बिना सिनेमा जाने का प्रस्ताव करती है, बसंती उछलती फिरती है। पत्नी उनसे कमरे से चारपाई निकालने को कहती है। इन दृश्यों में मुख्य संवेदना ध्वनित हो उठती है।

इस कहानी की प्रमुख विशेषता यह है कि लेखिका अपनी ओर से कुछ कहकर तटस्थ भाव से गतिशील जीवन के दृश्य उपस्थित कर देती है। वापसी पर गजाधर बाबू को घर में आत्मीयता का कोई भाव नहीं मिलता। उनके असंगत होने का भाव चारपाई के सहज प्रतीक द्वारा व्यंजित किया गया है। बैठक में कुर्सियों के बीच पड़ी पतली-सी चारपाई घर में गजाधर बाबू की स्थिति का बोध कराती है। कमरे में स्थान कम होने से जिस प्रकार चारपाई निकाल दी जाती है। उसी प्रकार अपने घर में गजाधर बाबू भी उपेक्षित हो रहे हैं।

वापसी कहानी की कथा में भावुकता, अलंकरण और चमत्कार नहीं है। इसमें बड़ी सहजता से आधुनिक बोध के अन्तर्गत परिवार के माध्यम से जीवन के अकेलेपन की पीड़ा को व्यंजित किया गया है। धनंजय वर्मा ने सच ही कहा है-

"यह एक व्यक्ति को अपने ही द्वारा निर्मित अपने परिवार से वापसी की कहानी न होकर सारे पुराने मूल्यों से वापसी और एक नयी दिशा में चलने की कहानी है।"

12.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रियंवदा, यू. (2018)। *वापसी. हिंदी कहानियों का संग्रह* (पृ. 78-85) नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

2. प्रियंवदा, यू. (2021)। *उषा प्रियंवदा की चुनिंदा कहानियाँ*। नई दिल्ली: हिंदी ग्रंथ अकादमी।

12.11 अभ्यास प्रश्न

1. वापसी कहानी का मुख्य पात्र कौन है, और उसकी स्थिति क्या है?
2. कहानी में गजाधर बाबू का अपने परिवार और समाज के प्रति क्या दृष्टिकोण था?
3. गजाधर बाबू ने नौकरी छोड़कर गाँव लौटने का निर्णय क्यों लिया?
4. कहानी के माध्यम से लेखक ने पारिवारिक संबंधों की किस वास्तविकता को उजागर किया है?
5. "वापसी" कहानी का शीर्षक कहानी की विषय-वस्तु से किस प्रकार मेल खाता है?
6. कहानी में ग्रामीण और शहरी जीवन के अंतर को कैसे प्रस्तुत किया गया है?
7. कहानी के अंत में गजाधर बाबू का क्या निर्णय था, और यह पाठकों को क्या संदेश देता है?
8. इस कहानी के माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने समाज के बदलते मूल्यों पर क्या टिप्पणी की है?

इकाई- 13

चंद्रधर शर्मा गुलेरी . उसने कहा था

13.1 प्रस्तावना
13.2 उद्देश्य
13.3 लेखक का सक्षिप्त परिचय
13.4 उसने कहा था कहानी का मुल पाठ विवेचन
13.5 उसने कहा था कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण
13.6 उसने कहा था कहानी की समीक्षा
13.7 सार- संक्षेप
13.8 मुख्य शब्द
13.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर
13.10 अभ्यास प्रश्न
13.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

13.1 प्रस्तावना:-

कहानी हर रूप में उपन्यास से पुरानी विधा है। कहानी में कहने की विशेषता सबसे महत्वपूर्ण है। कविता लिखी जाती है पर कहानी कही जाती है। हिन्दी में कहानी जब छपकर पाठकों के सामने आई तब उन्नीसवीं शताब्दी चली गई थी और बीसवीं आ गई थी। शुरू से ही कहानी जमने लगी थी। 'उसने कहा था' कहानी 1915 में 'सरस्वती' पत्रिका में पहले पहल प्रकाशित हुई। इस कहानी ने हिन्दी कहानी विधा में क्रांति ही ला दी। पंडित गुलेरी जी की आज अनेक रचनाएँ मिल जाती हैं किन्तु इतने वर्षों तक आपने इसी कहानी ने बल पर पाठकों के दिल पर राज किया। जिस प्रकार अँग्रेजी लेखिका ऐमिली ब्रांटे अपने एक उपन्यास 'वदरिंग हाइट्स' के लिए अमर हैं, चंद्रधर शर्मा गुलेरी अपनी इस एक कहानी के कारण। इस दुखांत कहानी में कितना 'सुख' और 'आनंद' भरा है, यह बयान करना मुश्किल है। सिक्खों के जीवन की इस शौर्यभरी कहानी में उदात्तता का जो रचाव है उसे आप देखें। एक कहानी में लेखक कैसे बड़े बड़े भाव और विचार प्रस्तुत करता है, जाँचे।

इस कहानी के तात्विक विवेचन के लिए आप इतना अपनी तरफ से करें तो अच्छा रहेगा। आप इस कहानी को खुद पढ़ें। यह भी याद रखें कि कहानी केवल पढ़ने की चीज नहींहोती। अच्छी कहानी में दृश्य और श्रव्य दोनों गुण होते हैं। इस कहानी के पढ़ने से आपकी आँखों के सामने जो दृश्य खड़ा होगा और वह जो आपके कानों को सुनाई देगा वह आपको अपनी दुनिया देखने की दूसरी नज़र देगा।

यहाँ दिये गए सार को भी देखें और साथ ही उसे भी पढ़ लें। तभी तो आप इसके महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या और विवेचन कर सकेंगे। कहानी में आए कठिन शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों के अर्थ पर ध्यान दें। सहायता के लिए इकाई में दी गई शब्द सूची को देखें। कथ्य, भाषा आदि की दृष्टि से कहानी की विशेषताओं को तभी आप खुद भी लिख सकेंगे और तभी इसका तात्विक विवेचन कर सकेंगे जब आप अपने आप भी इसकी कोशिश करेंगे।

सबसे पहले आप इस कहानी का खुद पाठ कर लें। इस कहानी का सम्पूर्ण पाठ यहाँ नहीं दिया जा सकता क्योंकि इस इकाई में पृष्ठों की सीमा है। हाँ, यहाँ कहानी का सार ('नींबू निचोड़ पाठ' - नामवर सिंह) दे दिया गया है। इससे आप कथावस्तु को फिर से एक बार दुहरा सकेंगे। इसके बाद कहानी के तात्विक विमर्श की ओर बढ़ेंगे।

13.2 उद्देश्य :-

इस अध्याय को पढ़ने के बाद छात्र निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम हो सकेंगे:

1. चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी "उसने कहा था" का सार समझ सकेंगे।
2. कहानी में मुख्य पात्रों और उनके भावनात्मक संघर्षों को पहचान सकेंगे।
3. गुलेरी के लेखन की विशेषताओं और शैली को समझ सकेंगे।
4. कहानी के प्रमुख संदेश और उसकी मानवीय दृष्टि को समझ सकेंगे।
5. कहानी में प्रयुक्त शब्दों और उनकी गहराई को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

13.3 लेखक का संक्षिप्त परिचय:-

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी का जन्म 7 जुलाई 1883 का जन्म पुरानी बस्ती, जयपुर में हुआ था। लेकिन उनके पूर्वज हिमाचल प्रदेश के कागंड़ा क्षेत्र में गुलेर गाँव के निवासी थे। उनके पिता का नाम 'पंडित शिवराम शास्त्री' था जो राजसम्मान पाकर जयपुर में बस गए थे। उनकी माता का नाम 'लक्ष्मी देवी' था जो कि एक गृहणी थी। गुलेरी जी को बचपन से ही घर में संस्कृत भाषा, वेद और पुराण आदि का अध्ययन एवं पूजा पाठ का वातावरण मिला। बता दें कि गुलेरी जी मात्र 10 वर्ष की अल्प आयु में ही संस्कृत भाषा के ज्ञान और भाषण में निपुण हो गए थे।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी की शिक्षा

बहुमुखी प्रतिभा के धनी चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी (Chandradhar Sharma Guleri) ने वर्ष 1893 में जयपुर के 'महाराजा कॉलेज' में दाखिला लिया और प्रथम श्रेणी से पास हुए। इसके बाद वह कोलकाता चले गए और 'कलकत्ता विश्चविद्यालय' से वर्ष 1899 में मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने प्राकृत, पाली, अपभ्रंश, अवधी, मराठी, बंगाली, राजस्थानी, पंजाबी और गुजराती का अध्ययन किया। इसके साथ ही गुलेरी जी ने कुछ विदेशी भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया जिनमें अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन भाषाएँ शामिल हैं।

वर्ष 1904 में गुलेरी जी ने 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' से प्रथम श्रेणी के साथ बी.ए की परीक्षा पास की। इसके बाद वह अपनी उच्च शिक्षा की पढ़ाई जारी रखना चाहते थे किंतु व्यक्तिगत कारणों की वजह से अपनी आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख सके। लेकिन गुलेरी जी का लेखन कार्य और अध्ययन जारी रहा।

पत्रकार के रूप में की करियर की शुरुआत :-

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी ने अपने शिक्षा के साथ ही वर्ष 1900 में जयपुर की 'नागरी प्रचारिणी सभा' में अपना विशेष योगदान दिया था। गुलेरी जी कुछ वर्ष 'नागरी प्रचारिणी सभा' के संपादक मंडल के सदस्य और बाद में इस सभा के सभापति भी रहे। इसके बाद उन्होंने वर्ष 1903 से 1906 तक मासिक 'समालोचक' पत्रिका में संपादन का कार्य किया। तीन वर्ष 'समालोचक' पत्रिका का संपादन करने के बाद उन्होंने कई अन्य महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का संपादन किया जिनमें

'मर्यादा' (1911-1912) और 'प्रतिभा' (1918-1920) पत्रिका शामिल हैं। इन पत्रिकाओं में गुलेरी जी का रचनाकार व्यक्तित्व उभरकर सामने आया।

'पंडित मदनमोहन मालवीय' ने दिया प्रोफेसर बनने का प्रस्ताव

वर्ष 1904 में चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी ने 'मेयो कॉलेज', अजमेर में अध्यापक के रूप में भी कार्य किया। उनका अध्यापक के रूप में कॉलेज में सम्मान किया जाता था। वहीं गुलेरी जी अपने विधार्थियों के बीच बहुत ही लोकप्रिय थे। गुलेरी जी की बहुमुखी प्रतिभा से प्रभावित होकर 'पंडित मदनमोहन मालवीय' जी ने उन्हें वर्ष 1920 में बनारस आने का आमंत्रण दिया और 'काशी हिंदू विश्वविद्यालय' (Banaras Hindu University) में प्राच्यविधा विभाग में प्रिंसिपल का प्रस्ताव दिया। इसके बाद गुलेरी जी ने वर्ष 1922 में प्राचीन इतिहास विभाग में कुछ समय तक प्रोफ़ेसर के रूप में भी कार्यभार संभाला।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की साहित्यिक रचनाएँ :-

चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी (Chandradhar Sharma Guleri) का अध्यनन बहुत ही विस्तृत रहा उन्होंने अपने संपूर्ण जीवनकाल में भारतीय व पश्चिमी साहित्य, दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, भाषा विज्ञान व ज्योतिष विधा का गहन अध्यनन किया। जिसकी छाप उनकी रचनाओं में भी देखने को मिलती हैं। गुलेरी जी को निबंधकार के रूप में विशेष प्रसिद्धि मिली बता दें कि उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में 200 से भी ज्यादा निबंध लिखें थे। जो मुख्य रूप से दर्शन, इतिहास, पुरातत्व और मनोविज्ञान विषयों पर आधारित होते थे।

वहीं समालोचक में प्रकाशित उनकी कहानी 'उसने कहा था' आधुनिक हिंदी साहित्य में 'मील का पत्थर' मानी जाती है जिसने गुलेरी जी को हिंदी साहित्य में हमेशा के लिए अमर कर दिया। आइए अब हम चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' जी की संपूर्ण साहित्यिक रचनाओं के बारे में जानते है, जो कि इस प्रकार हैं:-

निबंध:- शैशुनाक की मूर्तियाँ,आँख ,कछुआ धर्म ,संगीत ,पुरानी हिंदी ,देवकुल मोरेसि मोहिं कुठाऊँ

कहानियाँ - उसने कहा था ,सुखमय जीवन ,बुद्धु का काँटा

कविताएं :-भारत की जय ,एशिया की विजय दशमी आहितागिन ,स्वागत ,झुकी कमान ,ईश्वर से प्रार्थना ,वेनॉक बर्न

लघु निबंध :-बालक बच गया ,घड़ी के पुर्जे ,ढेले चुन लो

अल्प आयु में ही कह दिया दुनिया का अलविदा :-

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी (Chandradhar Sharma Guleri) ने आधुनिक हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य का सृजन किया। वहीं अपना संपूर्ण जीवन साहित्य की साधना में लगा दिया। गुलेरी जी ने 'माखनलाल चतुर्वेदी' जी के कथन "कम लिखो, मगर अच्छा लिखो" को सार्थक किया। किंतु पीलिया जैसी गंभीर बीमारी के कारण उन्होंने मात्र 39 वर्ष की अल्प आयु में ही 12 सितंबर 1922 को सदा के लिए अपनी आँखें मूंद ली। हिंदी साहित्य जगत में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी की रचनाओं के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। वहीं 'उसने कहा था' कहानी ही गुलेरी जी का पर्याय ही बन चुकी है।

13.4 उसने कहा था कहानी का मुल पाठ विवेचन:-

'उसने कहा था' कहानी की शुरुआत अमृतसर के भीड़ भरे बाजार से शुरू होती है। 12 वर्ष का एक लड़का 8 वर्ष की एक लड़की को तांगे के नीचे आने से बचाता है। लड़का लड़की से पूछता है कि क्या तेरी (कुड़माई) मंगनी हो गई है। इस पर लड़की 'धत' कह कर भाग जाती है। दोनों बाजार में अक्सर कभी सब्जी वाले, कभी दूध वाले के यहां मिलते हैं और लड़का बार-बार उससे यही प्रश्न पूछता है। कुछ दिन बाद लडका फिर उस लड़के से वही सवाल पूछता है। उस दिन वह लड़की जवाब दे देती है कि हाँ उसकी (कुड़माई) मंगनी हो गई। (हाँ, हो गई । कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा सालू।) इस बात पर लड़का उदास हो जाता है और वहाँ से भाग जाता है। इस लड़के का नाम लहना सिंह है और वह लड़की बाद में 'सूबेदारनी' के रूप में हमारे सामने आती है।

उस घटना के लगभग पच्चीस वर्षों के बाद वह लड़का सेना में भर्ती होता है। यह कहानी का दूसरा भाग है। वह बारह वर्ष का बालक अब 77 राइफल्स में जमादार है। और अंग्रेजों की ओर से भारत की सेना का हिस्सा बनकर प्रथम महायुद्ध के दौरान यूरोप में लड़ने जाता है। उसके साथ सेना में सूबेदार हजारा सिंह, वजीरा सिंह और बोधा सिंह (हज़ारा सिंह का बेटा) आदि हैं। उनके बीच प्रेम, शौर्य और मस्ती की चर्चाएं अक्सर चलती रहती हैं। बोधा सिंह बीमारे होता है, तब लहना सिंह उसका पूरा ख्याल रखता है।

एक बार सूबेदार हजारा सिंह के बुलाने पर जब लहना सिंह उसके घर जाता है तो सूबेदारनी लहना सिंह को पहचान लेती है, और उसे बुलाकर कहती है कि जिस प्रकार तुमने मेरी बचपन में रक्षा की थी (एक बार घोड़े की लातों से बचाया था) वैसे ही उसके पति को बच्चाना। सूबेदाग्नी आंचल पसार कर और बचपन की मुलाकात को याद दिलाकर एक तरह से अपने सुहाग और पुत्र की रक्षा का वचन ले लेती है। लहना सिंह यही करता है। युद्ध भूमि पर उसने सूबेदारनी के बेटे बोधा सिंह ही जान बचाई। पर इस कोशिश में वह खुद बहुत गंभीर रूपसे घायल हो जाता है। वह अपने घाव की परवाह न करके जर्मन सैनिकों का मुक़ाबला करता है। सूबेदारनी के पति सूबेदार हज़ारा सिंह और उसके पुत्र बोधा सिंह को गाड़ी में सकुशल गाड़ी में बैठाते हुए बस इतना ही कहता हैकि सूबेदारनी को कहना 'उससे जो उन्होंने कहा था वह उसने कर दिया।' सूबेदार पूछता ही रह गया उसने कहा क्या था। बाद में उसने वजीरा से पानी मांगा और कमरबंद खोलने को कहा। उसका कमरबंद खून से तर था। मौत को सामने खड़ी देख उसकेदिमाग में जिंदगी की एक एक घटना फिल्म के फ़्लैशबैक सी घूम गई और अंतिम वाक्य जो उसके मुँह से निकला, वह था, उसने कहा था।

लहना सिंह की युद्ध में मृत्यु हो जाती है। अखबारों में तो बस इतना ही छपता है, फ्रांस और बेल्जियम - 68 सूची मैदान में घावों से मरा। नंबर 77 सिक्ख राइफल्स जमादार लहना सिंह। इस प्रकार यह कहानी त्याग, प्रेम और देशभक्ति इत्यादि की भावनाएं प्रकट करती है। बचपन का प्यार किस तरह निभाया जाता है और वह भी एक पुरुष द्वारा।

उसने कहा था कहानी के पाँच खंड या भाग हैं। इनमें से चार युद्धस्थल पर आधारित हैं और एक अमृतसर पर। प्रथम खंड का असफल प्रेमी कहानी के दूसरे भागों में सफल सैनिक, समझदार व्यक्ति और संवेदनशील मानवतावादी नायक के रूप में उपस्थित होता है।

(यह हमेशा याद रखने वाली कहानी है जिस पर फिल्म भी बन चुकी है। पता कीजिए। पता क्या कीजिए, यू ट्यूब पर जाकर देख लें। 1960 में बनी इस फिल्म में सुनील दत्त और नन्दा (निर्देशक मोनी भट्टाचार्य और निर्माता बिमल राय) की प्रमुख भूमिकाएँ हैं। प्रथम विश्व युद्ध (1914-15), भारतीय सिनेमा का आरंभ (1913), और उसने कहा था (1915) एक ही काल खंड की बातें हैं। इस विश्व

युद्ध में करीब तेरह लाख भारतीयों ने हिस्सा लिया था और यह सबसे बड़ी फौज थी।) पहली नज़र में आपको ऐसा लगेगा कि यह भी कोई बात है। एक लड़का है। एक लड़की है। दोनों मिलते हैं। आकर्षण होता है। यह तो होता ही रहता है। यह भी होता रहता है कि शादी एक दूसरे से न होकर किसी दूसरे से हो जाती है। उससे नहीं होती किसी और से हो जाती है। जीवन भर उसकी याद बनी रहती है। पर इस घटना के बाद जो होता है, वह प्रेम की अजीब दास्तां है। लहना सिंह का प्रेम केवल सूबेदारनी से ही नहीं है। वह सबसे प्रेम करता है अपने देश से, घर से, वजीरा से... नामवर सिंह के शब्दों में, "विल्कुल हलवा-हलवा ही नहीं है कहानी, बल्कि इस कहानी में जीवन के कुछ कडवे और भी सत्य हैं। अनकहे सत्य। सबकोमिलाकर के सौंठ-मिर्च की तरह से ऐसा घोल तैयार किया गया है, जिसमें कहीं-कहीं वो खटास अगर न हो और थोड़ी काली मिर्च न डाली जाए तो ये मिठास अपच पैदा करेगी, मन भर जाएगा।"

13.5 उसने कहा था कहानी के मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण:-

गुलेरी जी की इस कहानी में दो बातें दिल में घर कर जाती हैं। एक तो अमृतसर के बाज़ार का वर्णन और दूसरे दो प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण। 'उसने कहा था' कहानी में अनेक पात्र हैं किन्तु प्रमुख पात्र दो ही हैं लहना सिंह और सूबेदारनी। वजीरा सिंह, बोधा और शायद लहना सिंह की पत्नी भी हैं। ये सब गौण पात्र हैं जो कहानी को आगे बढ़ाते हैं। लहना सिंह और सूबेदारनी का पवित्र प्रेम इस कहानी की धुरी है। सूबेदारनी ने जो कहा था, वह लहना सिंह ने किया। जान की बाज़ी लगाकर किया। जान देकर किया। लहना सिंह इस कहानी का प्रमुख पात्र (प्रोटागोनिस्ट) है। कहानी का समूचा घटनाचक्र उसके इर्द-गिर्द ही घूमता है। वह सभी अन्य पात्रों से जुड़ा है और यह जरूरी है कि हम कथानायिका (सूबेदारनी) के साथ-साथ सूबेदार हज़ारा सिंह और उसके बेटे बोधा सिंह को भी जान लें। वजीरा सिंह और लफ़्टन साहब तो हैं ही। कम से कम तीन को जरूर जान लें वजीरा सिंह, लहना सिंह और फिर सूबेदारनी।

वजीरा सिंह-

सबसे पहले हम वजीरा सिंह को लेते हैं। वह गौण पात्र है। उसको 'कॉमिक रिलीफ़' देने के लिए कहानीकार ने रचा है। वह पलटन का विदूषक है। उसका

पंजावीपन उसकी हर हरकत और बात में है। पर उससे उसका महत्व कम नहीं हो जाता। वह ऐसा किरदार है जो लड़ाई के मैदान में भी हँसी-मज़ाक करता है। प्रेम के गीत गाता है। वह कथानायक के आसपास विदूषक के जैसा घूमता रहता है। वह जर्मन लोगों का मज़ाक उड़ाता है। उसकी इस हंसी मज़ाक से पूरी खंदक का गंभीर वातावरण खुशनुमा हो जाता है। वही वजीरा सिंह कहानी में घायल दिखाया जाता है और सपने में वर्गता जाता है। जब वह कह रहा था कि "हाँ अब ठीक है, पानी पिला दे। बस अब दिहाड़ में आम खूब फलेगा, चाचा भतीजा दोनों बैठकर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही बड़ा वह आम है। जिस महीने में मैंने इसे लगाया था।" तब वजीरा सिंह के आंसू टप-टप गिर रहे थे, लहना के नहीं। ये आमवाली, बच्चेवाली, बेटेवाली घटना है। पर वजीरा सिंह बच जाता है। वजीरा सिंह बात दिल को लगने वाली कहता है। पंजाबी है, ठेठ पंजाबी। न जाने कितनी भेद भरी और मर्म-स्पर्शी बातें बोलता है। एक उदाहरण देखें 'जाड़ा क्या है, मौत है और निमोनिया से मरने वाले को मुरब्बे नहीं मिला करते।" युद्ध में गोली खाने वाले को सम्मान मिलता है, निमोनिया से मरने वालों को नहीं। मुरब्बा ठेठ पंजाबी-उर्दू शब्द है- जिसका अर्थ जाने बिना कोई इस कथन का आनंद नहीं के सकता।

हज़ारा सिंह -

हज़ारा सिंह सूबेदारनी का पति है। वह जमादार लहना सिंह का अफसर है। वह अंग्रेज़ सरकार का वफादार है और उसकी वफादारी का उसे ईनाम इकराम भी मिलाथा। उसका पुत्र बोधा सिंह है। वह लहना सिंह को अपना वफादार समझता था। लहना सिंह जब बोधा सिंह की जी जान से सेवा करता है तब सूबेदार उससे अपनी सेहत का ख्याल रखने को कहता है। वह लहना सिंह की मौत के बाद उसके प्रति अपनी संवेदना कैसे व्यक्त करता है, पता नहीं चलता। उसका चरित्र मुख्य नहीं, कहानी को आगे बढ़ाने वाला जरूर है।

सूबेदारनी -

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' में सूबेदारनी तत्कालीन परंपरागत भारतीय नारी के रूप में प्रस्तुत की गई है। वह कहानी में केवल दो बार आती है। एक बार कहनी के आरंभ में, दूसरी बार कहानी के अंतिम भाग में, वह भी

लहना सिंह की स्मृतियों में। वह परिवार की उस सीमा-रेखा के भीतर रहती है जिसका गुणगान किया जाता है।

वह बचपन में एक छोटी सी कन्या के रूप में कहानी के प्रारम्भ में आती है जिसे कथानायक लहना सिंह (जो खुद भी बच्चा ही है) अमृतसर के भीड़ भरे बाज़ार में तांगे के नीचे कुचले जाने से बचाता है। यह चंचल बालिका उस चंचल बालक की हँसी-मज़ाक में रोज़ पूछी गई एक बात का बड़ा माकूल जवाब देती है। "तेरी कुड़माई हो गई?" के उत्तर में उसका 'धत' कहकर भाग जाना और फिर एक दिन यह कहकर लड़के का दिल तोड़ देना "हाँ, हो गई... कल, देखते नहीं रेशम के बूटोवाला सालू", बहुत मनोरंजक प्रसंग हैं। ये उनकी मुलाकातें इस बालिका के मन में (और बालक लहना सिंह के मन में भी) पवित्र प्रेम का अंकुर पैदा करते हैं। और जैसा बाद में पता चलता है, इस कन्या के स्त्री बन जाने पर भी उसके मन के किसी कोने में यह याद हमेशा मौजूद रहती है।

जिसके साथ लड़की की कुड़माई (सगाई) हुई थी उसकी पत्नी के रूप में वह फिर से लहना सिंह से मिलती है। यह उसी रेशमी सालू वाली लड़की का स्त्री रूप है। वह एक ममतामयी मां है (जिसके चार बच्चों में से एक ही जीया)। और एक आदर्श पत्नी भी। वह लहना सिंह को इतने सालों बाद भी पहचान लेती है। अपने पति और पुत्र दोनों को युद्ध के मैदान में खतरों से बचाने के लिए वह अपने बचपन के साथी को पुरानी यादों का वास्ता देती है, "मैंने तोतेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुर का खिताब दिया है। लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक हलाली का मौका आया है पर सरकार ने हम तीमियों की घंघरीया पलटन क्यों न बना दी, जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। उसके पीछे चार हुए एक भी न जीया"।

इस कथन में सूबेदारनी के चरित्र के अनेक पक्ष दिखाई देते हैं- ममतामयी माता, अपने पुत्र और पति के लिए चिंतित। वीर प्रसूति माता जो 'पलटन' में जाकर लड़ने के लिए भी तैयारहै। देश भक्त नारी जो 'नमक हलाली' करने के वक्त को खोना नहीं चाहती। लाचार और निरुपाय स्त्री जो पति के 'बहादुर' खिताब और लायलपुर की ज़मीन के बावजूद 'मेरे तो भाग ही फूट गए' जैसे जुमले बोली है। सूबेदारनी अपने समय की नारी है। वह अपने परिवार के लिए लहना सिंह से

भिक्षा मांगती है। उसके आगे अपना आंचल पसारती है। एक वात्सल्यमयी माता और पतिपरायण पत्नी के रूप में सूबेदारनी लहना सिंह को एक बार फिर से उसके लिए 'कुछ भी' कर गुजरने को प्रेरित कर देती है। इस कथन में सूबेदारनी युद्ध की अमानवीयता का भी जिक्र करती है। इसे भी देखना चाहिए। सूबेदारनी के पास क्या बचा रहता यदि उसके पुत्र और पति को यह लड़ाई खा जाती? सूबेदारनी उन सभी स्त्रियों और देश में रह गए लोगों का प्रतिनिधित्व करती है जो युद्ध के दौरान और युद्ध के बाद उसके परिणाम भोगने के लिए रह जाते हैं। उनके अरण्य रोदन को कोई नहीं सुनता। सूबेदारनी अपने दिल पर जो बोझ लिए रहती है, उसको कुछ देर के लिए ही वह उतारकर सांस लेती है।

शेक्सपीयर के नाटक 'ट्वेल्थ नाइट' की एक पात्र व्योला के समान सूबेदारनी भी कहाँ अपने प्रेम को शब्दों में अभिव्यक्त कर पाती है। वह भी उसे गमों की तहों में छुपाकर रखती है। अपनी उलझन को सुलझाने का उसके पास न मौका है और न समय। वह टी. एस. एलियट की 'बेस्ट लैंड' की उस स्त्री की तरह नहीं जो प्रथम विश्व युद्ध में शामिल होने के लिए चार साल से गए अल्बर्ट के वापस आने से इसलिए चिंतित है क्योंकि उसका पति इतने दिन बाद आकर उसके टूट गए दाँतों और फिसल गई सुंदरता को देख उससे मुँह फेर लेगा। सूबेदारनी को चिंता है तो अपने पति और पुत्र की, अपने आप की नहीं। एक आम स्त्री की तरह वह बस अपने पति-पुत्र की रक्षा का वचन अपने पूर्व रक्षक से लेती है। और 'मैं' को छोड़ इस कहानी की 'उस' बनकर खुद को पृष्टभूमि में रखकर संतोष प्राप्त करती है। लहना सिंह :-

जमादार लहना सिंह इस कहानी का प्रमुख चरित्र है जो इस कहानी के दिये गए शीर्षक का हुक्म बजा लाने की खातिर कहानीकार रचता है। वह जो कुछ इस कहानी के बाद के हिस्से में करता है, वह इस कहानी के पहले हिस्से में किए गए वादे का परिणाम है। कहानी के शुरू में लहना सिंह वय संधि पर खड़ा मनमौजी लड़का है। यह लड़का एक लड़की से अमृतसर के बाज़ार में अचानक टकरा जाता है और कहानी बन जाती है।

लहना सिंह युद्ध के मैदान में कुशल योद्धा है पर यह उसका नियंत्रित और सुथरा व्यक्तित्व है। बालक लहना कुछ दूसरे ही रंग ढंग का है। आरंभ में उसकी एक लड़की (बाद में सूबेदारनी) से छेड़छाड़ और निरंतर चुहलबाज़ी और फिर उस

चुलबुली कन्या की कुड़माई की खबर सुनकर उसकी बेढंगी प्रतिक्रिया। टूटे हुए दिल के इस अनगढ़ आशिक का यह हाल हुआ,

"रास्ते में लड़के को मोरी में धकेल दिया, एक छावड़ी वाले की दिन भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभी वाले ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसवैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पाई, तब कहीं घर पहुँचा।"

लहना सिंह इस कहानी की जान है। उसका चरित्र ऐसा है जैसे खरा सोना। उसके चरित्र में कई खूबियाँ गुलेरी जी ने कूट कूट कर भर दीं हैं। वह आदर्श नायक है। आदर्श प्रेमी है। वह अपने भाई को बहुत चाहता है। देश के लिए मर मिटने का जोश है। उसकी रगों में उसका गाँव लहू बनकर दौड़ता है। प्रेम उसके दिल की धड़कन है। वह उस लड़की की गुजारिश को ताउम्र निभाता है जो उसे बचपन में मिली थी। विनोदप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ, वीर, विवेकशील, परिवार की मर्यादा का रक्षक, कुशल निर्णायक, संवेदनशील, निडर, वचन का पक्का रूमानी लहना सिंह प्रेम के लिए बलिदान की भावना को चरम तक ले जाता है।

ये जो उसके गुण गिनाए गए हैं वे ऊपर से थोपे हुए नहीं। उदाहरण के लिए, यदि उसमें प्रेम और त्याग न होता तो उसका बलिदान न होता। अगर उसमें बुद्धिमत्ता और सतर्कता के गुण न होते तो युद्ध में पूरी सेना की टुकड़ी का सफाया हो जाता। कहानी बनती ही नहीं यदि वह प्रत्युतपन्नमति का परिचय न देता। अपने वचन की रक्षा के लिए वह खुद के लिए मौत को गले लगा लेता है। वह बुद्धिमान भी है और इसका परिचय कई बार देता भी है। अपनी बातों में फंसाकर वह जर्मन सैनिक को जान से मार देता है। लहना सिंह सूबेदार से कहता है, "बिना फेरे घोडा बिगड़ता है, विना लड़े सिपाही, मुझे तो संगीन चढ़कर मार्च का हुक्म मिल जाए फिर सात जरमनों को मारकर अकेला ना लौटूं तो मुझे वारबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। इस दिन धावा किया था, चार मील तक एक भी जर्मन नहीं छोड़ा। "इस संवाद में

लहना सिंह का साहस और धर्मपरायणता आपस में मिलकर कैसी भली जुगलबंदी करते हैं? सरदारों और संता-बंता के चुटकुले सुनने वाले लोग इस कहानी में लहना सिंह की कोई ऐसी वैसी हरकत नहीं देख सकते। वह पूरी मुस्तैदी से और बिना कोई बेवकूफी किए काम करता है। केवल मोर्चे पर नकली भेष में उन्हें मारने की

खातिर आए जर्मन फौजी को ही नहीं अपने गाँव में आए जासूस की भी पोल खोलकर रख देता है। उसका कहना है, 'माझे के लहना को चकमा देने के लिए चार आँखें चाहिए।" कहा जा सकता है कि लहना सिंह अपनी कर्तव्यनिष्ठासब उसे जान से प्यारी है।

कैशोर्य प्रेम का प्रतिदान देने के लिए लहना सिंह ने कोई चूक नहीं की। वह जान की बाज़ी लगाने वाला सैनिक है। एक आम सैनिक की तरह वह अधिकारी का, साहब का हुक्म बजा लाना उसका स्वभाव है। देश के लिए वह शहीद नहीं हुआ। वह तो अँग्रेजी सरकार का जवान था। लाम पर जाना उस समय आज की तरह न था। वह शहीद हुआ अपने प्रेम और कर्तव्य दोनों

के लिए। अपने परिवार से पहले वह 'उस' के परिवार को बचाने की भावना के रहते शहीद हुआ। हाँ, अपने उदात्त चरित्र और बलिदान की वजह से वह लाशों की सूची में एक नाम और नंवर भर बनकर नहीं रह जाता। वह अपनी कहानी छोड़ जाता है जिसे उसके लोग शायदसुनकर गर्व से भरकर उसको याद करेंगे।कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा-मैदान में घावों से मरा नंबर-77 सिक्ख राइफल सरदार लहना सिंह। वह सहयोगी चरित्र के रूप में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। कथानायक ने अपना वचन पूरा किया, इस संदेश का कथानायक वही तो है। वह सूबेदार और उसके पुत्र बोधा सिंह की प्राण रक्षा तो कर देता है पर खुद इस दुनिया से चला जाता है। न उसे कीरत सिंह की गोद नसीब होती है और न ही आम का वह पेड़। उसके पीछे वजीरा सिंह आँसू बहा रहा है और बस। उसके जाने के बाद उसके परिवार का क्या हुआ होगा?

यह कहानी आपको सोचने के लिए खूब सोचने को मजबूर करती है। इस कहानी की कथा आपको भी जीवन भर के लिए याद रहेगी। बार-बार पढ़ने वाली यह कहानी अपने पात्रों के कारण आपको भी अपने साथ बहा ले जाएगी।

स्वप्रगति परीक्षण प्रश्न

1 हजारा सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए ?

13.6 उसने कहा था कहानी की समीक्षा:-

यह कहानी प्रेम कहानी है। पर निखालिस भारतीय प्रेम कहानी जिसका नायक और नायिका न तो आज के प्रेमी-प्रेमिकाओं की तरह प्रेम-सप्ताह मनाते हैं और न प्रेम दिवस। न वे गुलाबों का लेना देना करते हैं और न साथ निभाने की कसमें खाते हैं। वे अपने प्रेम का इजहार नहीं करते, पर प्रेम करते हैं।

उसने कहा था? यह इस कहानी का शीर्षक है और क्या खूब शीर्षक है। आपने हिंदी कहानी का ऐसा चुंबकीय शीर्षक शायद ही पहले देखा हो। 'उसने कहा था' किसने क्या कहा था? एक दम दिल से सवाल निकलता है। आपके दिल से भी जरूर निकलेगा। इस सवाल का जवाब मिलता है, बराबर मिलता है। कहानी में ही मिलता है। कहानीकार ने न तो इस कहानी का शीर्षक किसी पात्र के नाम पर रखा और न किसी घटना के। 'उसने कहा था' का संकेत सूबेदारनी के एक कथन पर आधारित है। 'उसने कहा था' को कहानी के शीर्ष पर शीर्षक के रूप में रखने से इसके महत्व का पता चलता है। शीर्षक इस कहानी की शुरुआत के उसके अंत से जोड़ता है। लहना सिंह से सूबेदारनी ने बचपन की एक घटना को याद दिलाते हुए कहा था, "याद है एक दिन तांगे वाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण वचाए थे। आप घोड़ों की टांगों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्त पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।" यही था जो उसने कहा था और जिसको निभाने के लिए लहना सिंह ने जान की बाजी लगा दी। और अंत में लहना सिंह ने भी संदेश देते हुए कहा था, "सूबेदारनी होरा को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना। और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उन्होंने कहा था वह मैंने कर दिया।" लहना सिंह यहाँ 'उसके लिए' 'उन्होंने' का प्रयोग करके अपना आदर व्यक्त करता है। कहानीकार गुलेरी इस गारे वृत्तान्त में इसी प्रेम की आदर के रूप में परिणति को दर्शाते हैं। यही इस कहानी का प्रतिपाद्य है। सूबेदारनी के कहे की ओर संकेत कराने वाला यह शीर्षक सार्थक भी है और उपयुक्त भी। इसमें संदेह नहीं। आप इस कहानी का कोई दूसरा शीर्षक जरूर सोच सकते हैं पर वह इससे बेहतर होगा, यह कहना कठिन है।

13.7 सार- संक्षेप:-

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की यह कहानी प्रेम के उच्च स्तर (ऊंचे दर्जे) की कहानी है। इस कहानी में मानवीय मूल्यों की रक्षा करने की भावना का प्रसार किया गया है। कहानी कला के तत्वों के आधार पर यह कहानी हिन्दी की कहानियों में प्रमुख स्थान रखती है। इस कहानी का शीर्षक, इसका फलक, और इसके चरित्रों का गठन तीनों अनूठे हैं। अमृतसर के बाज़ार से शुरू होती इस कहानी में फ्रांस की युद्ध भूमि तक के दृश्य हैं। बचपन में एक लड़की और लड़के की मुलाक़ात और हँसी मज़ाक के बीच पैदा हुए प्रेम से लेकर उनके जवान से अधेड़ होने के बाद भी उसके लिए जान पर खेल जाने वाले लहना सिंह की यह कहानी गजब की है। आठ वर्ष की बालिका और बारह वर्ष के बालक के बीच उपजे स्नेह के अंकुर से उपजी इस कहानी का अंत युद्ध के मैदान में होता है जहाँ लहना सिंह सूबेदारनी के कहने से उसके पति और पुत्र की रक्षा मरणासन्न अवस्था में भी करता है।

पाँच खंडों में विभक्त इस कहानी में नाटकीय ढंग से मानवीय सम्बन्धों को प्रस्तुत किया गया है। युद्ध क्षेत्र में साहस, वीरता, चतुराई और त्याग के अनेक चित्र और संवाद हैं। कहानी में प्रयुक्त लोक भाषा का प्रयोग और कहानी कहने में फ्लेशबैक पद्यति का निर्वाह कहानी को पठनीय और स्मरणीय बनाता है। अमृतसर के बाज़ार की दौड़ धूप का हू व हू जीवंत वर्णन से लेकर पात्रों के आपसी संवाद और युद्ध के मैदानों में भी जोश भरे ज़िंदादिल लोगों के ठहाकों से सरोबार इस कहानी में लहना सिंह का सूबेदारनी के कहने से कुछ भी कर गुजरना इस कहानी को चिर-स्मरणीय बनाता है। कहानी कला के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' की समीक्षा करने पर इसे सफल कहानी कहा जा सकता है।

यह आदर्श कहानी प्रेम का रूमानियत भरा यथार्थ चित्रण, मानवीय चरित्र का उदघाटन, इंसान की मजबूरी, प्रेम के विविध रंग-रूप, मिलिटरी जीवन का यथार्थ और सबसे अधिक सम्पूर्ण मानवता के लिए संदेश को लेकर कालजयी बनी है। लहना सिंह की दृष्टि से ही है। सूबेदारनी के उदात्त और पवित्र प्रेम और उस पर अडिग विश्वास की कहानी के रूप में भी इसका एक पाठ बनता है। किसने कहा था? कब कहा था? क्यों कहा था? क्या कहा था? कैसे कहा था? किस से कहा था? क्यों कहा था? आदि प्रश्नों के उत्तरों को खोजती बताती यह कहानी गुलेरी

जी के इस पूरे नाटकीय संयोजन को सफल बनाती है। यही इसका प्रतिपाद्य है। सूबेदार की पत्नी बन जाने पर उस लड़की (सूबेदारनी) के लिए इस लड़के (लहना सिंह) के मन में वह भाव न रहा। वह उसे माथा टेकता है। जब सूबेदारनी युद्ध भूमि को जाते हुए अपने पति और पुत्र (हज़ारा सिंह और बोधा सिंह) की रक्षा का भार लहना सिंह को सौंपती है तो वह उसे आदेश मानता है। वह इस आज्ञा का पालन करने के लिए जान दे देता है। यह आत्मोत्सर्ग इसलिए क्योंकि उसने कहा था।

13.8 मुख्य शब्द:-

1. आत्मोत्सर्ग - किसी अच्छे काम के लिए या दूसरों के लिए अपना सुख, लाभ आदि छोड़ने की क्रिया या भाव
2. उदात्त - महान, श्रेष्ठ, ऊंचा या भव्य
3. प्रौढ़ - पूर्णतः बढ़ा हुआ, (जैसे- प्रौढ़ बुद्धि, प्रौढ़ व्यक्तित्व)। मध्य अवस्था को प्राप्त (जैसे - प्रौढ़ उम्र)।
4. मर्मस्पर्शी - दिल को लगने वाला, दिल पर प्रभाव डालने वाला, हृदयस्पर्शी।
5. माकूल -उचित, ठीक, श्रेष्ठ
6. वय संधि - वय का अर्थ है आयु, उम्र या अवस्था। संधि का अर्थ है जुड़ाव, जुड़ना।

13.9 स्वप्रगति परीक्षण प्रश्नो के उत्तर:-

हज़ारा सिंह :- हज़ारा सिंह सूबेदारनी का पति है। वह जमादार लहना सिंह का अफसर है। वह अंग्रेज़ सरकार का वफादार है और उसकी वफादारी का उसे ईनाम इकराम भी मिलाथा। उसका पुत्र बोधा सिंह है। वह लहना सिंह को अपना वफादार समझता था। लहना सिंह जब बोधा सिंह की जी जान से सेवा करता है तब सूबेदार उससे अपनी सेहत का ख्याल रखने को कहता है। वह लहना सिंह की मौत के बाद उसके प्रति अपनी संवेदना कैसे व्यक्त करता है, पता नहीं चलता। उसका चरित्र मुख्य नहीं, कहानी को आगे बढ़ाने वाला जरूर है।

13.10 संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. गुलेरी, जे.एस. (2019)। *उसने कहा था. हिंदी कहानियों का संग्रह* (पृ. 30-35) । नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
2. गुलेरी, जे.एस. (2021)। *चंद्रधर शर्मा गुलेरी की चयनित रचनाएँ।* नई दिल्ली: साहित्य अकादमी.

13.11 अभ्यास प्रश्न:-

1. 'उसने कहा था' कहानी का मूल्यांकन कहानी के शीर्षक और उसके प्रतिपाद्य के आधार पर कीजिए।
2. कहानी कला की दृष्टि से 'उसने कहा था' की सारगर्भित समीक्षा कीजिए।
3. 'उसने कहा था' कहानी के नायक लहना सिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।
4. सूबेदारनी ने 'उसने कहा था' में स्त्री के रूप में किन किन संवेदनाओं की प्रस्तुति की है?
5. 'उसने कहा था' कहानी में पात्र नहीं 'परिवेश' केंद्र में है? क्या आप इस कथन से सहमत हैं? उदाहरण देते हुए अपनी सहमति / असहमति व्यक्त कीजिए।
6. 'उसने कहा था' केवल एक लड़के-लड़की की प्रेम कहानी नहीं है, यह युद्ध की विभीषिका का वर्णन भी है। विवेचना कीजिए